क्या-क्या खूब

मनहर चौहान

Manhar Chohan

क्या-क्या कूप

मनहर चौहान

Manhar Chohan

KYA KYA ROOP

Novel

by

MANHAR CHOWHAN

Rs. 5.00

प्रकाशक :

उमेश प्रकाशन

५, नाथ मार्केट, नई सड़क, दिल्ली-६

⊙

मुद्रक :

दीपक प्रिंटिंग प्रेस, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

⊙

संस्करण :

जुलाई, १६७०

⊙ 1970

मूल्य :

पांच रुपए

मनहर चौहान की अन्य कृतियां

उपन्यास :

टूटा व्यक्तित्व

हिरना सांवरी

रात खो गई

सूर्य का रक्त

सन्तुलन-असन्तुलन

सीमाएं

आख़िरी सफ़ा

कहानी संग्रह :

बीस सुबहों के बाद

हिन्दी के उन निनानबे प्रतिशत साहित्यकारों के नाम,
जो जीवन भर अपनी किसी एक ही कृति
को बार-बार लिखते रहते हैं।

—म० चौ०

क्या-क्या रूप

⊙ रिसीवर उठाते ही वैसी बात सुनाई पड़ेगी, मैं ने नहीं सोचा था। मुझे आश्चर्य हुआ कि उतने बड़े टोकरे में मिस गोगो के लिए आखिर क्या आया हो सकता है। फोन पर मुझे बताया गया कि जो आदमी टोकरा लाया है, वह कतई यह बताने को तैयार नहीं कि टोकरे में क्या है। फोन काउण्टर-क्लर्क ने किया था। सुबह के सवा आठ बजे थे। यदि फोन घनघनाया न होता तो कम-से-कम पन्द्रह मिनट अभी मैं और सोता। मैं ने काउण्टर-क्लर्क से फोन पर ही कहा, "मिस गोगो से पूछिए कि क्या सचमुच उन्होंने कोई ऐसी चीज मंगवाई है, जो उतने बड़े टोकरे में लाई जाए?"

"मैं ने मिस गोगो को दो बार रिंग किया, लेकिन रिसीवर उन्होंने उठाया ही नहीं।" काउण्टर-क्लर्क ने बताया, "शायद वह नहाने गई हों। उन्हें इस में घण्टा भर लग जाता है। टोकरा लाने वाला बहुत जल्दी में है। इन्तजार करने के लिए वह तैयार नहीं है। उसी की जिद के कारण मुझे आप को रिंग करना पड़ा। मैं ने आप की नींद में खलल तो नहीं पहुंचाया?"

"नहीं, नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। आठ बजे के बाद अगर मैं सो रहा होऊं, तब भी रिंग कर के मुझे जगाया जा सकता है।" मैं ने कहा।

"जी हां, इसी लिए मैं ने दुस्साहस किया।"

"अब तुम···सॉरी! अब आप चाहते क्या हैं?" मैं ने काउण्टर-क्लर्क से पूछा। मैं अपने छोटे-से-छोटे कर्मचारी को भी 'आप' कह कर

पुकारना ज्यादा पसन्द करता हूं। भूल से यदि मैं 'तुम' कह बैठूं, तो इसे मैं तुरन्त सुधार लेता हूं। 'आप' कहने से ये कर्मचारी एक दायरे में बंध-से जाते हैं और हड़ताल वगैरह करने से पहले दो बार सोचते हैं ।

"जी···अगर आप खुद यहां आ कर बात कर सकें तो···"

"ओके।" और मैं ने फोन रख दिया।

रात को बहुत सिगरेट पी थी मैं ने। इतने अधिक धूम्रपान की मुझे आदत नहीं, लेकिन किसी झोंक में जब भी ज्यादा धूम्रपान कर जाता हूं, सुबह उठने पर मुंह का स्वाद बहुत बिगड़ा हुआ होता है। बिस्तर से उठते ही मैं ब्रश करने के लिए झपटता हूं। बिना ब्रश किए चाय पीने की अंग्रेजी आदत मुझे बेहद गन्दी लगती है। गाउन पहन कर मैं ने जल्दी-जल्दी ब्रश किया, फिर मैं कमरे से बाहर निकलने लगा।

सहसा मुझे कुछ याद आया। वाश-बेसिन के पास वापस लौट कर मैं ने शीशे में अपने पूरे चेहरे का गौर से मुआयना किया। अच्छा हुआ, जो मुआयना करना ऐन मौके पर याद आ गया, वरना काउण्टर-क्लर्क देख लेता, साथ में टोकरा लाने वाला वह आदमी भी देख लेता कि मेरे बाएं गाल पर लिपस्टिक का काफी गहरा दाग है। नैपकिन का छोर गीला कर के मैं ने बाएं गाल पर रगड़ा। दाग गाल पर से हट कर नैपकिन पर आ गया। नैपकिन लटका कर मैं ने फिर से पूरे चेहरे को गौर से देखा-परखा। नहीं। कोई और दाग नहीं था कहीं भी। मेरे होंठों पर धीमी मुस्कान छन आई। स्मिता जब भी आती है, दाग जरूर छोड़ जाती है···मुस्कान को स्थगित कर के मैं कमरे से बाहर निकल आया। मैं गलियारे में कदम बढ़ाता हुआ लिफ्ट की ओर जाने लगा। वातानुकूलित कमरे से गैर-वातानुकूलित गलियारे में आना मुझे सुखद न लगा। गलियारे में कीमती दरी और गहरा सन्नाटे, दोनों बिछे हुए थे।

सहसा उस सन्नाटे को भेदती हुई एक खिलखिलाहट मेरे कानों

में पड़ी—कोमल खिलखिलाहट। होटल 'अलीबाबा' में, जिस का स्वामी मैं हूं, एक कैनेडियन सुन्दरी पिछले पन्द्रह दिनों से ठहरी हुई है। एक जर्मन युवक उस के साथ है। वे शादीशुदा नहीं, केवल दोस्त हैं, लेकिन उन्होंने अलग-अलग कमरे अपने लिए बुक नहीं करवाए हैं। युगल-बिस्तर वाला एक ही कमरा उन्होंने किराए पर लिया है, जिस से समझा जा सकता है कि उन की दोस्ती किस सीमा तक आगे बढ़ी हुई है। वे भारत-भ्रमण के लिए आए हैं। समझना मुश्किल है कि यह कैसा भ्रमण है, क्योंकि अधिकांश समय तो वे अपने कमरे में घुसे रहते हैं।

उस कैनेडियन युवती को मैं ने 'सुन्दरी' कहा। और जो मेरी निगाह में सुन्दरी होती है, दूसरों की निगाह में तो वह अनिन्द्य सुन्दरी ही होती है। मैं नारी सौन्दर्य से इतना अधिक घिरा रहता हूं कि अनिन्द्य सुन्दरी भी मेरी कसौटी पर 'केवल सुन्दरी' ही साबित होती है। यह एक जटिल समस्या है, क्योंकि यदि कभी मुझे किसी अनिन्द्य सुन्दरी की खोज में निकलना पड़े तो सारी उम्र मैं खोजता ही रह जाऊं और मर जाऊं। मिस गोगो को लोग अनिन्द्य सुन्दरी कहते हैं। मुझे तो वह 'केवल सुन्दरी' भी मुश्किल से लगती है। ठीक है, वह गोरी कम नहीं, गठीली कम नहीं, लचकीली कम नहीं, मादक कम नहीं, लेकिन वह जरूरत-से-ज्यादा गोरी, गठीली, लचकीली और मादक नहीं हैं। फिर मैं उन्हें अनिन्द्य की श्रेणी में क्यों रखूं? जो उन्हें अनिन्द्य कहते हैं, उन्होंने सुन्दरियां देखी ही नहीं शायद!

कैनेडियन सुन्दरी और जर्मन सुन्दरे के नाम मैं ने रजिस्टर में पढ़े जरूर थे, किन्तु भूल गया हूं। हां, दोनों की खिलखिलाहटें खूब पहचान में आ गई हैं। उन के साथ मेरी कोई आत्मीयता पनप नहीं सकी है। केवल दुआ-सलाम है।

गलियारे का मोड़ पार किया नहीं कि मैं लिफ्ट के सामने पहुंच गया। बटन दबाते ही केज ऊपर आ गई। केज में घुस कर मैं ने

ग्राउण्ड-फ्लोर का बटन दबा दिया। लिफ्ट ने मुझे नीचे ले जाना शुरू किया और मैं सोचने लगा, 'मेरे मरने के बाद इस अनोखे होटल का मालिक कौन बनेगा ? मैं निपट अकेला आदमी। आगे कोई न पीछे कोई। नजदीक के न सही; दूर के सही, लेकिन हर आदमी के रिश्तेदार होते ही हैं—मेरे भी होंगे—लेकिन उन्हें पता भी नहीं कि वे मेरे रिश्तेदार हैं। न वे यह जानते हैं कि मैं 'अलीबाबा' का मालिक हूं। जाहिर है कि मुझे अपना कोई वारिस तय कर लेना चाहिए, वरना मेरे मरते ही सारा ऐश्वर्य सरकार जब्त कर लेगी। इस ऐश्वर्य को मेरे आसपास ही इकट्ठा होना था—हुंह !'

केज एक झटके के साथ रुकी। ग्राउण्ड-फ्लोर आ गया था। लिफ्ट का दरवाजा खुद-ब-खुद खुल गया। मैं बाहर निकला। अपने गाउन की नॉट को छूते हुए जब मैं काउण्टर के नजदीक आया तो देखा कि फर्श पर जो टोकरा रखा है, वह सचमुच बहुत बड़ा है—और वह साफ-सुथरा नहीं है। इस भव्य होटल में, जिस की इंच-इंच जगह से खुशबू उठती है, ऐसी गन्दी चीज आ कैसे गई ?

काउण्टर-क्लर्क और मेरे अलावा केवल एक पुरुष वहां था, अतः फौरन यह समझ कर कि टोकरा लाने वाला यही है, मैं ने उस की ओर जरा नाराजगी से देखा। उस के चेहरे पर देहातीपन नहीं था। आशा के विपरीत, पढ़े-लिखे लोगों की चमक उस की आंखों में थी। निगाहें मिलते ही उस ने तपाक से मुझ से हाथ मिलाया और कहा, "बड़ी खुशी हुई आप से मिल कर। मुझे इन्द्र खोसला कहते हैं। यह टोकरा मैं मिस गोगो के लिए लाया हूं। जैसा कि मुझे आदेश है, यह टोकरा मुझे स्वयं अपने हाथों से उठा कर उन के कमरे तक पहुंचाना चाहिए।"

"क्या है इस में ?"

"यह मैं आप को भी नहीं बता सकता।"

"क्यों ?"

"मिस गोगो ने बहुत सख्ती के साथ कहा है कि मैं किसी को

कुछ न बताऊं। इस के लिए उन्होंने मुझे काफी ज्यादा रुपए दिए हैं।"

"कहां से आए हैं आप ?"

"कहीं से भी नहीं।"

"क्या मतलब ?"

"जी, मैं एक बेकार युवक हूं। जब तक मुझे कहीं नौकरी न मिल जाए, कैसे कहूं कि मैं कहां से आया हूं।"

"फिर यह टोकरा ?"

"मिस गोगो ने थोड़े दिन पहले मुझे जो ठेका दिया था, उस के अनुसार यह टोकरा मुझे उन के कमरे में खुद पहुंचाना है।" वह पुरुष बोला, "और मैं जल्दी में हूं।"

"आप को जल्दी कैसी ?" मैं ने औपचारिक मुस्कान के साथ कहा, "आप को कहीं नौकरी पर तो जाना नहीं।"

"लेकिन इण्टरव्यू देने अवश्य जाना है।" उस ने अपनी कलाई-घड़ी में देखा, "पौने नौ से भी ज्यादा बज चुके हैं। दस बजे मुझे चांदनी चौक पहुंच ही जाना चाहिए। इण्टरव्यू ठीक दस बजे शुरू हो जाएगा।"

"किस जगह है इण्टरव्यू ?" मैं ने पूछा, हालांकि उसे कहां इण्टरव्यू देना है और तनख्वाह कुल कितनी मिलेगी, वगैरह से मुझे सरोकार ही क्या था ! लेकिन कई बार क्या हम लोग खामख्वाह कुछ पूछ नहीं लिया करते ? मैं ने उस की आंखों में देखा। उस की उम्र चालीस से कम नहीं थी। मुझे याद आया कि उस ने स्वयं के लिए 'युवक' शब्द इस्तेमाल किया था। मुझे अच्छा लगा कि वह चालीस का होते हुए भी स्वयं को युवक ही समझता है। मैं इकसठ का हो चुका हूं। अगर मैं ने स्वयं को युवक कहा-समझा तो लोग हंसेंगे। स्मिता कई बार मुझे कितना छेड़ती है ! किसी दिन अगर मैं स्मिता के साथ ढंग से खेल न पाऊं तो वह मेरी नाक में दम कर देती है छेड़-छेड़ कर। क्या स्मिता के साथ अब भी मेरी सिर्फ

दोस्ती है ? या वह मुझ से प्यार करने लगी है ? हुंह, प्यार !

इन्द्र खोसला की मूक आंखें कह रही थीं कि इण्टरव्यू की जगह के बारे में मेरी ओर से व्यर्थ ही जिज्ञासा दिखाया जाना उसे पसन्द नहीं आया है। दो क्षण के मौन के बाद ही उस ने बताया, "जीव-रक्षा परिषद।"

"ओहो ! वे लोग ! उन का तो चांदनी चौक में घायल चिड़ियों का अस्पताल भी है न ?" मेरी इस बात के उत्तर में इन्द्र खोसला बोला, "जी, मैं जल्दी में हूं। चांदनी चौक मुझे बस में ही जाना है; स्कूटर या टैक्सी फिलहाल मेरे बूते से बाहर की चीज है···और दिल्ली की बसों का हाल तो आप जानते ही हैं····क्या आप चाहेंगे कि मैं इण्टरव्यू में देर से पहुंचूं ?"

"नहीं, नहीं।"

"तो फिर इजाजत दीजिए कि यह टोकरा मैं अपने हाथों से उठा कर मिस गोगो के कमरे तक···"

"लेकिन आप समझते क्यों नहीं ?" काउण्टर क्लर्क ने जोर देते हुए कहा, "उन का कमरा भीतर से बन्द होगा। जरूर वह नहा रही हैं। टोकरे को क्या आप कमरे से बाहर, गलियारे में छोड़ जाएंगे ?"

"नहीं, ऐसा नहीं किया जा सकता।" इन्द्र खोसला बोला और मेरी तरफ देखने लगा।

"हर कमरे की डुप्लीकेट चाबी मेरे पास होती है।" मैं ने कहा, "मिस गोगो यदि नहा रही हों, तो भी मैं आप को उन के कमरे के भीतर पहुंचा सकता हूं। बाथ-रूम के बाहर से, ऊंचे स्वर में, आप उन से बात भी कर सकेंगे। क्या आप को पूरा पेमेण्ट हो चुका है ?"

"जी हां।"

"तो आप बाथ-रूम के बाहर से ही, मिस गोगो से विदा ले कर, चांदनी चौक जा सकते हैं।" मैं ने पासा फेंका, "लेकिन मैं उन के कमरे में यह टोकरा तब तक नहीं पहुंचने दूंगा, जब तक आप बता न दें

कि इस में क्या है। मैं इसे खोल कर भी देखना चाहूंगा। आप ने तो इसे रस्सों से बांध रखा है। क्या यह बहुत वजनी है?"

"जी हां, खासा वजनी। स्कूटर में लाद कर लाया हूं। मैं कैसे बताऊं कि इस में क्या है! मिस गोगो के आदेशानुसार मैं मजबूर हूं कि···"

"तो, मिस्टर खोसला; मैं भी मजबूर हूं। खामख्वाह जरह कर के आप अपना वक्त खराब करेंगे और मेरा भी। टोकरा उठा कर आप वापस जा सकते हैं।" मैं ने कह दिया, "मिस गोगो हमारी बहुत कीमती डान्सर हैं। पता नहीं, आप उन के कमरे में कौन-सी चीज रख जाना चाहते हैं। शायद आप ने जान-बूझ कर तब आना पसन्द किया है, जब वह घण्टे भर के लिए बाथ-रूप में चली जाती हैं। हो सकता है, किसी ने मिस गोगो को नुकसान पहुंचाने के लिए आप को भेजा हो। क्या इस टोकरे में टाइम-बम है? मिस गोगो से डाह रखने वाली डान्सरों की संख्या कम नहीं।"

"टाइम-बम! ओह, नहीं, सवाल ही नहीं उठता।" कहते-कहते इन्द्र खोसला को हंसी आ गई। मैं न हंसा। मुझे वह बद-तमीज लग आया था। मेरे इस भाव को उस ने उसी क्षण समझ लिया। गम्भीर हो जाते हुए उस ने कहा, "टोकरा मुझे स्वयं को उठा कर चलना है। अगर इस में टाइम-बम है तो वह, तब तक तो फटेगा नहीं, जब तक टोकरा मेरे हाथ में रहेगा—मिस गोगो के साथ मेरी जो बातचीत होगी, उसे भी आप सुनेंगे ही। आप के शक नाजायज या बेबुनियाद नहीं हैं, लेकिन मेरे साथ ऐसी कोई बात नहीं। मिस गोगा आप के शक दूर कर देंगी। प्लीज़, अब और न रोकिए। मुझे जाना है।"

मैं, टोकरा और इन्द्र खोसला, लिफ्ट द्वारा, सातवीं मंजिल पर पहुंचे। इस मंजिल का एक भव्य कमरा मैं ने मिस गोगो को दिया हुआ है। टोकरा दोनों हाथों से उठाए हुए इन्द्र खोसला मेरे पीछे-पीछे चुपचाप चल रहा था। मिस गोगो के दरवाजे पर पहुंच कर

मैं ने काल-बेल दबाई। भीतर एक गहराई से मिस गोगो का बारीक स्वर सुनाई दिया, "कौन ?" स्वर का उस गहराई में से आना ही इस का सबूत था कि मिस गोगो सचमुच बाथ-रूम में व्यस्त हैं।

"मैं हूं।" मैं ने जोर से कहा। मेरी आवाज वह पहचानती हैं।

"आ जाइए।" मैं ने उसी गहराई में से उठता स्वर सुना, "आप तो आ सकते हैं।"

'आप तो आ सकते हैं।' में दो अर्थ थे। एक तो यह कि आप के पास डुप्लीकेट चाबी है, दरवाजे का बन्द लैच आप बाहर से खोल सकते हैं। दूसरा यह कि मैं नहा रही होऊं, तो भी आप आ सकते हैं।

मैं ने जेब में से चाबी निकाली और उसे लैच के छेद में डालते हुए जोर से कहा, "कोई और भी हैं मेरे साथ।"

इस के उत्तर में मिस गोगो शायद तीन सेकण्ड तक चुप रहीं। फिर बोलीं, "कौन है ?"

"इन्द्र खोसला—एक टोकरे के साथ।" मैं ने बताया। सूने गलियारे में मेरी तेज़ आवाज़ यहां से वहां तक तिर रही थी। गलियारे में दाएं-बाएं, कतारबद्ध, अनेक कमरों में खुलने वाले दरवाजे थे—बन्द। मेरी तेज़ आवाजों के बावजूद वे बन्द रहे।

"एक मिनट रुक कर आ जाइए—बिना पूछे।" भीतर की गहराई से आदेश मिला।

लैच के छेद में डली हुई चाबी को मैं ने एक मिनट बाद घुमा कर दरवाजा खोल दिया। मिस गोगो ने एक मिनट बाद आने के लिए क्यों कहा, मेरे सामने तो स्पष्ट था ही। मिस गोगो बाथ-रूम का दरवाजा खुला छोड़ कर नहा रही होंगी—वह टब में छपछप करती हुई नहाने की आदी हैं। इस मामले में मुझे वह बचकानी लगती हैं। बहरहाल···एक मिनट का समय उन्होंने टब में से निकल कर बाथ-रूम का दरवाजा बन्द करने के लिए चाहा होगा। यदि मेरे साथ इन्द्र खोसला और टोकरा न होता, तो बाथ-रूम का दरवाजा

खुला ही रहता। मिस गोगो अपने शरीर को एक मन्दिर कहती हैं और घूरे जाने को एक पूजा। मैं इस मन्दिर से इतना अधिक परिचित हूं कि पूजा करना अपनी सारी सार्थकता खो चुका है मेरे लिए। इन्द्र खोसला इतना अधिक परिचित नहीं हो सकता। उस ने मन्दिर का केवल गुम्बद देखा होगा—मिस गोगो का चेहरा। और उस ने मन्दिर की केवल सीढ़ियां देखी होंगी—मिस गोगो के पैरों की उगलियां। सम्पूर्ण मन्दिर भी उस ने देखा हो सकता है, क्योंकि हर रात होटल 'अलीबावा' में सम्पूर्ण मन्दिर का प्रदर्शन, एक से ज्यादा बार, होता ही है। क्या आश्चर्य, यदि इस शहर के अनेकानेक स्त्री-पुरुषों की तरह इन्द्र खोसला ने भी 'अलीबावा' के कैबरे-फ्लोर पर इस सम्पूर्ण मन्दिर की झांकी देखी हो—लेकिन, झांकी और पूर्ण परिचय में अन्तर नहीं होता क्या? झांकी उत्सुकता और उत्तेजना बढ़ा देती है, जबकि पूर्ण परिचय एक बोरियत पदा करता है। मेरा ही उदाहरण लीजिए। सम्पूर्ण मन्दिर को मैं ने इतनी-इतनी बार देख लिया है कि मैं बोर हो चुका हूं। शुरू-शुरू में मैं ने कई बार पूजा की थी—की होगी। अब यह सिर्फ एक फालतू हरकत लगती है। बस। किन्तु इन्द्र खोसला मेरे साथ है। यदि उस ने सम्पूर्ण मन्दिर के दर्शन कैबरे-फ्लोर पर किए भी हैं, तो केवल एक झांकी के रूप में। इसी लिए यदि वह, मन्दिर के तमाम परदे उठे हुए देख ले, तो उस के मन में जो भाव पैदा होंगे, वे मन्दिर को पसन्द नहीं आएंगे। यही कारण है कि क्यों मन्दिर ने बाथ-रूम का दरवाजा बन्द कर लेना चाहा। लैच के छेद मे डली चाबी मैं ने एक मिनट बाद घुमाई और दरवाजा खोल दिया। मेरा प्रवेश। फिर इन्द्र खोसला का प्रवेश। टोकरे का भी प्रवेश। इन्द्र खोसला ने टोकरा फर्श पर रख दिया और चारों तरफ निगाह घुमाई। दरवाजा मैं पुन: बन्द कर चुका था। लैच लगने की क्लिच्च्च सुनाई दी। कमरे की भव्यता ने इन्द्र खोसला को चकाचौंध कर दिया था। भव्यता कमरे की या मन्दिर की? मिस गोगो ने अपने तन-रूपी मन्दिर का आदमकद फोटो 'ब्लो' करवा कर

सामने की दावार पर इस तरह जड़ रखा था कि प्रवेश करते ही पहली निगाह वहीं जाए। उस फोटो में मन्दिर के तमाम परदे उठे हुए थे। इन्द्र खोसला की विस्फारित आंखें उस की पूजा कर रही थीं। यह फोटो खींचा गया था बम्बई में, लेकिन उसे आदमकद साइज़ में 'ब्लो' नई दिल्ली के एक स्टूडियो में करवाया गया था। मिस गोगो के कमरे तक उसे ढांक-ढांक कर लाया गया था।

"लोग मिस गोगो को अनिन्द्य सुन्दरी समझते हैं।" मैं धीमे से बोला। मेरे स्वर के धीमेपन ने इन्द्र खोसला को चौंकाया, फिर झेंपा दिया। पल भर को उस की निगाह फर्श की ओर चली गई—जहां वह रहस्यमय टोकरा रखा हुआ था। फिर उस ने मेरी आंखों में देखते हुए, एक नकली मुस्कान के साथ कहा, "हां, सचमुच वह अनिन्द्य हैं।"

"क्या आप ने उन्हें कैबरे-फ्लोर पर देखा है?" मैं ने पूछा।

"जी हां।" इन्द्र खोसला फिर झेंप गया, हालांकि ऐसी कोई बात मेरे सवाल में थी नहीं। इस कमरे में आते ही, जल्दी-जल्दी झेंपना शुरू कर देने के कारण इन्द्र खोसला के व्यक्तित्व का करारापन लुप्त हो गया था। उस की उम्र चालीस से एकाएक पैंतालीस लगने लगी थी। न जाने क्यों मुझे ऐसा लगा कि मैं जीत-सा रहा हूं।

"कितनी बार देखा है आप ने?"

"एक बार।" इन्द्र खोसला ने कहा।

"उन का शो कैसा होता है?" मेरे इस सवाल ने इन्द्र खोसला को चकित किया। आश्चर्य के भाव ने उस की झेंप को मूंद दिया। उस की आंखें ढिठाई से मेरी ओर देखने लगीं। उस ने व्यंग्य-सा करते हुए पूछा, "मेरी राय का अर्थ क्या है? आप स्वयं उन के शो देख चुके होंगे। आप की अपनी भी एक राय होगी।"

"हां, मैं ने समय-समय पर उन के शो देखे हैं, लेकिन···मैं अब इस योग्य नहीं रह गया हूं कि कोई राय बना सकूं। मैं इन सब का

बहुत ज्यादा ग्रादी हो गया हूं। मुझे सनसनी होती ही नहीं, ग्रौर ये सब तो सनसनी के खेल हैं। सनसनी के ग्रभाव में मूल्यांकन मैं कैसे करूं ? इसी लिए मैं ने ग्राप से पूछा।"

"जी, मैं···मुझे यहां से जाने की जल्दी है।"

"ग्रोह, बात ही खयाल से उतर गई थी।" मैं ने क्षमायाचना के स्वर में कहा। बाथ-रूम का दरवाजा बन्द था। छपछप बन्द दरवाजे द्वारा मुंदी हुई थी। मैं ने दरवाजे के पास पहुंच कर पुकारा, "मिस गोगो ?"

'येस, बॉस !"

"जो सज्जन ग्राए हैं, वह इन्द्र खासला ही हैं, इस की तसल्ली ग्राप कैसे करेंगी ?" मेरे इस प्रश्न पर मिस गोगो हंसने लगीं। बन्द दरवाजे के उधर से, टब में से बोलीं, "ग्राप बहुत शक्की मिजाज हैं, बॉस !"

"मैं ग्राप का संरक्षक भी हूं।" मैं ने साधिकार कहा।

"ग्रगर मिस्टर खोसला मुझ से दो बातें कर लें, तो ग्रावाज़ मैं पहचान लूंगी।"

इन्द्र खोसला ने, ग्रादेशानुसार, बाथ-रूम के बन्द दरवाजे के पास ग्रा कर, जरा झुकते हुए कहा, "मिस बिन्द्रा ! ग्राप का काम हो गया है। टोकरा हाजिर है ग्रौर ग्रभी···मुझे एक इण्टरव्यू में जाना है। जल्दी में हूं।"

"इण्टरव्यू ? ग्रोह ? मेरी शुभ-कामनाएं।"

"थैंक्यू, मिस बिन्द्रा।"

"जो भी रिज़ल्ट निकले, मुझे फोन करिएगा।"

"जरूर।"

"जो रकम मैं ने ग्राप को दी है, मिस्टर खोसला, उस की रसीद ···क्या ग्राप ले ग्राए हैं ?"

"जी हां। उसे मैं टोकरे के ऊपर रखे देता हूं।" इन्द्र खोसला ने यह कहते हुए ग्रपनी जेब में से एक सफेद लिफाफा निकाल कर,

फर्श पर पड़े टोकरे पर रख दिया ।

"फिर मिलेंगे, मिस बिन्द्रा !"

"बाय-बाय !" बाथ-रूम में से मिस गोगो ने उल्लसित स्वर में कहा ।

इन्द्र खोसला के जाने के बाद मैं ने दरवाजे का लैच भीतर से बन्द किया । बाथ-रूम के दरवाजे की तरफ लौटते समय मेरी निगाहें उस टोकरे पर ही थीं, जिस पर बंधी रस्सी में एक केन्द्रीय गठान लगी हुई थी । मैं ने दरवाजे पर ठकठक की और पुकारा, "मिस गोगो !"

"यस बॉस !"

"यह मिस्टर खोसला कैसे जानते हैं कि आप का सरनेम बिन्द्रा है ?"

इस के जवाब में दरवाजा खुल गया । सामने झाग-सना मन्दिर खड़ा था—संगमरमरी । मन्दिर ने कहा, "आमने-सामने हुए बिना बातें करना अटपटा लगता है न ?"

मैं चुप रहा । जो मैं ने पूछा था, उस का उत्तर यह नहीं था । यह बाथ-रूम का दरवाजा खोल देने की सफाई मात्र थी । सफाई देने की जरूरत थी क्या ? झाग के कारण मन्दिर सुशोभित है या मन्दिर के कारण झाग ? धत् ! यह छायावादी प्रश्न कहां से आ घुसा मेरे दिमाग में ? प्रश्न मेरे दिमाग में ही पैदा हुआ या बाहर से भीतर आया, मैं न जान सका । हां, इतना अवश्य मैं जान और देख सका कि झाग-सना मन्दिर फिर से टब में प्रवेश कर रहा है । टब में झाग-ही-झाग है । मन्दिर उस झाग के बादल में बैठ कर छिप गया है । केवल मन्दिर का गुम्बद दिखाई दे रहा है । गुम्बद ? मन्दिर ? फिर से ये गलत शब्द मेरी कल्पना में आए कैसे ? ये शब्द मिस गोगो के हैं, मेरे नहीं । मेरा वाक्य तो इस प्रकार होना चाहिए—मिस गोगो का केवल सिर दिखाई दे रहा है (सिर याने चेहरा भी) ।

खामोशी । मिस गोगो की आंखों में मेरी आंखें । मिस गोगो

की भीगी मुस्कान। मेरी तीखी गम्भीरता। खामोशी। खामोशी मेरे द्वारा भंग। वही सवाल दोहराया मैं ने, "आप का सरनेम उन्हें कैसे मालूम हो गया ?"

'जब मैं कैबरे-डान्सर नहीं थी, तभी से वह मुझे जानते हैं।" मिस गोगो ने यह कहने के साथ ही ठहाका लगा दिया। ठहाका मुझे नकली-सा महसूस हुआ। मैं टब से दो कदम पीछे हट कर बैठ गया। मैं ने मिस गोगो की दिशा में देखा। ठहाका रुक चुका था। झाग में से उन के गीले घुटने दिखाई दे रहे थे। पैर मुड़े हुए होने के कारण घुटने चिकने और कसे हुए लग रहे थे।

"जानते हैं, बॉस, मैं उन्हें क्या कहा करती थी ?"

"कैसे जान सकता हूं ? मुझे बस, यही कहना है कि एक कबरे-डान्सर का असली नाम जनता तक पहुंचना नहीं चाहिए। इस में डीसेन्सी नहीं है।" मैं बोला, "कैबरे-डान्सरों के नाम गीगी, गोगो, मोमो, चोचो होते हैं या सूज़ी, ऊज़ी, कोज़ी।"

"मुझे मालूम है, लेकिन यदि बचपन में कोई किसी का पड़ोसी रहा हो तो इस पर मेरा क्या बस ?"

"यह मिस्टर इन्द्र खोसला आप के पड़ोसी थे ?"

"हां। इन की छोटी बहन और मैं एक ही क्लास में पढ़ती थीं, दोस्त भी थीं। घरों में आनाजाना था। मैं मिस्टर खोसला को बड़े भइया कहा करती थी। मिस्टर खोसला मुझे रम्मी कहते थे। रमा का रम्मी कर दिया था उन्होंने।"

"फिर ?"

"मेरे डैडी का तबादला हुआ। परिवार बिछुड़ गए। शुरू-शुरू में बड़ी चिट्ठियां आईं-गईं। फिर दोनों तरफ से चुप्पी।"

"ऐसे रिश्तों में यही होता है।" मैं बोला, "यहां दिल्ली में यह आप से कैसे टकराए ?"

इस के उत्तर में मिस गोगो टब के झाग में चुप और स्थिर बैठी रहीं। मिस गोगो की उम्र इक्कीस वर्ष की है, लेकिन विज्ञापित

की जाती है उन्नीस वर्ष। अखबारों में मिस गोगो का, उत्तेजक मुद्रा में, जो नृत्य-फोटो छपता है, उस के नीचे लिखा होता है—उन्नीस वर्ष की सनसनाती, सेक्सी सुन्दरी मिस गोगो के सांय-सांय करते, मादक और जबर्दस्त कैबरे-नृत्य ! शाम के साढ़े छह बजे तीन शो। रात के साढ़े नौ बजे चार शो। न भूलिए, न चूकिए। होटल 'अलीबाबा' में अपनी गोल थिरकनों से आप का स्वागत करने को बेकरार नृत्य-सुन्दरी की चुनौतियां स्वीकार कीजिए। कृपया क्षमा करें—नृत्य के फोटो लेना मना है, कैमरे साथ न लाएं।

झाग में चुप और स्थिर बैठीं मिस गोगो ने सहसा एक गहरी सांस ली। झाग जगह-जगह से दब गया था। मंदिर की दीवारें उन जगहों में ज्यादा प्रकट हो गई थीं। चलो, मैं भी मंदिर ही कह लेता हूं, मिस गोगो के ही शब्दों का अपना लेता हूं। बढ़िया, साफ-सुथरे, सुन्दर शब्द हैं। मिस गोगो द्वारा गहरी सांस लिया जाना स्वाभाविक ही है। इन्द्र खोसला ने अभी थोड़ी देर पहले बताया था कि मिस गोगो का कैबरे नृत्य वह महाशय एक बार देख चुके हैं। वह धोखे से आ गए होंगे। उन्हें पता थोड़े ही रहा होगा कि मिस गोगो तो रमा है। रमा याने वह रम्मी, जो उन्हें बड़े भइया कहती थी। और वही रम्मी, सनसनाते संगीत और झिलमिलाती रोशनी में उन की आंखों के ऐन सामने कैबरे-नृत्य करती हुई, अपना चीरहरण स्वयं करती गई···कैसा लगा होगा मिस्टर खोसला को ? ऊंह, कैसा भी लगा हो, मुझे क्या सरोकार ? शायद खोसला को मजा ही आया हो। यदि पीड़ा हुई होगी तो बीच से उठ कर चला गया होगा। चाहे जो हुआ हो, उस की छटपटाहट से मुझे लेना या देना ? परन्तु मुझे मिस गोगो से सरोकार है। मिस गोगो ने अभी-अभी बहुत गहरी सांस ली है। कैबरे-डान्सर की मानसिकता किसी भी रूप में हच-मचाई हुई नहीं रहनी चाहिए, अन्यथा कैबरे-फ्लोर पर उस के नखरे दर्शकों के लिए कम ग्राह्य हो जाते हैं। उस की मुस्कानें, उस के अंग-आंदोलन, उस की भंगिमाएं, उस की पलकों का झपकना, उस का छुई-

गुम हो जाना और अचानक बिफर कर झुरझुराना—सब में एक मशीनीपन बिम्बित होने लगता है। कैबरे देखने आए दर्शक यह तो जान रहे होते हैं कि सारी झुरझुरी, सारी भंगिमाएं नकली हैं, किन्तु नकलीपने को झेलना फिर भी आसान है। बीबी का प्यार भी तो कई बार नकलीपने का आभास देता है! यही लगता है कि वह अपना फर्ज अदा कर रही है—जिस तरह एक सरकारी अफसर अपनी कोई फाइल निबटाए। या ऐसा लगता है कि बीबी इस प्यार को पूरा होने ही नहीं देगी, यदि कीमती साड़ी ला देने की उस की मांग स्वीकारी न गई···जब बीबी का नकलीपन झेला जा सकता है, फिर कैबरे-डान्सर का क्यों नहीं? लेकिन मशीनीपन भयंकर होता है। वह नकलीपने का भी चाचा है। यदि मशीनीपन आ जुड़े तो लोग बीवियों को तलाक दे देते हैं—और कैबरे-डान्सर के शो में जाना कम कर देते हैं···

अपने व्यापार की खातिर मुझे मिस गोगो को तुरन्त इस मानसिक छटपटाहट में से खींच निकालना चाहिए। मैं ने कहा, "कैबरे-डान्सर के लिए सभी मर्द केवल मर्द हैं। इस के अलावा···मिस्टर खोसला आप के सगे भाई भी तो नहीं।"

"दरअसल मैं किसी और बात को ले कर परेशान हूं।" मिस गोगो बोलीं, "बॉस, क्या आप ज्योतिष में विश्वास करते हैं?"

"न विश्वास, न अविश्वास। मैं ने कभी आजमाया नहीं।"

"मैं ने आजमाया है। ज्योतिषियों ने जो भी बताया है मेरे बारे में, न जाने कैसे, उस में से अस्सी प्रतिशत सच निकला है।"

"यह संयोगों का खेल भी हो सकता है।"

"हां, लेकिन इस वर्ष तो लगता है, शत-प्रतिशत भविष्यवाणियां सच निकलेंगी।" मिस गोगो ने थरथराते स्वर में जल्दी-जल्दी कहा। स्वर की थरथराहट उन के भीतर पैदा हुए एक जबर्दस्त भय का ही संकेत था। जैसे कि उस भय को नकार देना चाहती हों, इस तरह मिस गोगो ने जल्दी-जल्दी हाथ-पैर हिला कर टब में और-और झाग

बनाना शुरू कर दिया। झाग इतना ऊंचे आ गया कि मिस गोगो की ठुड्डी उस में छिप गई। मिस गोगो फिर भी झाग बनाती रहीं। लगता था, जैसे वह झाग उठा-उठा कर उस में एकदम छिप जाना चाहती हैं। मैं ने देखा कि अब उन की नाक भी झाग में डूबने वाली है। यह तो अच्छी बात नहीं। सांसों में झाग फंस सकता है। अकस्मात् मैं ने देखा कि दाहिने हाथ के केवल एक आंदोलन से, मिस गोगो ने अपने चेहरे के सामने का सारा झाग हटा दिया। झाग में फंसा उन का चेहरा अब अधर टंगा हुआ-सा लग रहा था। चेहरे के नीचे, मंदिर की दीवारों का झीना-झीना आभास···मैं मिस गोगो की आंखों में ताकता रहा। जैसे कि वे आंखें पत्थर की हो गई हों···

मैं स्टूल से उठ खड़ा हुआ। मैं मिस गोगो के नजदीक जाना चाहता था। नजदीक जाते हुए मैं ने पूछा, "और कितनी देर तक नहाना है?" मेरा यह सवाल कुछ-कुछ ऐसा ही था कि आप किसी झगड़े को अचानक रोक कर मौसम की चर्चा शुरू कर दें। मिस गोगो ने मेरी बात का उत्तर देना जरूरी न समझा। दो-चार सैकण्ड मैं टब के पास खड़ा रहा, फिर बाथ-रूम से निकल कर, कमरे में रखे सोफे पर बैठ गया। मैं सिगरेट पीना चाहता था, लेकिन अभी भी मैं गाउन पहने हुए था और गाउन में सिगरेटें मैं रखता नहीं। मुझे 'चार-मीनार' पीने की आदत है। मिस गोगो 'फोर स्क्वैयर' पीती हैं। 'फोर स्क्वैयर' नन्ही-सी, नाजुक और फीकी सिगरेट है—मेरे अनुसार, एक लेडीज़ सिगरेट! उस का पैकेट सेण्टर-टेबल पर रखा था। नाजुक-नाजुक एक लाइटर भी वहीं था। मुझ से रहा न गया। मैं ने दोनों को उठा लिया। एक 'फोर स्क्वैयर' निकाली, जलाई, पीने लगा। 'चारमीनार' के मुकाबले वह इतनी कागज-कागज-सी लगी कि मुझे गुस्सा आने लगा, किन्तु उसे मैं फेंक या बुझा न सका। कश लेते हुए मैं ने बाथ-रूम के दरवाजे की ओर देखा। दरवाजा खुला था। टब में से मिस गोगो उठ चुकी थीं। झाग में से उन की एक टांग बाहर आई, फिर दूसरी। फिर मिस गोगो समूची बाहर

आ गई। मिस गोगो हमेशा बहुत ज्यादा झाग में डूब कर नहाती हैं। शायद यह शुतुरमुर्ग ही जैसी कोई आदत है, जो खतरे से आमना-सामना होते ही रेत में सिर डाल कर मस्त हो जाना चाहता है। कैबरे-डान्सर होना, अपने-आप में, एक खतरनाक स्थिति नहीं क्या ? अब इस क्षेत्र में भी होड़ इतनी बढ़ गई है कि जो डान्सर जरा भी ढीली पड़ी, वह फौरन 'आउट' हो जाती है—व्यवसाय से ही 'आउट' !...टब से निकल कर मिस गोगो को फव्वारे के नीचे खड़ा होना पड़ता है, वरना उतने झाग को तो तौलिया भी न सोख पाए। झाग-सनी मिस गोगो, खुले दरवाजे में, इधर-से-उधर जाती दिखाई दीं। उधर ही तो है फव्वारा। एक छरछराहट कमरे में मेरे कानों तक आई—फव्वारा चल चुका था। मैं ने कश लिया। प्रायः चार मिनट बाद मिस गोगो ने कमरे में प्रवेश किया। तौलिया उन्हें सुखा चुका था। तौलिए को वह बाथ-रूम में ही टांग आई थीं। आलमारी के पास पहुंच कर उन्होंने गाउन निकाला और खामोशी से पहनने लगीं।

सहसा अधूरे प्रश्नवाचक हर दिशा में झूलने लगे। मिस गोगो ने कहा था, 'दरअसल मैं किसी और बात को ले कर परेशान हूं।'

—किस बात को ले कर ?

गाउन में छिपा मंदिर सोफे पर, मेरे सामने बैठ गया था। मन्दिर ने फोन उठा कर किचन का नम्बर डायल किया था। होटल 'अलीबाबा' की एक खूबी है। बिल्कुल पश्चिमी स्टाइल का होटल होते हुए भी यहां मद्रासी नाश्ता उपलब्ध है। इडली, दोसा, वडा। ओनियन-उतप्पम्। उपमा। वगैरह। मिस गोगो को ओनियन-उतप्पम् का बहुत शौक है और मुझे उपमा खूब पसन्द है। जब उन्होंने ओनियन-उतप्पम् मंगवाया, तो मैं ने कह दिया कि साथ-साथ वह मेरे लिए भी उपमा मंगवा दें। उन्होंने ऐसा किया; फिर फोन रख दिया। हमारी निगाहें मिलीं। खामोशी। मैं ने पैकेट में से एक 'फोर स्क्वैयर' निकाली, उन्हें पेश की। सिगरेट उन के होंठों से लग

जाने पर जलाई भी मैं ने ही। उन्होंने गहरा कश लिया । पुनः खामोशी।

"क्या कहा है ज्योतिषियों ने ?" मुझे ही बोलना पड़ा। मैं ने तय कर लिया था कि ज्योतिषियों ने जो भी कहा होगा, उस का खण्डन मैं कर के रहूंगा। यदि मैं ने ऐसा न किया तो मेरी कैबरे-डान्सर की मानसिकता इतनी हड़मचा जाएगी कि···

"उन्होंने कहा कि इक्कीसवां वर्ष मेरी उम्र का सब से बुरा वर्ष है। मुझे शारीरिक, आर्थिक, मानसिक—हर तरह की जबर्दस्त परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।" मिस गोगो ने मेरी ओर ताकना शुरू कर दिया।

मैं बोला, "क्या आप सोचती हैं कि मिस्टर खोसला से मुलाकात होने का अर्थ है आप की मानसिक परेशानियों की शुरुआत ?"

"नहीं, ऐसी बात नहीं···दरअसल···कोई और युवक है, जिस से मेरा आमना-सामना हुआ है—कल रात के साढ़े नौ बजे वाले शो में। मिस्टर खोसला से तो करीब दो हफ्तों पहले मुलाकात हुई थी, और मैं ने उन्हें काफी सहजता से लिया है, लेकिन कल रात के शो में जो युवक आया था, वह···वह मुझे···" मिस गोगो ने वाक्य अधूरा रहने दिया।

"क्या वह भी आप का पड़ोसी था ? क्या उसे भी आप भइया कहती थीं ?"

"ओह, भइया ! हा, हा, हा !" मिस गोगो सहसा लोट-पोट होने लगीं। अट्टहास रुकने पर उन्होंने जलती सिगरेट ऐश-ट्रे पर रख दी, फिर जोर से ताली बजा कर दूसरा ठहाका लगा दिया। "आप ने भी क्या दूर की सोची !" मैं ने उन्हें कहते सुना। मैं गम्भीरता से बोला, "मेरा मतलब कुल इतना ही है कि एक कैबरे-डान्सर के लिए हर मर्द सिर्फ एक मर्द होता है। कैबरे-डान्सर सिर्फ एक नुमाइश है, जो हर इन्सान के लिए खुली है—मां-बाप या भाई-बहन के लिए भी। शो देखने के लिए किसी परिचित पुरुष का आ जाना अथवा

ज्योतिषियों द्वारा कोई ऊलजलूल-सी बात कह दिया जाना—इन्हें ले कर परेशान नहीं होना चाहिए। इन ज्योतिषियों का तो बिल्कुल विश्वास नहीं करना चाहिए। निन्यानवे प्रतिशत ज्योतिषी सिर्फ धोखा देना जानते हैं। खुद सोचिए, इन बातों में धरा ही क्या है?"

जब मैं यह सब बोल रहा था, मिस गोगो के होंठ एक अर्थभरी मुस्कान में इस तरह खिंचे हुए थे कि मैं उसी क्षण समझ गया, मेरे शब्दों का कोई असर मिस गोगो पर नहीं हो रहा। मैं ने बोलना रोक दिया। मेरे रुकते ही वह बोल उठी, "कल रात एक ऐसे युवक ने मेरा शो देखा, जिसे मैं अपमानित करना चाहती हूं।"

"क्यों? क्या उस ने कोई बेजा हरकत की थी?"

"शो देखते समय नहीं, लेकिन जब मैं शो दिखाती ही नहीं थी, जब मैं नई-नई जवान हुई थी, जब मैं प्यार और वासना का फर्क नहीं समझती थी और भावुकता के सागर में डूब रही थी— तब उस युवक ने मुझे धोखा दिया। वह मेरा प्रेमी था, बॉस! और कल रात को मैं ने उस के सामने अपने तमाम कपड़े उतारे—सिर्फ इस लिए कि उस ने पच्चीस रुपए खर्च कर के मेरे शो का टिकट खरीदा था! सात-आठ वर्ष पहले भी मैं ने उस के सामने अपने कपड़े उतारे थे, लेकिन सारे नहीं। वह मुझे भोगना चाहता था; मैं ने उसे केवल लिपटने की इजाजत दी थी। उस ने मुझ से शादी कर लेने का वचन दिया, फिर एक दिन मुझे जबर्दस्ती भोगा। मैं ने उसे माफ कर दिया। मैं ने यही समझा कि प्यार इसी को कहते हैं, प्यार में यह न हो तो धागा कच्चा रह जाता है—और शादी के बाद तो यह होना ही है। फिर मैं अक्सर रात को उस के साथ हुआ करती···लेकिन उस ने शादी मुझ से सिर्फ इस लिए नहीं की कि मैं गरीब घर की लड़की थी।"

"ओह!" मैं बुदबुदाया। मिस गोगो सचमुच आवेश में आ कर बोलती जा रही थीं। उन्हें टोकने का साहस मुझ में नहीं था। प्रेम में असफलता वाली यह बात मुझे वह पहली बार बता रही थीं। मुझे दुःख हुआ था।

"शादी उस ने एक लखपति की लड़की से की। फिर वह शहर छोड़ कर चला गया। मुझे उस की परछाईं का भी पता न चला। मैं पुरुष-मात्र से नफरत करने लगी। मैं कैब्रे-डान्सर बन गई। अब चाहती हूं कि पुरुष मेरे अग-अंग को देखें और तड़पें—उसी तरह तड़पें कि जिस तरह कोई प्यासा किसी गर्म रेगिस्तान में भटक जाए और पानी की हर बूंद के लिए घिघियाए" और मैं उस के ऐन सामने खड़ी हो कर ठण्डा शर्बत पीऊं और नाचूं ! क्या आप सोचते हैं, हर रात मैं होटल 'अलीबाबा' में नाचती हूं ? नहीं, हर रात मैं एक रेगिस्तान में नाचती हूं और मेरे इर्द-गिर्द अनेक पुरुष अपनी आखिरी सांसें गिन रहे होते हैं !"

मिस गोगो यहां रुक गईं। ऐश-ट्रे में रखी सिगरेट उन्होंने कब की उठा ली थी, किन्तु वह सिगरेट खत्म होने को थी। उन्होंने पैकेट में से दूसरी सिगरेट निकाल कर जलाई। अच्छा हुआ जो मिस गोगो यहां रुक गईं। यदि वह बोलती ही जातीं तो एक ऐसी कहानी शुरू होती, जिसे मैं कई बार मिस गोगो के ही मुंह से सुन चुका हूं। उस बोरियत का मुकाबला फिर से करने के लिए मैं तैयार नहीं। कहानी—कि किस तरह उन का नाम मिस रमा बिन्द्रा से बदल कर मिस गोगो रखा गया, किस तरह कैबरे-डान्सरों के एजेन्ट ने उन से रिहर्सल करवाए, किस तरह जब पहली बार मिस गोगो कैबरे-फ्लोर पर आईं तो नग्न हो ही न सकीं और दर्शकों ने उन की कैसी भद्द उड़ाई··· मिस गोगो के मां-बाप मर चुके हैं। मिस गोगो का कथन है कि वे अपनी लड़की के कैबरे-डान्सर हो जाने के गम में मरे। अब, मिस गोगो का केवल एक भाई है। शुरू में तो उस ने अपनी प्यारी रमा बहन से 'यह बुरा काम' छुड़वा देने का पूरा प्रयास किया, न छोड़ने पर आत्म-हत्या कर लेने की धमकी भी दे डाली; किन्तु अब वह अपनी पढ़ाई के सिलसिले में जर्मनी गया हुआ है—मिस गोगो की सारी महत्वाकांक्षाएं उस भाई के ही आसपास घिर आई हैं। वह उसे 'बहुत बड़ा आदमी' देखना चाहती हैं। पता नहीं, 'बहुत बड़ा

आदमी' से उन की मुराद क्या है। जो भी हो, भाई की विदेश में पढ़ाई का सारा खर्च मिस गोगो के कन्धों पर है। इस का उन्हें रंज नहीं, बल्कि गर्व है—बहुत गर्व। मैं मिस गोगो से कहता हूं कि उन्हें स्वयं अपने बैंक में खासी अच्छी राशि जोड़ कर रखनी चाहिए, क्योंकि कैबरे-डान्सर की उम्र दस-बारह साल से ज्यादा नहीं होती। इतने अरसे में कैबरे-डान्सर इतनी ढल ही जाती है कि फिर कैबरे-डान्सर बनी न रह सके। यदि बैंक में राशि जुड़ी हुई न हो, तो भविष्य इतना अन्धकारमय हो सकता है कि···लेकिन मिस गोगो अपनी आय का बहुत बड़ा प्रतिशत भाई पर न्यौछावर कर देती हैं। मैं इसे समझदारी नहीं मानता। प्रति मास कितना कमाती हैं मिस गोगो ? एकदम सही-सही आंकड़ा मैं नहीं बता सकता, क्योंकि कैबरे-डान्स के उन के शो देखने के लिए जो दर्शक आते हैं, वे उन पर रुपये न्यौछावर करते हैं। किस शो में कितने रुपये न्यौछावर होंगे, मुझे क्या अन्दाजा ? दर्शकों की दीवानगी के भी क्या कहने ? जब मिस गोगो केवल दो वस्त्रों में रह जाती हैं, तब दर्शक उन्हें नोट दिखाते हैं। किसी के हाथ में बीस-तीस के नोट, किसी के हाथ में चालीस-पचास के नोट। मिस गोगो स्वतन्त्र होती हैं कि किस के नोट स्वीकार करें और किस के नहीं। जिस के भी नोट मिस गोगो स्वीकार करती हैं, वह उन नोटों को मिस गोगो के अधोवस्त्र में खोंस देता है। अधोवस्त्र में जहां मरजी आए, वहां वह अपने नोटों को खोंस सकता है—लेकिन बदतमीजी कतई नहीं कर सकता। बदतमीज दर्शकों को वश में रखने के लिए 'अलीबाबा' हमेशा कुछ मुस्टण्डों को तैनात किए रहता है। ये मुस्टण्डे बैरों के वेश में दर्शक-मेहमानों की सेवा कर रहे होते हैं, जबकि इन का वास्तविक उद्देश्य होता है कैबरे-डान्सर की सम्मान-रक्षा। जो भी व्यक्ति मिस गोगो के अधोवस्त्र में नोट खोंसता है, उस से मिस गोगो, इठला-इठला कर अपनी ब्रेसियर खुलवाती और फिकवा देती हैं। रोशनियां धीमी पड़ने लगती हैं। मिस गोगो इस तरह हिलती-डुलती हैं कि उनके थैले ज्यादा-से-ज्यादा हिलें। कैसा

बचकाना खेल है यह ! क्या लोगों को पता नहीं कि इन थैलों की रचना कैसी होती है ? उन्हीं को, क्रमशः मन्द पड़ती रोशनियों के बीच, हिलते देख लेने के लिए अनेकानेक नोट न्यौछावर करने का क्या अर्थ ? लेकिन दीवाने दर्शक ऐसा करते हैं और उनके बीच धीमी, सभ्य सिसकारियां-सी उठती हैं । रोशनियां मन्द होने की अपनी एक गति है । मिस गोगो स्वतन्त्र होती हैं उस क्षण का चुनाव करने के लिए कि कब वह अपने अधोवस्त्र को अपने ही हाथों से निकाल कर परदे के पीछे भाग जाएं । जब वह भागना शुरू करती हैं, तब रोशनियां अचानक गुल कर दी जाती हैं । यदि जरूरत से ज्यादा रंगीन मिजाज के दर्शक आए हुए हों और मिस गोगो के साथ जरूरत से ज्यादा ठिठोली कर रहे हों, तो वह अपना अधोवस्त्र तब त्यागती हैं, जब क्रमशः धीमी पड़ रही रोशनियां इतनी बुझ चुकी हों कि जब मिस गोगो परदे की दिशा में भागें, तब दर्शकों को कुछ खास दिखाई न पड़े । इस के विपरीत, यदि दर्शकों ने मिस गोगो की कला का सही सम्मान किया, उन के अधोवस्त्र में नोट पर्याप्त खोंसे और खोंसते समय कोई ऐसी बदतमीजी न कर दी कि जो अखर जाए—तो मिस गोगो अधोवस्त्र तभी निकाल देती हैं, जब क्रमशः गुल हो रही रोशनियां अभी काफी रोशनी दे रही हों । सारे के सारे परदे उठ चुकने के बाद, यदि मन्दिर चाहे तो, दर्शकों को खुश करने के लिए, रोशनी में कुछ क्षण ठहर भी सकता है । 'अलीबाबा' की ओर से कैबरे-डान्सर को निर्देश होता है कि सारे परदे हटने के बाद मन्दिर, रोशनी में, आधे मिनट से ज्यादा देर तक न जगमगाए—जहां तक सम्भव हो, चौथाई मिनट में ही वह परदे की ओट ले ले । दर्शकों को इतना नहीं दिखा देना चाहिए कि वे अघा जाएं । उन्हें अघा नहीं देना है, तरसा देना है, ताकि वे बार-बार आएं और हर बार तरस तरस जाएं । याद रखने की बात है कि जब मिस गोगो अपना अधोवस्त्र त्यागती हैं, तब, खोंसे हुए नोट अधोवस्त्र में ही होते हैं । अधावस्त्र मंच पर गिरता है तो नोट भी गिर जाते हैं । निरवस्त्र हो कर परदे

की ग्रोर भागती कैबरे-डान्सर का ग्रधिकार नहीं होता कि वह ग्रपने तन पर नोट जैसी कोई चीज भी धारण किए रहे। नोटों को भी त्याग कर, केवल ग्रपनी त्वचा पहने हुए, उसे दौड़ना होता है। इस के बाद, कुछ क्षणों के लिए रोशनी एकदम गुल कर दी जाती है। उस बीच, मंच पर पड़ा ग्रधोवस्त्र ग्रौर वे नोट, 'ग्रलीबाबा' का कर्मचारी चुपके से उठा लेता है। जब फिर से रोशनियां जगमगाती हैं, तब मंच एकदम खाली होता है। एक शो समाप्त। दूसरा शो, कुछ मिनटों के बाद, फिर शुरू। इस बार भी वही। मिस गोगो का ग्राना। एक-एक कर ग्रपने कपड़े उतारना-फेंकना। केवल दो वस्त्रों में रह जाना। फिर ग्रधोवस्त्र में नोट ग्रा चुकने पर, क्रमश: एक भी वस्त्र में न रहना ग्रौर इठला कर परदे की तरफ भागना। रोशनियों का गुल होना। सभी वस्त्र एवं नोट 'ग्रलीबाबा' के कर्मचारी द्वारा उठा लिया जाना। फिर से रोशनियों का जगमग होना। दूसरा शो समाप्त। तीसरा शुरू। फिर चौथा। पांचवां। सैकड़ों शो मिस गोगो दे चुकी हैं। हर बार वही-वही-वही-वही-वही-वही-वही-वही ! लानत है लोगों की दीवानगी पर ! हर बार वही-वही देख कर वे बोर क्यों नहीं होते ? बोर वे होते हों या न होते हों, 'ग्रलीबाबा' को ध्यान ग्रवश्य रखना पड़ता है कि वे बोर न हों। इस लिए 'वही-वही' में भी नित नए ढंग, नित नए नुक्ते निकाले जाते हैं। नए नुक्ते सोचना, उन का रिहर्सल करना, उन्हें कैबरे-फ्लोर पर सफल बनाना—ये सारी जिम्मेदारियां मुख्यत: मिस गोगो की हैं। केवल मचलना पर्याप्त नहीं होता। मचलना तो सभी कैबरे-डान्सर जानती हैं। तरक्की केवल उसी डान्सर की होती है, जो ऐसे-ऐसे नुक्ते सोचे कि लोग जितनी बार देखें, उतनी बार मर जाएं !

मैं बता रहा था मिस गोगो की ग्राय के बारे में। कैबरे-कक्ष में कुल पचास सीटें हैं। हर सीट का मूल्य है पच्चीस रुपए। यदि सारी सीटें भर जाएं तो ग्राय होती है एक हजार दो सौ पचास। इस का पांच प्रतिशत मिस गोगो को दिया जाता है। याने—सभी

सीटों के भर जाने पर उन्हें मिलते हैं बासठ रुपए पचास पैसे। शेष सब 'अलीबाबा' के खाते में चला जाता है। मिस गोगो के रहने एवं खाने-पीने का इन्तजाम 'अलीबाबा' मुफ्त करता है। आरकेस्ट्रा के खर्च का एक अंश मिस गोगो की आय में से काट लिया जाता है। यदि मिस गोगो अलोकप्रिय होने लगीं तो सारी सीटें भरेंगी नहीं। अधोवस्त्र में जो नोट खोंसे जाते हैं, वे मिस गोगो एवं कैबरे-कक्ष के सभी कर्मचारियों के बीच बटते हैं। आधे मिस गोगो के, आधे कर्मचारियों के। इसी लिए यह कभी निश्चित नहीं रहता कि मिस गोगो किस शो में कितना कमाएंगी। अधोवस्त्र में पता नहीं कितने नोट खोंसे जाएं, सारी सीटें पता नहीं भरें या न भरें···याने—यह भी निश्चित नहीं होता कि हर शो में 'अलीबाबा' कितना कमाएगा।

घणणण ! घणणणण !

मैं और मिस गोगो चुप बैठे रह गए—जब फोन बजना शुरू हुआ। फोन मिस गोगो के कमरे में बज रहा था, उन्हीं के लिए होना चाहिए—रिसीवर मैं ने न उठाया। रिसीवर मिस गोगो भी नहीं उठा रही थीं। मैं ने देखा कि उन का चेहरा फक पड़ गया है। मैं सावधान हुआ। मेरी आंखों में प्रश्नवाचक तैरे। मिस गोगो ने उन प्रश्नवाचकों को पहचान लिया। सूने कमरे में फोन बजता ही जा रहा था। मिस गोगो ने जब रिसीवर उठाया, उन के हाथों में कंपकंपी थी—सूक्ष्म किन्तु स्पष्ट। रिसीवर कान पर ले जा कर वह धीमे से बोलीं, "हैलो ?"

फोन के दूसरे छोर से उन्हें क्या बताया गया, मैं न सुन सका, लेकिन उन के चेहर का रंग चुटकियों में वापस लौट आया। यह देख मैं आश्वस्त हुआ। बातचीत खत्म कर उन्होंने रिसीवर रख दिया। उन की आंखें मुझ से मिलीं। केवल छुटकारे की नहीं, बल्कि खुशी की मुस्कान थी उन के होंठों पर—होंठ, जिन पर अभी लिपस्टिक लगी हुई नहीं थी। लिपस्टिक की अनुपस्थिति में मुझे

सहसा स्मिता की याद आ गई, जो हमेशा कोई-न-कोई दाग छोड़ जाती है। स्मिता की याद ने मेरी उदासी और गम्भीरता छू कर दी। उत्साहित हो कर और करवट बदल कर, सोफे पर एक नए पोज़ में बैठते हुए मैं ने मिस गोगो से पूछा, "किस का था फोन?"

"शहर में 'दि ग्रेट इण्डियन सरकस' आया हुआ है न?"

"हां। तो?"

"उस के रिंग-मास्टर का फोन था।"

"आज आप वाकई रहस्यमय लग रही हैं।" मैं ने हंस कर कहा, "सरकस के रिंग-मास्टर का फोन आप के नाम आना..." और वाक्य अधूरा ही छोड़ कर मैं ने पूछा, "उस टोकरे में क्या मंगवाया है आप ने?" पूछते समय मुझे आश्चर्य हो रहा था कि इन्द्र खोसला द्वारा, एक अटपटी जिद के साथ यहां लाया गया वह टोकरा, लगातार इतनी देर तक मेरे ध्यान से उतरा हुआ क्यों रहा। अब, न जाने क्यों, मुझे ऐसा लगने लगा कि सरकस के रिंग-मास्टर का सम्बन्ध, कोई-न-कोई सम्बन्ध, इस टोकरे के साथ अवश्य है!

"उस टोकरे में...अच्छा, बॉस, जरा अन्दाज़ा लगाइए, क्या होना चाहिए उस में।"

"मैं कुछ नहीं कह सकता, सिवा इस के कि वह एक वजनदार चीज है। मिस्टर खोसला ने उसे कोई बहुत आसानी से नहीं उठाया था। याने, इस में रूई नहीं है। उस में पानी भी नहीं भरा है। पानी तो टोकरे में से निकल जाएगा। शायद उस में अलादीन का जिन है।" मैं बोला और हंसने लगा। अपने इस मजाक द्वारा मैं उस खूबसूरत कमरे में बदसूरत टाकरे की मौजूदगी को जैसे कि पचा लेना चाहता था।

"रूई! पानी! जिन! हाहाहा! सचमुच वह चीज लगभग रूई जैसी मुलायम है, पानी जैसी लहरीली है और...वह चीज वैसा ही काम कर सकती है, जैसा कभी अलादीन के जिन ने किया होगा। बताइए, बॉस, क्या है उस में!"

"जाने क्यों, अभी-अभी, ऐसा लगा था कि उस में रिंग-मास्टर से सम्बन्धित कोई चीज है। खोल कर देखूं ?" और मैं सोफे से उठ कर टोकरे के पास पहुंच गया। उस की रस्सी की गठान खोलने के लिए मैं झुकने लगा।

"न न न ! खोलिएगा नहीं।" मिस गोगो लपक कर मेरे पास आ गईं, "उस में तो अजगर है।"

"अजगर !" मैं उछल पड़ा, "इस में अजगर ?"

"क्यों ? क्या अजगर लगभग रूई जैसा मुलायम और पानी जैसा लहरीला नहीं होता ? मैं इस अजगर से वैसा ही काम लूंगी, जैसा अलादीन ने अपने जिन से लिया होगा।" मिस गोगो ने जिस दृढ़ता से यह-सब कहा, उस से मुझे विश्वास हो गया कि वह मजाक नहीं कर रही हैं। मैं चुटकुलों और मजाकों को, कारटूनों को भी, बहुत जल्दी समझ जाता हूं। अपवाद-स्वरूप जब कभी ऐसा नहीं होता, तब मेरे तन-मन में एक अकुलाहट-सी लोट जाती है। मिस गोगो मजाक नहीं कर रही थीं, लेकिन कभी-कभी, जब हम मजाक नहीं कर रहे होते, तब भी क्या अनजाने में हम से मजाक नहीं हो जाया करते ? मिस गोगो द्वारा अनजाने में अवश्य कोई मजाक हुआ जा रहा था···और मैं उसे समझ नहीं पा रहा था ! अकुलाहट लोटने लगी थी मेरे भीतर। बेवकूफ की तरह मैं मिस गोगो की तरफ देखता रह गया था। मुझे अपने कर्मचारियों की दिशा में बेवकूफों की तरह देखना कतई पसन्द नहीं है। आखिर मैं इस भव्य 'अलीबाबा' का मालिक हूं।

"क्या आप मुझे पूरी बात समझाने की कोशिश करेंगी ?" मैं ने स्वर में तीखापन लाते हुए कहा।

"आप तो भविष्यवक्ता हैं !" मिस गोगो मुस्कान बिखेरती हुई बोलीं, "तभी तो जान लिया आप ने कि इस में रिंग-मास्टर से सम्बन्धित कोई चीज है !"

मिस गोगो वापस सोफे पर बैठ गईं। मैं ने उस टोकरे की ओर

अविश्वास से देखा, फिर मैं एक ऐसी कुर्सी में बैठ गया, जो मिस गोगो से सर्वाधिक दूरी पर थी। उतनी दूरी रख कर मैं मिस गोगो पर मनोवैज्ञानिक असर डालना चाहता था कि अपने कर्मचारियों द्वारा इस प्रकार रहस्यमय बातें या काम करना मुझे रुचता नहीं है। मुझे पछतावा-सा हो रहा था कि मिस गोगो की 'फोर-स्क्वैयर' सिगरेट मैं ने पी क्यों।

मिस गोगो ने मुझ से कुछ कहने के लिए मुंह खोला ही था कि उसी समय काल-बेल बज उठी। मिस गोगो ने मुंह बन्द कर लिया। फिर वह उठ कर दरवाजे के पास पहुंचीं। उन्होंने दरवाजा खोला।

नाश्ता और कॉफी लिए हुए बैरे ने प्रवेश किया। मेज पर सब चीजें चुपचाप रख कर, बिना किसी से निगाह मिलाए, वह वापस लौट गया। मिस गोगो ने दरवाजा बन्द कर सिटकनी चढ़ा दी। उधर ही एयर-कण्डीशनर लगा हुआ था। सोफे पर वापस आ बैठने से पहले उन्होंने एयर-कण्डीशनर चालू कर दिया। मैं उपमा के साथ न्याय करने लगा था। मिस गोगो ओनियन-उतप्पम् खाने लगीं। मुझे हमेशा यही लगता है कि मेरे कर्मचारी चीजों को खाते हैं, चीजों के साथ न्याय नहीं करते। बात केवल मेरे कर्मचारियों की नहीं है। जो भी व्यक्ति किसी का कर्मचारी होगा—किसी का भी—वह चीजों को केवल खाएगा।

उपमा के साथ न्याय करते-करते मैं ने तेज निगाह से मिस गोगो की आंखों में देखा, ताकि बैरे द्वारा काल-बेल बजाई जाने से पहले वह जिस बात को कहते-कहते रह गई थीं, वह बात पुनः उन के होठों पर आ सके।

मुझ से निगाह मिलते ही वह बोलीं, "ग्यारह बजे रिंग- मास्टर मुझ से मिलने के लिए आने वाला है। काउण्टर पर कह दीजिएगा कि उसे रोका न जाए।"

"मैं नहीं कहूंगा। काउण्टर क्लर्क को फोन आप भी कर सकती

हैं।"

"एक ही बात है, फोन मैं कर लूंगी। रिंग-मास्टर अपने साथ छोटे-बड़े पत्थरों का एक टोकरा लाएगा—और एक पिंजड़ा भी।"

"क्या उस पिंजड़े में बन्द कर के, पत्थर मार-मार कर, इस अजगर का शिकार किया जाना है?" मैं ने अजगर के टोकरे की ओर उगली उठाते हुए व्यंग्य से पूछा।

"मैं ने यह अजगर शिकार के लिए नहीं, बल्कि पालन-पोषण के लिए मंगवाया है।"

"पालन-पोषण किस का? अजगर का या आप का?" मैं ने अपने बिगड़े हुए मूड को प्रदर्शित करना शुरू कर दिया था।

"दोनों का।"

"क्या मतलब?"

"मैं ने कहा था न कि मैं इस अजगर से वह काम लूंगी, जो कभी अलादीन ने अपने जिन से लिया होगा!"

"हां, आप ने कहा था, लेकिन मुझे यही लगा था कि आप नशे में हैं।"

"नशे में न थी, न हूं।" मिस गोगो ने उत्तर दिया, "शायद आप को बुरा लग रहा है कि अजगर मंगवाने से पहले मैं ने आप से मशविरा क्यों नहीं किया।"

"हां, आप ऐसा समझ सकती हैं।"

"आय'म सॉरी, बॉस! मैं आप से कोई छिपाव बरतना नहीं चाहती थी। रहस्य अचानक खोल कर मैं आप को केवल चकित करना चाहती थी। मिस्टर खोसला के साथ अगर आप स्वयं यहां न आए होते, तब भी, आज मैं आप को बता ही देती।"

"अब भी देर नहीं हुई है!" मेरा मूड वैसा ही बिगड़ा हुआ था, "इस अजगर से सम्बन्धित हर बात बता दीजिए। मैं जासूसी उपन्यासों जैसी उत्सुकता के बीच जीवित रहने का न तो आदी हूं, न हिमायती।"

"बॉस ! मेरा इरादा है इस अजगर को पहन कर कैबरे-डान्स करने का।" मिस गोगो ने कहा और निगाहें झुका लीं—जैसे कि कोई गलत बात मुंह से निकल गई हो। उस वक्त मैं उपमा का बहुत बड़ा कौर चबा रहा था। मिस गोगो का वाक्य सुनते ही मेरा जबड़ा रुक गया। जबड़े को पुनः गतिमान करते हुए मैं कई क्षणों तक आश्चर्य में डूबा रहा। मिस गोगो ने आंखें उठा कर मेरी ओर देखा। मैं चुप रहा। मिस गोगो ने मेरी राय जाननी चाही, "आप क्या सोचते हैं? क्या अजगर पहन कर डान्स करने का आइडिया जोरदार नहीं है?"

मैं चुप। दो घड़ी वह भी चुप। फिर उन्होंने इस तरह बोलना चालू कर दिया, जैसे मैं उन के सामने होऊं ही नहीं। वह अपने-आप से बातें कर रही थीं, "एक हफ्ते से कैबरे-हाल की दो-दो, तीन-तीन सीटें खाली रह जाती हैं। मेरी लोकप्रियता घट रही है। पहले मेरा हर शो हाउसफुल होता था। क्या अब मैं कम खूबसूरत रह गई हूं? मेरी थिरकनें, मेरी हिपिंग और ब्रेस्टिंग पहले से ज्यादा सेक्सी है। मैं पहले जैसी ही खूबसूरत हूं। बल्कि और ज्यादा खूबसूरत। मेरे नखरों की मार और ज्यादा सधी हुई है। लेकिन क्या बात है कि सीटें खाली रह जाती हैं? मुझे आप ही के शब्द याद आते हैं, बॉस, कि खिंचाव खूबसूरती में नहीं, नएपन में होता है। कैबरे-डान्स के मेरे शो अब नए नहीं रह गए हैं। मेरी स्टाइल रिपीट होने लगी है। मुझे हर हफ्ते नई स्टाइल निकालनी चाहिए, वरना लोग, बस, एक हफ्ते आ कर, फिर कभी नहीं आएंगे। मैं उखड़ जाऊंगी।"

"मिस गोगो!" मैं ने उपमा का आखिरी कौर निगलते हुए कहा, "आप का ओनियन-उतप्पम् ठण्डा हो रहा है।"

उन्होंने ओनियन-उतप्पम् खाना फिर से शुरू कर दिया। खाते-खाते बोलीं, "लेकिन एक शो—कोई एक शो ऐसा भी होना चाहिए, जो कई-कई महीनों तक रोज दिखाया जाता रहे। वह शो ऐसा धांसू होना चाहिए कि दुनिया डोल जाए। वह धांसू शो सब से आखीर में दिखाया जाए और उस से पहले के सब आइटम हर हफ्ते बदलते

रहें। केवल यह धांसू शो न बदले। शो ऐसा धांसू हो, इतना जबर्दस्त धांसू हो कि देखने वालों की ऐसी-की-तैसी हो जाए।"

"मिस गोगो, बम्बई में सीखे हुए इस 'धांसू' शब्द को आप अभी तक भूल नहीं पाई हैं!" मैं ने कहा, लेकिन यह बात उन्होंने जैसे सुनी ही नहीं। वह कहती रहीं, "अब आज धांसू शो की रूप-रेखा मैं ने फाइनल कर ली है। यह अजगर उसी सिलसिले में आया है। लोग चकरा जाएंगे, जब मैं अजगर पहन कर नाचूंगी। लोगों ने मुझे नग्न देखा है, लेकिन अजगर पहने हुए नहीं। नग्नता में आकर्षण कम, भोलापन अधिक होता है। लोग यहां भोलेपन के लिए नहीं, आकर्षण के लिए आते हैं। अजगर पहने हुए जब मैं उन के सामने इठलाऊंगी, तो इतनी आकर्षक लगूंगी कि वे अश-अश कर उठेंगे।"

"मुझे आप के साथ सहानुभूति है।" मैं ने अपने कप में कॉफी बना कर चीनी घोलते हुए कहा, "पूरी सहानुभूति। मैं आप का संरक्षक हूं।"

"जी हां, मुझे मालूम है।"

"फिर भी याद इस लिए दिला रहा हूं कि मेरे शब्द से यदि आप को बुरा लगने वाला हो, तो न लगे। आप की बातें सुन कर मुझे यही महसूस हुआ कि आप भयंकर रूप से नरवस हैं।"

"सवाल ही नहीं उठता! मैं और नरवस—हुंह!"

"मुझे अपनी पूरी बात कह तो लेने दीजिए। जो मुझे लग रहा है, वह गलत भी हो सकता है...लेकिन मैं इकसठ बरस का हूं और आप इक्कीस की। इस नाते, जब मैं बोल रहा होऊं, तब आप को चुप रहना चाहिए..." मैं बोला। मैं रुका। मिस गोगो चुप रहीं। मैं आगे बोला, "अवश्य आप नरवस हो गई हैं। कैबरे-हाल की दो-चार सीटें खाली रह जाने का यही एक मतलब नहीं है कि आप की लोकप्रियता कम हो रही है। शायद आप भूल रही हैं कि यह महीने का आखिरी हफ्ता है। सीटें इस लिए खाली हैं कि लोगों की जेबें खाली हैं। आप का यह सोचना भी गलत है कि आप के शो एक ही

सांचे में ढले हुए लगते हैं। वैसे तो···कैबरे-डान्स दिखाना ही, एक ही सांचे में ढल जाना है, लेकिन उस सांचे में भी आप नित नई अदाएं निकालती रहती हैं—और आप की हर अदा पर मुझे नाज है।"

"शुक्रिया, बॉस!"

"आप को ऐसी हचमचाई हुई मनस्थिति में देख कर मुझे दुःख होता है। आप को आत्मविश्वास के साथ अपने व्यवसाय में जुटे रहना चाहिए। यदि आप अपनी अधिकांश आय भाई पर खर्च न करके बैंक में जमा करें, तो, ज्यों-ज्यों बैलेन्स बढ़ेगा, आप का आत्म-विश्वास भी बढ़ता जाएगा।"

"यह राय आप कई बार दे चुके हैं। पहले तो नहीं, किन्तु अब मैं ने अवश्य इसे गम्भीरता से लिया है। मैं खूब कमाना चाहती हूं, बॉस! मैं कतई सहन नहीं कर सकती कि महीने के आखिरी हफ्ते में भी मेरे शो की सीटें खाली रह जाएं। लोगों को अपना पेट काट कर भी मेरे शो के लिए रुपए निकालने चाहिए—वरना कैबरे-डान्स का मजा ही कैसा!"

"एक और बात आप को याद रखनी चाहिए, मिस गोगो। कैबरे-डान्स के कार्यक्रम अब दिल्ली वालों के लिए नए नहीं रह गए हैं। बम्बई और कलकत्ता में जिस तरह ये रोजमर्रा में शामिल हैं, वही हाल उन का यहां दिल्ली में भी हो गया है। पहले केवल आप थीं, जिन के कैबरे राजधानी में होते थे। आज दस होटल हैं, जो कैबरे-डान्स दिखाते हैं। फिर क्या आश्चर्य, यदि एक-दो सीटें खाली रह जाएं।"

"सीटें मेरे कैबरे में क्यों खाली रहें?" मिस गोगो ने 'मेरे' शब्द पर जोर देते हुए कहा और स्वय के लिए कॉफी डाल कर पहली चुस्की ली, "दस जगहें और हैं, जहां सीटें खाली रह सकती हैं। मैं तो अपना हर शो हाउसफुल चाहती हूं—इकतीसवीं तारीख को भी।"

"मेरी हार्दिक शुभ कामनाएं और सहयोग आप के साथ हैं। इसी लिए मैं नहीं चाहता कि महत्वकांक्षा का जोर आप को एकदम डुबा दे।"

"आप को शायद अजगर वाला आइडिया पसन्द नहीं आया।"

"हां । यही बात है । कितना खर्च किया है आप ने इस अजगर के पीछे ?"

"कुल पांच सौ रुपए ।"

"ज्यादा है, बहुत ज्यादा है । मुझ से कहतीं तो मैं डेढ़-दो सौ में दिला देता । अव्वल तो मैं आप को अजगर जैसी चीज खरीदने देता ही नहीं ।" मैं ने समझाना शुरू किया, "हर सांप मूर्ख और क्रोधी होता है । अजगर भी एक सांप ही है । जब आप उसे पहन कर डान्स करेंगी, तब, हो सकता है कि वह आप को अपनी कुण्डली में कस कर मार डाले । सब की निगाहों के सामने ही, वह इतनी जल्दी आप की हड्डियां चूर-चूर कर देगा कि आप की चीख भी शायद··· पूरी न निकल पाएगी···"

"नहीं, बॉस, ऐसा कोई खतरा नहीं है । मैंने रिंग-मास्टर से मशविरा कर लिया है ।"

"रिंग-मास्टर आप को बहका रहा है ।"

"क्यों बहकाएगा ? इस में उसे क्या लाभ ?"

"मिस गोगो, अजगर जहरीला न सही, किन्तु मूर्ख अवश्य होता है । आप उसे वैसी ट्रेनिंग नहीं दे सकेंगी, जैसी देना चाहती होंगी ।"

"ट्रेनिंग मैं नहीं दूंगी । यह काम रिंग-मास्टर का है । मैं तो उसे पहन कर सिर्फ नाचूंगी ।"

"मेरा खयाल है, रिहर्सल में ही सफलता नहीं मिलेगी और यह आइडिया आप को छोड़ना पड़ेगा ।"

"तब की तब देखी जाएगी ।"

"मुझे समझ में नहीं आ रहा कि अजगर को आप पहनेंगी किस तरह ?"

"मैं ने मिस्टर खोसला से कहा था कि अजगर दस-ग्यारह फीट से लम्बा न हो, वरना उस का वजन मुझ से उठेगा नहीं ।"

"हूं···"

"और मैं ने उन से कहा था कि अजगर दस-ग्यारह फीट से छोटा

भी न हो, वरना वह ठीक से पहना नहीं जाएगा। मेरा विश्वास है कि उन्होंने सावधानी के साथ इन आदेशों का पालन किया है।"

"मिस गोगो, मुझे तो यही नहीं लगता कि टोकरे में अजगर लाया गया है। आप ने टोकरा खोल कर देखे बिना उन्हें पूरा पेमेण्ट क्यों कर दिया था ? मुमकिन है, टोकरे में सिर्फ..."

"...पानी या रूई भरी हुई हो ?" मिस गोगो ने मेरे शब्द मुझे ही लौटा दिए। मैं मुस्कराया। न मुस्कराता तो नाराज हो जाता। किसी भी व्यक्ति को समझाते वक्त नाराज नहीं होना चाहिए।

"आज मिस्टर खोसला ने आप को रम्मी नहीं कहा। वह लगातार आप को मिस बिन्द्रा कहते रहे।"

"हां, लेकिन वह असहज हो कर बोल रहे थे। मेरे नए रूप को अभी वह ठीक से स्वीकार नहीं पाए हैं। इसी लिए मैं ने उन के सामने शर्त रखी थी कि अजगर का टोकरा स्वयं अपने हाथों से उठा कर वह मेरे कमरे के भीतर तक पहुंचाएं। मैं चाहती थी कि यहां मेरा जो आदमकद फोटो लगा है, उसे वह देख लें। मैं ने उन्हें अपने कैबरे का एक पास भी दिया था। वह मेरे कार्यक्रम में आने को तैयार नहीं थे, लेकिन मैं ने उन्हें मजबूर किया।"

"अच्छाआ...तो वह मजबूरी में आए थे !"

"हां, और मजबूरी में ही उन्होंने सारा कार्यक्रम शुरू से अन्त तक देखा। यही मेरी शर्त थी, वरना उन्हें मैं पांच सौ का चैक न देती। उन्हें रुपयों की इतनी सख्त जरूरत थी कि मेरी दोनों शर्तें उन्होंने मानीं। अजगर का टोकरा वह भीतर तक ले आए, कैबरे का कार्यक्रम भी उन्होंने पूरा देखा—आंखें खुली रख कर ! और उस कार्यक्रम में मैं ने अपना अन्तिम वस्त्र शीघ्र ही निकाल दिया था। रोशनियां पर्याप्त मन्द नहीं हुई थीं और मैं ने परदे के पीछे छिपने में विशेष स्फूर्ति नहीं दिखाई थी।"

"आप का यह व्यवहार विचित्र है।"

"मैं ने ऐसा सिर्फ इस लिए किया कि मेरी नई जिन्दगी को मिस्टर खोसला…उर्फ भूतपूर्व बड़े भइया…न केवल देखें-समझें, बल्कि पचा भी लें।"

"आप ने उन्हें जरूरत-से-ज्यादा दिखा दिया। उन्हें अपच हो जाएगी!" मैं ने गम्भीरता से कहा, लेकिन मिस गोगो को लगा कि मैं ने कोई बढ़िया-सा मजाक किया है। वह हंसने लगीं। तब मैं भी हंसा और हंसता रहा।

हंसी रोक कर उन्होंने बताया, "मिस्टर खोसला की शादी बचपन में कर दी गई थी। जब मैं उन्हें बड़े भइया कहती थी, तभी से वह अपनी बीवी से खुश नहीं थे। सचमुच उन की बीवी इतनी फूहड़ थी कि रूह कांप जाए। पता नहीं, मिस्टर खोसला के मां-बाप ने उसे पसन्द कैसे कर लिया था…यहां दिल्ली में, मैं एक पिक्चर देख कर निकल रही थी कि सड़क पर घूमते मिस्टर खोसला एकाएक दिखाई दे गए। वह तो मुझे न पहचान पाए, लेकिन मैं ने पहचान लिया। मैं ने उन्हें कॉफी पिलाई। बीवी की फूहड़ता से छूटने के लिए वह घर से भाग आए हैं। यहां दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं। तब मैं ने खुद ही उन से कहा कि मैं आप को पांच सौ का एक ठेका दे सकती हूं। इस पर वह बहुत चौंके। उन्हें यकीन ही न हुआ कि मैं इतनी धनी हो गई होऊंगी। और जब मैं ने बताया कि मैं कैबरे-डान्सर हूं तो उन की आंखें भीग आईं। सुन रहे हैं, बॉस? और उन के हाथ कांपने लगे। मैं ने उन से कहा कि आइन्दा मैं आप को मिस्टर खोसला कह कर पुकारूंगी और आप मुझे मिस गोगो कहें।"

"लेकिन उन्होंने तो मिस बिन्द्रा कहा।" मैं बोला। इस 'खोसला परिचय-पुराण' से मेरा ऊबना शुरू हो गया था। इसी लिए मैं ने एक ऐसी बात दोहराई, जिसे मैं ने अभी थोड़ी देर पहले ही कहा था।

"अगर भविष्य में फिर कभी उन से मुलाकात हुई तो मैं

टोकूंगी कि मेरा नाम मिस गोगो है, न कि मिस बिन्द्रा। 'अलीबाबा' को मुद्रा-प्राप्ति की रसीदें भी मैं मिस गोगो के नाम से देती हूं।"

"जब रिंग-मास्टर का फोन आया, तब रिसीवर उठाते समय आप का चेहरा फक्-सा पड़ गया था। क्या सचमुच ऐसा हुआ था?" मैं बोला, 'मुमकिन है, मैं गलतफहमी का शिकार हुआ होऊं···"

"ओह···नहीं, गलतफहमी नहीं, सचमुच मेरा रंग उड़ गया होगा। मेरी धड़कन एकदम तेज हो गई थी।" मिस गोगो ने अपनी छाती पर हाथ रखते हुए कहा, "यही लगा था कि फोन उसी का है।"

"किस का?"

"वही, जिसे अपमानित करने के लिए मैं इतनी बेताब हूं!"

"याने—आप का प्रेमी···?"

"भूतपूर्व! कल उस ने मेरा कैबरे-डान्स देखा। आज वह फोन करेगा—जरूर करेगा। किए बिना वह रह नहीं सकता। सांप के टुकड़े कर दो, तब भी, हर टुकड़ा काफी देर तक ऐंठता रहता है। प्यार भी सांप की तरह है। उतने सारे पुरुषों की मौजूदगी में मुझे कपड़ों से बाहर निकलते देख कर उस का दिमाग ऐंठ गया होगा। कम्बख्त मुझे फोन जरूर करेगा।"

"क्या आप उसे फोन पर ही अपमानित करेंगी?"

"नहीं, मैं उसे बुलाऊंगी।"

"कहां?"

यहीं—अपने कमरे में। टेप-रिकार्डर आन कर के मैं उस का अपमान करूंगी। जो मैं बोलूंगी और जो वह बोलेगा—सब टेप में भर जाएगा! फिर मैं उसे बाकायदा बता दूंगी कि सारी आवाजें मैं ने टेप कर ली हैं। उस के होश फाख्ता हो जाएंगे। वह सिर पर पैर रख कर भागेगा—और मैं हंसूंगी, खिलखिलाऊंगी। फिर··· जब भी मेरे आसपास उदासी घिरेगी, मैं उसी टेप को चला कर सुनूंगी। कितना मज़ा आएगा—हाय!" मिस गोगो 'हाय' बोली

नहीं कि झटके के साथ उठ खड़ा हुइ ।

"मिस गोगो, बीती बिसार कर आगे की सुध लेने में ही बुद्धिमानी है।" मैं ने कहा, "उसे अपमानित करने के बाद आप का मानसिक तनाव बढ़ेगा—घटेगा नहीं। उस टेप को आप जितनी बार सुनेंगी, पुरानी यादें आप को झकझोरेंगी। इस से लाभ क्या है ? मानें तो, उस का फोन आने पर आप यही कहें कि आप कोई और हैं—मिस रमा बिन्द्रा नहीं। चेहरे बिल्कुल एक जैसे होते हुए भी, कोई लड़की, कोई और ही लड़की भी हो सकती है। भूतपूर्व प्रेमी से मुलाकात करना अब आप के लिए अच्छा नहीं रहेगा। न यह बात उस के ही हित में होगी। हो सकता है, अपमानित होने पर वह बदला लेना चाहे।"

"तो मैं उसे फिर से अपमानित करूंगी। जितनी बार वह बदला लेगा, उतनी वार मैं वार करती ही जाऊंगी। मैं उसे बेदम कर दूंगी और देखूंगी कि आखिरी वार मेरा हो, न कि उस का।" मिस गोगो ने स्फूर्ति के साथ पलट कर मुझे घूरते हुए कहा, "यह मेरा निजी मामला है, बॉस !"

"क्यों नहीं ! अगर मैं कहूं कि इस निजी मामले को आप होटल 'अलीबाबा' के इस भव्य कमरे में न निबटा कर, बाहर किसी बगीचे-वगीचे में निबटाइए—तो कैसा रहेगा ?"

"आप नहीं कह सकते। यह कमरा भी मेरा निजी है।"

"आप ने, मिस गोगो, इस मूड में मेरे साथ कभी बातें नहीं कीं। आज आप···"

"आप ही ने मजबूर किया, बॉस !"

"मैं जब चाहूं, आप को निकाल सकता हूं, आप के इस निजी कमरे को सार्वजनिक बना सकता हूं।" मुझे न चाहते हुए भी तैश आ गया था। मिस गोगो का चेहरा तमतमा आया। उन के सुन्दर गुलाबी होंठ भिंच गए। मेरी आंखों में आंखें डाल कर वह बोलीं, "आप जब चाहें, मुझे नहीं निकाल सकते। कम-से-कम एक महीने

का नोटिस आप को देना होगा।"

"नोटिस क्यों दूंगा ?" मैं ने त्यौरियां चढा लीं, "महीने भर में जितना आप औसतन कमाती हैं, उतना नकद दे कर मैं छुट्टी कर दूंगा।"

"क्या यह इतना आसान है ? क्या मेरे जैसी डान्सर आप को चुटकियों में मिल जाएगी ?"

"आप को भी होटल 'अलीबाबा' जैसा होटल..."

"यह आप की गलतफहमी है...मैं जिस दिन यहां से छूटूंगी, उसी दिन सवाए दामों पर कहीं और..."

"मैं सोचता हूं, मिस गोगो, कि हमें इस तरह बातें करनी ही नहीं चाहिए। इतने बड़े झगड़े के लिए कारण भी इतना बड़ा होना चाहिए कि..."

"आप ने, बॉस, मेरे निजी मामले में दखल देना चाहा।"

"मेरा मतलब केवल इतना था कि होटल 'अलीबाबा' के कमरे में रहते हुए आप किसी को इतना अपमानित न कर दें कि वह 'अलीबाबा' से दुश्मनी ही मोल ले ले—या ताबड़तोड़ कोई ऐसा हंगामा करे कि बदनामी फैल जाए।"

"वह कायर है।" मिस गोगो ने ऐलान किया, "हंगामा करने के लिए जिगर चाहिए।"

"वह कायर नहीं, लम्पट है।" मैं बोला, "आप और मैं, दोनों के ही पास उस के जैसा जिगर नहीं हो सकता।"

"आप के पास हो न हो, मेरे पास तो है जिगर !" मिस गोगो ने फिर अपनी छाती पर हाथ रखा। मैं मुस्कराए बिना न रह सका। बोला, "इसी लिए रिसीवर उठाने से पहले आप का चेहरा फक पड़ गया था न ?"

मिस गोगो की आंखें सिकुड़ आईं। फिर वे यथावत होकर चमकने लगीं। मिस गोगो ने दार्शनिकों जैसे लहजे में कहा, "जब कोई कांपता है, तो केवल भय से नहीं, गुस्से से भी कांपता है।

प्यार और नफरत से भी लोग कांपने लगते हैं। मेरा चेहरा फक पड़ने का भी यही एक मतलब नहीं कि मैं डर गई थी। मैं तो जोश में आ गई थी, जोश में! मेरी धड़कन जोश के ही कारण तेज हुई थी और चेहरे का रंग उड़ा था। आप मुझे समझते क्या हैं? क्या मैं सरेआम कपड़े नहीं उतारती? इस के लिए जिगर चाहिए।"

"जिगर भी तरह-तरह के होते हैं।" कहते-कहते मैं उठ पड़ा। गाउन की जेबों में दोनों हाथ डाल कर मैंने कहा, "नाम क्या है आप के प्रेमी का?"

"सुअर!"

"दिलचस्प नाम है!"

"उस के कई नाम हैं। गधा। हरामी। कुत्ता। शिखण्डी!"

"और काम?"

"साला वकालात का इम्तहान दे चुका था। वकील ही होगा—और क्या!"

मिस गोगो के इस उत्तर ने मुझे सावधान कर दिया। यदि किसी पहुंचे हुए वकील से 'अलीबाबा' की दुश्मनी हो जाए तो ये लोग नाकों चने चबवा देते हैं। वकीलों, जजों, पुलिस वालों, पत्रकारों— इन सब से दूर की नमस्ते ही अच्छी। 'अलीबाबा' ही नहीं, ऐसा कोई भी होटल, जहां कैबरे दिखाए जाते हैं, किसी भी क्षण कानून की गिरफ्त में आ सकता है। 'आप अश्लील कैबरे दिखाते हैं!'— यह बना बनाया आरोप इन होटलों पर चुटकियों में चस्पा किया जा सकता है। आरोप लगाने वाले से जा कर कोई पूछे तो सही कि भलेमानस! कैबरे-डान्स में भी कहीं कुछ श्लील या अश्लील होता है? कैबरे याने कैबरे। इस में जो एक को श्लील लगेगा, वही दूसरे को अश्लील···कानून के लचीलेपन और रुचियों की भिन्नता के कारण अश्लील को भी श्लील या श्लील को अश्लील साबित कर देना कौन-सा मुश्किल काम है। लेकिन, ठीक है, अदालत में आप साबित कर देंगे कि अश्लील डांस दिखाने का जो आरोप

आप पर लगाया गया है, वह नाजायज है; सवाल यह नहीं कि अदालत में आप जीतते हैं या हारते हैं—सवाल तो यह है कि अदालत में आप को जाना पड़ता है या नहीं। ये अदालतें तो चक्की हैं—यहां घुन भी पिसता है और गेहूं भी। थानों और अदालतों से मुझे बहुत डर लगता है। शत-प्रतिशत विश्वास हो कि जीत मेरी ही होगी, तब भी, जहां तक बन पड़ता है, मैं थानों और अदालतों से दूर रहना चाहता हूं। मुझे एयर-कण्डीशण्ड कमरे, आराम और स्मिता के नखरे पसन्द हैं—मैं क्यों थानों और अदालतों के चक्कर लगाऊं?

लेकिन मिस गोगो यह क्या ठाने हुई है? उन्होंने जिस वकील को अपमानित करने का निश्चय किया है, यदि वह कोई पहुंचा हुआ महात्मा है, तब तो हो चुका कल्याण।

"वकील, मिस गोगो?" मैं ने आंखें झपकाईं।

"जी हां, और वह हमेशा हत्यारों के ही केस हाथ में लेता होगा, हर बेकसूर को वह फांसी पर चढ़वाता होगा। नरक का कीड़ा साला!"

"मिस गोगो···क्या ऐसे आदमी के साथ छेड़खानी करना···"

"बॉस!" मिस गोगो ने इस बार ऐसी तल्खी के साथ कहा कि मैं सुनता रह गया, "मैं नहीं जानती कि वह बदमाश दिल्ली में रहने लगा है या केवल सैर करने के लिए इधर आया है। अगर वह दिल्ली में ही है, तो मैं यह भी नहीं जानती कि उस का पता या फोन नम्बर क्या है। मुमकिन है, आइन्दा उसे मैं कभी देख भी न सकूं। सिर्फ एक इत्तफाक से कल वह मेरा शो देखने आ गया, वरना उस दोगले सुअर को मैं भूल ही गई थी। आज अगर उस हरामजादे ने फोन नहीं किया तो मैं उसे खोजूंगी कैसे? यह केवल एक किस्मत की ही बात है कि उस के अपमान का मौका मुझे मिले या न मिले। आप चाहते हैं कि मौका मैं चूक जाऊं। क्यों चूक जाऊं?"

"मिस गोगो···"

"नहीं, बॉस, अगर उस पाजी ने फोन किया, यहां वह आ कर

मुझ से मिला, तो उस की इज्जत उतारने से मैं कतई नहीं चूकूंगी। उसी कीड़े ने मुझे धोखा दिया और मैं तैश में आकर कैबरे-डान्सर बन गई। उसी की गद्दारी ने मुझे इन्सान मिटा कर नुमाइश बना दिया।"

मैं हंस कर बोला, "आप नुमाइश थोड़े हैं, आप तो मन्दिर हैं।"

"हां, एक ऐसा मन्दिर, जहां लोग मोरियों के दर्शन करने आते हैं।" मिस गोगो ने कहा और मैं दहल गया। मुझे फौरन पता लगा कि मिस गोगो को पूरा अधिकार है उस वकील के बच्चे का अपमान करने का। ठीक है, हो जाए जो होना हो। बाद की बाद में देखी जाएगी। लेकिन अपनी इस स्वीकृति को मैं ने चेहरे पर उभरने न दिया। स्वर को एकदम बुझा देते हुए मैं बोला, "मेरी एक हार्दिक इच्छा है।"

सुन कर मिस गोगो ने अपनी उत्सुक आंखें मेरी ओर स्थिर कर दीं।

"क्या आप ने अपने प्रेमी को···"

"प्रेमी नहीं, भूतपूर्व प्रेमी!"

"भूतपूर्व प्रेमी को अपमानित करने का कोई तरीका तो आपने सोच रखा होगा?"

"नहीं! जब वह सामने आएगा, तब, जैसे सूझेगा, वैसे अपमान करूंगी।"

"ओह!" मैं विवशता और दुविधा से इतना ही बोल सका।

"शायद आप को शक है कि मैं उस का जरूरत से ज्यादा अपमान कर दूंगी।"

"नहीं, जो कहानी आपने बयान की, उस से तो लगता है कि ज्यादा-से-ज्यादा अपमान कर के भी उस का पूरा अपमान नहीं किया जा सकेगा।"

"थैंक्यू, बॉस! थैंक्यू वेरी मच!"

"लेकिन मुझे एक शक जरूर है। कहीं ऐसा न हो कि अपमान

के बाद वह जोश में आ कर आप को कोई शारीरिक चोट पहुंचाना चाहे। संरक्षक होने के नाते मैं चाहूंगा कि जब आप उसे अपमानित करें, तब मैं मौजूद होऊं।"

"मुझे क्या एतराज ?" मिस गोगो ने झट से 'हां' कह दी—"बल्कि इस से तो मामला और भी सनसनीखेज हो जाएगा। उसे अकेले में अपमानित करने से कहीं बेहतर है किसी के सामने अपमानित करना।"

"मैं चलता हूं। अभी मैं नहाया भी नहीं। अपने भूतपूर्व प्रेमी के साथ आप जो भी तय करें, मुझे फोन पर बता दीजिएगा।"

"जरूर।"

"क्या अब भी आप उस का नाम मुझ से छिपाना चाहेंगी ?"

"चन्दन बाली।"

"अब मेरी भी मनोकामना है कि उस का फोन जरूर आए।" जब मैं ने यह कहा, मैं झूठ नहीं बोल रहा था। मिस गोगो मुस्कराई। ⊙ अपने बाथ-रूम में आकर मैं ने फव्वारा चला दिया। नहाते समय मुझे कुछ-न-कुछ गुनगुनाने की आदत है। मैं ने गुनगुनाने की चेष्टा की। असफल रहा। मुझे अजगर याद आ गया था। टोकरे में बन्द अजगर क्या दम घुटने से मर नहीं गया होगा ? 'नहीं तो !' मैं ने स्वयं को सूचित किया, 'टोकरे की दरारों से हवा आती-जाती रहती है।'

फिर मैं आश्चर्य करने लगा कि टोकरे में बन्द होने के बाद सांप स्वयं को निर्बल क्यों मान लेते हैं। यदि वे चाहें तो फन इतनी जोर से उठाएं कि टोकरे का ढक्कन दूर जा पड़े, लेकिन वे करते कभी नहीं। सांप तो फिर भी छोटे होते हैं, इतने विशालकाय होने के बावजूद ये अजगर भी ऐसा नहीं करते !

कैसी दिखाई देंगी मिस गोगो, जब वह अजगर पहन कर नाचेंगी ? फव्वारा बन्द कर मैं अपने तन पर साबुन रगड़ने लगा। मेरा तन ! मिस गोगो का तन ! मेरे तन का प्रदर्शन-मूल्य है ही

क्या? लेकिन मिस गोगो के तन का प्रदर्शन-मूल्य? वेश्याएं अपने तन का भोग-मूल्य वसूल करती हैं। कैबरे-डान्सर वसूलती हैं प्रदर्शन-मूल्य। मिस गोगो प्रति शो सत्तर-पचहत्तर कमा ही लेती हैं। हर रात दो शो! आरकेस्ट्रा के खर्च का एक अंश कमाई में से कटने के बाद भी, माह के ढाई-तीन हजार कोई कम तो नहीं होते! लेकिन यह आकर्षक आय कितने वर्षों तक? ओह, कितने कम वर्षों तक! मिस गोगो ने यदि बैंक में एक अच्छी राशि अभी से जोड़नी शुरू न कर दी तो वाकई उन के जैसी गधी सारी दुनिया में नहीं मिलेगी।

उन के लिए गधी विशेषण कल्पना में आते ही मैं मुस्करा दिया। साबुन और कितना रगड़ता? नहाना एक आनन्ददायक अनुभव होते हुए भी, मिस गोगो की तरह इस काम में घण्टा भर लगाना मुझे गैर-जरूरी लगता है। मैं फव्वारा चला कर अपने तन को झाग में से बाहर निकालने लगा। आइडिया! एकदम नया आइडिया! कैबरे का एकाध आइटम ऐसा भी रखा जा सकता है, जिस में मिस गोगो झाग में सन कर मंच पर आएं। झाग इतना गाढ़ा हो कि उन के तन-मन्दिर की कोई दीवार न दिखाई दे। यही लगे कि झाग का एक लम्बा पुंज ही कैबरे-मंच पर आ गया है। फिर रोशनियां रंग बदलें, संगीत मूड बदले—और सहसा छत में छिपा कोई फव्वारा चालू हो जाए। झाग बहने लगें और मन्दिर बाहर आ जाए—भीगा-भीगा, जवान मन्दिर, मुस्कराता और इठलाता हुआ! वाकई मारू आइडिया! मिस गोगो की शब्दावली में कहें तो—धांसू आइडिया! फव्वारे से गिरते पानी को, मंच पर से निकासी देने का, कोई उपाय सोचना होगा। निकासी इस तरह से हो कि पता ही न चले, निकासी हो रही हो; वरना डीसेन्सी नहीं रह जाएगी। हुं···सोचूंगा। सोचकर रहूंगा।

बम्बई के तीन नए होटलों में मेरे शेयर हैं। 'हरम', 'शबाब' और 'हूर'—ये तीनों एक तरह से मेरी ही सम्पत्ति हैं। अब, इस उम्र में मुझे बम्बई का मौसम माफिक नहीं आता। वहां पहुंचा नहीं

कि चार दिन में तेज जुखाम और पांच दिन में घोर अपच। हमेशा कोशिश करता हूं कि जब भी वहां जाऊं, तीन दिनों में ही लौट आऊं। इसी कारण मैं ने 'अलीबाबा' का निर्माण दिल्ली में किया— 'अलीबाबा', जो शत प्रतिशत मेरा है। मिस गोगो अपने कैबरे पहले बम्बई में दिखाती थीं। 'हरम', 'शबाब' और 'हूर', तीनों में समय-समय पर उनके तबादले होते रहते। 'अलीबाबा' दिल्ली में खुला और उन्हें मैं दिल्ली ले आया। मैं निस्संदेह कह सकता हूं कि अब तक मैं जितनी कैबरे-डान्सरों के परिचय में आया हूं, मिस गोगो सर्वश्रेष्ठ हैं।

मैं निस्संदेह यह भी कह सकता हूं कि दिल्ली में कैबरे-डान्स दिखाने की परम्परा मैं ने शुरू की है। आशय यह नहीं कि 'इस तरह के' डान्स दिल्ली में पहले कभी हुए ही नहीं। छोटे-बड़े हर तरह के होटलों में हर तरह के काम किए जाते ही हैं। केवल डान्स की क्या बात, होटल जैसी जगहों में क्या-क्या नहीं होता रहता! लेकिन 'जो-जो' होता रहता है, उस के विज्ञापन अखबारों में नहीं छपते। मैं ही हूं वह पहला व्यक्ति, जिस ने कैबरे-डान्स की कामोत्तेजक भंगिमाओं के हाफ-टोन ब्लाक बनवा कर बड़े-से-बड़े अखबारों में छपवाए। बम्बई में यह मामूली बात है। वहां का हर अखबार ऐसे विज्ञापन प्रकाशित करता है। दिल्ली में ऐसा नहीं था। जनसंघ के प्रभाव के कारण दिल्ली का वातावरण बड़ा सात्विक है। मिनि और माइक्रो-मिनि स्कर्ट यहां शायद ही कभी नजर आते हैं। विदेशी फिल्मों के अधिकांश इश्तहारों में यहां उन-उन हिस्सों पर पुताई कर दी जाती है, जहां-जहां विदेशी अभिनेत्रियां जरूरत-से-ज्यादा वक्ष अथवा जांघ-प्रदर्शन कर रही होती हैं। पुताई के बाद ही ऐसे इश्तहार जनता के बीच लाए जाते हैं। पुताई के कारण उन इश्तहारों का आकर्षण घटता है या बढ़ जाता है, मैं उस में उलझना नहीं चाहता। यहां मुझे बस इतना ही कहना है कि दिल्ली में बम्बई की तुलना में नंगई कम है और खूबसूरती

ज्यादा।

किसी भी चीज का बाकायदा विज्ञापन छपने का अर्थ यही तो है न कि वह चीज आम जनता को उपलब्ध है ? बड़े-बड़े होटलों में, ढकी-ढकी शैली में, पहले जो कैबरे-डान्स हुआ करते होंगे, वे आम जनता को उपलब्ध नहीं थे। अधिकांश जनता को तो यही पता नहीं था कि ऐसे डान्स भी दुनिया में हो सकते हैं या होते हैं। पता चल जाए, तो भी, बड़े होटलों के वे कैबरे-डान्स बहुत महंगे थे। मैं ने कौन-सा बड़ा अपराध कर डाला, यदि मेरे कारण वे कैबरे-डान्स काफी कम दरों पर जनता को उपलब्ध हो गए ? पहले एक व्यक्ति कैबरे-डान्स देखने जाता था तो पचास-साठ तो उस की जेब से निकल ही जाते थे। अब 'अलीबाबा' केवल पच्चीस रुपए में कैबरे के गरमा-गरम आइटम पेश करता है। कैबरे के दौरान पच्चीस तक की खाने-पीने की चीजें मुफ्त में दी जाती हैं। मेहमान खाते-पीते हैं, आंखें सेंकते हैं। यदि बिल पच्चीस से ज्यादा बन जाए, तो उतनी राशि अलग से ले ली जाती है। वाकई पच्चीस रुपयों तक की चीजें 'अलीबाबा' की ओर से मुफ्त ही मिलती हैं, भले ही उनके दाम अनेक गुने रखे गए हों। दाम चीज के तो हैं नहीं। दाम तो हैं वातावरण के। जो कोकाकोला सड़क पर आप पैंतालीस पैसों में पीते हैं, वही कोकाकाला 'अलीबाबा' के कैबरे-कक्ष में तीन रुपयों में उपलब्ध है। कैबरे-कक्ष का सनसनाता वातावरण अपनी नवीनता कभी न खोए, इस के लिए हमें क्या कम खर्च करना पड़ता है ? पैंतालीस पैसों की चीज तीन रुपयों में देकर असल में हम अपना खर्च ही किसी तरह निकालते हैं। सच पूछें तो कैबरे-डान्स की दरें घटा कर मैं ने एकदम आधी कर दी हैं। महंगाई के इस जमाने में जब हर चीज के दाम ऊपर जा रहे हैं, तब कैबरे के दाम न केवल नीचे जाना, बल्कि धमाके के साथ आधे रह जाना—यह एक चमत्कार ही तो कहा जाएगा !

'अलीबाबा' के रेट्स तो फिर भी कुछ ऊंचे हैं। आइटम भी

हमारे ही ज्यादा सनसनीखेज हैं। हमारी देखादेखी, दिल्ली के जो अन्य अनेक होटल भी कैबरे-डान्स के कार्यक्रम रखने लगे हैं, उन में से कइयों के शो केवल दस रुपयों में देखे जा सकते हैं। लोगों को मैं इतने ज्यादा गरीब नहीं मानता कि वे दस या पच्चीस रुपए कैबरे देखने के लिए यदा-कदा अदा न कर सकें। कैबरे के विज्ञापन मैं ने अखबारों तक पहुंचाए और कैबरे अपने-आप जनता तक पहुंच गया।

दो सालों से मिस गोगो 'अलीबाबा' में नाच रही हैं। अभी तक उन की लोकप्रियता इतनी नहीं घटी कि उन के तबादले की जरूरत महसूस हो। बम्बई से उन को निरन्तर बुलावे आ रहे हैं, किन्तु मैं उन्हें भेजने को तैयार नहीं। अभी थोड़ी देर पहले, मुझ से बहस के दौरान, मिस गोगो ने जब धमकी दी थी कि यहां से छुट्टी होते ही उन्हें फौरन कहीं और काम मिल जाएगा, तब निश्चय ही वह गलत नहीं थीं। इसी लिए तो मैं ने नरम रुख अपना लिया था।

एक बार मिस गोगो ने मुझ से कहा था, "मुझे शेर की आवाज का टेप चाहिए।"

मैं ने फौरन एक कर्मचारी, टेप-रिकार्डर के साथ, चिड़ियाघर की ओर रवाना किया था। शाम तक वह शेर के दहाड़ने की अनेक आवाजें टेप कर लाया। उन में से मिस गोगो ने एक आवाज सुनी। वह आवाज दूसरे टेप पर ट्रान्सफर कर ली गई। जानते हैं उस आवाज का मिस गोगो ने इस्तेमाल किस तरह किया?

कैबरे अपने चरम पर है। रोशनियां मन्द से मन्दतर होती जा रही हैं। मिस गोगो सहसा इठला कर अपना अन्तिम वस्त्र भी निकाल फेंकती हैं। फिर उन्हें बड़ी शर्म लगती है···वह परदे की तरफ दौड़ती हैं। दौड़ते समय उन का अंग-अंग उछलता है। रोशनी का धीमापन उस उछाल को और भी मजेदार बना देता है। मिस गोगो परदे के पास पहुंच चुकी हैं। वह परदे के पीछे होने ही वाली हैं। दर्शकों ने सोच लिया है कि चली गई मिस गोगो—कि अचा-

नक शेर की दहाड़ सुनाई पड़ती है। इतने जोर से कि दर्शक सन्नाटे में आ जाते हैं। वह दहाड़ उसी परदे की ओट से सुनाई पड़ी है, जिस के पीछे मिस गोगो छिपना चाह रही थीं। दहाड़ सुनते ही मिस गोगो के होश फाख्ता! एक धीमे चीत्कार के साथ वह मंच पर वापस आ जाती हैं। दर्शकों के वारे-न्यारे! कहां तो उन्होंने सोचा था कि गईं मिस गोगो, चली गईं मिस गोगो—और कहां मिस गोगो वापस आ गई हैं, बुरी तरह डरी हुई हैं, समझ नहीं पा रहीं कि अब क्या करें। जो वस्त्र उन्होंने मंच पर फेंक दिए थे, उन्हीं को उठा कर वह अपने तन की एक-दो इंच जगहें छिपाना चाहती हैं कि—फिर से वही दहाड़! मिस गोगों के हाथ से वस्त्र छूट जाते हैं। मिस गोगो पुनः भागती हैं—विपरीत दिशा के परदे की ओर। थैले फिर हिलते हैं, दर्शकों के फिर वारे-न्यारे!! 'अलीबाबा' का यह आइटम चार महीनों तक पुराना हुआ ही नहीं।

अजगर!

सिर्फ अजगर पहन कर नाचने का आइटम कितने महीनों तक पुराना नहीं होगा?

नहीं, इस खतरनाक आइटम को मैं प्रस्तुत होने नहीं दूंगा। फिलहाल मुझे यही आशा रखनी चाहिए कि मिस गोगो का उत्साह रिहर्सल में ही टें बोल जाएगा।

'द ग्रेट इण्डियन सरकस' का रिंग-मास्टर आएगा रिहर्सल करवाने। काउण्टर-क्लर्क को मैं ने आदेश दे ही दिया है कि मिस गोगो से मिल कर रिंग-मास्टर जब वापस जाने लगे, तब उस से कहा जाए कि 'साहब' आप से मिलना चाहते हैं। रिंग-मास्टर अपने साथ एक पिंजड़ा और पत्थरों का एक टोकरा लाने वाला है। अब मैं समझ सकता हूं कि टोकरा भर पत्थरों का क्या मतलब है। पिंजड़ा तो हुआ अजगर को बन्द करने के लिए। पत्थर बिछाए जाएंगे पिंजड़े के फर्श पर। जिस जाति का अजगर खोसला द्वारा लाया गया है, उसे पथरीली सतह पर फैलना ज्यादा अच्छा लगता

होगा।

समझना मुश्किल नहीं कि इन्द्र खोसला और रिंग-मास्टर की मुलाकातें पहले हो चुकी हैं। अजगर सरकस-कम्पनी से ही खरीदा गया होगा। मैं नहा कर तन पोंछ चुका था। कमरे में लौट कर मैं ने पूरे तन पर पाउडर छिड़का। भीतरी कपड़े पहने, फिर ऊपरी। इस दौरान मैं निरन्तर फोन की ओर देख रहा था। फोन बजा। मैं ने रिसीवर उठाया। काउण्टर-क्लर्क ने मुझे सूचित किया कि रिंग-मास्टर पिंजड़े और टोकरे भर पत्थरों के साथ ऊपर जा चुका है। इस सूचना के लिए क्लर्क को धन्यवाद देकर मैं ने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

रिसीवर रखा-न-रखा कि फोन फिर बजा। मैं ने रिसीवर उठाया, "हैलो?"

दूसरे छोर से कैनेडियन सुन्दरी बोल रही थी। उस को और जर्मन सुन्दरे को अंग्रेजी खूब आती है। 'अलीबाबा' के हर कमरे में फोन है। काउण्टर-क्लर्क टेलीफोन-आपरेटर का भी काम करता है। जो फोन होटल के बाहर से आते हैं, वे पहले काउण्टर-क्लर्क द्वारा ही रिसीव किए जाते हैं। फिर वह उन्हें वांछित एक्स्टेन्शन से जोड़ देता है। रहे वे फोन, जो होटल के भीतर-ही-भीतर किए जाते हैं। ऐसी बातचीत के लिए काउण्टर-क्लक को बीच में लाना जरूरी नहीं। कैनेडियन सुन्दरी ने मेरा फोन नम्बर ज्ञात कर लिया होगा— मुश्किल क्या है? कैनेडियन सुन्दरी और जर्मन सुन्दरे, दोनों ने मुझ से थोडी-थोड़ी बात की। दोनों ने एक दूसरे के शब्द लगभग दोहरा दिए कि हम आप से एकान्त में मिलना चाहते हैं, फौरन।

"किस सिलसिले में बातचीत करनी है आप को?" मैं ने पूछा।

"यह हम मुलाकात होने पर ही बताएंगे।"

"कितने मिनट की मुलाकात चाहते हैं आप?"

"दस मिनट से ज्यादा नहीं लगेंगे।"

"अभी मेरे पास वक्त है। क्या आप अभी आ सकते हैं?"

प्राय: दो मिनट बाद जब मेरे कमरे की काल-बेल बजी तो मैं समझ गया कि वे आ पहुंचे हैं। दरवाजा मैं ने ही खोला। तकलीफ देने के लिए क्षमायाचना के साथ वे दोनों भीतर आ गए। इस घोषणा के साथ कि मुझे तकलीफ हुई ही नहीं है, मैं ने दरवाजा बन्द कर दिया, फिर पलट कर पूछा, "कहिए ?"

पूछने के साथ मैं ने उन्हें सोफे पर बैठने का इशारा कर दिया था। वे बैठे। आज वे बहुत धुले-धुले, स्वच्छ लग रहे थे, किन्तु निश्चय ही वे उत्साह में नहीं थे। मैं उन के सामने बैठ गया। युवक ने अपनी दोनों कोहनियां घुटनों पर रख ली थीं, जिस से उस की कमर बहुत मुड़ गई थी। वह मुझ से आंख नहीं मिला रहा था। इस के विपरीत, युवती तन कर बैठी थी। युवती नहीं, सुन्दरी। युवक नहीं, सुन्दरा। सुन्दरे के बैठने की मुद्रा से मैं समझ गया कि सुन्दरे में अपराध-भावना है। सुन्दरी तन कर बैठी है, उस में अपराध-भावना नहीं। शायद उस के पास किसी उलझन का हल है। मैं ने जब सुन्दरी की आंखों में देखा तो उस ने जल्दी-जल्दी पलकें झपकाईं। फिर वह मुस्कराने लगी। निगाहें उस ने मेरी आंखों पर से हटाई नहीं। मैं ने आशा रखी थी कि वह अभी बोलेगी। वह न बोली। न वह, न सुन्दरा। इस पर मैं ने कहा, "बातचीत किस सिलसिले में करनी है, जानने को मैं उत्सुक हूं।"

सुन्दरा उसी तरह कमर मोड़ कर चुप बैठा रहा। सुन्दरी ने कहा, "हमें···धन की कमी पड़ गई है।"

"मुझे खेद हुआ सुन कर।" मैं ने कहा। सुन्दरी के पहले ही वाक्य ने मुझे बोर कर दिया था।

"हम तंगी के इस शिकंजे से छूटना चाहते हैं।"

"बड़ी खुशी की बात है।"

"आप का सहयोग चाहिए।"

"कहिए।"

"पूरे दो दिनों की बहस के बाद हम ने एक योजना बनाई है।"

सुन्दरी ने मुस्कान बिखेरी और सुन्दरे की तरफ देखते हुए कहा, "मेरा साथी इस योजना से सहमत तो नहीं है, लेकिन···सिवा इस के हमारे पास कोई चारा भी नहीं। मैं सोचता हूं, अब मैं स्वयं को प्रस्तुत कर दूं···"

'जी, मैं आप का मतलब समझा नहीं।'

"आप के यहां हम ने तीन बार कैबरे देखे हैं। वे वाकई कलात्मक थे। बधाई।"

"शुक्रिया।" मैं ने कैनेडियन सुन्दरी को अपनी एक मुस्कान दी।

"क्या आप मेरा कोई स्पेशल शो नहीं रख सकते?" सुन्दरी ने बिना झिझके पूछा। मैं चुप रहा।

"यदि आप चाहें तो मेरा साथी भी उस शो में भाग ले सकता ले सकता है।" सुन्दरी ने सुन्दरे पर फिर एक बंकिम निगाह डाली, "कैबरे में औरत के साथ मर्द भी हो तो सनसनी बढ़ जाएगी। जोड़ी का कोई कैबरे दिल्ली में नहीं होता—मैं ने सारे विज्ञापन चैक कर लिए हैं। मैं यकीन दिलाती हूं कि लोग टूट पड़ेंगे।"

मैं चुप रहा। सुन्दरी का प्रस्ताव कम आकर्षक न होते हुए भी मैं कुछ न बोल सका। सुन्दरी का तन कैबरे के योग्य है या नहीं, मैं ने निमिष मात्र में परख लिया था। तन था योग्य—बहुत योग्य। स्मिता का तन कैबरे के योग्य नहीं, लेकिन यह कैनेडियन सुन्दरी वाकई कमाल कर सकती है। सुन्दरा अभी तक चुप बैठा था, लेकिन अपनी कमर उस ने सीधी कर ली थी। मैं ने उस से आंख मिलानी चाही। वह फिर नाचे देख गया।

"आप की चुप्पी मुझे आशंकित करती है।" सुन्दरी मुझ से बोली, "लेकिन मेरा खयाल है कि आप हमें निराश नहीं करेंगे। हम विदेश से आए हैं और मुसीबत में हैं।"

"जी, सो तो है, लेकिन···" मैं ने वाक्य पूरा न किया।

"बताइए, आप को दिक्कत क्या है?" मुझ से यह प्रश्न सुन्दरी ने नहीं, सुन्दरे ने पूछा। दो क्षण मैं विश्वास न कर सका

कि प्रश्न सुन्दरे ने पूछा। फिर मैं समझ गया कि उन दोनों का निर्णय किस सीमा तक फाइनल था।

"दिक्कत सिर्फ एक है।" मैं ने उत्तर दिया, "मैं आप दोनों के एक-दो या पांच-सात शो कैसे रखूं? आप के शो हैं किस तरह के, जब तक इस की अफवाह फैलेगी, तब तक तो शो खत्म हो जाएंगे। हमारे यहां कैबरे-आर्टिस्टों को कम-से-कम तीन महीने के अनुबन्ध पर हस्ताक्षर करने होते हैं।"

"यह तो हमारे लिए सम्भव नहीं। हमें पन्द्रह दिनों में भारत छोड़ देना है।" इस बार भी सुन्दरे ने ही मुझ से कहा। वाक्य पूरा कर सुन्दरा फिर नीचे देखने लगा।

मैं ने सुन्दरी से मुखातिब होते हुए बताया, "पन्द्रह दिन तो आप दोनों को ट्रेनिंग देने में लग जाएंगे··· बार-बार रिहर्सल करने होंगे···क्योंकि मंच पर केवल कपड़े निकाल दिखाना ही पर्याप्त नहीं होता। सब से महत्वपूर्ण हैं आन्दोलन—और आन्दोलनों के लिए चाहिए रिहर्सल। फिर, जहां तक मैं भांप सका हूं, आप दोनों के लिए यह अपने तरह का पहला अनुभव होगा।"

"जी हां, होगा तो पहला ही अनुभव, लेकिन इस के लिए हम ···मानसिक रूप से इतने तैयार हैं कि···'

सुन्दरी को बीच में ही टोक देते हुए मैं बोला, "सब ठीक है, लेकिन बिना पूरे रिहर्सल के आप 'अलीबाबा' में पेश नहीं किए जा सकते।"

कई सेकण्ड तक सन्नाटा छाया रहा। मैं ने सोचा कि अब वे दोनों उठ जाएंगे और जाते-जाते मुझ से कहेंगे कि तकलीफ देने के लिए मैं उन्हें माफ कर दूं। मैं बोलूंगा कि माफी के लायक ऐसी कोई बात ही नहीं—और उन की पीठ-पीछे दरवाजा बन्द कर दूंगा।

किन्तु वे न उठे। मेरी आंखों में नहीं, एक-दूसरे की आंखों में देख रहे थे वे। तब, सुन्दरी कुछ बोली। मैं समझ न पाया कि वह क्या बोली। जवाब में सुन्दरा भी कुछ बोला। मैं समझ न सका

कि वह क्या बोला। फिर मैं ने अनुमान लगाया कि वे जरमन में बातें कर रहे थे। मुझे बुरा लगा। मेरी मौजूदगी में, मेरे निजी कमरे में, उन्हें अंग्रेजी ही इस्तेमाल करनी थी। मुझे यों अजनबी बना देने का उन्हें क्या हक़ था? सहसा मैं ने देखा कि वे दोनों अपनी जगहों से उठे। बजाए दरवाजे की ओर बढ़ने के वे एक-दूसरे की ओर बढ़े। इस से पहले कि मैं उन के इरादे भांप सकूं, मैं ने देखा कि वे झटपट अपने कपड़ों में से निकल आए। सुन्दरा कपड़े पहने हुए तो झेंप रहा था, मुझ मे निगाह नहीं मिला रहा था, किन्तु अब वह साहसी हो गया था। मैं ने उसे सिर से पैर तक देखा। उस की सुन्दरता अनोखी थी। उस की सहजता खुश कर देने वाली थी। मुझे आश्चर्य हुआ कि लगातार कमर मोड़ कर ही बैठे उस व्यक्ति में इतनी सहजता अचानक पैदा कैसे हुई। जब उस ने पाया कि मैं ने सिर से पैर तक उस का मुआयना कर लिया है, तो वह मेरी ओर पीठ कर के खड़ा हो गया। वह दोनों तरफ से एक जैसा सुन्दर था। मैं ने उस की साथिन पर निगाह डाली। वह बड़े ठसके के साथ दोनों हाथ कमर पर रख कर खड़ी थी। यही आशा मैं ने उस से रखी भी थी। मुझ से निगाह मिलते ही वह मुस्कराने लगी। मैं निर्विकार रहा। सहसा मुझे ध्यान आया कि बाथ-रूम में वाश-बेसिन का नल शायद मैं ने ठीक से बन्द नहीं किया है। मैं उठ पड़ा। मैं बाथ-रूम की ओर बढ़ा। कैनेडियन सुन्दरी ने समझा कि मैं उसे नजदीक से देख लेने के लिए कदम बढ़ा रहा हूं। वह सावधान और गम्भीर हो गई। उस की मुस्कान डूब गई। उसे तत्काल पता चल गया कि उस की मुस्कान डूब गई। वह सप्रयास मुस्कराने लगी। मैं उस के बगल से रास्ता काटता हुआ बाथ-रूम तक पहुंच गया। भीतर जाने पर देखा कि सचमुच वाश-बेसिन का नल ठीक से बन्द मैं ने नहीं किया था। मैं ने नल ठीक से बन्द कर दिया। मैं बाथ-रूम से बाहर निकला। मैं वापस उसी जगह पर बैठ गया, जहां से उठा था। वे दोनों ज्यों-के-त्यों खड़े थे। सुन्दरे की पीठ मेरी ओर।

सुन्दरी का चेहरा मेरी ओर। मैं ने दोनों का नए सिरे से मुआयना किया। मुआयने के दौरान सुन्दरी भी मेरी तरफ पीठ घुमा कर खड़ी हो गई। अपने साथी की भांति वह भी जितनी इधर से सुन्दर थी, उतनी उधर से। वास्तव में उन्हें अपने साहस का इतना अधिक परिचय देने की जरूरत थी नहीं। अकस्मात् दोनों पलटे। अब उन के चेहरे मेरी तरफ थे। सुन्दरी ने कहा, "अब तो विश्वास हो गया न कि हम कितने सुघड़ हैं।"

"सवाल सुघड़ होने-न-होने का नहीं है। क्या मुझे फिर से दोहराना होगा कि सवाल रिहर्सलों का है?" मैं ने कहा, "रिहर्सल पूरे हो जाएं तो भी, आप के पास इतना समय बच नहीं पाएगा कि आठ-दस शो भी दे पाएं।"

"क्या आप को ऐसा नहीं लगता कि हम बिना रिहर्सल के भी रंगत जमा सकते हैं?" सुन्दरी ने पूछा और उत्साह में आ कर कन्धे हिलाए। सुन्दरा धीमा-धीमा हंसने लगा। शायद वह भी कन्धे हिलाता, लेकिन उस के कन्धे हिलाने पर कोई और दो चीजें हिलने लगें, इस की गुंजाइश नहीं थी।

"सॉरी! आप मेरा वक्त खराब कर रहे हैं।" मैं ने नफरत से कहा। अगर सुन्दरी ने कन्धे हिलाने की बदतमीजी न की होती, तो शायद मैं नफरत महसूस न करता। कम्बख्त इस उपाय से मेरी मानसिकता पर हावी होना चाहती है! वे चुपचाप वस्त्र धारण करने लगे। जितनी स्फूर्ति से वे निर्वसन हुए थे, उतनी स्फूर्ति वे वस्त्र-धारण में न दिखा सके। मुझे उन पर दया आई। मेरे इन्कार ने उन्हें लुंज-सा कर दिया था। मैं बोला, "आप अपने कमरे में जाइए। मैं सोचता हूं कि क्या किया जाए आप लोगों के लिए।"

"प्लीज़···" सुन्दरी ने ऐसे स्वर में कहा, जो दयनीय ही था, "हम यहां किसी को जानते-पहचानते नहीं···आप चाहें तो कुछ-न कुछ जरूर कर सकते हैं। हम इतने हताश हो चुके हैं कि···हम किसी भी सीमा तक समर्पित हो सकते हैं—हम दोनों।"

"ठीक है, मैं देखूंगा।" मैं बुदबुदाया।

"हम अपने कमरे में ही हैं। बाहर कैसे निकलें ? हमारे हाथ बिल्कुल खाली हैं।" सुन्दरो ने फिर कहा, "हमारे पास तो 'अलीबाबा' का बिल देने लायक भी पैसे नहीं।"

"आप को इतना खाली हाथ निकलना ही नहीं चाहिए था।" मैं खीझ गया।

"खाली हाथ हम नहीं थे। असल में यहां हम ने कुछ हिप्पियों की संगत की। हर साल हम थोड़े-थोड़े महीने हिप्पी बन कर रहते हैं।" युवती बताने लगी, "बनारस में हिप्पियों की एक टोली चरस का नशा कर रही थी। हम टोली में शामिल हो गए। कुछ ज्यादा ही नशा हम से हो गया। इत्तफाक से अधिकांश धन उस दिन हमारी जेबों में ही था। जब होश में आए तो जेबें खाली।"

"ठीक है, मैं सोचता हूं कि आप के लिए क्या किया जाए। अभी जाइए। प्लीज़, मुझे कुछ जरूरी काम निबटाने हैं।"

धन्यवाद दे कर और क्षमा मांग कर वे चले गए। दरवाजा बन्द कर मैं ने गहरी सांस ली। वे दोनों वास्तव में इतने सुघड़ थे कि उन्हें कपड़ों में से उदित होते देख कर, यदि मैं कहूं कि मैं सिर्फ बोर हुआ था, तो यह मेरा केवल ढोंग ही होगा। मेरा मनोरंजन अवश्य हुआ था, भले ही बाद में मैं जरा चिढ़ गया था। दसेक मिनट के सोच के बाद मुझे लगा कि यदि मैं 'अलीबाबा' का उन का बिल माफ कर दूं तो उन्हें मदद पहुंचाने का यह एक आसान तरीका है। वे तो किसी भी सीमा तब समर्पित होने को तैयार हैं। यदि मैं चाहूं तो यहां तक कह सकता हूं कि कुछ रातें मैं उस के साथ बिताना चाहता हूं, जिस ने अपने कन्धे हिलाए थे। लेकिन नहीं, प्यार-सनी रात में जो हिन्दी भाषा में बकवास न कर सके, उसे संग सुलाने का मतलब ही क्या ? मेरा खेल स्मिता के साथ ही जमता है, भले ही उस का बदन कैबरे-डान्सर बनने के लायक नहीं।

मैं ने रिसीवर उठा कर सुन्दरे और सुन्दरी का नम्बर डायल

किया । दूसरी ओर से जब सुन्दरे की हैलो सुनाई पड़ी, तो मैं बोला, "देखिए, मैं ने एक उपाय सोचा है ।"

"उपाय, ओह, आप कितने दयालु हैं ।"

"मैं 'अलीबाबा' का समूचा बिल माफ कर देता हूं, लेकिन आप को कल शाम तक कमरा खाली कर देना होगा ।"

मैं ने वाक्य मुश्किल से पूरा किया होगा कि दूसरे छोर पर रिसीवर जोर से पटक दिया गया । मैं चकराया । ऐसी कौन-सी बात कह दी थी मैं ने, जो सुन्दरे को इतना गुस्सा आ गया ? कहीं ऐसा तो नहीं कि मैं ने किसी गलत नम्बर पर डायल घुमा दिया हो ? मैं फिर से सुन्दरे-सुन्दरी का नम्बर मिलाने की सोच ही रहा था कि मेरे कमरे का बन्द दरवाजा बाहर से भड़भड़ाया जाने लगा । साथ में काल-बेल भी दबा दी गई । काल-बेल इतने जोरों से चीखी और चीखती चली गई कि मेरा खून खौल गया इस बदतमीजी पर । रिसीवर रख कर मैं ने दरवाजे की दिशा में लम्बे डग भरे । यह भड़भड़ाहट आसपास के दूसरे कमरों में भी सुनाई दे रही होगी । 'अलीबाबा' के शालीन वातावरण में ऐसी फूहड़ता ? खूब फैलेगी नेकनामी ! दरवाजा खोलने से पहले मैं ने आभास पाया कि बाहर एक-दो बैरे आ गए हैं और किसी को रोक-मना रहे हैं । मैं ने दरवाजा खोला । मैं ने अंग्रेजी में एक-से-एक बढ़िया गालियां सुनीं, जो मेरे लिए थीं । गालियां सुन्दरी और सुन्दरे द्वारा इस तरह दी जा रही थीं कि दरवाजा खुलते ही मैं तीन डग पीछे हट गया । एक-दो नहीं, पूरे चार बैरे आ गए थे, लेकिन सुन्दरे और सुन्दरी को जकड़ कर रखना उन्हें भारी पड़ रहा था । एक बैरा चिल्ला कर मुझ से बोला, "साब ! दरवाजा बन्द कर दीजिए ।"

मैं ने दरवाजा बन्द न किया । मैं अंग्रेजी में जोर से चिल्लाया, इतने जोर से कि गालियों के मन्त्रोच्चार से भी ऊपर मेरा स्वर गूंज सके, "गल्ती मेरी है । माफी चाहता हूं । माफ कर दीजिए ।"

सुन्दरे और सुन्दरी का उबाल शान्त होने लगा । यह देख मैं

मैं फिर जोर से बोला, "मैं शर्मिन्दा हूं। मैं ने एक गलत बात कही थी। मुझे वैसा नहीं कहना चाहिए था।"

मेरा संकेत पा कर वैरों ने सुन्दरे और सुन्दरी को छोड़ दिया। दूसरा संकेत—वैरे चले गए। तीसरा संकेत—सुन्दरे और सुन्दरी ने पुन: मेरे कमरे में प्रवेश किया। दरवाजा बन्द कर सिटकनी चढ़ाते हुए मैं बोला, "सोचा भी नहीं था कि आप इतने···मेरा मतलब है, मैं तो आप को सहायता ··"

"सहायता! क्या हम भिखारी हैं? टुकड़खोर हैं?" सुन्दरा फिर जोश में आने लगा, "आप ने हम पर कीचड़ उछाला। हमारे चरित्र पर दाग लगाना चाहा।"

"मुझे खेद है—बहुत ही खेद···लेकिन···खैर, छोड़िए··· बैठिए। मैं बढ़िया ह्विस्की पिलाऊं आप दोनों को।"

ह्विस्की का एक-एक पेग खाली हुआ। एक-एक फिर भरा गया। प्रदर्शन के लिए ही नहीं, मैं भोग के लिए भी अपना तन दे सकती थी—ऐसा सुन्दरी ने कहा। मैं मंच पर मैथुन-दृश्य तक में भाग ले सकता हूं, किसी होमो को मैं भी अपना तन सौंप सकता हूं—ऐसा सुन्दरे ने कहा। लेकिन मैं कभी कोई चीज मुफ्त में नहीं ले सकती—सुन्दरी बोली। आप ने बिल माफ करने की बात क्या कही, हमारी नाक काट ली! —सुन्दरा बोला। मैं ने सुन्दरे को छेड़ा कि आप तो शरमा रहे थे, मुझ से आंख तक नहीं मिलाते थे। सुन्दरे ने कहा कि मैं केवल ढोंग कर रहा था, क्यों कि इसी तरह की 'शालीनता' से हिन्दुस्तानी लोग प्रभावित किए जा सकते हैं। सुन्दरी एक लम्बी चुस्की ले कर बोली कि सब जानते हैं, स्त्री के पास क्या-क्या होता है और पुरुष के पास क्या-क्या। सब यह भी जानते हैं कि स्त्री-पुरुष आपस में क्या-क्या करते हैं। जिस की जानकारी सब को है, उसे सब के सामने कर के दिखाया भी जा सकता है। इस में शर्म कैसी? शर्म तो आनी चाहिए देशद्रोह करने में। शर्म आनी चाहिए अणुबम बनाने में। शर्म आए झूठ बोलते, शर्म आए चोरी करते।

नशा और मैथुन करने में शर्म कैसी ? कैबरे-डान्स बहुत बढ़िया चीज है। कैबरे-डान्स बताता है कि इन्सान सिर से पैर तक कितना खूबसूरत है। कैबरे-डान्स लोगों को खूबसूरती की इज्जत करना सिखाता है। सुन्दरे ने हामी भरते हुए कहा कि इसी लिए कैबरे-डान्सर को हमेशा एक कलाकार का दरजा दिया जाता है। वेश्या को कलाकार कोई नहीं कहता। वेश्या केवल एक तनाव से छुटकारा दिलाती है। अपने पास आने वाले को वह बताती नहीं कि खूबसूरती की इज्जत किस तरह की जाए। न वह खुद कलाकार है, न लोगों को कलाकार बनाती है। मैं ने अपने लिए तीसरा या चौथा पेग भरते हुए कहा कि आप झूठे हैं, या तो झूठे या फिर गलत फहमी के शिकार··· क्योंकि वेश्या भी एक कलाकार है। अगर आप सीखने के लिए वेष्या के पास जाएं तो, वह भी आसन-शिक्षा दे सकती है, लेकिन यदि आप केवल तनावों से छुटकारा पाने के लिए जाएंगे, तो इस का कसूर वेश्या का नहीं। कैबरे-डान्सर क्या है ? वह सौन्दर्य का थिरकता पुंज है, लेकिन अगर आप उत्तेजित होने का ही इरादा ले कर कैबर देखने आएंगे, तो देख चुकने के बाद आप को कुर्सी से उठने में दिक्क़त होगी। विपरीत इस के, अगर आप सौंदर्य का थिरकन देखने आएंगे, तो खुश होंगे। वाह-वाह करेंगे। कैबरे-डान्सर जब सतरंगी रोशनियों में नंगी नहाती हुई कन्धे हिलाएगी तो आप को पहाड़ी झरने का कल्लोल याद आएगा। कलाकार दोनों हैं··· वेश्या और कैबरे-डान्सर। लीजिए न, आप का पेग अभी तक खाली नहीं हुआ···समझे आप ? कलाकार तो दोनों हैं। फर्क अगर है तो नजरिए में। हिक्···ह्विस्की पीते समय कैनेडा और जरमनी में लोग क्या खाते हैं ? शायद आप लोग काजू खाते हों। खाते हम भी हैं, लेकिन मैं मूली और प्याज को ही, शराब के साथ, सब से बढ़िया मानता हूं। ठहरिए, फ्रिज से मूली और प्याज निकाल लाता हूं। बहुत मजा आ रहा है—है न ? लीजिए, और लीजिए न ! अच्छा, आधा पेग ही ले लीजिए। मैं ? अरे साहब, मेरी न पूछिए । मैं तो,

हिक्, अभी दो पेग और चढ़ा सकता हूं···अंग्रेजी का यह मुहावरा बहुत बढ़िया है कि प्यार बनाना ! इसी लिए आप लोग नारे लगाते हैं कि बम न बनाओ, प्यार बनाओ ! हिन्दी में साला ऐसा कोई नारा बनता ही नहीं। प्यार बनाने के लिए हिन्दी में तो एक ऐसा शब्द है कि ··बताऊं क्या है वह शब्द ? वह है—

हिक्···ओक्···

⊙ मैं ने आंखें खोलीं। स्वयं के कमरे की छत दिखाई दी मुझे—यानि, मैं चित पड़ा हुआ था। आंखें बन्द कर मैं ने फिर से खोलीं। इस के बाद मैं उठ बैठा। सिर को मैं ने जोर से झटका दिया। मुझे चक्कर-सा आया। एक और झटका। इस बार चक्कर न आया। इस से मैं उत्साहित हुआ। फर्श से उठ कर मैं सोफे पर बैठ गया। सोफे से उठ कर मैं फर्श पर खड़ा हो गया। कमरे में चारों ओर निगाह डाली। अकेला ही था मैं।

मैं ने याद करने की चेष्टा की। सुन्दरा और सुन्दरी कहां चले गए ? कलाई-घड़ी में देखा। डेढ़ बज रहा था। 'यह डेढ़ दोपहर का होना चाहिए, रात का नहीं,—मैं ने सोचा। मैं मुस्कराया। कमरे में रोशनी है, हालांकि कोई बल्ब जल नहीं रहा। फिर यह डेढ़ रात का कैसे हो सकता है ? पुनः मैं ने याद किया, 'सुन्दरा और सुन्दरी कहां चले गए ?' याद आ गया। वे लड़खड़ाते हुए मेरे कमरे से बाहर निकले थे। मैं उन्हें रोक रहा था कि नशा उतर जाने के बाद जाइएगा, लेकिन पता नहीं किस मूड में थे वे कि रुके ही नहीं। अपने कमरे तक सही-सलामत पहुंच तो गए ? उंह, खुद न पहुंचे होंगे तो बैरों ने पहुंचा दिया होगा। उन के चले जाने के बाद मैं फर्श पर ही लेट गया था। अगले ही क्षण या तो मैं सो गया था या बेहोश हो गया था। मुमकिन है, नींद और बेहोशी के मिश्रण जैसी कोई बात मेरे साथ घटी हो।

मैं ने फर्श पर खोज निकाला कि प्याज के छिलके कहां हैं। छिलकों के नजदीक मूली के हरे पत्ते बिखरे पड़े थे। मूली और प्याज की

जूठन के बीच···अजगर !

अरे, वहां मुझे अजगर क्यों दिखाई पड़ा ? ह, ह, ह···अब भी नशे में हूं।

लेकिन क्या हुआ अजगर का ? वह कम्बख्त रिंग-मास्टर आया कि नहीं ?

सोडे की बोतलें, पेग, ह्विस्की की बड़ी बोतल और नमक की दो तश्तरियां पड़ी थीं। कैसा दीवाना हूं मैं। नमक के लिए भी क्या इतनी बड़ी तश्तरियां निकाली जाती हैं ? उन सब से पैर बचाते हुए मैं फोन की ओर बढ़ा। रिसीवर उठा कर मैं ने काउण्टर-क्लर्क का नम्बर डायल किया। ड्यूटी बदल गई थी। पुरुष के बजाय अब महिला काउण्टर-क्लर्क आ बैठी थी। पुरुष ने उसे मेरे सन्दर्भ के सभी निर्देश दे दिए होंगे—मुझे विश्वास था। मैं ने पूछा, "रिंग-मास्टर का क्या हुआ ?"

"जी, वह तो चले गए।"

"मुझ से मिले बिना ?"

"मैं ने उन्हें रोक कर कहा था कि साहब मिलना चाहते हैं, लेकिन आप के कमरे में फोन किसी ने उठाया ही नहीं। इस पर मैं ने ब्वॉय को कमरे तक भेजा। उस ने काल-बेल बजाई, लेकिन दरवाजा न खुला। इस से मैं ने सोचा कि—"

"ठीक है, ठीक है, मैं सो रहा था, ओके, थैंक्यू !" मैं ने कहा और फोन रख दिया।

बहुत भूख लग आई थी, लेकिन अजगर के समाचार फौरन जान लेने की हुड़क ऐसी थी कि मैं ने न फोन पर किसी चीज का आर्डर दिया और न फ्रिज से ही कुछ निकाल कर खाया। अपना हुलिया भी मैं ने कोई खास ठीक नहीं किया।

मैं मिस गोगो के कमरे के सामने पहुंचा। मैं ने काल-बेल दबाई। दो पल इन्तजार। क्लिच्च्च···दरवाजा खुला। मिस गोगो की दमकती मुस्कान ने मेरा स्वागत किया। मैं भीतर। दरवाजा बन्द। मेरी

"किस ने ?"

"कमाल करते हैं आप ! भूल गए ? अरे, उसी सूअर ने !"

"चन्दन वाली ने ?" मैं ने भौहें उठाईं।

"हांआं !"

"बधाई, मिस गोगो ! कार्यक्रम क्या रहा ?"

"मैं ने उसे मुलाकात के लिए बुलाया और वह फौरन मान गया। लालची कुत्ता साला !"

"मुलाकात कब है ?"

"आज ही तीन बजे, इसी कमरे में।"

"आप जानती हैं, मिस गोगो कि मुलाकात के समय मैं मौजूद रहना चाहता हूं। मुलाकात तय करने से पहले आप को मुझ से पूछ तो लेना था कि आज तीन बजे मुझे कोई और काम तो नहीं है।" मैं ने शुष्कता से कहा। मैं केवल अपने मालिक होने का अहसास ही दे रहा था, क्योंकि वास्तव में, आज तीन बजे मुझे कोई काम नहीं था।

मिस गोगो बोलीं, "अपनी गलती पर मुझे खेद है, बॉस ! आप से पूछना याद ही न रहा। क्या सचमुच तीन बजे आप को कोई काम है ?"

"हां, बहुत जरूरी एक काम से मुझे तिलकनगर जाना है।"

"ओह···अब ?"

"अब क्या ! उस जरूरी काम को मैं छोड़ूंगा !"

"आप कितने अच्छे हैं, बॉस !"

"आप क्या पसन्द करेंगी ? क्या मैं पहले से यहां मौजूद रहूं और फिर उसे अन्दर आने दिया जाए ? या—उस के आ जाने के बाद आप मुझे बुला भेजेंगी ?"

"आप पहले से यहां मौजूद रहें। इस से मुझे बल मिलेगा।" मिस गोगो ने अपनी कलाई घड़ी पर निगाह डाली, "पौने दो हो चुके। तीन बजने में देर ही क्या है !"

"मैं ढाई और पौने तीन के बीच यहां आ जाऊंगा, क्योंकि हो सकता है, वह तीन से पहले ही आ धमके।" मैं ने कहा।

"यस, बॉस ! सचमुच वह पहले भी आ सकता है। उस की तो लार टपक रही होगी।"

"अजगर क्या सो रहा है ?" मैं ने आंखें सिकोड़ कर अजगर के पिजड़े को दूर से ही देखते हुए कहा, "ऐसे पड़ा है, जैसे मर गया हो।"

"नहीं, बॉस, अभी वह खुमारी का आनन्द ले रहा है। वैसे···इस को नींद आन में अब देर भी नहीं।" मिस गोगो ने उत्तर दिया, "इस के पेट में आठ जिन्दा चूहे जो पहुंच चुके हैं !"

"आठ चूहे !"

"आज इस की साप्ताहिक खुराक का दिन था। मिस्टर खोसला सुबह इसे जब चिड़ियाघर से ले कर आए, तब चूहों का इन्तजाम न हुआ होने के कारण, यह भूखा ही इधर आ गया था।"

"चूहे कौन लाया ? रिंग-मास्टर ?"

"नहीं तो और कौन लाता ? 'द ग्रेट इण्डियन सरकस' दिल्ली में अभी महीने भर और चलेगा। इस बीच रिहर्सल पूरा हो जाएगा।"

"रिहर्सल या ट्रेनिंग ?"

"ट्रेनिंग भी कह सकते हैं—अजगर को ट्रेनिंग।"

"मेरी हार्दिक इच्छा है रिंग-मास्टर से बात करने की।"

"ट्रेनिंग उर्फ रिहर्सल के लिए रिंग मास्टर रोज साढ़े दस बजे आएगा, ऐसा आज तय हुआ है। उस की और आप की मुलाकात मैं कल करवा दूंगी।"

"भूलिएगा नहीं—और अभी मैं चलता हूं।"

अपने कमरे में लौट कर मैं ने फोन पर भोजन लाने का आदेश दिया। रिसीवर रख कर मैं ने थोड़ी चहलकदमी की, फिर सोफे पर बैठ गया। क्षण-क्षण बीत रहे थे और मुझे घिन-सी लग रही थी कि अजगर को आठ-आठ जिन्दा चूहे खिलाए गए। क्या चूहे बेहोश कर

या मार डालने के बाद अजगर को नहीं दिए जा सकते ? पूछूंगा रिंग-मास्टर से ।

लेकिन चूहों को दोनों स्थितियों में मरना है । बात एक ही है । रिंग-मास्टर से पूछताछ करना व्यर्थ रहेगा । प्रयास तो यह होना चाहिए कि अजगर ही 'अलीबाबा' का त्याग कर के चला जाए । क्या मैं रिंग-मास्टर को घूस दूं ? तब, रिहर्सल में ही रिंग-मास्टर मिस गोगो को 'समझा' सकता है कि उन का कार्यक्रम व्यवहार में लाना असम्भव रहेगा । ठीक है, घूस देने का प्रयास करूंगा । शायद रिंग-मास्टर अजगर को वापस खरीद ले । नहीं खरीदेगा तो बिकवा देगा···

अजगर की याद को दिमाग से निकाल देने के लिए मैं ने सुन्दरी और सुन्दरे को याद करना शुरू कर दिया । सुन्दरी पर यौन-आकर्षण चस्पा करने की भरसक कोशिश मेरी ओर से होने लगी । प्रसिद्ध अभिनेत्री रेक्वेल वेल्च ने खीझ कर कहा है कि फिल्म-निर्माताओं ने मुझे हालीवुड की भीमकाय दुग्ध-ग्रन्थि का ही रूप दे दिया है ! दुग्ध-ग्रन्थि के बजाए यदि मिस वेल्च ने थैले कहा होता तो यह शब्द उनकी खीझ को और भी अधिक मुखर कर सकता···बहरहाल, इन थैलों पर यौन-आकर्षण का केन्द्रीकरण है, ऐसा सारी दुनिया में माना जाता है । कितना दयनीय हूं मैं कि उन थैलों के साथ भी यौन-आकर्षण मैं जोड़ नहीं पाता । सुन्दरी के उस हिस्से को अधिकतम सूक्ष्मता से याद करने के बावजूद मुझे कोई सनसनी न हुई । रह-रह कर एक कचोट-सी उभर रही थी—कि मैं ने उन दोनों को झूठे कह दिया । यदि वे नशे में न होते तो जरूर बुरा मान जाते । लेकिन इस भूल को मैं ने तुरन्त सुधारा भी तो था । मैं ने आगे जोड़ दिया था कि या तो आप झूठे हैं या फिर गलतफहमी के शिकार—क्यों कि कलाकार तो दोनों हैं । वेश्या और कबरे-डान्सर—दोनों ! नशे की झोंक में खासी लम्बी बहस हो गई थी सुन्दरी और सुन्दरे के साथ । वे भी तो मूड में आ गए थे···मुझे उन की मदद करनी चाहिए ।

करनीहै। दोनों की नैतिकता मुझ से कितनी भिन्न है! तन को प्रदर्शित या समर्पित करना उन के लिए सिर्फ एक खेल है। कभी-कभी इस खेल द्वारा धनोपार्जन भी किया जा सकता है। उन की नतिकता आहत होती है देशद्रोह से, चोरी करने या झूठ बोलने से, शत्रु के साथ मिल जाने से। जबकि भारत में देशद्रोह एक खेल है, न कि नैतिकता। देशद्रोह के खेल द्वारा धनोपार्जन भी किया जा सकता है। उंह! फिर मैं बहस की उन्हीं-उन्हीं बातों को याद क्यों करन लगा? मुझे केवल निष्कर्ष को याद रखना चाहिए—कि उन की सहायता मुझे करनी है, साथ-साथ अलीबाबा' का बिल भी वसूल करना है। बिल बनाते समय मैं उन्हें बहुत सारी रियायतें दे दूंगा — इस तरह कि उन्हें पता भी न चले। पता चलने पर वे फिर चौंखेंगे। किन्तु केवल गुप्त रियायत मिलने से उन की गाड़ी आगे खिसकने की नहीं। उन की जेब में काफी ज्यादा धन आ जाना चाहिए। मामला तभी बनेगा।

मैं ने रिसीवर उठाया। मैं वी. टी. का नम्बर डायल करने लगा। वी. टी. याने विनोद तिवारी। विनोद तिवारी याने मेरा वह फोटोग्राफर दोस्त, जो सिर्फ विदेशों में प्रसिद्ध है और भारत में जिस का नाम भी कोई नहीं जानता। वी. टी. खासी अच्छी कमाई प्रति मास कर लेता है। भारत में ही रहते हुए, डाक द्वारा, चूंकि सारी कमाई वह विदेशों में करता है, अपने प्यारे वतन के लिए वह विदेशी मुद्रा ही तो इकट्ठी करता है। वी. टी. नग्नाओं का फोटोग्राफर है। मैथुन-मुद्राओं के भी फोटो खींचते समय उस के हाथ नहीं कांपते। मेरी तरह कभी-कभी वह भी बहुत खीझता है कि जिन दृश्यों से किसी भी व्यक्ति का मन कामावेश से सराबोर हो जाए, उन्हीं दृश्यों को केवल फोटो के रूप में नहीं, बल्कि सजीव और स्वयं अपनी आंखों से देखने के बावजूद उसे कोई सनसनी नहीं होती। "जीवन का सब से मीठा आवेग मुझ में सूख चुका है।" वह कहता है और मैं सिर हिलाता हूं, "तुम अकेले नहीं हो, दोस्त! मेरी

हालत तुम से बेहतर नहीं।" वी. टी. शादीशुदा है। कह नहीं सकता, बीवी के साथ उस के सम्बन्ध कैसे हैं। इस बारे में मैं ने उस से कुरेद कर कभी कुछ नहीं पूछा, हालांकि अनुमान तो लगाया ही जा सकता है कि जब कामावेश सूख चुका हो, तब शारीरिक सम्बन्ध कितने गैर-जरूरी, बचकाने और खामख्वाह मेहनत कराने वाले महसूस होने लगते होंगे।

वी. टी. की तरह मैं शादीशुदा नहीं, लेकिन मेरे पास स्मिता है। मैं इकसठ का हूं और स्मिता केवल बीस की, लेकिन कौन-सी हमें शादी कर लेनी है, जो हमारा जोड़ा बेमेल कहा जाएगा! यहां स्मिता के उल्लेख का आशय केवल इतना कि वी. टी. के पास यदि बीवी है, तो मेरे पास स्मिता है, जो हर बार लिपस्टिक का दाग कहीं-न-कहीं छोड़ जाती है।

लेकिन वी. टी. की तुलना में मेरी स्थिति शायद जरा बेहतर मानी जाए। यदि सजीव मैथुन-दृश्य मैं देखूं तो थोड़ा-सा तो जरूर सनसनाऊं और मुझे स्मिता की आवश्यकता अनुभव हो। मैथुन-दृश्य का फोटो यदि मुझे खींचना हो तो मेरे हाथ कांपे बिना न रहें। फिर भी, बात लगभग वही है। मेरी बुरी हालत का अंक यदि १९ है, तो उस की हालत का अंक २०। मरे हुए तो दोनों हैं। मैं ने मरे हुए वी. टी. का नम्बर डायल किया।

दूसरे छोर पर बजती फोन की घण्टी मैं इधर से सुनता रहा। दूसरी ओर का रिसीवर उठाया गया। घण्टी बन्द। वी. टी. की हैलो। मेरी हैलो। कैसे याद किया—वी. टी. का पूछना। मेरे यहां ठहरा हुआ एक जोड़ा मैथुन-मुद्राओं के फोटो खिचवा सकता है।—मेरे द्वारा बताया जाना। जोड़ा भारतीय है या विदेशी ?—वी. टी. का प्रश्न। सुन्दरी कैनेडियन, सुन्दरा जरमन।— मेरा उत्तर।

"मुझे दिलचस्पी नहीं है।" वी. टी. ने टके-सा जवाब दे दिया।

"क्यों ?"

"तुम जानते तो हो कि ये चीज मैं सिर्फ विदेशी बाजार में

बेचता हूं।"

"तो क्या हुआ ?"

"कमाल है, फिर भूल गए ! कितनी बार बता चुका कि विदेशों में विदेशी जोड़ों के प्रति विशेष आकर्षण नहीं है। ऐसा माल उन्हें अपने ही देश में मिल जाता है। वे लोग तो भारतीय जोड़े देखना चाहते हैं। भारतीय नग्नाओं और जोड़ों की, अनजाने में ही अपनी एक अलग अदा होती है, जो उन्हें मारक लगती है।"

'भाषण छोड़ो, यार, और चुपचाप आ जाओ कैमरा ले कर।" मैं ने कहा, "मैं इस जोड़े की सहायता करना चाहता हूं।"

वी. टी. काफी हुज्जत के बाद आने के लिए तैयार हुआ। जब तक उस ने 'फौरन रवाना हो रहा हूं' छाप वचन न दिया, तब तक मैं ने उस का पिण्ड न छोड़ा। रिसीवर रखने के बाद मैं ने 'चार-मीनार' सिगरेट सुलगाई। सुन्दरी और सुन्दरे से पूछे बिना ही मैं ने वी. टी. से कह दिया था कि वे मैथुन-मुद्राओं के पोज़ देंगे। उन दोनों को क्या मैं ने इतना भी नहीं पहचाना कि इस प्रस्ताव की अनुमति उन से लेना अनावश्यक हो जाए ?

अनुमति न सही, लेकिन उन्हें खबर तो कर ही देनी चाहिए। मैं ने पुनः रिसीवर उठा कर उन के कमरे का नम्बर डायल किया। फोन पर सुन्दरी आई। मैं ने पूछा, "कैसे हाल-चाल हैं ?"

'हम लोग बैरों की सहायता के बिना कमरे तक आ गए थे। बहुत अच्छा नशा रहा। आप का हज़ार-हज़ार शुक्रिया !" सुन्दरी फोन पर ही जैसे मचल रही थी, "आप कैसे हैं ?"

"बिल्कुल ठीक···और, आप के लिए एक खुशखबरी है मेरे पास।"

"खुशखबरी ?"

"हां, लेकिन पहले यह बताइए, आप लोग खजुराहो के मन्दिर देख चुके हैं या नहीं ?"

"ओह, खजुराहो ! बाप रे ! इतना मज़ा आया था कि मैं

दीवानी हो गई थी।" और सुन्दरी हंसने लगी।

"पूछा मैं ने इस लिए कि···मैथुन-मुद्राओं की पूजा भारत में शुरू से होती आई है। प्राचीन काल में पूजा का ढंग यह था कि छेनी और हथौड़ों से चट्टानी गुफाओं में मैथुन-मुद्राएं बना दी जाएं। आज के जमाने में छेनी-हथौड़ों की जरूरत क्या! अब तो कैमरे का आविष्कार हो चुका। मैथुन-मुद्राओं की पूजा अब कैमरे द्वारा की जा सकती है।"

'मैं समझ नहीं पा रही कि आप···किस बात की भूमिका बांध रहे हैं।"

"आप दोनों एकदम तैयार रहिए। मैं ने अपने एक फोटोग्राफर दोस्त को आप के कमरे का नम्बर दे दिया है और वह रवाना भी हो चुका है। आध-पौन घंटे में पहुंचा ही समझिए। वह आप दोनों की अनेक मैथुन-मुद्राओं की, अपने कैमरे की क्लिक-क्लिक द्वारा पूजा करना चाहता है।"

"ओह, बहुत खूब!" सुन्दरी ने उत्साहित हो जाते हुए कहा, "आप भी आइए और देखिए कि मैं और मेरा साथी कितने होशियार हैं!"

"नहीं, नहीं, मुझे तो क्षमा ही कर दीजिएगा। मुझे कुछ जरूरी काम करने हैं।"

"ओके, आने के लिए मैं आप को मजबूर नहीं करूंगी। अ··· दरें क्या तय हुई हैं?"

"यह आप स्वयं ही मेरे दोस्त से तय कर लें। वह कभी कोई गैरवाजिब बात नहीं करता।"

"ओके! थैंक्यू! मैं आप के दोस्त का इन्तजार अभी से कर रही हूं। स्नैप्स का पूरा एक सेट मैं आप को भेंट करूंगी।"

"धन्यवाद, लेकिन आप क्यों तकलीफ उठाएंगी? मुझे वी. टी. से सेट मिल जाएगा—अगर मैं ने चाहा।"

"वी. टी.? कौन वी. टी.?"

"मेरा वही दोस्त, जो कैमरा ले कर रवाना हो चुका है। कैमरे के अलावा चेक-बुक भी उस के साथ है।"

"पुनः धन्यवाद।"

"फिर मिलेंगे।" कह कर मैं ने लाइन काट दी। मन का एक बोझ-सा हलका हो गया था। वी. टी. से मैं ने फोन पर ही कह दिया था कि उसे मेरे दर्शनार्थ आने की आवश्यकता नहीं। वह सीधे सुन्दरे-सुन्दरी के कमरे में जा सकता है। याने, अब इस चक्कर से मैं एकदम बरी हो गया। 'यदि अब भोजन तुरन्त आ जाए तो आनन्द रहे।'— यह बात अभी मैं ने ठीक से सोची भी न थी कि काल-बेल बजी। जरूर बैरा आ गया था। मैं ने दरवाजा खोला। बैरा नहीं था। स्मिता थी। स्मिता ने प्रवेश किया।

"अरे, तुम? इस भरी दुपहरी में?" मैं ने चकित होते हुए पूछा। दरवाजा बन्द कर मैं ने सिटकनी चढ़ा ली। अगले ही क्षण स्मिता मेरी बांहों में थी। वह रोने लगी। यह एक बना-बनाया क्रम है कि जब वह रोती है, तो मैं उस का सिर थपथपाता हूं, मस्तक पर चूमता हूं और बड़े दुलार से कहता हूं, "क्या हो गया मेरी बुलबुल को?" इस रेडीमेड क्रम को मैं ने दोहरा दिया। स्मिता बांहों से छूट कर अलग हुई। उस ने अपने आंसू स्वयं नहीं पोंछे, ताकि मैं पोंछ दूं। मैं ने पोंछ दिए। फिर बोला, "आज सुबह से तुम मुझे कई बार याद आई हो।"

'क्यों?" उसने पूछा और कमर लचका कर जरा परे हटी। (आवाज सुरीली है।)

"सुबह उठने पर मैं ने देखा कि मेरे गाल पर लिपस्टिक का दाग था।" मैं ने बताया।

"उंह, यह तो हमेशा की बात ठहरी!"

"लेकिन बात है मजेदार! है न?" मैं ने उस को बांहों में कसते हुए कहा।

"उई!" कहती हुई वह बांहों से फिर छूट गई। हम दोनों

हसने लगे। फिर वह कमरे में इधर-उधर भागी और मैं ने पीछा किया। पेट में भूख की कुलबुलाहट इतनी बढ गई थी कि पीछा करने में मुझे मजा नहीं आ रहा था। मैं बैठ गया। मेरे बैठ जाने के बाद भी वह दो-एक बार इधर-उधर भागी—इस आशा में कि मैं भी पुनः दौड़ पड़ूंगा, लेकिन मुझे अन्तिम रूप से बैठ गया देख वह भी बैठ गई। पहले वह मुझ से दूर बैठी, फिर उठ कर सटती हुई बैठ गई। उस के पसीने की महक मेरी नाक तक आई।

"क्या मैं फिर से पूछूं कि इस भरी दुपहरी में देवीजी क्यों पधारी हैं?" मैं ने उस की ठुड्डी उठाते हुए जिज्ञासा की।

इस से पहले कि वह कुछ बोल सकती, काल-बेल फिर बज उठी। हम अलग-अलग हो गए। मैं ने उठ कर दरवाजा खोला। खुले दरवाजे इस वार भोजन की ट्रे के साथ, बैरा दिखाई दिया। वह खामोशी से भीतर आ गया। मैं ने स्मिता से पूछा, "तुम क्या खाओगी? क्या मंगवाऊं?"

"कुछ नहीं।" वह बोली, "मैं हास्टल से खा कर आ रही हूं।"

"कुछ पी लो। ठण्डा मंगवाऊं? दुपहरी में आई हो।"

उस ने 'हां' में सिर हिलाया। उस की पसन्द मैं जानता हूं। मैं ने बैरा से कहा, "फ्रिज में 'फाण्टा' की छहों बोतलें खाली हो गई हैं। उन्हें ले जाइए। पांच नई बोतलें रखिए। वे ठण्डी न हों, कोई बात नहीं, लेकिन छठवीं बोतल खूब ठण्डी हो। वह अभी पी जानी है।"

"यस सर।" बैरा ने जाते-जाते दरवाजा बाहर से उढ़काया। मैं ने सिटकनी न चढ़ाई—वह अभी वापस आएगा।

"दुपहरी में इस लिए आई हूं कि अभी घण्टे भर पहले मैं ने अचानक एक फैसला कर लिया। अब उस पर अमल किया जाना है। मुझे तुम्हारी सहायता चाहिए।" स्मिता बोली। वह बीस बरस की है और मैं इकसठ का, किन्तु वह मुझे तुम कहती है। मैं भी उसे तुम इस लिए कह लेता हूं कि वह मेरी कर्मचारिणी नहीं

है। उस का और मेरा रिश्ता यदि दूसरों पर प्रकट हो तो अटपटा ही लगे। वह मेरे पास अक्सर आती है और रात भर ठहरती है, यह 'अलीबाबा' के किसी कर्मचारी से छिपा नहीं, लेकिन ये कर्मचारी यही सोचते होंगे कि मुझ में अभी भी अश्व-शक्ति बहुत है और इसी लिए स्मिता मुझ से जुड़ी हुई है। मैं नहीं जानता, अश्व-शक्ति मुझ में बहुत है या नहीं। अश्व-शक्ति तन में पैदा हो, इस के लिए आवश्यक है कि पहले वह मन में पैदा हो—और मन की मेरी अश्व-शक्ति हमेशा किसी-न-किसी कैमरे-डान्सर के प्रगाढ़ सम्पर्क के कारण बुझ चुकी है। मन में वह है नहीं—या, नहीं के बराबर है—फिर तन में वह कितनी है, कैसे नापूं? किन्तु कर्मचारी समझते होंगे कि मेरे तन की अश्व-शक्ति के ही कारण स्मिता मुझ से जुड़ी हुई है। बुजुर्गों के साथ युवतियां कभी-कभी इतनी नत्थी हो जाती हैं कि···लेकिन स्मिता और मेरे सम्बन्ध जरा दूसरे हैं। सम्बन्धों के लिए तन दोनों के ही उत्तरदायी हैं, लेकिन हमारे तन भोग तक कभी-कभी ही पहुंचते हैं। मेरे मन की मरी हुई अश्व-शक्ति कभी-कभी ही चेतना पा कर तन को भी जीवित कर देती है। किन्तु हमारी मुलाकातें कभी-कभी नहीं, अक्सर होती हैं। फिर अक्सर हम क्या करते रहते हैं एकान्त में? हम खेलते हैं। उछलते-कूदते है। बन्द कमरे में हंगामा करते हैं। एक-दूसरे की पिटाई कर देते हैं। चीजें तोड़ते हैं। हंसते हैं। हम एक-दूसरे को नहलाते हैं। एक-दूसरे के नाखून हम काट देते हैं। एक बार खेल-ही-खेल में स्मिता ने मुझे इतना हंसाया, इतना हंसाया कि मेरे आंसू निकल आए। यदि मैं चाहता तो उसे डांट कर या परे धकेल कर रोक सकता था कि अब और न हंसाओ—लेकिन मैं ने उसे अनुमति दे दी थी कि वह जितना चाहे, उतना मुझे हंसा ले। साथ-साथ वह भी हंसती जा रही थी। जब मेरे आंसू निकल आए और हस-हंस कर दोनों गाल इतने दुखने लगे कि जैसे उन में घाव हो गए हों, तब वह भी थक गई और हांफने लगी। ऐसे सम्बन्ध तन के कहे

जाएं या मन के ? चाहे जैसे सम्बन्ध ये हों, तन वाच में जरूर आता है। मन का प्यार हम चुम्बन या मैथुन से व्यक्त करते हैं और इन दोनों के ही लिए, दोनों को एक-एक तन चाहिए। किन्तु मेरे और स्मिता के सम्बन्ध क्या तन के होते हुए भी केवल तन के हैं ?

जो हाल मेरा और वी. टी. का है, लगभग वही स्मिता का भी। स्मिता बहुत गरीब परिवार की लड़की है। एक प्राइवेट फर्म में वह टाइपिस्ट है। तनख्वाह केवल नब्बे रुपए। स्मिता अक्सर किसी-न-किसी के पलंग में सोने के लिए मजबूर है। रात भर में वह पचहत्तर से सौ तक कुछ भी झटक लेती है। जब जिस से जितने में सौदा पट जाए। किन्तु स्मिता की कुछ खास जरूरतें हैं, जिन्हें नजाकत न कहा जाए तो बेहतर। स्मिता ऐसे पुरुष के साथ सो नहीं सकती, जिस के दांत सफेद न हों। बगल में बालों वाले पुरुष उसे नापसन्द हैं, लेकिन उन के साथ सोना वह गवारा कर लेती है। सहन यदि उस से नहीं होते तो वे पुरुष, जिन की नाक के बाल बाहर तक आए हुए हों। बहुत बड़ी तोंद वाले पुरुषों के संग सोना भी उसे मन्जूर नहीं। वह यह भी चाहती है कि केवल उन्हीं पुरुषों के पलंग में वह जाए, जो दिल्ली के न हों, किन्तु सैर-सपाटे या व्यापार के सिलसिले में दिल्ली आए हुए हों। विदेशी पुरुषों को वह भारतीय पुरुषों की तुलना में ऊंचे अंक नहीं देती। उस की रिपोर्ट है कि विदेशी पुरुष अपेक्षाकृत ज्यादा बर्बर होते हैं। दिल्ली में बाहर से आए हुए ढंग के पुरुषों का चुनाव कैसे किया जाए और उन का मन कैसे टटोला जाए, इस समस्या को स्मिता ने 'अलीबाबा' के माध्यम से हल किया है। मैं निरन्तर ध्यान में रखता हूं कि स्मिता के मतलब के पुरुष किन-किन कमरों में ठहरे हुए हैं। फिर हेड-बटलर उन पुरुषों का मन टटोलता है। संवादों के साथ सांकेतिक शब्दों को धीरे से सरका देने में हेड-बटलर बहुत चतुर है। एवज में हेड-बटलर स्मिता से 'आय' का दस प्रतिशत ले लेता है। स्मिता से मेरा याराना कैसे हुआ, कैसे बढ़ा, कैसे हमारे सम्बन्धों ने आज

का अनोखा रूप धारण किया, इस का कच्चा-चिट्ठा यहां पेश करने का कोई अर्थ नहीं। यहां मुझे इतना ही बता कर सन्तोष मानना चाहिए कि जो हाल मेरा और बी. टी. का है, लगभग वही स्मिता का है। अनेक-अनेक-अनेक पुरुषों के संग सो-सो कर, सो-सो कर वह उस कामावेश से वंचित हो गई है, जो कि बीस बरस की युवती के अंग-अंग में सीत्कारता होना चाहिए। अक्सर ही किसी-न-किसी कैबरे-डान्सर को नग्न देख-देख कर मुझ में जो शून्यता आई है, कामुक अदाओं में नग्नाओं के फोटो खींच-खींच कर और मैथुनरत जोड़ों की मुद्राएं अपने कमरे में कैद कर-कर के जो ठण्डापन बी. टी. में आया है, वही ठण्डी शून्यता स्मिता को भी दबोच चुकी है। एक दोस्त के नाते, उस को मुझ से बहुत प्यार है। पहले प्यार उस ने किया। फिर मुझे भी उस से उतना ही प्यार हो गया। रात-रात भर हम दोनों हाहा-हीही करते हैं, इतना हुल्लड़ मचाते हैं कि क्या कहूं! इन खेलों में जब कभी मैं पीछे रहने लगता हूं तो स्मिता मुझे छेड़ना शुरू कर देती है। छेड़-छेड़ कर ऐसा बेदम कर देती है कि मैं निहाल हो जाता हूं। इसी लिए वह मुझे तुम कहती है और मैं उसे तुम।

"...मुझे तुम्हारी सहायता चाहिए।" स्मिता बोली।

"कहो।" मैं ने उसे उत्साहित किया।

"मैं ने पांच हजार रुपए जमा कर लिए हैं।" स्मिता की आंखें चमकने लगीं।

"जरूरत होने पर मैं तुम्हें इस से भी ज्यादा उधार दे सकता हूं।"

"उधार मैं क्यों लूं? धीरे-धीरे मैं ने जमा कर ही लिए हैं।" उस ने बोलना शुरू किया और मैं ने भोजन करना। 'फाण्टा' की बोतल उस के लिए आ जाए, ऐसा इन्तजार किए बिना मैं कौर पर कौर चबाने लगा। भूख बहुत थी। ह्विस्की ज्यादा पीने के बाद तन में जो निर्बलता आई थी, वह प्रत्येक कौर के साथ घटने लगी।

"अब मैं अपनी प्लास्टिक सर्जरी करवाना चाहती हूं। पांच हजार कम नहीं पड़ेंगे।" मैं ने स्मिता का स्वर सुना। उसी समय दरवाजा खुला और 'फाण्टा' की बोतलें लिए हुए बैरा ने प्रवेश किया। स्मिता चुप हो गई। बोतलों का झांपा बैरा ने फर्श पर रखा। फिर उस ने झांपे में से एक बोतल निकाल कर उस का कार्क ओपनर से खोल दिया। खुली हुई बोतल, स्ट्रा डाल कर उस ने, स्मिता को पेश कीं। स्मिता ने बोतल ले ली। स्ट्रा से वह बोतल का 'फाण्टा' चूसने लगी। बैरा ने फ्रिज खोल कर झांपे की सारी बोतलें भीतर रखीं और भीतर की सभी खाली बोतलें निकाल कर झांपे में डालीं। बैरा चला गया। जाते-जाते उस ने फ्रिज का दरवाजा बन्द किया और कमरे का भी। स्मिता उठी। उस ने दरवाजे की सिटकनी भीतर से चढ़ा दी। वापस आ कर मुझ से केवल एक इंच के फासले पर वह बैठ गई। उस ने बोतल का स्ट्रा निकाला, मसला और कालीन पर फेंक दिया। बोतल का मुंह अपने मुंह पर जमा कर वह एक सांस में आधे से ज्यादा 'फाण्टा' पी गई। उस ने अपने होंठ चाटे। फिर उल्लसित होती हुई वह बोली, "प्लास्टिक सर्जरी से मैं डबल जवान हो जाऊंगी।"

"निस्सन्देह !" मैं ने कहा। तन्दूरी परांवठे का कौर चबाने के लिए मैं ने अपना निचला जबड़ा हिलाया। कभी गौर किया है आप ने कि मनुष्य अपना केवल निचला जबड़ा ही हिला सकते हैं ? मगरमच्छों के साथ उल्टी बात है। उन का केवल ऊपर का जबड़ा हिलता है, निचला स्थिर रहता है।

"और उस के बाद मैं इस धन्धे को छोड़ देना चाहती हूं।"

"तुम्हारा मतलब है···तुम कहीं नौकरी तलाशोगी ?"

"नौकरी ! हुंह ! नौकरी में मिलता ही क्या है। मैं बहुत कमाना चाहती हूं। बहुत ही ज्यादा।" वह बोली। जितना 'फाण्टा' शेष था, उस ने फिर एक सांस में पी डाला।

मैं ने कहा, "ऐसे ही शब्द मैं ने आज मिस गोगो के मुंह से भी

सुने। वह भी बहुत ही ज्यादा कमाई करने को बेताब हैं। इस के लिए वह काफी खतरनाक कदम उठाने के लिए भी तैयार हैं।"

"मिस गोगो···ओह, मैं मिस गोगो बनना चाहती हूं।"

"याने तुम···"

"हां, मैं कैबरे-डान्सर बनना चाहती हूं। क्या मेरा बदन इस के लायक नहीं ?"

स्मिता की इस बात के उत्तर में चुप रह जाना ही मैं ने बेहतर समझा। स्मिता स्वयं जानती है कि उस का तन कैसा है। भोग के लिए प्रस्तुत हो-हो कर उस के तन के रेशे खिच-से गए हैं। जरूरत-से-ज्यादा पक जाने पर किसी टमाटर की त्वचा कैसी ढीली हो जाती है ? कुछ-कुछ वैसा ही लगता है, यदि स्मिता के कूल्हों को गौर से देखा जाए। और कैबरे-डान्सर होती है गौर से देखने के लिए। स्मिता कैसे बन सकती है कैबरे-डान्सर ? थैले स्मिता की सब से बड़ी खामी है साबित होंगे। जब तक थैले कम-से-कम दो गुने बड़े नहीं हो जाते, तब तक एक कैबरे-डान्सर के रूप में स्मिता रंगत जमा नहीं सकेगी। कैबरे-डान्सर को झूम-झूम कर कन्धे हिलाने होते हैं। स्मिता की कमर भी उतनी पतली और लचीली नहीं, जितनी एक कैबरे-आर्टिस्ट की होनी चाहिए। पलंग पर साथ देने के लिए स्मिता ठीक है, हिन्दी भाषा में बक-बक सुना कर दिल खुश करने के लिए स्मिता ठीक है, लेकिन मिस गोगो जैसी सर्पीली स्फूर्ति स्मिता में कहां ?···किन्तु स्मिता की दो आंखें भी हैं, जिन्हें वह मूंद कर नहीं रखती। इसी लिए तो उस ने कहा कि वह प्लास्टिक सर्जरी करवाना चाहती है। पांच हजार उस ने जमा भी कर लिए। न जाने कितने दिनों से यह निर्णय उस के भीतर पल रहा होगा कि वह इस धन्धे को छोड़ दे, अपने तन को भोग के लिए नहीं, केवल दर्शन और प्रदर्शन के लिए प्रस्तुत करना वह आरम्भ कर दे···

"मुझे तुम्हारी सहायता की जरूरत है।" स्मिता ने दोहराया।

"आर्थिक सहायता तुम्हें दूं, इस की गुंजाइश तो तुम ने रखी नहीं।" मैं बोला।

"आर्थिक नहीं, दूसरे तरह की सहायता।" उस ने कहा, "कैबरे की ट्रेनिंग मैं तुम्हारे यहां लेना चाहती हूं। अन्यत्र कहीं भी मेरी जान-पहचान नहीं।"

"ट्रेनिंग से तुम्हारा मतलब है, क्या तुम अपने शो भी 'अलीबाबा' में देना चाहोगी?"

"बेशक।"

सुन कर मेरे भीतर एक सन्नाटा-सा खिंच गया। मैं अपने हर कर्मचारी को हमेशा आप कह कर पुकारता हूं। यदि स्मिता ने 'अलीबाबा' में कैबरे के शो देना आरम्भ किया, तो वह मेरी कर्मचारिणी हो जाएगी और मैं उसे आप कह कर पुकारना चाहूंगा। इस से आप और तुम सम्बोधन गडमड हो जाएंगे। कभी उसे आप कहूंगा, कभी तुम। वह भी मुझे एकान्त में तो सिर्फ तुम कहेगी, लेकिन सरेआम कभी आप कहेगी तो कभी तुम भी कह बैठेगी। अभी वह सरेआम मुझे तुम कहती है। अभी चल जाता है। अभी वह आजाद है।

"स्मिता, मैं तुम्हें अपनी कर्मचारिणी नहीं बनाना चाहता।" मैं ने साहस के साथ कह दिया, "न पूछना कि इस का कारण क्या है।"

"वाह जी, वाह, कारण क्यों न पूछूं?"

"तुम्हें ट्रेनिंग ही लेनी है न? उस का इन्तजाम मैं अन्यत्र कर दूंगा।"

"तुम्हारे होटल के रहते मैं अन्यत्र क्यों जाऊं?"

"ट्रेनिंग यहां ले लेना, शो कहीं और देना।"

"जाओ, जाओ, ऐसी बातें किसी और से करना।"

"भई, पहले तुम अपनी प्लास्टिक सर्जरी तो करवाओ। उस के रिजल्ट देखने के बाद ही तय होगा न कि कैबरे-डान्सर तुम बन

सकोगी या नहीं।"

"मैं प्लास्टिक सर्जन से मिल चुकी हूं। उस ने पूरा आश्वासन दिया है कि मेरे बदन की एक-एक खामी दूर हो जाएगी।"

"आश्वासन छोड़ो, यदि पक्का वचन मिल जाए तो भी, ये मामले ऐसे हैं कि पहले से कोई गारण्टी नहीं दी जा सकती।" मैं बोला, "एक बात पूछूं, स्मिता ?"

स्मिता ने अपलक मेरी ओर देखा।

"क्या तुम सोचती हो, कैबरे-डान्सर बन कर तुम ज्यादा सुखी हो सकोगी ?"

"हां...अभी कितना बीहड़ काम मुझे करना पड़ता है ! नस-नस टूट जाती है। अभी मैं बाकायदा इस्तेमाल की जाती हूं। जैसे मैं कोई बेजान चीज होऊं—कुर्सी या मेज या थरमस-फ्लास्क ! कैबरे-डान्सर इस्तेमाल नहीं होती, सिर्फ देखी जाती है। अभी तो मैं रोज घिस रही हूं। कैबरे-डान्सर जब घूरी जाती है, तब घिसती थोड़े ही है। कमाई भी उस की बहुत नियमित होती है। मैं अपनी पसन्द का पुरुष मास के तीसों दिन नहीं खोज सकती, कैबरे-डान्सर को तीसों दिन दर्शक मिल सकते हैं। नियमित ही नहीं, हमारी तुलना में उस की आय दस गुना भी होती है।"

"सब ठीक है, स्मिता, लेकिन अगर तुम सोचती हो कि कैबरे-डान्सर हर तरह की चिन्ताओं से बरी होती है, तो गल्ती पर हो।" मैं ने कहा, "अगर किसी शो में एक भी सीट खाली रह जाए तो वह अपमानित महसूस करती है। वह चाहती है कि सीटें दूसरी कैबरे-आर्टिस्टों के यहां खाली रहें, किन्तु उस का अपना हर शो हाउसफुल जाए। जो डाह उस के मन में दूसरी कैबरे-आर्टिस्टों के लिए पनपती है, वह उसे चैन नहीं लेने देती। सवाल केवल पैसों का नहीं रह जाता। सवाल हो जाता है हार-जीत का। सवाल हो जाता है सर्वोच्च सिद्ध होने का। सवाल हो जाता है..."

"सवालों से तो मैं भी घिरी हुई हूं। सवाल उधर भी हैं, इधर

भी। फिर मैं कैबरे-डान्सर ही क्यों न बनूं ? खूब ऐश्वर्य क्यों न बटोरूं ?"

"यह बात भी ठीक है।" मुझे सहमति में सिर हिलाना पड़ा। चम्मच से मटर-पनीर उठा कर मैं मुंह में डालने ही वाला था कि मुझे अजगर याद आ गया। अजगर ने जिन्दा चूहे खाए थे ! चूहे कितने घिनौने होते हैं। ओक् ! चम्मच वहीं छोड़ कर मैं वाश-वेसिन की ओर भागा। मुझे कै हो गई। मैं ने कुल्ले किए। पानी की धार छोड़ कर वाश-वेसिन स्वच्छ किया। मैं ने पलट कर देखा। बाथ-रूम के दरवाजे पर स्मिता खड़ी थी—पल्ले का सहारा ले कर।

"क्या हुआ अचानक ?" उस ने पूछा।

"देखा नहीं तुम ने, क्या हुआ ?" उस के सवाल ने मुझे चिढ़ा दिया था।

"सब्जी में कोई कीड़ा-वीड़ा था ?"

"नहीं। मुझे अजगर याद आ गया था।" मैं ने बाथ-रूम में से बाहर कमरे में आते हुए कहा। मैं ने हाथ धो लिए थे, "अब भोजन नहीं कर सकूंगा।"

"अजगर ?" स्मिता चकित होती हुई मेरे पीछे-पीछे आई।

"हां !" मैं ने अकुलाहट के साथ कहा, "मिस गोगो ने पांच सौ रुपयों में एक अजगर खरीदा है, जिसे हर हफ्ते कई जिन्दा चूहे खिलाने होंगे। मिस गोगो का इरादा है अजगर पहन कर कैबरे-डान्सर करने का।"

"अजगर पहन कर—ओह ! अनोखा आइडिया !" स्मिता ऐसी किलकी कि मैं अविश्वास से देखता रह गया।

"कोई ऐसा ही आइडिया मैं भी सोचूंगी। अभी जो बीहड़ काम मैं करती हूं, उन में आइडियाज की जरूरत होती ही नहीं। बस, पड़े रहो या जरा-जरा हिलो-डुलो। लेकिन कैबरे-डान्स के क्या कहने ! डान्स का डान्स, कसरत की कसरत ! स्वस्थ रहो, उछलो-

कूदो, बढ़िया होटल में ऐश करो—और दोनों हाथों से रुपए बटोरो। मैं कैबरे-आर्टिस्ट बन कर रहूंगी।"

"कपड़ों के बजाए सिर्फ अजगर पहन कर नाचना—क्या तुम सोचती हो—एक मनोरंजक आइडिया है?" मैं ने मुंह का बिगड़ा स्वाद ठीक करने के लिए सुगन्धित सुपारी चबाते हुए आश्चर्य से पूछा, "क्या यह एक खतरनाक कदम नहीं? अजगर किसी भी क्षण कैबरे डान्सर को अपनी कुण्डली में कस कर उस की जान निकाल सकता है।"

"ऐसे कैसे निकाल लेगा जान?" स्मिता ने मेरी आशंका को कैन्सल करने में एक क्षण की भी देर न लगाई, "क्या अजगर को पहले से सिखाकर नहीं रखा जाएगा?"

"अजगर मूर्ख होता है। उसे ये बातें सिखाई नहीं जा सकती।"

"मूर्ख तो मनुष्य भी होता है।" स्मिता हंस पडी, "इतना डरने की क्या जरूरत? सौ में से निन्यानवे लोग खाट पर मरते हैं। क्या खाट पर सोना ही बन्द कर दिया जाए?"

इस तर्क का उत्तर मैं क्या देता? लेकिन चुप रह जाने का अर्थ यही होता कि मैं हार गया हूं। मुझे बौखलाहट होने लगी। उसी समय यदि फोन की घंटी न बजती तो कह नहीं सकता, उस तनाव से मैं छूटा किस तरह होता। घणणण! घणणण! मैं ने जा कर रिसीवर उठाया। कनेक्शन काउण्टर-क्लर्क ने मिलाया था। "तिवारी जी बात करना चाहते हैं।" उस ने बताया। फिर मुझे विनोद तिवारी का स्वर सुनाई दिया। फोन वी. टी. ने केवल इतना बताने के लिए किया था कि वह आ पहुंचा है। मैं ने उस से कहा कि फोन करने की जरूरत नहीं थी, तुम सुन्दरे-सुन्दरी के पास सीधे ऊपर चले जाओ। कमरा नम्बर याद है या नहीं? उस ने कहा कि याद है, फिर कनेक्शन काट दिया।

मैं ने रिसीवर क्रेडिल पर रखा ही था कि स्मिता ने कहा,

"चलो, दिखाओ मुझे वह अजगर।"

"अरे, अजगर में क्या देखना है! अजगर जैसा अजगर है।"

"फिर भी देखना चाहती हूं। मिस गोगो को ऐसा अनोखा आइडिया सोचने के लिए बधाई भी दे लूंगी।"

"स्मिता, मैं भरसक कोशिश में हूं कि यह आइडिया मिस गोगो अपने जहन से निकाल दें। अजगरों, नागराजो या किसी भी जाति के सांपों के लिए मुझे सख्त नफरत है। अभी देखा नहीं तुम ने, अजगर की याद आते ही मुझे किस तरह कै हो गई?"

"तो मैं अकेली जाती हूं मिस गोगो के कमरे में। अजगर देख कर अभी लौट आऊंगी।"

"देख लेना, स्मिता, कल-परसों में देख ही लेना, जल्दी क्या है?" मैं ने कहा, "दरअसल···अभी थोड़ी देर में मिस गोगो से मिलने के लिए कोई आने वाला है। नजदीकी रिश्तेदार है। मिस गोगो ने आदेश दिया है कि आज उन से मिलने के लिए किसी को ऊपर न भेजा जाए—सिवा उस रिश्तेदार के!"

"देखा? ऐसे होते हैं ठसके कैबरे-डान्सरों के! हम तो घास-मूली हैं। लोग हमें चरते हैं। हम हैं घास-मूली और कैबरे-डान्सर हैं ऐसे फूल, जिन्हें तोड़ना तो दूर, छूना भी मना हो—जिन्हें केवल देखने की इजाजत भी बड़ी मुश्किल से मिली हो! मैं क्यों रहूं घास-मूली? मैं फूल बन जाऊंगी।"

"जरूर, क्यों नहीं, वाह, भला तुम फूल क्यों नहीं बनोगी।" मैं ने कहा। फिर फोन पर ऐसा आदेश दिया कि जूठे बरतन ले जाने के लिए बैरे को भेजा जाए। रिसीवर क्रेडिल पर रख कर मैं ने कलाई-घड़ी पर गौर किया। समय हो गया है। अब मुझे मिस गोगो के कमरे में पहुंचना चाहिए। स्मिता यदि न जाने कि मैं मिस गोगो के कमरे में जाने वाला हूं, तो ही बेहतर। मैं ने कहा, "डार्लिंग! अब हमारी अगली मुलाकात कब होगी?"

"कहां जाना है तुम्हें ?"

"एक जरूरी कान्फ्रेन्स में।" मैं ने उत्तर दिया, फिर सहसा पूछा, "यहां आते ही तुम रोई क्यों थी ?"

"वैसे ही।"

"वैसे ही कैसे ?" मैं ने उस का उत्तर अस्वीकृत कर दिया।

"अरे, बाबा, वैसे ही !" स्मिता ने नखरे के साथ कहा। वह उठी और मेरे गले लग गई। बुदबुदाई, "रोऊं फिर से ?"

"नहीं, नहीं।"

"अच्छा, रोती हूं।"

"पागल हुई हो ?"

" 'अलीबाबा' में मुझे अपने कैबरे पेश करने दोगे या नहीं ?" उस ने मेरी छाती पर गाल रगड़ते हुए पूछा।

" 'अलीबाबा' में मिस गोगो हैं ही। उन की टक्कर में तुम्हारी साख बनेगी नही···लेकिन मैं अन्यत्र प्रबन्ध करवा दूंगा।"

" 'अलीबाबा' मेरा है, क्योंकि वह तुम्हारा है और तुम मेरे हो। मैं कहीं और नहीं जाऊंगी।"

"और मिस गोगो ?"

"उन का बम्बई तबादला करवा देना। आई भी तो वह बम्बई से ही हैं।"

"अजगर पहन कर नाचने का उन का सनसनीखेज आइडिया मैं बम्बई वालों को क्यों सौंप दूं ?"

"और न करो—आइडिया तुम्हें पसन्द नहीं है।" वह बोली।

"कहा न, भई, तुम्हारे शो किसी बढ़िया होटल में रखवा ही दूंगा।"

" 'अलीबाबा' में इजाजत दो, वरना रोती हूं अभी।" वह बोली।

"रोओ।"

वह रोने लगी। सच्चा-सच्चा रोने की तरह वह ऐसा रोई कि मुझे लगा, वह सचमुच रो रही है! एकदम लिपट गई मुझ से। रोती गई, रोती गई। "यह क्या मजाक है! चुप हो जाओ।" मैं ने कई बार कहा, लेकिन सुनता कौन था! भई कमाल है, ऐसा रेडीमेड रोना—ओयहोय, हद हो गई, मार डाला, बख्शो, बख्शो! मैं ने उसे मस्तक पर चूमा। इस भौं पर, उस भौं पर, दोनों भौंहों के बीच और नीचे नाक पर, इस गाल पर और उस गाल पर, होंठों पर, ठुड्डी पर, होंठों के भीतर उस की जीभ के छोर पर, उस के मसूढ़ों पर—अचानक पलकों और कानों पर भी—चूमता ही चला गया मैं। और वह रोती चली गई। उस के तो गरमागरम आंसू निकले जा रहे थे! भीगे हुए दोनों गाल नमकीन-नमकीन! त्राहि-माम्-त्राहिमाम्! ट्रिन-ट्रिन!

यह ट्रिन-ट्रिन कैसी?

ओह, समझा—काल-बेल बज रही है। जूठे बरतन ले जाने के लिए बैरा आ गया है। चुप, स्मिता, चुप! नहीं होती चुप। भई, दरवाजा खोलना है, बैरा क्या सोचेगा? अच्छा, लो, रहम करती हूं, हो जाती हूं चुप। और स्मिता का रोदन ऐसा रुका कि जैसे जारी हुआ ही नहीं हो। खामोशी से वह बाथ-रूम में चली गई, ताकि बैरा उस की लाल आंखों को देख न पाए। भई, वाकई कमाल कर दिया इस लौंडिया ने! झूठे रोने में आंखें लाल होना तो दूर, वे भीगती भी नहीं ठीक से! आइडिया! एकदम नया आइडिया! यदि मानकर चलूं कि स्मिता कैबरे-डान्सर बन चुकी है—तो एकाध आइटम ऐसा भी रखा जा सकता है कि जिस में स्मिता मंच पर आए तो हंसती-मुस्कराती, लेकिन ज्यों-ज्यों उस के तन-मन्दिर के परदे उठते जाएं, त्यों-त्यों वह उदास होती चले। अन्तिम दो-चार परदे हटाने से पहले वह बाकायदा रोए—चेहरे पर ऐसे भाव लाए कि हाय, ऐसा अत्याचार मुझ पर क्यों? और जब

अन्ततः सारे परदे हट जाएं और मन्दिर अपनी पूर्णता में चमचमा उठे, तब स्मिता के आंसू टपकने लगें, पुतलियां लाल हो जाएं। दर्शकों की छाती फट जाएगी देख कर। साले समझ ही न पाएंगे कि रोना सच्चा है या झूठा। रोते-रोते स्मिता इठलाएगी और कन्धे हिलाएगी। फिर जब वह छिप जाने के लिए किसी ओट की दिशा में भागेगी, तब अकस्मात् उस के होंठों पर मुस्कान थिरक उठेगी। दर्शक उस मुस्कान से ही समझेंगे कि रोदन तो नकली था। बिल्कुल असली जैसे नकली रोदन के साक्षी बन कर दर्शकों की हालत खस्ता हो जाएगी। ह, ह, ह···ये साले दर्शक केवल नंगी खूबसूरती देखने नहीं आते। साथ-साथ ये यह भी देखना चाहते हैं कि खूबसूरती को किसी खतरे का मुकाबला भी करना पड़े। खतरा—कि मुझे रोना आ जाएगा···और कैबरे-डान्सर सचमुच रोने लगे। शेर की दहाड़ सुनाई पड़ने वाला मिस गोगो का वह आइटम उतना लोकप्रिय क्यों हुआ था? परदे की ओट लेने के लिए भागता मन्दिर अचानक शेर की दहाड़ सुन कर हक्का-बक्का रह गया। वाह-वाह, मजे आ गए, नंगे मन्दिर पर शेर! नंगी खूबसूरती खतरे में! खतरा—कि मैं खा डाली जाऊंगी! और अचानक मेरे भीतर जैसे एक कौंध-सी हुई। मिस गोगो का, अजगर पहन कर कैबरे दिखाने का आइडिया, एकदम फिट रहेगा! इस में खतरे का जो जबरदस्त आभास है, वह दर्शकों की रगें फड़का देगा। खतरा—कि किसी भी क्षण अजगर अपनी कुण्डली कस कर कैबरे-डान्सर को हमेशा के लिए···धन्यवाद मिस गोगो! इस आइटम के तो डी-लक्स शो रखे जाएंगे। रोज डी-लक्स शो! पच्चीस रुपयों के टिकट में पांच रुपए और मिलाने पर ही प्रवेश। देखिए, देखिए, लाजवाब सर्प-सुन्दरी! अजगर के हड़कम्प में नग्नता का हाहाकार! मुझे अपना यह विचार छोड़ ही देना चाहिए कि मैं घूस दे कर रिंग-मास्टर को पटा लूं, ताकि मिस गोगो को भरमाया जा सके कि अजगर-नृत्य के शो केवल कल्पना

में सम्भव है, वास्तविकता में नहीं। बल्कि; अब तो रिहर्सलों में रिंग-मास्टर यदि हताश होने लगे तो मैं उसके हौंसले बढ़ाऊं !

अजगर-नृत्य का मिस गोगो का आइडिया मुझे पसन्द क्यों नहीं आया था अब तक ? शायद इसलिए कि सांपों से मुझे नफरत है, सांपों के प्रति भयानक पूर्वाग्रह बैठा है मेरे भीतर। इसी लिए इस आइडिया पर मैं तटस्थ हो कर सोच-विचार न कर सका।

विचारों में मैं इतना लीन था कि दरवाजे की सिटकनी मैं ने कब उतारी, पता ही न चला मुझे। सिटकनी उतरने का अर्थ था दरवाजे का खुलना और दरवाजा खुलने का अर्थ था बैरे का भीतर आना। ये सब अर्थ सार्थक होते रहे। बरतन ट्रे में रख कर बैरा चला गया। दरवाजा बन्द। सिटकनी ऊपर। स्मिता बाथ-रूम में से वापस कमरे में।

"रोऊं फिर से ?" स्मिता का पूछना और मुझे जोर-जोर से हंसी आ जाना। फिर, बिना कुछ सोचे-विचारे मेरा यह वचन दे देना कि स्मिता 'अलीबाबा' में दिखाएगी कैबरे। भला क्यों नहीं दिखाएगी ? 'अलीबाबा' किस का है और मैं किस का हूं ?

स्मिता चली गई, ताकि मैं 'जरूरी कान्फ्रेन्स' में (लिपस्टिक के दाग पोंछने के बाद) जा सकूं। 'कान्फ्रेन्स-रूम' याने मिस गोगो के कमरे की ओर मैं रवाना हुआ। स्मिता के ही बारे में सोच रहा था मैं। विचित्र है यह लड़की। मैं ने कई बार चाहा है कि वह नब्बे रुपल्ली की अपनी नौकरी छोड़ दे और कहीं दो-ढाई सौ का काम स्वीकारे, लेकिन वह मानती नहीं। उस का कहना है, "यह घटिया नौकरी मुझे हमेशा याद दिलाती रहती है कि मुझे कोई छलांग लगानी है—पलक झपकते कहीं-से-कहीं पहुंच जाना है। यदि मैं बेहतर नौकरियां स्वीकार करती रही तो छलांग लगाना मैं भूल जाऊंगी—बदले में सीखूंगी धीमे-धीमे रेंगना ! आज नब्बे की नौकरी। कल सवा सौ की नौकरी। परसों डेढ़ या पौने दो सौ की।

दस-बारह वर्षों बाद ढाई या तीन सौ की नौकरी। नहीं, इतना लम्बा इन्तजार मुझे नहीं करना। अगर करूंगी तो मैं यह नव्वे रुपल्ली की ही नौकरी करूंगी—ताकि जोर से छलांग लगाने की मेरी इच्छा दिन-रात जलती रहे! ठीक है, नव्वे में गुजारा नहीं होता, लेकिन उस का उपाय मैं ने होटल 'अलीबाबा' के पलंगों पर ढूंढ़ ही लिया है!"

सचमुच स्मिता यदि महत्वाकांक्षाओं की आग में झुलसती न रही होती, तो आज उस ने कैबरे-डान्सर बन जाने का फैसला कर लेने में सफलता न पाई होती।

मैं ने मिस गोगो के कमरे में प्रवेश किया। दरवाजे को मिस गोगो ने उढ़का हुआ छोड़ दिया।

"जब हरामजादा आएगा, तब आप यहां बैठे होंगे।" मिस गोगो ने मुझे सोफे पर मेरी जगह बताई। मैं ने गौर किया कि उस जगह पर बैठने से, चन्दन बाली अपने प्रवेश के साथ, मेरा चेहरा नहीं देख सकेगा। पहली निगाह में वह मुझे पीछे से ही देखेगा। चूंकि उस ने किसी अन्य पुरुष की मौजूदगी की आशा न रखी होगी, प्रवेश के साथ ही उस के हौंसले हचमचा जाएंगे।

"हरामजादा यहां, आप यहां और मैं यहां—इस तरह सब बैठेंगे।" मिस गोगो ने जगहों की ओर इशारे करते हुए बताया।

मेरी निगाह उधर उठी, जिधर अजगर का पिंजड़ा होना चाहिए था। पिंजड़ा नजर न आया। मिस गोगो ने उधर एक परदा खींच दिया था। 'हरामजादे' के बैठने की जगह ऐसी तय की गई थी कि उस के और अजगर के पिंजड़े के बीच केवल परदे की ओट रहे।

"अजगर परदे के पीछे है न?" मैं ने पूछ लिया। मिस गोगो ने हां में सिर हिलाया।

"सो गया होगा?" मैं ने फिर पूछा।

"हां। चूहे खाने के आठ-नौ घण्टे बाद ही इस में इतनी चुस्ती

आती है और आएगी कि यह कैबरे में भाग ले सके।" मिस गोगो ने जानकारी दी, "शो-टाइम से नौ घण्टे पहले हम इसे चूहे खिला ही दें, इस का ध्यान बिल्कुल घड़ी देख कर रखना होगा।"

"वरना ?" मैं ने भौंहें उठाईं।

"वरना शो-टाइम तक यह पूरी तरह चैतन्य हो नहीं पाएगा। इस से यह अपनी दुम को ठीक वहीं पर जमा कर नहीं रख सकेगा, जहां इसे रखनी चाहिए होगी।"

"क्या आप इस बात को थोड़ा स्पष्ट करेंगी ?" मैं ने निवेदन के स्वर में कहा।

"क्यों नहीं ! मुझे इस अजगर को धारण इस तरह करना है कि मन्दिर की दोनों प्रमुख मोरियां छिप जाएं।"

सुन कर मैं ने धीमे-से एक सीटी बजाई।

"अजगर की गर्दन मेरे हाथ में रहेगी।" मिस गोगो ने आगे बताया, "गर्दन पकड़ ली जाने पर अजगर को अपनी दासता का अहसास होता रहता है। मैं तो रिंग-मास्टर को अजगरों के मनो-विज्ञान का पण्डित ही कहूंगी। इतनी सूक्ष्म बातें उस ने समझाई हैं कि मैं कायल हो गई हूं।"

"गर्दन पकड़ सकेंगी आप ?" मैं विश्वास नहीं कर पा रहा था।

"अभी तक तो मैं ने गर्दन क्या, दुम भी छू कर नहीं देखी है उस की ! अभी मुझे डर लग रहा है। घिन भी कम नहीं है, लेकिन..." मिस गोगो ने अपना सिर हल्के से झटक दिया, "डर आखिर कब तक दूर नहीं होगा ? घिन को भी जाते क्या देर ? आश्चर्य नहीं, यदि दो-तीन दिनों में ही अजगर को मैं धारण करने लगूं।"

"रिहर्सलों की सही शुरुआत तभी होगी।" मैं बोला, "शुभ कामनाएं !"

"एक हाथ से मैं उस की गर्दन पकड़ूंगी और दूसरे हाथ से, उस की लम्बाई का एक हिस्सा खींच कर, वक्ष की दोनों चोटियां ढांक लूंगी। यों!" मिस गोगो ने पोज़ बना कर दिखाया। पोज़ में जरा भी खामी नहीं थी।

"गर्दन कहीं इतनी मोटी न हो कि एक मुट्ठी में पकड़ी ही न जा सके।" मैं ने कहा।

"अजगर खुद तो मोटे होते हैं, लेकिन गर्दन इन की पतली रहती है। गुस्सा आने पर गर्दन ये फुला तो सकते हैं, किन्तु गुलाम अजगरों को गुस्सा नहीं आया करता।"

"और अगर आ जाए?"

"कहा न, नहीं आ सकता।"

"हूं···तो आप ने अपना वक्ष, गर्दन से नीचे के अजगर द्वारा ढक लिया। इस में ढाई-तीन फीट अजगर इस्तेमाल हुआ। बाकी अज़गर?"

"वक्ष नहीं बॉस, वक्ष के शिखर।"

"हां, हां, शिखर—और सात-आठ फीट लम्बा बाकी अजगर?"

"बाकी का अजगर आधी कुण्डली-सी लगाएगा—मेरी कमर पर।"

"कमर पर आधी कुण्डली?"

"यस, बॉस; कमर पर आधी कुण्डली-सी लगा कर अजगर, अपनी लम्बाई को मेरे पीछे ले जाएगा और मन्दिर की मोरी नम्बर एक को ढक देगा।"

"आई सी!"

"इस के बाद जितना अजगर बच रहेगा, उसे उस की दुम कहा जा सकता है। यह दुम मेरे पीछे से आगे निकलेगी—कहने की जरूरत नहीं कि कहां से—और फिर···"

"मोरी नम्बर दो भी···"

"ढक जाएगा ।" मेरा वाक्य मिस गोगो ने पूरा किया । वह व्यावसायिक स्तर पर गम्भीर थीं ।

"अद्‌भुत !" मैं बोले बिना न रह सका ।

"कैबरे होते समय बहुत आवश्यक है कि अजगर आलस्य के मूड में न हो, वरना उस की दुम, कैबरे के झटकों के कारण, मोरी नम्बर दो पर से हट जाएगी । दुम के बाद वाला हिस्सा भी, मोरी नम्बर एक पर से खिसक जाएगा—जब कि होना यह चाहिए कि जब तक डान्स लगभग खत्म न हो, तब तक मोरियां एक दम ढकी रहें—टाइट !"

"और जब डान्स लगभग खत्म हो जाए ?"

"तब अजगर अपनी दुम ढीली करने लगेगा ।"

"वह जानेगा कैसे कि डान्स लगभग खत्म हो गया है ? मैं आप को बता चुका हूं कि अजगर एक प्रकार का सांप ही है और सांप मूर्ख होते हैं ।"

"रिंग-मास्टर को भी मालूम है कि सांपों में बुद्धि अधिक नहीं हुआ करती ! लेकिन रिंग-मास्टर ने एक नहीं, अनेक सांपों को ट्रेनिंग दी है...डान्स जब चरम उत्कर्ष की ओर बढ़ेगा तो मैं अजगर को एक इशारा करूंगी । अजगर उस इशारे को हर हालत में समझेगा और फौरन उसकी दुम ढीली हो कर मोरी नम्बर दो पर से हट जाएगी ।"

"आई सी !"

"उसी वक्त मैं तेजी से पलट कर दर्शकों की ओर अपनी पीठ घुमा दूंगी । मोरी नम्बर दो की झांकी भी उन्हें मुश्किल से मिलेगी ?"

"और वे देखेंगे कि अजगर की दुम, धीरे-धीरे, मोरी नम्बर एक पर से भी हट रही है ।"

"यस, बॉस, वे सांस रोक कर देखेंगे कि मैं नाच रही हूं, थिरक

रही हूं, आसमान डोल रहा है, धरती कांप रही है—और अजगर की दुम हट रही है ! जब दोनों मोरियां प्रकट हो चुकेंगी, तब मैं दो क्षण, दर्शकों की ओर पीठ घुमाए रख कर नाचूंगी। फिर, दो क्षण, दर्शकों की ओर चेहरा घुमा कर नाचूंगी। इस दौरान में अज र की उस लम्बाई को भी हटा लूंगी, जिस ने मेरे वक्ष के शिखर छिपा रखे होंगे। अजगर की गर्दन तो मेरे हाथ में ही रहेगी, किन्तु शेष सारा अजगर बेल्ट की तरह कमर पर लिपटा जाएगा। जब दर्शक दोनों मोरियों की झलक पा लेंगे, तब मैं भागूंगी। रोशनियां शरमाएंगी, संगीत कांपेगा, मंच थरथराएगा—और मैं भागकर परदे की ओट ले लूगी।"

"खूब ! बहुत खूब !" और मैं ने ग्यारह तालियां बजा कर मिस गोगो की सूझबूझ को सलामी दी।

मिस गोगो ने ऐसी सलामी की आशा नहीं रखी थी। उन्होंने पूछा, "आप तो नाराज-से थे इस अजगर-नृत्य को ले कर ? फिर कैसे आप…"

"मुझे अपनी भूल समझ में आ गई है, मिस गोगो ! मैं ने बाद में बहुत सोचा। यही लगा कि सही आप हैं और मैं गलत।" मैं ने कहा। फिर मैं ने अपनी 'चार-मीनार' सुलगा कर गहरा कश लिया, "बल्कि मुझे तो लगता है, मिस गोगो, कि इस आइटम के डी-लक्स शो रखे जाएं—पांच रुपए एक्स्ट्रा चार्ज कर के ! दाम बढ़ाने से तो घटिया चीजों का भी आकर्षण बढ़ जाता है—जब कि यह तो होगा अजगर-नृत्य !"

"डी-लक्स शो ? हां, यह ठीक है—ऐसा आइडिया मुझे सूझा ही नहीं था।" मिस गोगो उछल पड़ीं। फिर उन्होंने अपनी कलाई-घड़ी में देखा और कहा, "तीन बजने में सिर्फ एक मिनट बाकी है। साला सूअर का बच्चा अभी तक आया नहीं।"

"मेरा खयाल है, वह जान-बूझ कर बिल्कुल सही समय पर आ

रहा है, ताकि आप पर ऐसा इम्प्रेशन पड़े कि मुलाकात के लिए वह कोई खास बेताब नहीं।" मैं ने मतदान किया।

"जबकि उस दोगले कुत्ते की लार टपक रही होगी।" मिस गोगो के नथुने फूल कर रक्तिम हो गए।

"एक सलाह देना चाहता हूं।" मैं बोला, "दोगले कुत्ते के साथ जो भी संवाद वगैरह हों, उसे आप टेप-रिकार्ड न कर लीजिएगा। बाद में, जब भी आप उस टेप को सुनेंगी, आप का मनोरंजन नहीं होगा। शायद आप के आसपास उदासी ही घिरेगी। इसी लिए मैं नहीं चाहता कि आप इस 'अपमान-नाटिका' को टेप करें।"

मेरे प्रस्ताव पर मिस गोगो दो क्षण सोचती रहीं, फिर उन्होंने उकडूं बैठ कर सोफे के नीचे हाथ बढ़ाया। मैं समझ गया कि वहां टेप-रिकार्डर छिपाया गया है। 'टिच्च' की एक धीमी आवाज के साथ टेप-रिकार्डर ऑफ कर के मिस गोगो उठ खड़ी हुईं।

फिर एक खामोशी खिंच गई कमरे में। काउण्टर-क्लर्क किसी भी क्षण फोन कर के पूछ सकती थी कि कोई मिस्टर चन्दन वाली मिस गोगो से मिलना चाहते हैं। क्या ऊपर आने दिया जाए? मैं और मिस गोगो बार-बार फोन की ओर देखते। मुझे वी. टी. की याद आई। यहां, इस कमरे में, कुछ ही समय बाद, प्राचीन-कालीन एक प्रेमी-प्रेमिका आपस में मिलने वाले हैं; ऐसे प्रेमी-प्रेमिका, जो अनेक बार मैथुन-मुद्राएं स्थापित कर चुके हो। सुन्दरे और सुन्दरी की मैथुन-मुद्राएं वी. टी. के कैमरे में, क्रमवद्धता के साथ, कैद होती जा रही होंगी—ऐन अभी। जब यहां प्राचीन-कालीन प्रेमी-प्रेमिका एक-दूसरे की खाल उधेड़ेंगे, तब भी; सुन्दरे-सुन्दरी के कमरे में वही चक्कर चल रहा होगा···कुछ दीवारों का ही तो अन्तर है! यदि ये दीवारें हटा दी जाएं, यदि सचमुच कोई ऐसा जादू हो कि ये दीवारें गायब हो जाएं तो—प्राचीन-कालीन इन प्रेमी-प्रेमिका की निगाह उन मैथुन-मुद्राओं पर पड़ेगी। इस की क्या प्रतिक्रिया होगी इन पर? इन के मूड किस-किस तरह बदलेंगे? मैथुन-मुद्राएं दे रहे

वे सुन्दरा-सुन्दरी भी इन्हें देख लेंगे। वे समझ जाएंगे कि प्राचीन-कालीन प्रेमिका प्राचीन-कालीन प्रेमी का अपमान कर रही है। हिन्दी भाषा के जानकार न होते हुए भी सुन्दरे-सुन्दरी की समझ में इतना तो आ ही जाएगा कि यह जोड़ा झगड़े के मूड में है, न कि मैथुन के। झगड़े के मूड की भनक पाने की कैसी प्रतिक्रिया सुन्दरे-सुन्दरी पर होगी? ओहो, यह तो बड़ी मजेदार कल्पना है! सच-मुच यदि ऐसा जादू किया जा सके कि होटल के सभी फर्श, सभी छतें, सभी दीवारें पारदर्शी हो जाएं—तो हर तरफ क्या-क्या, कैसा-कैसा नजर आ जाए! किसी का नहाना, किसी का सोना; किसी का कपड़े पहनना, किसी का उतारना; किसी का चीं-चीं करना, किसी का रोना—सब ऐसा तो अचानक प्रकट हो कि देखो तो पछताओ और न देखो तो पछताओ!...लेकिन यह क्या हो गया है मेरे दिमाग को? ये कैसी ऊटपटांग कल्पनाएं आ रही हैं मुझे? जरूर कोई बात ऐसी है, जिसे मैं नकार देना चाहता हूं। नकारने के लिए मैं 'उस बात' से 'अलग तरह की बातें' सोचने की कोशिश में हूं—और वे 'अलग तरह की बातें' ऊटपटांग हैं। 'उस बात' को नकारने का यह तरीका अच्छा नहीं। लेकिन पता तो चले कि 'उस बात' का रूप क्या है? अच्छा, हां—यह अजगर! इसी कम्बख्त अजगर को मैं याद नहीं करना चाहता; किन्तु इस का अर्थ यह तो नहीं कि ऊटपटांग बातों के भंवर में फंस जाया जाए? अजगर साला इसी कमरे में मौजूद है—परदे के ऐन पीछे। परदा हटा कर या परदे के पीछे ही पहुंच कर मैं उसे देख क्यों न लूं? अब तो मैं इस बेचारे अजगर को स्वीकार कर लेने के मूड में आ गया हूं। अब मुझे इस से कतराना नहीं चाहिए।

मैं उठा और परदे की तरफ बढ़ा। परदा मैंने हटा दिया। सामने पिंजड़ा। पिंजड़े में अजगर। मिस गोगो का अनुमान गलत। अजगर सो नहीं रहा था। वह जाग गया था। वह बार-बार अपनी जीभ लपलपा रहा था। बारीक, लाल, गीली और फटी हुई जीभ!

उस की आंखें झपक नहीं रही थीं। झपकें भी कैसे ? इन सांपों की पलकें होती ही नहीं। मछलियों की तरह ये भी आंखें नहीं झपका सकते। कालेज के दिनों में, सांपों पर एक लेख हमारे पाठ्य-क्रम में था। उस लेख की काफी-कुछ बातें अभी तक याद हैं। अब तो जिन बातों को मैं भूल गया हूं, वे भी याद आने लगेंगी—अजगर से दोस्ती जो होने वाली है ! हां, तो जब इन सांपों की पलकें ही नहीं होती, फिर पता कैसे चलता है कि ये सोए हुए हैं या जाग रहे हैं ?—क्योंकि आंखें तो इन की नींद में भी ज्यों-की-त्यों खुली रहती हैं। ओह, हां, इन की जीभ ! जागते में इन की जीभ निरन्तर लपलपाएगी। सोते में नहीं लपलपाएगी। अजगर जाग रहा था। सारे पिंजड़े में उस का शरीर गडमड फैला हुआ था। उस ने सिर उठा कर मुझे घूरना शुरू कर दिया। अपना मुंह वह पिंजड़े की चादर तक ले आया। चादर में अनेक छेद थे—बड़े-बड़े। एक छेद में से उस ने अपने मुंह की नोक, पिंजड़े से बाहर निकाली। उस नोक के बीच से उसकी जीभ लपलपाती रही—मैं ने देखना जारी रखा।

"सुन्दर है—है न ?" अपने पीछे से मैं ने मिस गोगो की आवाज सुनी।

"हां, अजगर वाकई सुन्दर है।" मैं ने उत्तर दिया, हालांकि मुझे वह घिनौना ही लग रहा था। मिस गोगो भी कह चुकी हैं कि अजगर के प्रति उन की घिन अभी दूर नहीं हुई है। आर्थिक आकांक्षाएं हमारे शब्दों को किस आसानी से पलट देती हैं ! मिस गोगो अब मेरे पीछे नहीं थीं। वह मेरे बगल में आ खड़ी हुई थीं। अजगर ने अपना मुंह चादर के छेद में से वापस खींच लिया था। छेदों वाली चादर द्वारा पिंजड़े की छत और फर्श का निर्माण किया गया था। पिंजड़े की शेष चार दीवारें, पास-पास लगी मजबूत सलाखों से बनी थीं। सलाखों के बीच से अजगर अपने मोटे शरीर को निकाल नहीं सकता था, यह निश्चित बात थी, लेकिन न जाने क्यों, मुझे

ऐसा लगा कि जब रात को मैं सो जाऊंगा, तब अजगर सलाखों के बीच से निकल आएगा। मिस गोगो के कमरे का दरवाजा बन्द होते हुए भी, वह अपने शरीर को चपटा कर के, दरवाजे के नीचे से पार हो जाएगा। वह मेरे कमरे के पास आ पहुंचेगा। यहां भी वह दरवाजे के नीचे से पार हो कर भीतर आ जाएगा। वह मेरे पलंग पर चढ़ेगा और अपनी लपलपाती जीभ मेरे मुंह में डाल कर मुझे चूमेगा। इस चुम्बन का अर्थ होगा—धन्यवाद, 'अलीबाबा' के मालिक ! कि तूने मुझे स्वीकार किया ! —और अगर मैं चीखा-चिल्लाया, चुम्बन के जवाब में अगर मैं मुस्कराया नहीं—तो यह अजगर मुझे जिन्दा ही लील जाएगा ! छी, छी, कैसी बचकानी कल्पना !

और मैं मुस्कराने लगा। मैं ने मिस गोगो की आंखों में देखा। मिस गोगो मुस्कराना शुरू कर चुकी थीं। मुझ से निगाह मिलते ही उन्होंने मुस्कान को और फैला देते हुए कहा, "इस की आंखें आकर्षक हैं—हैं न ?"

"जी हां, मिस गोगो।" मैं ने अपनी निगाह उन की आंखों पर से अजगर की आंखों पर केन्द्रित की, जैसे कि मैं दोनों जोड़ियों की तुलना करना चाह रहा होऊं, फिर कहा, "सच्चाई यह है कि स्त्रियों में जो स्थिति आप की आंखों की है, वही स्थिति, अजगरों में इस अजगर की आंखों की है !"

"इसी लिए तो कहती हूं कि मैं इस से डरूंगी नहीं।"

"हां, आप बिल्कुल नहीं डरेंगी। इसे आप फूल की माला की तरह पहन लेंगी।" मैं बोला। क्या हम एक-दूसरे के झूठ पकड़ नहीं रहे थे ? परवाह किसे थी ! और मैं ने स्मिता से क्या कहा था ? यही न कि होड़ फिर आर्थिक नहीं रह जाती। होड़ हो जाती है सर्वोच्च सिद्ध होने की। मिस गोगो चाहती हैं, तीसों दिन उन का हर शो हाउसफुल जाए। क्या उन्हें ऐश्वर्य की इतनी ज्यादा कमी है कि दो-चार सीटें खाली रह जाना उन्हें मुसीबत के पहाड़ जैसा

मालूम पड़े ? मैं भी चाहता हूं कि मेरा 'अलीबाबा' इतना कमाए, इतना कमाए कि खुद मैं ही तौबा कर जाऊं। क्या मुझे भी ऐश्वर्य की इतनी ज्यादा कमी है कि 'अलीबाबा' की आय का अंक थोड़ा-सा भी नीचे जाने पर मैं तड़प जाऊं ? निश्चय ही हम दोनों की स्थितियां इतनी बुरी नहीं—किन्तु हम दोनों ही इस अजगर को स्वीकार करने पर आमादा है। ऊपर-ऊपर से यह मामला केवल आर्थिक भले लगता हो, भीतर से, यह सारा संघर्ष अहं का है। यदि कोई और होटल 'अलीबाबा' से ज्यादा कमाता है तो मेरा अहं आहत होता है। यदि कैबरे-डान्स के किसी भी शो में एकाध कुर्सी खाली रह जाती है तो मिस गोगो का अहं तिलमिलाता है। मिस गोगो की तिलमिलाहट में तो आशंका भी मिली होती है—कि मेरा शो हाउसफुल नहीं, जबकि दूसरी डान्सरों के शो जरूर हाउसफुल हैं! इन सारी गुत्थियों ने ही जैसे इस अजगर का रूप धर कर, यहां, इस कमरे में अड्डा जमा लिया है!

"हरामजादा अब तक नहीं आया!" मिस गोगो ने पुनः अपनी कलाई-घड़ी पर निगाह डाली, "तीन बज कर दस मिनट हुए जा रहे हैं।"

मैं सोचने लगा कि 'हरामजादे' के आने-न आने के साथ भी तो मिस गोगो का अहं जुड़ा हुआ है। क्या इस अजगर में 'हरामजादे' का आंशिक प्रतिरूप है ? मेरी निगाहों ने अजगर की दुम खोजने की कोशिश की। दुम का ही तो सारा मजा है—कि वह उसी वक्त सरके, जब उसे सरकना चाहिए! दुम उस के शरीर की गडमड लम्बाई में कहीं दबी पड़ी थी, नजर न आ सकी। अजगर का मुंह सलाखों के पास पड़ा था। चमकती, मूक आंखें! लपलप करती गीली जीभ!

"मैं नहीं चाहती कि हरामजादा भीतर आते ही अजगर को देखे।" मिस गोगो ने कहा, "क्यों न परदा फिर से खींच दिया जाए ?"

मैं बोला कुछ नहीं, किन्तु परदा मैं ने ही खींच दिया।

मैं उस जगह पर आ बैठा, जहां, हरामजादे के प्रवेश के समय मुझे बैठे होना चाहिए था। 'चार-मीनार' कब की खत्म हो गई थी। मैं ने नई निकाली। सुलगाई। मिस गोगो ने 'फोर-स्क्वैयर' सुलगा कर कश लिया। इन्तजार असहनीय होता जा रहा था। अनुपस्थित रह कर हरामजादा हम दोनों का मानसिक शोषण कर रहा था। मैं ने वी. टी. को याद करना चाहा, जो मैथुन-मुद्राओं से मुकाबला कर रहा होगा—लेकिन उस की याद भी इस अहसास को मिटा न सकी कि शोषण हो रहा है···

घणणणण ! घणणणण !

फोन ने खामोशी को चीर दिया। मिस गोगो ने उछल कर रिसीवर हाथ में ले लिया। "हैलो ?" स्वर कैसा थरथरा रहा था मिस गोगो का !

जब रिसीवर उन्होंने वापस रखा, मैं ने उन की आंखों में मक्कारी की एक ऐसी चमक देखी, जो रहस्यमय कम और खतरनाक ज्यादा थी। उह, खतरा यदि है भी तो हरामजादे को, मुझे क्या !

"काउण्टर-क्लर्क का फोन था। वह आ रहा है !" मिस गोगो ने तपती आवाज़ में कहा, "देखिए, बॉस, आप बीच में बोलिएगा नहीं। कोई दखल न दीजिएगा बीच में—हां ! आप को चुपचाप बस, नाटक देखना है। हाय, कितनी उत्तेजना हो रही है ! मुझे अभी तक नहीं मालूम कि उस सूअर के बच्चे का अपमान करना किस तरह है···बॉस, जब मैं आप का परिचय उसे दूं, हाथ न मिलाइएगा। इस तरह मुस्कराइएगा कि जैसे सामने कोई कीड़ा-मकोड़ा खड़ा हो ! हाय राम, क्या करूं इस हरामजादे के साथ ? क्यों न उस को काट कर अजगर को खिला दूं। चूहे से तो बेहतर ही रहेगा—हा-हा-हा ! हाय, मर गई—कैसा जोरदार आइडिया ! इसी लायक तो है कम्बख्त—ओयहोयहोय···बाबा रे बाबा···आप हंसते क्यों नहीं, बॉस ? चुप क्यों हैं ? इसी नरक के कीड़े ने मुझे बर्बाद किया है।

मालूम पड़े ? मैं भी चाहता हूं कि मेरा 'अलीबाबा' इतना कमाए, इतना कमाए कि खुद मैं ही तौबा कर जाऊं। क्या मुझे भी ऐश्वर्य की इतनी ज्यादा कमी है कि 'अलीबाबा' की आय का अंक थोड़ा-सा भी नीचे जाने पर मैं तड़प जाऊं ? निश्चय ही हम दोनों की स्थितियां इतनी बुरी नहीं—किन्तु हम दोनों ही इस अजगर को स्वीकार करने पर आमादा है। ऊपर-ऊपर से यह मामला केवल आर्थिक भले लगता हो, भीतर से, यह सारा संघर्ष अहं का है। यदि कोई और होटल 'अलीबाबा' से ज्यादा कमाता है तो मेरा अहं आहत होता है। यदि कैबरे-डान्स के किसी भी शो में एकाध कुर्सी खाली रह जाती है तो मिस गोगो का अहं तिलमिलाता है। मिस गोगो की तिलमिलाहट में तो आशंका भी मिली होती है—कि मेरा शो हाउसफुल नहीं, जबकि दूसरी डान्सरों के शो जरूर हाउसफुल हैं! इन सारी गुत्थियों ने ही जैसे इस अजगर का रूप धर कर, यहां, इस कमरे में अड्डा जमा लिया है!

"हरामजादा अब तक नहीं आया!" मिस गोगो ने पुनः अपनी कलाई-घड़ी पर निगाह डाली, "तीन बज कर दस मिनट हुए जा रहे हैं।"

मैं सोचने लगा कि 'हरामजादे' के आने-न आने के साथ भी तो मिस गोगो का अहं जुड़ा हुआ है। क्या इस अजगर में 'हरामजादे' का आंशिक प्रतिरूप है ? मेरी निगाहों ने अजगर की दुम खोजने की कोशिश की। दुम का ही तो सारा मजा है—कि वह उसी वक्त सरके, जब उसे सरकना चाहिए! दुम उस के शरीर की गडमड लम्बाई में कहीं दबी पड़ी थी, नजर न आ सकी। अजगर का मुंह सलाखों के पास पड़ा था। चमकती, मूक आंखें! लपलप करती गीली जीभ!

"मैं नहीं चाहती कि हरामजादा भीतर आते ही अजगर को देखे।" मिस गोगो ने कहा, "क्यों न परदा फिर से खींच दिया जाए ?"

मैं बोला कुछ नहीं, किन्तु परदा मैं ने ही खींच दिया।

मैं उस जगह पर आ बैठा, जहां, हरामजादे के प्रवेश के समय मुझे बैठे होना चाहिए था। 'चार-मीनार' कब की खत्म हो गई थी। मैं ने नई निकाली। सुलगाई। मिस गोगो ने 'फोर-स्क्वैयर' सुलगा कर कश लिया। इन्तजार असहनीय होता जा रहा था। अनुपस्थित रह कर हरामजादा हम दोनों का मानसिक शोषण कर रहा था। मैं ने वी. टी. को याद करना चाहा, जो मैथुन-मुद्राओं से मुकाबला कर रहा होगा—लेकिन उस की याद भी इस अहसास को मिटा न सकी कि शोषण हो रहा है···

घणणणण ! घणणणण !

फोन ने खामोशी को चीर दिया। मिस गोगो ने उछल कर रिसीवर हाथ में ले लिया। "हैलो ?" स्वर कैसा थरथरा रहा था मिस गोगो का !

जब रिसीवर उन्होंने वापस रखा, मैं ने उन की आखों में मक्कारी की एक ऐसी चमक देखी, जो रहस्यमय कम और खतरनाक ज्यादा थी। उह, खतरा यदि है भी तो हरामजादे को, मुझे क्या !

"काउण्टर-क्लर्क का फोन था। वह आ रहा है !" मिस गोगो ने तपती आवाज़ में कहा, "देखिए, बॉस, आप बीच में बोलिएगा नहीं। कोई दखल न दीजिएगा बीच में—हां ! आप को चुपचाप बस, नाटक देखना है। हाय, कितनी उत्तेजना हो रही है ! मुझे अभी तक नहीं मालूम कि उस सूअर के बच्चे का अपमान करना किस तरह है···बॉस, जब मैं आप का परिचय उसे दूं, हाथ न मिलाइएगा। इस तरह मुस्कराइएगा कि जैसे सामने कोई कीड़ा-मकोड़ा खड़ा हो ! हाय राम, क्या करूं इस हरामजादे के साथ ? क्यों न उस का काट कर अजगर को खिला दूं। चूहे से तो बेहतर ही रहेगा—हा-हा-हा ! हाय, मर गई—कैसा जोरदार आइडिया ! इसी लायक तो है कम्बख्त—ओयहोयहोय···बाबा रे बाबा···आप हंसते क्यों नहीं, बॉस ? चुप क्यों हैं ? इसी नरक के कीड़े ने मुझे बर्बाद किया है।

इसी के कारण मैं कैबरे-डान्सर बनी हूं। आने तो दीजिए…"

"मिस गोगो…आप को क्या हो गया है ?"

"मुझे ? मुझे क्या होगा ? आज तो जो भी होना है, उसी के साथ होगा।"

"इस तरह ठहाके न लगाइए। वह बाहर से सुन लेगा।"

ठहाके, हंसी, तीव्र मुस्कान, मन्द-मन्द मुस्कान—सब को मिस गोगो ने तत्क्षण रोक दिया। मुझे आश्चर्य हुआ कि इतने जोरों का ब्रेक किस उपाय से लगाया उन्होंने। पलक झपकते वह इतनी गम्भीर हो गईं कि ठहाकों के बीच अभी-अभी उन की जो बकवास मैं ने सुनी थी, वह-सब सपने-सा लगने लगा।

और तब काल-बेल बजी।

अपनी जगह से उठे बिना मिस गोगो जोर से बोलीं, "खुला है, आ जाओ।"

न जाने क्यों, मुझे ऐसा लगा कि मिस गोगो की आवाज भर आई है। सन्नाटा। 'सन्नाटे के बीच दरवाजा खुल गया है, चन्दन बाली प्रवेश कर चुका है, चन्दन बाली ने पीछे से मेरे सिर को देख लिया है, मेरी "चार-मीनार" का धुआं भी उस ने सूंघ लिया है, तीसरे पुरुष की मौजूदगी से वह इतना हतप्रभ है कि बोल नहीं पा रहा – इसी लिए यह सन्नाटा टूट नहीं रहा…' मैं अपनी जगह पर पुतले की तरह बैठा-बैठा अनुमान लगाता रहा। धड़कन मेरी भी बढ़ गई थी—फिर मिस गोगो की हालत तो…

मिस गोगो की आंखें दरवाजे की ओर नहीं थीं। वह देख रही थीं उस परदे की ओर, जिस के पीछे अजगर था।

"क्या मैं भीतर आ सकता हूं ?" मैं ने एक पुरुष स्वर अपनी पीठ की ओर सुना। चन्दन बाली का स्वर ठसकेदार था। जब मिस गोगो ने उस से कह ही दिया था कि आ जाओ, फिर इस प्रश्न की जरूरत क्या थी ?

मिस गोगो ने परदे पर ही आंखें स्थिर रख कर कहा, "मेरी

अनुमतियों की जरूरत तुम्हें कब हुई है !"

फिर सन्नाटा...तब जूतों की आवाज़—फर्श पर बिछे कठोर-कठोर लिनोलियम पर जूतों की ठकठक...

"मेरी ओर देखोगी भी नहीं ?" वही पुरुष स्वर।

"क्यों आए हो मुझ से मिलने ?" मिस गोगो तड़प कर खड़ी हो गईं। अब उन की आंखें उस पुरुष पर थीं, जिस का आभास मुझे कनखियों से मिल रहा था।

"क्यों आया हूं ? क्योंकि तुम ने बुलाया।"

"मैं ने अपनी मरजी से नहीं, तुम्हारी मरजी से तुम्हें बुलाया है।"

"क्या मतलब ?"

"तुम ने मुझे फोन ही इस लिए किया था कि मैं बुलाऊं।"

"तो ? अब तुम चाहती क्या हो ? कहो तो इसी तरह खड़े-खड़े लौट जाऊं।"

"लौटा दूंगी तो जिन्दगी भर बदनाम करोगे कि पानी को भी न पूछा।" मिस गोगो ने ज्यों ही यह कहा, मुझे लगा कि वह एक गलत मुहावरे का इस्तेमाल कर गई हैं। वकील चन्दन बाली ने फौरन उस मुहावरे की टांग पकड़ ली। वह दो कदम आगे आया। इस से वह मेरी कनखियों में और स्पष्ट दिखाई देने लगा। उस के चेहरे पर व्यंग्य-बुझी मुस्कान थी। उस ने कहा, "बदनाम ? बदनाम मैं करूंगा ? तुम्हें बदनामी की परवाह है भी ?" और इन शब्दों के साथ उस ने मिस गोगो के उस आदमकद फोटो पर अर्थ-भरी निगाह डाली, जिस में मन्दिर के सब परदे उठे हुए थे। मैं इन्तजार करने लगा कि उस की बात के उत्तर में मिस गोगो क्या कहती हैं। वह चुप रहीं—उन्हें चुप रहना पड़ा।

मैं समझ गया था कि चन्दन बाली की निगाह में मैं अब तक नहीं आया हूं, हालांकि मैं ने कोई ओट नहीं ले रखी। उस का ध्यान मिस गोगो पर ही इतने आवेश के साथ केन्द्रित है कि मेरे द्वारा

इसी के कारण मैं कैबरे-डान्सर बनी हूं। आने तो दीजिए···"

"मिस गोगो···आप को क्या हो गया है ?"

"मुझे ? मुझे क्या होगा ? आज तो जो भी होना है, उसी के साथ होगा।"

"इस तरह ठहाके न लगाइए। वह बाहर से सुन लेगा।"

ठहाके, हंसी, तीव्र मुस्कान, मन्द-मन्द मुस्कान—सब को मिस गोगो ने तत्क्षण रोक दिया। मुझे आश्चर्य हुआ कि इतने जोरों का ब्रेक किस उपाय से लगाया उन्होंने। पलक झपकते वह इतनी गम्भीर हो गईं कि ठहाकों के बीच अभी-अभी उन की जो बकवास मैं ने सुनी थी, वह-सब सपने-सा लगने लगा।

और तब काल-बेल बजी।

अपनी जगह से उठे बिना मिस गोगो जोर से बोलीं, "खुला है, आ जाओ।"

न जाने क्यों, मुझे ऐसा लगा कि मिस गोगो की आवाज़ भर आई है। सन्नाटा। 'सन्नाटे के बीच दरवाजा खुल गया है, चन्दन बाली प्रवेश कर चुका है, चन्दन बाली ने पीछे से मेरे सिर को देख लिया है, मेरी "चार-मीनार" का धुआं भी उस ने सूंघ लिया है, तीसरे पुरुष की मौजूदगी से वह इतना हतप्रभ है कि बोल नहीं पा रहा – इसी लिए यह सन्नाटा टूट नहीं रहा···' मैं अपनी जगह पर पुतले की तरह बैठा-बैठा अनुमान लगाता रहा। धड़कन मेरी भी बढ़ गई थी—फिर मिस गोगो की हालत तो···

मिस गोगो की आंखें दरवाजे की ओर नहीं थीं। वह देख रही थीं उस परदे की ओर, जिस के पीछे अजगर था।

"क्या मैं भीतर आ सकता हूं ?" मैं ने एक पुरुष स्वर अपनी पीठ की ओर सुना। चन्दन बाली का स्वर ठसकेदार था। जब मिस गोगो ने उस से कह ही दिया था कि आ जाओ, फिर इस प्रश्न की जरूरत क्या थी ?

मिस गोगो ने परदे पर ही आंखें स्थिर रख कर कहा, "मेरी

अनुमतियों की जरूरत तुम्हें कब हुई है !"

फिर सन्नाटा···तब जूतों की आवाज़—फर्श पर बिछे कठोर-कठोर लिनोलियम पर जूतों की ठकठक···

"मेरी ओर देखोगी भी नहीं ?" वही पुरुष स्वर।

"क्यों आए हो मुझ से मिलने ?" मिस गोगो तड़प कर खड़ी हो गईं। अब उन की आंखें उस पुरुष पर थीं, जिस का आभास मुझे कनखियों से मिल रहा था।

"क्यों आया हूं ? क्योंकि तुम ने बुलाया।"

"मैं ने अपनी मरजी से नहीं, तुम्हारी मरजी से तुम्हें बुलाया है।"

"क्या मतलब ?"

"तुम ने मुझे फोन ही इस लिए किया था कि मैं बुलाऊं।"

"तो ? अब तुम चाहती क्या हो ? कहो तो इसी तरह खड़े-खड़े लौट जाऊं।"

"लौटा दूंगी तो जिन्दगी भर बदनाम करोगे कि पानी को भी न पूछा।" मिस गोगो ने ज्यों ही यह कहा, मुझे लगा कि वह एक गलत मुहावरे का इस्तेमाल कर गई हैं। वकील चन्दन बाली ने फौरन उस मुहावरे की टांग पकड़ ली। वह दो कदम आगे आया। इस से वह मेरी कनखियों में और स्पष्ट दिखाई देने लगा। उस के चेहरे पर व्यंग्य-बुझी मुस्कान थी। उस ने कहा, "बदनाम ? बदनाम मैं करूंगा ? तुम्हें बदनामी की परवाह है भी ?" और इन शब्दों के साथ उस ने मिस गोगो के उस आदमकद फोटो पर अर्थ-भरी निगाह डाली, जिस में मन्दिर के सब परदे उठे हुए थे। मैं इन्तजार करने लगा कि उस की बात के उत्तर में मिस गोगो क्या कहती हैं। वह चुप रहीं—उन्हें चुप रहना पड़ा।

मैं समझ गया था कि चन्दन बाली की निगाह में मैं अब तक नहीं आया हूं, हालांकि मैं ने कोई ओट नहीं ले रखी। उस का ध्यान मिस गोगो पर ही इतने आवेश के साथ केन्द्रित है कि मेरे द्वारा

पी जा रही 'चार-मीनार' सिगरेट की गन्ध का भी उसे पता नहीं चल रहा।

सहसा मैं चन्दन बाली की निगाह में आ गया।

मिस गोगो के आदमकद फोटो पर अर्थ-भरी निगाह डालते समय उस की कनखियों को आभास मिल गया कि यहां कोई तीसरा व्यक्ति मौजूद है, जो कि चुपचाप बैठा हुआ पुरुष है। कनखियों को आभास मिलते ही उस ने चौंक कर मेरे चेहरे पर अपनी निगाहें सीधे-सीधे फेंकीं। मैं ने उन निगाहों का मुकाबला किया। मैं मुस्कराया नहीं। चेहरे को पथरीला ही बनाए रख कर मैं, एक ढीठ खामोशी के साथ, 'चार-मीनार' के कश लेता रहा।

"ओह..." चन्दन बाली ने पलट कर मिस गोगो से कहा, "याने...हम अकेले नहीं हैं!"

"तुम ने सोच कैसे लिया कि मैं तुम्हें अकेली मिलूंगी ? कोई तुम्हारी प्रेमिका हूं ?"

"प्रेमिका ? नहीं तो !" वह हंसा, "न हो और न कभी थी।"

"क्या मैं पूछ सकती हूं कि फिर तुम ने मुझे शादी का वचन क्यों दिया था ?"

"मैं ने अपनी मरजी से नहीं, तुम्हारी मरजी से तुम्हें वचन दिया था !" चन्दन बाली बोला और हंस दिया। सहसा मेरी और चन्दन बाली की निगाहें फिर मिलीं। मैं इसी के इन्तजार में था। निगाहें मिलीं नहीं कि चन्दन बाली को मैं ने 'चार-मीनार' का अपना पैकेट दिखाया। बोला मैं कुछ नहीं। मुस्कराया भी नहीं। मैं ने केवल पैकेट दिखाया। दो क्षण वह पैकेट को देखता रहा, फिर बिना मुस्कराए बोला, "नो, थैंक्स, मैं 'चार-मीनार' नहीं पीता।"

मैं ने पैकेट वापस जेब में रख लिया। मैं बैठा हुआ था; मिस गोगो खड़ी थीं, चन्दन बाली को अभी तक बैठने के लिए नहीं कहा गया था। खामोशी।

"झूठे !" खामोशी में मिस गोगो का चीत्कार।

"झूठा कौन ? मैं ? वचन मैं ने दिया था या तुम ने जबरन लिया था ?"

"तुम ने दिया—तुम्हीं ने दिया—ताकि मुझे अपने साथ सुला सको।"

"मै ने तुम्हें नहीं सुलाया। तुम्हीं आ कर सो गईं।"

"झूठ ! झूठ !"

"मैं ने तो शुरू से ही स्पष्ट रखा था, रमा, कि—"

"खबरदार, जो रमा कहा !"

"शुरू से ही मैं ने स्पष्ट रखा था कि मैं तुम्हारा दोस्त हूं, न कि प्रेमी। और तुम मेरा एक प्रेमी में रूपान्तर करना चाहती थी। इसी लिए तुम—"

"जबान काट लूंगी, मिस्टर बाली !"

"इस की जरूरत नहीं, मिस गोगो ! मैं चलता हूं।"

"जाओगे कैसे ! पहले बताओ कि आए क्यों हो ?"

"बता दूं ?"

"नहीं, मत बताओ; मैं जानती हूं, तुम क्यों आए हो ? कुत्ते की तरह तुम मुझे भोगने निकले हो। पुराने रिश्तों के जोर पर तुम फिर मेरी इज्जत लूटना चाहते हो !"

"देखो, रमा..."

"फिर कहा रमा ?"

"अगर तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें मिस गोगो ही कहूं तो, माफ करना, मैं तुम्हें बात करने लायक भी न समझूंगा। तुम केवल इसी लायक रहोगी कि टिकट खरीद कर मैं तुम्हारा शो देखूं।"

"तुम्हीं ने मुझे इस हालत पर पहुंचाया है।"

"मैं इस से साफ इन्कार करता हूं।"

"तुम सूअर हो, दो बाप हैं तुम्हारे ! दो नहीं, तीन-चार !"

"कैबरे-डान्सर बनने के बाद गालियां खूब सीखी हैं तुम ने।"

"तुम्हीं ने मुझे दगा दिया और मैं तड़प कर कैबरे-डान्सर बन

पी जा रही 'चार-मीनार' सिगरेट की गन्ध का भी उसे पता नहीं चल रहा।

सहसा मैं चन्दन बाली की निगाह में आ गया।

मिस गोगो के आदमकद फोटो पर अर्थ-भरी निगाह डालते समय उस की कनखियों को आभास मिल गया कि यहां कोई तीसरा व्यक्ति मौजूद है, जो कि चुपचाप बैठा हुआ पुरुष है। कनखियों को आभास मिलते ही उस ने चौंक कर मेरे चेहरे पर अपनी निगाहें सीधे-सीधे फेंकीं। मैं ने उन निगाहों का मुकाबला किया। मैं मुस्कराया नहीं। चेहरे को पथरीला ही बनाए रख कर मैं, एक ढीठ खामोशी के साथ, 'चार-मीनार' के कश लेता रहा।

"ओह···" चन्दन बाली ने पलट कर मिस गोगो से कहा, "याने···हम अकेले नहीं हैं !"

"तुम ने सोच कैसे लिया कि मैं तुम्हें अकेली मिलूंगी ? कोई तुम्हारी प्रेमिका हूं ?"

"प्रेमिका ? नहीं तो !" वह हंसा, "न हो और न कभी थी।"

"क्या मैं पूछ सकती हूं कि फिर तुम ने मुझे शादी का वचन क्यों दिया था ?"

"मैं ने अपनी मरजी से नहीं, तुम्हारी मरजी से तुम्हें वचन दिया था !" चन्दन बाली बोला और हंस दिया। सहसा मेरी और चन्दन बाली की निगाहें फिर मिलीं। मैं इसी के इन्तजार में था। निगाहें मिलीं नहीं कि चन्दन बाली को मैं ने 'चार-मीनार' का अपना पैकेट दिखाया। बोला मैं कुछ नहीं। मुस्कराया भी नहीं। मैं ने केवल पैकेट दिखाया। दो क्षण वह पैकेट को देखता रहा, फिर बिना मुस्कराए बोला, "नो, थैंक्स, मैं 'चार-मीनार' नहीं पीता।"

मैं ने पैकेट वापस जेब में रख लिया। मैं बैठा हुआ था; मिस गोगो खड़ी थीं, चन्दन बाली को अभी तक बैठने के लिए नहीं कहा गया था। खामोशी।

"झूठे !" खामोशी में मिस गोगो का चीत्कार।

"झूठा कौन ? मैं ? वचन मैं ने दिया था या तुम ने जबरन लिया था ?"

"तुम ने दिया—तुम्हीं ने दिया—ताकि मुझे अपने साथ सुला सको।"

"मैं ने तुम्हें नहीं सुलाया। तुम्हीं आ कर सो गई।"

"झूठ ! झूठ !"

"मैं ने तो शुरू से ही स्पष्ट रखा था, रमा, कि—"

"खबरदार, जो रमा कहा !"

"शुरू से ही मैं ने स्पष्ट रखा था कि मैं तुम्हारा दोस्त हूं, न कि प्रेमी। और तुम मेरा एक प्रेमी में रूपान्तर करना चाहती थी। इसी लिए तुम—"

"जबान काट लूंगी, मिस्टर बाली !"

"इस की जरूरत नहीं, मिस गोगो ! मैं चलता हूं।"

"जाओगे कैसे ! पहले बताओ कि आए क्यों हो ?"

"बता दूं ?"

"नहीं, मत बताओ; मैं जानती हूं, तुम क्यों आए हो ? कुत्ते की तरह तुम मुझे भोगने निकले हो। पुराने रिश्तों के जोर पर तुम फिर मेरी इज्जत लूटना चाहते हो !"

"देखो, रमा..."

"फिर कहा रमा ?"

"अगर तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें मिस गोगो ही कहूं तो, माफ करना, मैं तुम्हें बात करने लायक भी न समझूंगा। तुम केवल इसी लायक रहोगी कि टिकट खरीद कर मैं तुम्हारा शो देखूं।"

"तुम्हीं ने मुझे इस हालत पर पहुंचाया है।"

"मैं इस से साफ इन्कार करता हूं।"

"तुम सूअर हो, दो बाप हैं तुम्हारे ! दो नहीं, तीन-चार !"

"कैबरे-डान्सर बनने के बाद गालियां खूब सीखी हैं तुम ने।"

"तुम्हीं ने मुझे दगा दिया और मैं तड़प कर कैबरे-डान्सर बन

गई। तुम्हीं ने मेरी लाज उतारी है। तुम्हारे ही कारण मैं सरेआम नंगी होती हूं। तुम्हीं ने मेरे मुंह में गालियां रख दी हैं। अब तुम मुझे फिर भोगने आए हो! है न यही बात? इसी लिए आए हो न लार टपकाते?"

"मुझे तुम्हारा आवेश नकली लगता है।"

"क्योंकि तुम्हारी हर चीज नकली है।"

"नहीं, मेरी कम-से-कम एक चीज तो असली जरूर है! मैं ने सोचा, इतने बरसों बाद उस असली चीज के दर्शन तुम्हें करा ही दूं।"

"करा दर्शन! दिखा—अभी दिखा!" मिस गोगों की आंखें दीवानगी से चमकने लगी थी। मैं ने उन्हें चन्दन बाली की दिशा में शेरनी की तरह झपटते देखा। हमले के लिए तैयार न होने के कारण चन्दन बाली गिर पड़ा और मिस गोगो उसकी छाती पर चढ़ी हुई नजर आइ। उठ खड़े होने के चन्दन के सभी प्रयास वह एक हाथ से विफल करती जा रही थीं और दूसरे हाथ से उसकी पेण्ट के बटनों पर झटके मार रही थीं। अब मुझ से न रहा गया। या तो मिस गोगो मुझे जोरों का ठहाका लगाने की अनुमति दें या इस फसाद को रोकें। अभी मिस गोगो इतनी व्यस्त हैं कि अनुमति देने का अवकाश उन के पास नहीं, लिहाजा फसाद ही रुक जाना चाहिए। अब मुझे इस वचन का पालन करने की जरूरत नहीं कि मैं तटस्थ और निष्क्रिय बना रहूंगा। गुत्थमगुत्था हो चुके प्राचीन-कालीन प्रेमी-प्रेमिका की ओर मैं ने लपकना चाहा—कि उसी समय चन्दन बाली ने मिस गोगो को अपनी छाती पर से नीचे गिरा दिया। मिस गोगो गिरीं-न-गिरीं कि उठ खड़ी हुईं और फिर से झपटीं। मैं ने उन की कमर दबोच ली। मैं ने उन्हें अधर उठा लिया। वह अब भी झपटने के लिए पैर हिला रही थीं, लेकिन पैर जब हवा में हिलते हों, तब झपटा नहीं जा सकता। मैं उन्हें सोफे की ओर ले जाने लगा। चन्दन बाली, जो एकदम चित गिर कर हक्का-बक्का रह गया था, उठ खड़ा हुआ। उस के बाल घोंसला हो गए थे। मैं ने

मिस गोगो को सोफे पर रख दिया, फिर मैं एक कदम पीछे हटा। यदि पुनः हमला करने के लिए मिस गोगो अचानक झपटें तो मैं अटल हिमालय की तरह उन के सामने डट जाना चाहता था। पुनः हमला करने का इरादा उन का लगा नहीं। उन्होंने चुपचाप रोना चालू कर दिया था। चेहरे को उन्होंने दोनों हथेलियों में छिपाया भी नहीं। यदि छिपा लेतीं तो आंसुओं का प्रदर्शन कैसे होता? आंसुओं का प्रदर्शन करना नारी का जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे वे लेकर रहती हैं। मिस गोगो के होंट बिदक रहे थे, आंखें ललिया गई थीं, सारे बदन में सिसकियों की झुरझुरी हो रही थी। जब मैं आश्वस्त हो गया कि अब वह सिर्फ रोएंगी—करेंगी-धरेंगी कुछ नहीं—तो मैं ने पलट कर देखना चाहा कि चन्दन बाली द्वारा क्या किया जा रहा है। चन्दन बाली के दो बटन टूट गए थे। एक इधर पड़ा था, एक उधर। इधर और उधर एक-एक बार झुक कर चन्दन बाली ने दोनों बटन उठा लिए। वे बटन उस ने अपने हिप-पाकेट में रखे। एक छोटी कघी उस ने हिप-पाकेट से निकाली। उसे वह सिर के बालों में फेरने लगा। मैं ने उस की गर्दन पर तीन लाल खरोंचें देखीं—मिस गोगो के नाखून कम लम्बे नहीं।

चन्दन बाली और मिस गोगो एक-दूसरे से निगाहें नहीं मिला रहे थे। समझना मुश्किल ही था मेरे लिए कि उन में से कौन झूठा है, कौन सच्चा। मिस गोगो के आंसुओं को तो मैं गम्भीरता से नहीं ले रहा था, क्योंकि मुझे स्मिता की रोदन-कला का परिचय मिले अभी देर ही क्या हुई थी, लेकिन मैं ने मिस गोगो और चन्दन बाली के संवादों की गहराई में जाने का प्रयास अवश्य किया था। ज्यों-ज्यों मैं गहराई में उतरा था, त्यों-त्यों मुझे दोनों सच्चे लगे थे और दोनों झूठे!

और हम तीनों खामोश थे। मिस गोगो ने अपनी सिसकियों में अभी तक स्वर पूरित नहीं किया था।

"खेद है, मिस्टर बाली, कि मेरी मौजूदगी में ऐसा हुआ।" मैं ने

चन्दन बाली की ओर घूमते हुए कहा। चन्दन बाली ने यह पहली बार मेरा स्वर सुना। वह मेरी ओर यों ताकने लगा कि जैसे मेरा स्वर उसे दिखाई भी पड़ रहा हो। फिर उस ने बिना पलक झपकाए मिस गोगो को ताका। मिस गोगो ने पलकें झपकाईं—आंसू पुनः चू गए। आंसू पुनः चूते ही मिस गोगो को अपनी दयनीयता और भी गहरी महसूस हुई। इस से उन के रोदन में स्वर पूरित हो गया। ईं-ईं और एं-एं की बारीक रिरियाहट कमरे की दीवारों को छू-छू कर पलटने लगी।

"नो, नो, नो, मिस गोगो, आप को इस तरह नहीं रोना चाहिए।" मैं ने कहा। यदि वह पूछतीं कि इस तरह नहीं तो किस तरह—तो क्या जवाब दे सकता मैं? गनीमत कि उन्होंने न पूछा। स-स्वर रोना भी उन का न रुका। हां, इतनी दया उन्होंने अवश्य की कि एं-एं ईं-ईं करती हुई वह उठीं और बाथ-रूम में चली गईं। बाथ-रूम का दरवाजा उन्होंने भड़ाक से बन्द किया और चिटकनी चढ़ा ली। दरवाजे की भड़ाक सुन कर फर्र से मुझे हंसी आ गई। हंसी चूंकि मिस गोगो द्वारा देख ली जाने वाली नहीं थी, वह मन्थर गति से तीव्र होने लगी। हंसते-हंसते मैं ने चन्दन बाली की ओर देखा। उस के होंठों पर तो मुस्कान भी नहीं थी। आंखों में अजीब भौंचकपन अब भी कायम था। मेरी हंसी अवश्य उसे चोट पहुंचा रही थी। यही लग रहा होगा उसे कि मैं उस पर हंस रहा हूं। मैं उस पर नहीं हंस रहा था। मैं मिस गोगो पर भी नहीं हंस रहा था। दरअसल मैं कह नहीं सकता कि मैं ठीक-ठीक क्यों और किस पर हंस रहा था। जो भी है, मैं ने अपनी हंसी पर ब्रेक लगा दिया। मैं चन्दन बाली को आहत नहीं करना चाहता था। मैं उस के नजदीक पहुंचने लगा, ताकि उस के कन्धे पर हाथ रख सकूं। नजदीक तो मैं पहुंच गया, किन्तु कन्धे पर हाथ न रख सका। मैं उस से बोला, "मिस्टर बाली, क्या मैं आप को अपना परिचय दे सकता हूं?"

चन्दन बाली ने साहस के साथ मेरी ओर हाथ बढ़ा दिया।

हाथ मिलाते हुए मैं ने कहा, "मैं मिस गोगो का संरक्षक हूं। अभी यहां मैं संरक्षक की हैसियत से ही मैजूद हूं। वैसे, मैं इस 'अलीबाबा' का मालिक भी हूं।"

"ओह! ग्लैड टू सी यू!"

"मिस गोगो ने आप की चर्चा पहले भी एकाध बार मुझ से की है। मिस गोगो का अन्दाज़ा है कि आप वकालत के धन्धे में हैं।"

"जी हां, यहां मैं ने 'नकरा एण्ड स्वामी सालिसिटर्स' को ज्वाइन कर लिया है।"

"ओह, सालिसिटर्स!" मैं हंसा, "जानते हैं, सालिसिटर्स का कलियुगी अर्थ क्या है? जो अपनी सालियों को अपनी सीट पर बिठा लेते हैं—वे सालिसिटर्स! ह, ह, ह..."

चन्दन वाली मुस्कराया। मैं ने उस का तनाव कम करने के लिए ही सुनाया था। सफलता मिली देख कर मुझे सन्तोष हुआ। मैं ने कहा, "बैठिए, बैठिए न! जब से आप आए हैं, खड़े ही हैं।"

"सिर्फ खड़ा नहीं था, गिर भी तो पड़ा था!"

"ओह, हां, हो-हो-हो-हो!" मैं दबे स्वर में खुल कर हंसने लगा। चन्दन वाली की दबी हंसी ने मेरा साथ दिया।

जब बाथ-रूम की सिटकनी खोल कर मिस गोगो कमरे में आई तब भी हम दोनों के होंठ हंसी के कारण खिंचे हुए थे। मिस गोगो इस तरह ठमक गई, जैसे हमारी हंसी उन्हें तमाचे की तरह लगी हो। मैं ने हंसी रोकी। मैं ने 'चार-मीनार' सुलगाई। मैं ने चन्दन वाली को 'चार-मीनार' पेश की—हलांकि मुझे याद था कि वह 'चार-मीनार' नहीं पीता। उस ने इस बार भी 'चार-मीनार' लेने से इन्कार कर दिया। उस ने अपनी जेबों में टटोला। मैं ने देखा कि उस ने 'विल्स-फिल्टर' का छोटा पैकेट निकाला है। उस ने 'विल्स' सुलगाई। अब मैं ने मिस गोगो की ओर देखने का साहस किया। इस से कांच के उस गिलास पर मेरी निगाह पड़ गई, जो मिस गोगो के हाथ में था।

बाथ-रूम में से गिलास को थामे हुए ही वह निकली थीं। बाथ-रूम में जाते समय तो वह खाली हाथ गई थीं। जरूर वह गिलास बाथ-रूम में पहले से रखा हुआ था—शायद संयोगवश। 'क्या है कांच के गिलास में ?' मैं ने समझना चाहा। समझने की चेष्टा में मेरी भौंहों पर वल भी पड़े। गिलास में आधे तक जो पानी भरा हुआ था, उस का रंग पीला था। उस पीलेपन में थोड़ी पार-दर्शिता भी थी। मिस गोगो फ्रिज के पास पहुंचीं। इस से पहले कि मैं गिलास के उस तरल को पहचान पाता, उन्होंने फ्रिज खोला और गिलास भीतर रख दिया। जिस शैली के झटके के साथ उन्होंने फ्रिज बन्द किया, उसी शैली के झटके के साथ वह पलट कर हम दोनों को घूरने लगीं। चुनौती के बचाए हुए स्वर में उन्होंने कहा, "हंसिए ! चुप क्यों हैं ? हंसिए !"

हम चुप रहे।

धीमे कदमों से वह सोफे की ओर बढ़ीं। मैं ने उन्हें सोफे पर बैठते देखा। 'खड़े रहने के बजाय यदि हम दोनों भी कहीं बैठ जाएं तो तनाव अवश्य कम हो'—मैं ने सोचा। उन्हीं क्षणों में ऐसा ही ही कुछ चन्दन वाली के दिमाग में भी आया होगा। मैं जा कर वहां बैठ गया, जहां हरामजादे के प्रवेश से पहले मेरे बैठने की बात तय हुई थी। चन्दन वाली ठीक वहीं बैठा, जहां कि उसे बिठाया जाना था। यदि संयोगवश वह 'वहीं' न बैठा होता, तो मिस गोगो या तो स्पष्ट आदेश दे कर उसे 'वहीं' बिठातीं या फिर किसी बहाने से।

चन्दन वाली के पीछे अब वह परदा आ गया था, जिस ने अजगर के पिंजड़े को छिपा रखा था।

मुझे अब भी ज्ञात नहीं था कि चन्दन वाली को मिस गोगो 'वहीं' क्यों बिठाना चाहती थीं। सुन्दरे-सुन्दरी की मुद्राओं एवं वी. टी. की याद एकाएक ही मेरे मन में झनझना उठी। फलस्वरूप अपनी कल्पना में चन्दन वाली और मिस गोगो को उन मुद्राओं का रिहर्सल करते देखा। उन की जोड़ी मुझे सुघड़, स्वस्थ, मजबूत, गोरी,

मांसल ग्रौर उत्साहित महसूस हुई—जबकि ग्रामने-सामने वे बिल्कुल बुझे हुए बैठे थे। मेरा खयाल है, बी. टी. ने ग्रपना काम ग्राधे तक तो निबटा ही लिया होगा। स्मिता ग्रभी कहां, क्या कर रही होगी? ...मैं ने ग्रपने ध्यान को समेट कर चन्दन बाली ग्रौर मिस गोगो पर केन्द्रित किया : कोई ग्रज्ञात प्रेरणा मुझे ग्राभास दे रही थी कि शायद उन का झगड़ा पुन: भड़के। मैं सचेत ग्रौर शान्त मुद्रा में कुर्सी की पीठ के साथ टिक गया ग्रौर कश लेने लगा। खामोशी क्षण-क्षण ग्रसहनीय होती जा रही थी। हुक्के की तरह यदि ये सिगरेटें भी गड़-गड़ ग्रावाज करतीं तो बार-बार ऐसी खामोशी न खिंच सकती—शोर-युक्त सिगरेटों का ग्राविष्कार होना ही चाहिए... ग्रच्छा, हां, गिलास में पीले रंग का वह तरल था क्या चीज? फ्रिज में क्या उस की बर्फ जमाई जा रही है?

"चन्दन!" मिस गोगो ने जब बोलना शुरू किया तो उन का लहजा बहुत बदल गया था। एक ऐसी शान्ति थी उन की ग्रावाज में कि खामख्वाह शक होने लगे—यह शान्ति कहीं नकली न हो। "चन्दन!" उन्होंने कहा, "तुम बहुत चालाक हो। तुम ने मुझे कभी कोई प्रेम-पत्र नहीं लिखा। मेरे पास कोई प्रमाण नहीं है कि तुम्हें ग्रपना प्रेमी साबित करूं। लेकिन तुम जानते हो ग्रौर मैं भी जानती हूं कि हमारे रिश्ते क्या थे।"

"क्यों नहीं! तुम जानती हो ग्रौर मैं भी जानता हूं कि हमारे रिश्ते क्या थे।" चन्दन बाली ने दोहराया। फिर वह कटुता से हंसा। भांपना मेरे लिए मुश्किल रहा कि उस की कटुता वास्तविक थी या नहीं। मेरी स्थिति यही थी कि जैसे मैं कोई बहुत बढ़िया नाटक देख रहा हूं, जिस में ग्रभिनय इतना मंजा हुग्रा हो कि ग्रभिनय जैसा लगे ही नहीं।

"फिर क्या तुम स्वीकार करते हो कि तुम्हीं ने मुझे बर्बाद किया है?" मिस गोगो ने ग्रपनी उसी बनावटी-जैसी लगती शान्ति के साथ कहा।

बाथ-रूम में से गिलास को थामे हुए ही वह निकली थीं। बाथ-रूम में जाते समय तो वह खाली हाथ गई थीं। जरूर वह गिलास बाथ-रूम में पहले से रखा हुआ था—शायद संयोगवश। 'क्या है कांच के गिलास में ?' मैं ने समझना चाहा। समझने की चेष्टा में मेरी भौंहों पर बल भी पड़े। गिलास में आधे तक जो पानी भरा हुआ था, उस का रंग पीला था। उस पीलेपन में थोड़ी पारदर्शिता भी थी। मिस गोगो फ्रिज के पास पहुंचीं। इस से पहले कि मैं गिलास के उस तरल को पहचान पाता, उन्होंने फ्रिज खोला और गिलास भीतर रख दिया। जिस शैली के झटके के साथ उन्होंने फ्रिज बन्द किया, उसी शैली के झटके के साथ वह पलट कर हम दोनों को घूरने लगीं। चुनौती के बचाए हुए स्वर में उन्होंने कहा, "हसिए ! चुप क्यों हैं ? हंसिए !"

हम चुप रहे।

धीमे कदमों से वह सोफे की ओर बढ़ीं। मैं ने उन्हें सोफे पर बैठते देखा। 'खड़े रहने के बजाय यदि हम दोनों भी कहीं बैठ जाएं तो तनाव अवश्य कम हो'—मैं ने सोचा। उन्हीं क्षणों में ऐसा ही ही कुछ चन्दन वाली के दिमाग में भी आया होगा। मैं जा कर वहां बैठ गया, जहां हरामजादे के प्रवेश से पहले मेरे बैठने की बात तय हुई थी। चन्दन वाली ठीक वहीं बैठा, जहां कि उसे बिठाया जाना था। यदि संयोगवश वह 'वहीं' न बैठा होता, तो मिस गोगो या तो स्पष्ट आदेश दे कर उसे 'वहीं' बिठातीं या फिर किसी बहाने से।

चन्दन वाली के पीछे अब वह परदा आ गया था, जिस ने अजगर के पिंजड़े को छिपा रखा था।

मुझे अब भी ज्ञात नहीं था कि चन्दन वाली को मिस गोगो 'वहीं' क्यों बिठाना चाहती थीं। सुन्दरे-सुन्दरी की मुद्राओं एवं बी. टी. की याद एकाएक ही मेरे मन में झनझना उठी। फलस्वरूप अपनी कल्पना में चन्दन वाली और मिस गोगो को उन मुद्राओं का रिहर्सल करते देखा। उन की जोड़ी मुझे सुघड़, स्वस्थ, मजबूत, गोरी,

मांसल और उत्साहित महसूस हुई—जबकि आमने-सामने वे बिल्कुल बुझे हुए बैठे थे। मेरा खयाल है, डी. टी. ने अपना काम आधे तक तो निबटा ही लिया होगा। स्मिता अभी कहां, क्या कर रही होगी? ...मैं ने अपने ध्यान को समेट कर चन्दन वाली और मिस गोगो पर केन्द्रित किया : कोई अज्ञात प्रेरणा मुझे आभास दे रही थी कि शायद उन का झगड़ा पुनः भड़के। मैं सचेत और शान्त मुद्रा में कुर्सी की पीठ के साथ टिक गया और कश लेने लगा। खामोशी क्षण-क्षण असहनीय होती जा रही थी। हुक्के की तरह यदि ये सिगरेटें भी गड़-गड़ आवाज करतीं तो बार-बार ऐसी खामोशी न खिंच सकती—शोर-युक्त सिगरेटों का आविष्कार होना ही चाहिए... अच्छा, हां, गिलास में पीले रंग का वह तरल था क्या चीज? फ्रिज में क्या उस की बर्फ जमाई जा रही है?

"चन्दन!" मिस गोगो ने जब बोलना शुरू किया तो उन का लहजा बहुत बदल गया था। एक ऐसी शान्ति थी उन की आवाज में कि खामख्वाह शक होने लगे—यह शान्ति कहीं नकली न हो। "चन्दन!" उन्होने कहा, "तुम बहुत चालाक हो। तुम ने मुझे कभी कोई प्रेम-पत्र नहीं लिखा। मेरे पास कोई प्रमाण नहीं है कि तुम्हें अपना प्रेमी साबित करूं। लेकिन तुम जानते हो और मैं भी जानती हूं कि हमारे रिश्ते क्या थे।"

"क्यों नहीं! तुम जानती हो और मैं भी जानता हूं कि हमारे रिश्ते क्या थे।" चन्दन वाली ने दोहराया। फिर वह कटुता से हंसा। भांपना मेरे लिए मुश्किल रहा कि उस की कटुता वास्तविक थी या नहीं। मेरी स्थिति यही थी कि जैसे मैं कोई बहुत बढ़िया नाटक देख रहा हूं, जिस में अभिनय इतना मंजा हुआ हो कि अभिनय जैसा लगे ही नहीं।

"फिर क्या तुम स्वीकार करते हो कि तुम्हीं ने मुझे बर्बाद किया है?" मिस गोगो ने अपनी उसी बनावटी-जैसी लगती शान्ति के साथ कहा।

"सवाल ही नहीं उठता।" चन्दन बाली का उत्तर था। मुझे लगा कि बात खामख्वाह फिर बढ़ने वाली है। मैं ने कहा, "आप दोनों के रिश्ते पहले क्या थे, इस का महत्व विशेष नहीं है। मेरी तो राय यही है कि आप दोनों के रिश्ते अब आगे क्या हों, इस पर विचार कर लिया जाए।"

"आने वाले कल को तय करने के लिए क्या मैं बीते हुए कल को भूल जाऊं ?" मिस गोगो ने मुझे चुनौती दी।

"कभी-कभी ऐसा करने में ही सार होता है।" मैं ने उत्तर दिया, फिर पूछा, "क्यों मिस्टर बाली, सच कहता हूं या नहीं ?"

"जी हां, लेकिन सार कभी-कभी ही होता है, हमेशा नहीं। मैं भी अपने बीते हुए कल को भूलने के लिए तैयार नहीं हूं।"

"फिर तुम मान क्यों नहीं लेते कि तुम्हीं ने मुझे भरे बाजार में नंगा किया है ? जीते-जी जैसे खाल उतरवाई जाती है, उसी तरह तुम ने मेरे कपड़े उतरवाए हैं।" मिस गोगो विस्फोट-सा करती हुई उठ खड़ी हुईं। उन की मुट्ठियां भिच गई थीं। चेहरा तमतमाया हुआ। लाल। बहुत लाल। चन्दन बाली की आंखें जरा सिकुड़ आईं। उस ने मिस गोगो को घूरा, किन्तु कहा कुछ नहीं। मिस गोगो को उस ने अबाध गति से बोलने दिया, खुद एकदम पथरीले बने रह कर। मिस गोगो की आवाज़ गुस्से से फटी जा रही थी, "तुम्हीं ने मुझे आदमी मिटा कर गाय, बकरी और भैंस बना दिया। खुली डेयरियों में तुम लोग करते क्या हो ? गाय को घेर कर तुम खड़े हो जाते हो। अपनी आंखों के सामने तुम गाय को दुहवाते हो, ताकि दूध में एक बूंद भी पानी की मिलावट न हो। मेरे साथ भी तुम यही करते हो—तुम सब ! दुनिया के सारे मर्द ! मुझे भी तुम लोग घेर कर ही बैठते हो। अपनी आंखों के सामने मुझे नंगी करते हो, ताकि अगर मेरी खूबसूरती में जरा भी मिलावट निकले तो फौरन मुझे लात मार कर गटर में डाल दो। गाय के थन पकड़ते हुए जिस तरह तुम्हें शर्म नहीं आती, उसी तरह तुम मेरी छातियां

पकड़ने के लिए बेशर्मी से हाथ मलते हो। तुम्हीं लोगों ने मेरी भावनाओं को कच्चा चबा डाला है। गाय के गोबर से हाथ सन जाते हैं तो तुम्हें कै नहीं होती। क्या मैं भी तुम्हारे हाथ में गोबर कर दूं ?"

"मिस गोगो !" मैं ने कड़क कर कहा, "यह क्या बदतमीजी है ?"

"सरेआम नंगी होती हूं, तब मुझे बदतमीज कोई नहीं कहता। यहां, दो जनों के सामने एक सच्ची बात कह दी तो बदतमीज हो गई ?"

"क्षमा करें, मिस गोगो।" मैं उठता हुआ बोला, "मैं ऐसे गन्दे झगड़े का साक्षी नहीं बनना चाहता। मैं चलूंगा।"

"और आप के जाते ही इस की बदतमीजी भी रुक जाएगी !" चन्दन बाली ने हंस कर कहा, "आप की मौजूदगी के ही कारण यह इतना बनक रही है।"

"क्या खूब ! ओयहोय ! क्या मनोविश्लेषण है ! वाह, वकील साहब, वाह !" मिस गोगो न अकस्मात् खिलखिलाना शुरू कर दिया। मैं चुपचाप खड़ा रहा।

"रमा, तुम सरासर झूठ बोल रही हो।" चन्दन बाली ने मिस गोगो की खिलखिलाहट रुकने का इन्तजार किए बिना कहना शुरू किया। उसका कथन ज्यों-ज्यों आगे बढ़ा, मिस गोगो की खिल-खिलाहट डूबती गई। क्यों डूब रही थी मिस गोगो की खिलखिला-हट ? क्या इस लिए कि उन के झूठों का पर्दाफाश किया जा रहा था ? या इस लिए कि उन्हें भयंकर गुस्सा आने लगा था ? "शुरू से ही, रमा, तुम अपनी जवानी को सह नहीं पाई हो।" चन्दन बाली कहता रहा, "रात-रात भर तुम मेरे साथ इसी लिए सोईं कि अपनी जवानी से तुम खुद ही परेशान थी। फिर तुम्हें होश आया कि यह तो बड़ी बदनामी की बात है। तुम ने यह भी देखा और समझा कि अगर तुम्हारी शादी मुझ से हो जाए तो बदनामी दब

"सवाल ही नहीं उठता।" चन्दन बाली का उत्तर था। मुझे लगा कि बात खामख्वाह फिर बढ़ने वाली है। मैं ने कहा, "आप दोनों के रिश्ते पहले क्या थे, इस का महत्व विशेष नहीं है। मेरी तो राय यही है कि आप दोनों के रिश्ते अब आगे क्या हों, इस पर विचार कर लिया जाए।"

"आने वाले कल को तय करने के लिए क्या मैं बीते हुए कल को भूल जाऊं ?" मिस गोगो ने मुझे चुनौती दी।

"कभी-कभी ऐसा करने में ही सार होता है।" मैं ने उत्तर दिया, फिर पूछा, "क्यों मिस्टर बाली, सच कहता हूं या नहीं ?"

"जी हां, लेकिन सार कभी-कभी ही होता है, हमेशा नहीं। मैं भी अपने बीते हुए कल को भूलने के लिए तैयार नहीं हूं।"

"फिर तुम मान क्यों नहीं लेते कि तुम्हीं ने मुझे भरे बाजार में नंगा किया है ? जीते-जी जैसे खाल उतरवाई जाती है, उसी तरह तुम ने मेरे कपड़े उतरवाए हैं।" मिस गोगो विस्फोट-सा करती हुई उठ खड़ी हुई। उन की मुट्ठियां भिच गई थीं। चेहरा तमतमाया हुआ। लाल। बहुत लाल। चन्दन बाली की आंखें जरा सिकुड़ आईं। उस ने मिस गोगो को घूरा, किन्तु कहा कुछ नहीं। मिस गोगो को उस ने अबाध गति से बोलने दिया, खुद एकदम पथरीले बने रह कर। मिस गोगो की आवाज़ गुस्से से फटी जा रही थी, "तुम्हीं ने मुझे आदमी मिटा कर गाय, बकरी और भैंस बना दिया। खुली डेयरियों में तुम लोग करते क्या हो ? गाय को घेर कर तुम खड़े हो जाते हो। अपनी आंखों के सामने तुम गाय को दुहवाते हो, ताकि दूध में एक बूंद भी पानी की मिलावट न हो। मेरे साथ भी तुम यही करते हो—तुम सब ! दुनिया के सारे मर्द ! मुझे भी तुम लोग घेर कर ही बैठते हो। अपनी आंखों के सामने मुझे नंगी करते हो, ताकि अगर मेरी खूबसूरती में जरा भी मिलावट निकले तो फौरन मुझे लात मार कर गटर में डाल दो। गाय के थन पकड़ते हुए जिस तरह तुम्हें शर्म नहीं आती, उसी तरह तुम मेरी छातियां

पकड़ने के लिए बेशर्मी से हाथ मलते हो। तुम्हीं लोगों ने मेरी भावनाओं को कच्चा चबा डाला है। गाय के गोबर से हाथ सन जाते हैं तो तुम्हें कै नहीं होती। क्या मैं भी तुम्हारे हाथ में गोबर कर दूं ?"

"मिस गोगो !" मैं ने कड़क कर कहा, "यह क्या बदतमीजी है ?"

"सरेआम नंगी होती हूं, तब मुझे बदतमीज कोई नहीं कहता। यहां, दो जनों के सामने एक सच्ची बात कह दी तो बदतमीज हो गई ?"

"क्षमा करें, मिस गोगो।" मैं उठता हुआ बोला, "मैं ऐसे गन्दे झगड़े का साक्षी नहीं बनना चाहता। मैं चलूंगा।"

"और आप के जाते ही इस की बदतमीजी भी रुक जाएगी !" चन्दन बाली ने हंस कर कहा, "आप की मौजूदगी के ही कारण यह इतना बमक रही है।"

"क्या खूब ! ओयहोय ! क्या मनोविश्लेषण है ! वाह, वकील साहब, वाह !" मिस गोगो न अकस्मात् खिलखिलाना शुरू कर दिया। मैं चुपचाप खड़ा रहा।

"रमा, तुम सरासर झूठ बोल रही हो।" चन्दन बाली ने मिस गोगो की खिलखिलाहट रुकने का इन्तजार किए बिना कहना शुरू किया। उसका कथन ज्यों-ज्यों आगे बढ़ा, मिस गोगो की खिल-खिलाहट डूबती गई। क्यों डूब रही थी मिस गोगो की खिलखिला-हट ? क्या इस लिए कि उन के झूठों का पर्दाफाश किया जा रहा था ? या इस लिए कि उन्हें भयंकर गुस्सा आने लगा था ? "शुरू से ही, रमा, तुम अपनी जवानी को सह नहीं पाई हो।" चन्दन बाली कहता रहा, "रात-रात भर तुम मेरे साथ इसी लिए सोईं कि अपनी जवानी से तुम खुद ही परेशान थी। फिर तुम्हें होश आया कि यह तो बड़ी बदनामी की बात है। तुम ने यह भी देखा और समझा कि अगर तुम्हारी शादी मुझ से हो जाए तो बदनामी दब

जाएगी। इसी लिए तुम ने भरसक कोशिश की—एक प्रमी के सांचे में मुझे ढालने की। जब मैं न ढल सका, तो तुम बिफर गईं। बिफर कर ही तुम कैबरे-डान्सर बनी होगी···ठीक है, और तुम्हारा बिफरना स्वाभाविक भा था, लेकिन···बिफरीं तुम मेरे कारण नहीं। बिफरीं तुम अपनी जवानी के कारण। अपनी खूबसूरती के कारण··· और, रमा, मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि अगर तुम···कैबरे-डान्सर न बनी होतीं, तो, तुम तो सेक्स की इतनी दीवानी हो कि तुम तो···"

चन्दन बाली ने वाक्य पूरा न किया। मैं ने सोचा था कि वाक्य पूरा होने से पहले ही मिस गोगो उसे तमाचा जड़ देंगी। मिस गोगो ने पता नहीं, क्या सोच कर ऐसा नहीं किया। वैसा न होने के बावजूद चन्दन बाली ने वाक्य अधूरा ही रहने दिया, जिस से सिद्ध हुआ कि चन्दन बाली एक सीमा में ही बदतमीज होना पसन्द करता था।

"बोलो, बोलो; बोल दो न! फिर मैं क्या बन जाती, अगर कैबरे-डान्सर न बनती?"

"......"

"बोलोओ! हाय, क्या खूबसूरत खामोशी है!"

"......"

"बॉस!" मिस गोगो से जब मेरी ओर देखा तो उनका चेहरा दमक रहा था, "मैं अपने भूतपूर्व प्रेमी को ठण्डा या गरम कुछ पिलाना चाहती हूं। न जाइए, बॉस! आप भी कुछ पीजिए, मेरे भूतपूर्व प्रेमी का साथ दीजिए। वचन देती हूं कि आप की मौजूदगी के बावजूद मैं नहीं बमकूंगी।"

मैं बैठ गया और बोला, "मिस गोगो, साढ़े छह बजे आप को कैबरे का शो देना है। अब आपको अपना मेक-अप शुरू कर देना चाहिए। मिस्टर बाली को जो भी पिलाना-विलाना हो, जल्दी निबटाइए। मैं चाहूंगा कि जब मैं यहां से जाऊं, तब मिस्टर बाली

भी मेरे साथ ही नीचे चलें। मैं स्वयं उन्हें बाहर तक छोड़ आऊंगा। मैं नहीं चाहता कि मेरी गैर-मौजूदगी में आप लोग फिर से झगड़ें।" यहां मैं ने चन्दन वाली की आंखों में सीधे देखते हुए कहा, "मैं आप से सहमत नहीं हूं, मिस्टर वाली कि मिस गोगो मेरी मौजूदगी के कारण ज्यादा बमक रही हैं। मैं ने तो अपनी मौजूदगी से इन पर अंकुश रखा है। जो भी हो, अब इन के मेक-अप का समय हो गया है और आप को मेरे साथ चलना चाहिए।"

"मैं इन के हाथ से कुछ भी पीने को तैयार नहीं। मैं इसी वक्त चलता हूं।" चन्दन झटके के साथ उठ पड़ा।

"प्लीज़, चन्दन !" मिस गोगो ने आगे बढ़ते हुए कहा, "ऐसे न जाओ। तुम इस से इन्कार तो कर ही नहीं सकते कि हमारी आज बरसों बाद मुलाकात हुई है। कर सकते हो इन्कार ?"

"तुम कहना क्या चाहती हो ?" चन्दन वाली ने पूछा।

"मुलाकातों की अपनी एक औपचारिकता होती है। कोई ज्यादा तामझाम नहीं करूंगी। एक-एक पेग शराब पी लो—या एक-एक गिलास शरबत !"

मैं बोला, "अभी की बहस में आप दोनों का दिमाग गरम हो चुका है। शराब पीएंगे तो विस्फोट की नौबत आ जाएगी। शरबत पिलाइए।"

"बैठो, चन्दन···बैठो भी।" मिस गोगो चन्दन वाली की ओर इस तरह बढ़ी कि यदि वह बैठ न जाता तो मिस गोगो उसे हाथ पकड़ कर ही बिठा देतीं। मैं इस बार चन्दन के बगल में बैठ गया, न कि दूर। अब मेरे और चन्दन वाली के मोर्चे आमने-सामने जमे हुए थोड़े ही थे ! मिस गोगो फ्रिज की ओर बढ़ीं। उन्होंने फ्रिज के ऊपर रखी ट्रे हाथ में ले ली। फ्रिज खोल कर उन्होंने तीन नन्हें-नन्हें नाजुक गिलास ट्रे में रखे। फिर वह इस तरह खड़ी हो गईं कि वह समूची ट्रे उन की ओट में छिप गई। मैं समझ गया कि उन्होंने किसी खास इरादे से ट्रे अपनी ओट में रख ली है। वह खास इरादा

जाएगी। इसी लिए तुम ने भरसक कोशिश की—एक प्रमी के सांचे में मुझे ढालने की। जब मैं न ढल सका, तो तुम बिफर गईं। बिफर कर ही तुम कैबरे-डान्सर बनी होगी···ठीक है, और तुम्हारा बिफरना स्वाभाविक भी था, लेकिन···बिफरीं तुम मेरे कारण नहीं। बिफरीं तुम अपनी जवानी के कारण। अपनी खूबसूरती के कारण··· और, रमा, मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि अगर तुम···कैबरे-डान्सर न बनी होतीं, तो, तुम तो सेक्स की इतनी दीवानी हो कि तुम तो···"

चन्दन बाली ने वाक्य पूरा न किया। मैं ने सोचा था कि वाक्य पूरा होने से पहले ही मिस गोगो उसे तमाचा जड़ देंगी। मिस गोगो ने पता नहीं, क्या सोच कर ऐसा नहीं किया। वैसा न होने के बावजूद चन्दन बाली ने वाक्य अधूरा ही रहने दिया, जिस से सिद्ध हुआ कि चन्दन बाली एक सीमा में ही बदतमीज होना पसन्द करता था।

"बोलो, बोलो; बोल दो न! फिर मैं क्या बन जाती, अगर कैबरे-डान्सर न बनती?"

"......"

"बोलोओ! हाय, क्या खूबसूरत खामोशी है!"

"......"

"बॉस!" मिस गोगो से जब मेरी ओर देखा तो उनका चेहरा दमक रहा था, "मैं अपने भूतपूर्व प्रेमी को ठण्डा या गरम कुछ पिलाना चाहती हूं। न जाइए, बॉस! आप भी कुछ पीजिए, मेरे भूतपूर्व प्रेमी का साथ दीजिए। वचन देती हूं कि आप की मौजूदगी के बावजूद मैं नहीं बमकूंगी।"

मैं बैठ गया और बोला, "मिस गोगो, साढ़े छह बजे आप को कैबरे का शो देना है। अब आपको अपना मेक-अप शुरू कर देना चाहिए। मिस्टर बाली को जो भी पिलाना-खिलाना हो, जल्दी निबटाइए। मैं चाहूंगा कि जब मैं यहां से जाऊं, तब मिस्टर बाली

भी मेरे साथ ही नीचे चलें। मैं स्वयं उन्हें बाहर तक छोड़ आऊंगा। मैं नहीं चाहता कि मेरी ग़ैर-मौजूदगी में आप लोग फिर से झगड़ें।" यहां मैं ने चन्दन वाली की आंखों में सीधे देखते हुए कहा, "मैं आप से सहमत नहीं हूं, मिस्टर वाली कि मिस गोगो मेरी मौजूदगी के कारण ज्यादा बमक रही हैं। मैं ने तो अपनी मौजूदगी से इन पर अंकुश रखा है। जो भी हो, अब इन के मेक-अप का समय हो गया है और आप को मेरे साथ चलना चाहिए।"

"मैं इन के हाथ से कुछ भी पीने को तैयार नहीं। मैं इसी वक्त चलता हूं।" चन्दन झटके के साथ उठ पड़ा।

"प्लीज़, चन्दन!" मिस गोगो ने आगे बढ़ते हुए कहा, "ऐसे न जाओ। तुम इस से इन्कार तो कर ही नहीं सकते कि हमारी आज बरसों बाद मुलाकात हुई है। कर सकते हो इन्कार?"

"तुम कहना क्या चाहती हो?" चन्दन वाली ने पूछा।

"मुलाकातों की अपनी एक औपचारिकता होती है। कोई ज्यादा तामझाम नहीं करूंगी। एक-एक पेग शराब पी लो—या एक-एक गिलास शरबत!"

मैं बोला, "अभी की बहस में आप दोनों का दिमाग गरम हो चुका है। शराब पीएंगे तो विस्फोट की नौबत आ जाएगी। शरबत पिलाइए।"

"बैठो, चन्दन···बैठो भी।" मिस गोगो चन्दन वाली की ओर इस तरह बढ़ी कि यदि वह बैठ न जाता तो मिस गोगो उसे हाथ पकड़ कर ही बिठा देतीं। मैं इस बार चन्दन के बगल में बैठ गया, न कि दूर। अब मेरे और चन्दन वाली के मोर्चे आमने-सामने जमे हुए थोड़े ही थे! मिस गोगो फ्रिज की ओर बढ़ीं। उन्होंने फ्रिज के ऊपर रखी ट्रे हाथ में ले ली। फ्रिज खोल कर उन्होंने तीन नन्हें-नन्हें नाजुक गिलास ट्रे में रखे। फिर वह इस तरह खड़ी हो गईं कि वह समूची ट्रे उन की ओट में छिप गई। मैं समझ गया कि उन्होंने किसी खास इरादे से ट्रे अपनी ओट में रख ली है। वह खास इरादा

क्या था उन का, मैं समझ न पाया। मैं ने चन्दन वाली पर निगाह डाली। चन्दन वाली गम्भीरता से फर्श की ओर देख रहा था। निश्चय ही उसे पता नहीं था कि मिस गोगो ने किसी खास इरादे से ट्रे अपनी ओट में छिपा ली है। मैं सोचने लगा कि क्या हम किसी जासूसी उपन्यास का परिच्छेद जी रहे हैं? परिच्छेद के मुताबिक होना यही चाहिए कि मिस गोगो ने ट्रे को अपनी ओट में छिपाया, फिर एक गिलास में जहर डाल दिया। तोनों गिलासों में शरबत डाल कर वह ले आई और जहर वाला गिलास उन्होंने चन्दन वाली को थमा दिया। सिर्फ एक घूंट। एक भी नहीं। आधा या चौथाई घूंट—और हरामजादे का सफाया! अजी नहीं, भला मिस गोगो इस सीमा तक जाएंगी? किस ने किसे अपमानित किया है? मिस गोगो ने मिस्टर वाली को या मिस्टर वाली ने मिस गोगो को? मिस गोगो इतने आवेश में आ सकती हैं कि जहर दे देने की सोचें?

जासूसी उपन्यास के परिच्छेद की एक नाटकीय सम्भावना ने मुझे डरा दिया। क्या आश्चर्य यदि सचमुच मिस गोगो किसी गिलास में जहर घोल कर लाएं, किन्तु गिलास को ऐन मौके पर ठीक से पहचान न पाएं। भूल से जहर वाला गिलास वह मिस्टर वाली के वजाए मुझे ही थमा दें। मैं शरबत पीना शुरू करूं। एक घूंट। एक भी नहीं। सिर्फ आधा या चौथाई घूंट। और—अजी नहीं, भला ऐसा भी कहीं हो सकता है?

"क्या सोच रहे हैं?" मैं ने खामोशी भंग करने और अपने बचकाने विचारों को रोकने के लिए चन्दन वाली से पूछा। "कुछ नहीं।" चन्दन वाली ने मेरी ओर देखे बिना कहा। सिर के बालों में उस ने दोनों हाथों की उंगलियां फेरीं। निश्चय ही वह कुछ सोच रहा था।

"लीजिए।" मिस गोगो का स्वर सुन कर मैं ने ऊपर देखा। वह हम दोनों के निकट आ खड़ी हुई थीं। चूंकि वह खड़ी थीं और हम बैठे थे, हम उन के हाथ की ट्रे को नीचे से देख सके। ट्रे में से

एक गिलास उठा कर उन्होंने मेरी ओर बढ़ा दिया था और कहा था, "लीजिए।"

मैं पूछे बिना न रह सका, "क्या आप को पक्का यकीन है, मिस गोगो, कि यह गिलास मेरे ही लिए है ?"

"जी हां, यह आप का है।" वह मुस्कराई।

"मिस्टर बाली हमारे मेहमान हैं, शरबत पहले उन्हें पेश करिए।"

"चन्दन को मैं अपना मेहमान कभी मान नहीं सकती—चाहे हम कितना ही लड़ें-झगड़ें! यह गिलास आप ही का है।"

मैं ने गिलास ले लिया। वह ठण्डा था। पीले रंग का कोई शरबत उस में आधे तक भरा हुआ था। केवल आधे तक गिलास मिस गोगो ने शायद नजाकत के लिए भरा था। पूरा आश्वासन मिल चुका होने के बावजूद कि गिलास मेरे ही लिए था, मैं उसे एकाएक होंठों से न लगा सका। मेरी धड़कन बढ़ गई थी।

मैं ने उस गिलास की ओर देखा, जो मिस गोगो ने मिस्टर चन्दन बाली को अभी-अभी दिया था। चन्दन के भी गिलास में शरबत आधे तक ही भरा हुआ था। गिलास थामते समय चन्दन निर्विकार और चुप रहा था। उस ने मिस गोगो से आंखें भी नहीं मिलाई थीं।

चन्दन के बैठने की जगह वही थी, जहां कि उसे बिठाया जाना जाना तय हुआ था। चन्दन के पीछे वह परदा खिंचा हुआ था, जिस की ओट में अजगर वाला पिंजड़ा था।

गिलास चन्दन ने भी तुरन्त होंठों से न लगाया। सहसा मैं ने ध्यान दिया कि चन्दन के शरबत का पीलापन मेरे शरबत से कुछ अलग तरह का है। मैं चक्कर में पड़ा। क्या मैं चन्दन को फौरन सावधान कर दूं कि गिलास मत लगाना होंठों से, वरना···

ट्रे को सेण्टर-टेबल पर रख कर मिस गोगो, चन्दन के सामने की कुर्सी में बैठ गई थीं। मिस गोगो के हाथ में जो गिलास था, उस में भी शरबत आधे तक भरा हुआ था। उस का रंग वैसा ही पीला

क्या था उन का, मैं समझ न पाया। मैं ने चन्दन वाली पर निगाह डाली। चन्दन वाली गम्भीरता से फर्श की ओर देख रहा था। निश्चय ही उसे पता नहीं था कि मिस गोगो ने किसी खास इरादे से ट्रे अपनी ओट में छिपा ली है। मैं सोचने लगा कि क्या हम किसी जासूसी उपन्यास का परिच्छेद जी रहे हैं? परिच्छेद के मुताबिक होना यही चाहिए कि मिस गोगो ने ट्रे को अपनी ओट में छिपाया, फिर एक गिलास में जहर डाल दिया। तोनों गिलासों में शरबत डाल कर वह ले आई और जहर वाला गिलास उन्होंने चन्दन वाली को थमा दिया। सिर्फ एक घूंट। एक भी नहीं। आधा या चौथाई घूंट—और हरामजादे का सफाया! अजी नहीं, भला मिस गोगो इस सीमा तक जाएंगी? किस ने किसे अपमानित किया है? मिस गोगो ने मिस्टर वाली को या मिस्टर वाली ने मिस गोगो को? मिस गोगो इतने आवेश में आ सकती हैं कि जहर दे देने की सोचें?

जासूसी उपन्यास के परिच्छेद की एक नाटकीय सम्भावना ने मुझे डरा दिया। क्या आश्चर्य यदि सचमुच मिस गोगो किसी गिलास में जहर घोल कर लाएं, किन्तु गिलास को ऐन मौके पर ठीक से पहचान न पाएं। भूल से जहर वाला गिलास वह मिस्टर वाली के बजाए मुझे ही थमा दें। मैं शरबत पीना शुरू करूं। एक घूंट। एक भी नहीं। सिर्फ आधा या चौथाई घूंट। और—अजी नहीं, भला ऐसा भी कहीं हो सकता है?

"क्या सोच रहे हैं?" मैं ने खामोशी भंग करने और अपने बचकाने विचारों को रोकने के लिए चन्दन वाली से पूछा। "कुछ नहीं।" चन्दन वाली ने मेरी ओर देखे बिना कहा। सिर के बालों में उस ने दोनों हाथों की उंगलियां फेरीं। निश्चय ही वह कुछ सोच रहा था।

"लीजिए।" मिस गोगो का स्वर सुन कर मैं ने ऊपर देखा। वह हम दोनों के निकट आ खड़ी हुई थीं। चूंकि वह खड़ी थीं और हम बैठे थे, हम उन के हाथ की ट्रे को नीचे से देख सके। ट्रे में से

एक गिलास उठा कर उन्होंने मेरी ओर बढ़ा दिया था और कहा था, "लीजिए।"

मैं पूछे बिना न रह सका, "क्या आप को पक्का यक़ीन है, मिस गोगो, कि यह गिलास मेरे ही लिए है ?"

"जी हां, यह आप का है।" वह मुस्कराई।

"मिस्टर बाली हमारे मेहमान हैं, शरबत पहले उन्हें पेश करिए।"

"चन्दन को मैं अपना मेहमान कभी मान नहीं सकती—चाहे हम कितना ही लड़ें-झगड़ें ! यह गिलास आप ही का है।"

मैं ने गिलास ले लिया। वह ठण्डा था। पीले रंग का कोई शरबत उस में आधे तक भरा हुआ था। केवल आधे तक गिलास मिस गोगो ने शायद नजाकत के लिए भरा था। पूरा आश्वासन मिल चुका होने के बावजूद कि गिलास मेरे ही लिए था, मैं उसे एकाएक होंठों से न लगा सका। मेरी धड़कन बढ़ गई थी।

मैं ने उस गिलास की ओर देखा, जो मिस गोगो ने मिस्टर चन्दन बाली को अभी-अभी दिया था। चन्दन के भी गिलास में शरबत आधे तक ही भरा हुआ था। गिलास थामते समय चन्दन निर्विकार और चुप रहा था। उस ने मिस गोगो से आंखें भी नहीं मिलाई थीं।

चन्दन के बैठने की जगह वही थी, जहां कि उसे बिठाया जाना जाना तय हुआ था। चन्दन के पीछे वह परदा खिचा हुआ था, जिस की ओट में अजगर वाला पिंजड़ा था।

गिलास चन्दन ने भी तुरन्त होंठों से न लगाया। सहसा मैं ने ध्यान दिया कि चन्दन के शरबत का पीलापन मेरे शरबत से कुछ अलग तरह का है। मैं चक्कर में पड़ा। क्या मैं चन्दन को फौरन सावधान कर दूं कि गिलास मत लगाना होंठों से, वरना···

ट्रे को सेण्टर-टेबल पर रख कर मिस गोगो, चन्दन के सामने की कुर्सी में बैठ गई थीं। मिस गोगो के हाथ में जो गिलास था, उस में भी शरबत आधे तक भरा हुआ था। उस का रंग वैसा ही पीला

था, जैसा कि मेरे शरबत का। जब मेरे और मिस गोगो के शरबत में एक-जैसा पीलापन है, तब तो यह चन्दन वाली का ही शरवत है कि जिस में जहर…

चन्दन अपना गिलास होंठों से लगाने ही वाला था—

चन्दन को मैं फौरन रोक देने ही वाला था—

कि सहसा चन्दन का चेहरा फक पड़ गया। विचित्र सकपकाहट ने उस के चेहरे को एकदम दबोच लिया।

नहीं। चन्दन ने गिलास अभी होंठों से लगाया भी नहीं। उस का रंग इस लिए नहीं उड़ गया कि वह जहर के सम्पर्क में आ चुका है। फिर क्या कारण है उस का चेहरा फक पड़ने का?

मैं ने देखा कि चन्दन अपना गिलास सेण्डर-टेबल पर वापस रख रहा है और उस के हाथ कांप रहे हैं।

मिस गोगो की आंखें चन्दन पर ही टिकी हुई थीं। ये कैसे भाव हैं मिस गोगो की आंखों में? मैं इन भावों को समझ क्यों नहीं पा रहा?

इस सारी सनसनी में मैं भी अपना गिलास होंठों से लगाना भूल गया था। क्या चन्दन ने शरबत की गन्ध से पहचान लिया कि उसे जहर दिया जा रहा है? लेकिन क्या मिस गोगो इतनी भोंदू हैं कि उतनी अधिक गन्ध वाला जहर चन्दन के शरबत में मिलाए?

बिजली कौंधने पर कुछ क्षणों के लिए जिस प्रकार सभी रंग लुप्त हो जाते हैं और हर चीज सफेद-सफेद ही नजर आती है, उसी प्रकार इतनी तीव्र स्तब्धता छा गई कि जीवित-अजीवित हर चीज एक जैसी ही जड़ महसूस हुई।

मिस गोगो ने भी अपना गिलास होंठों से नहीं लगाया था। सेण्टर-टेबल पर रखे चन्दन के गिलास के बगल में उन्होंने अपना गिलास रख दिया। फिर अत्यन्त चपलता से उन्होंने चन्दन का गिलास स्वयं उठा लिया। एक उन्मादित मुस्कान मैं ने उन के होंठों पर उभरते देखी।

अब चन्दन वाली के केवल हाथों में नहीं, सारे शरीर में सूक्ष्म झुर-झुरी हो रही थी।

मिस गोगो हंसीं।

चन्दन का गिलास उठा कर, उस में भरे पीले तरल को, मिस गोगो गौर से देख रही थीं। हंस कर पूछा उन्होंने, "क्यों ? गो-मूत्र पवित्र नहीं होता क्या ?"

जैसे किसी स्प्रिंग से प्रभावित हुआ हो, इस तरह चन्दन वाली उछल-सा गया। वास्तव में वह केवल खड़ा होना चाहता था। उस के होंठ परस्पर न केवल भिंचे हुए थे, जरा मुंह के भीतर भी चले गए थे। इस से उस के चेहरे पर एक बन्दरपन-सा आ गया था। उस का चेहरा दयनीय है या डरावना, इस का उत्तर मेरे पास नहीं था। मेरी धुंधुकी बढ़ गई थी।

जितनी चपलता से चन्दन वाली उठा था, उतनी ही चपलता से मिस गोगो उठ खड़ी हुई थीं। अपना गिलास कुर्सी के हत्थे पर रख कर मैं भी उठने लगा। अब फिर से ये दोनों गुत्यमगुत्था होंगे और मुझे इन्हें छुड़ाना पड़गा। मुझे बी० टी० की याद आ गई। साला कुछ ही दीवारों की ओट में कैसे मजे ले रहा है !

मिस गोगो के हाथ में वह गिलास था ही, जो मूलतः चन्दन वाली को दिया गया था।

चन्दन के पोज़ से मुझे ऐसा लगा कि वह मिस गोगो का गला पकड़ने के लिए झपटने ही वाला है, लेकिन उस ने चुपचाप दरवाजे की ओर बढ़ना चाहा। कदम उस ने उठाए ही थे कि मिस गोगो सामने आ खड़ी हुई और बोलीं, "क्यों ? गाय के पैर यदि चार के बजाए दो हों, तो क्या गो-मूत्र पवित्र नहीं रह जाता ?"

न चन्दन अपनी जगह से हिल सका, न मैं।

"पीछे हटो।" मिस गोगो ने हुक्म दिया। मैं इतना सकपकाया हुआ था कि मुझे वह हुक्म स्वय अपने लिए महसूस हुआ। पीछे मैं हटने ही वाला था कि मैं ने चन्दन वाली को पीछे हटते देखा। इस

था, जैसा कि मेरे शरबत का। जब मेरे और मिस गोगो के शरबत में एक-जैसा पीलापन है, तब तो यह चन्दन वाली का ही शरवत है कि जिस में जहर...

चन्दन अपना गिलास होंठों से लगाने ही वाला था—

चन्दन को मैं फौरन रोक देने ही वाला था—

कि सहसा चन्दन का चेहरा फक पड़ गया। विचित्र सकपकाहट ने उस के चेहरे को एकदम दवोच लिया।

नहीं। चन्दन ने गिलास अभी होंठों से लगाया भी नहीं। उस का रंग इस लिए नहीं उड़ गया कि वह जहर के सम्पर्क में आ चुका है। फिर क्या कारण है उस का चेहरा फक पड़ने का ?

मैं ने देखा कि चन्दन अपना गिलास सेण्डर-टेवल पर वापस रख रहा है और उस के हाथ कांप रहे हैं।

मिस गोगो की आंखें चन्दन पर ही टिकी हुई थीं। ये कैसे भाव हैं मिस गोगो की आंखों में ? मैं इन भावों को समझ क्यों नहीं पा रहा ?

इस सारी सनसनी में मैं भी अपना गिलास होंठों से लगाना भूल गया था। क्या चन्दन ने शरबत की गन्ध से पहचान लिया कि उसे जहर दिया जा रहा है ? लेकिन क्या मिस गोगो इतनी भोदू हैं कि उतनी अधिक गन्ध वाला जहर चन्दन के शरवत में मिलाए ?

बिजली कौंधने पर कुछ क्षणों के लिए जिस प्रकार सभी रंग लुप्त हो जाते हैं और हर चीज सफेद-सफेद ही नजर आती है, उसी प्रकार इतनी तीव्र स्तब्धता छा गई कि जीवित-अजीवित हर चीज एक जैसी ही जड़ महसूस हुई।

मिस गोगो ने भी अपना गिलास होंठों से नहीं लगाया था। सेण्टर-टेवल पर रखे चन्दन के गिलास के बगल में उन्होंने अपना गिलास रख दिया। फिर अत्यन्त चपलता से उन्होंने चन्दन का गिलास स्वयं उठा लिया। एक उन्मादित मुस्कान मैं ने उन के होंठों पर उभरते देखी।

अब चन्दन वाली के केवल हाथों में नहीं, सारे शरीर में सूक्ष्म झुर-झुरी हो रही थी।

मिस गोगो हंसीं।

चन्दन का गिलास उठा कर, उस में भरे पीले तरल को, मिस गोगो गौर से देख रही थीं। हंस कर पूछा उन्होंने, "क्यों? गो-मूत्र पवित्र नहीं होता क्या?"

जैसे किसी स्प्रिंग से प्रभावित हुआ हो, इस तरह चन्दन वाली उछल-सा गया। वास्तव में वह केवल खड़ा होना चाहता था। उस के होंठ परस्पर न केवल भिंचे हुए थे, जरा मुंह के भीतर भी चले गए थे। इस से उस के चेहरे पर एक बन्दरपन-सा आ गया था। उस का चेहरा दयनीय है या डरावना, इस का उत्तर मेरे पास नहीं था। मेरी धु धुकी बढ़ गई थी।

जितनी चपलता से चन्दन वाली उठा था, उतनी ही चपलता से मिस गोगो उठ खड़ी हुई थीं। अपना गिलास कुर्सी के हत्थे पर रख कर मैं भी उठने लगा। अब फिर से ये दोनों गुत्थमगुत्था होंगे और मुझे इन्हें छुड़ाना पड़ेगा। मुझे वी० टी० की याद आ गई। साला कुछ ही दीवारों की ओट में कैसे मजे ले रहा है!

मिस गोगो के हाथ में वह गिलास था ही, जो मूलत: चन्दन वाली को दिया गया था।

चन्दन के पोज़ से मुझे ऐसा लगा कि वह मिस गोगो का गला पकड़ने के लिए झपटने ही वाला है, लेकिन उस ने चुपचाप दरवाजे की ओर बढ़ना चाहा। कदम उस ने उठाए ही थे कि मिस गोगो सामने आ खड़ी हुईं और बोलीं, "क्यों? गाय के पैर यदि चार के बजाए दो हों, तो क्या गो-मूत्र पवित्र नहीं रह जाता?"

न चन्दन अपनी जगह से हिल सका, न मैं।

"पीछे हटो।" मिस गोगो ने हुक्म दिया। मैं इतना सकपकाया हुआ था कि मुझे वह हुक्म स्वयं अपने लिए महसूस हुआ। पीछे मैं हटने ही वाला था कि मैं ने चन्दन वाली को पीछे हटते देखा। इस

से मैं समझ गया कि हुक्म मेरे लिए नहीं था।

मिस गोगो के हाथ में वह गिलास था ही, जो मूलतः चन्दन बाली को दिया गया था। पीछे हटने के हुक्म का पालन यदि चन्दन ने न किया, तो गिलास का पीला तरल उस के मुंह पर फेंक दिया जाएगा—इस पोज़ में मिस गोगो गिलास उठाए हुए थीं। चन्दन एक-एक कदम पीछे हटता था, मिस गोगो एक-एक कदम आगे आती थीं। मिस गोगो रुक गईं। इस से चन्दन ने भी पीछे हटना रोक दिया। अब वह उस परदे से बिल्कुल सटा हुआ था, जिस की ओट में अजगर वाला पिंजड़ा रखा था।

"प्यार के जोश में एक दिन तुम ने क्या कहा था, भूल गए, चन्दन ? मेरा अंग-अंग अपने पाश में जकड़ कर तुम बोले नहीं थे कि मूतो रमा, मैं पीऊंगा ? उतना प्यार केवल दोस्ती के नाते था —क्यों ? चुप क्यों हो ? कह दो न कि वे शब्द मेरे नहीं थे ! पीछे हटो। हटो पीछे। पीछे परदा है। मेरी ओर देखते रहो और परदा हटा दो। ठीक। बिल्कुल ठीक। एक कदम और हटो पीछे। बैठो। मैं कहती हूं—बैठ जाओ। मेरी आंखों में देखो और बैठ जाओ। बैठते हो या नहीं ?"—और मिस गोगो ने गो-मूत्र वाला गिलास इस तरह उठाया कि मैं ने देखा चन्दन बाली अजगर के पिंजड़े पर बैठ गया है। उसे समझ में नहीं आ रहा कि जिस पर वह बैठा है, वह है क्या चीज; लेकिन निगाहों को उस ने मिस गोगो पर ही केन्द्रित रखा है। उसे हुक्म है कि वह मिस गोगो की आंखों में देखे, नीचे कतई नहीं। हुक्म का पालन वह कर रहा है। उस का विकृत चेहरा इतना बदला हुआ है कि जैसे वह चेहरा चन्दन बाली का हो ही नहीं। पिंजड़े पर ज्यों ही वह बैठा है, त्यों ही पिंजड़े में जागते पड़े अजगर में हरकतें हुई हैं। अजगर का सिर मैं अचानक ऊपर उठते देखता हूं। अजगर की आंखें वैसी ही हैं, जैसी की होनी चाहिए। उस की जीभ उसी तरह लपलपा रही है, जिस तरह कि लपलपानी चाहिए। अजगर का मुंह पिंजड़े की छत तक पहुंच गया है। छत में बड़े-बड़े छेद हैं।

छेद में से अजगर अपने मुंह का नुकीला हिस्सा बाहर निकाल सकता है। जिन दो-तीन छेदों पर चन्दन वाली बैठा हुआ है, उन्हीं में से किसी एक छेद में से अजगर अपना नुकीला मुंह बाहर निकाल कर जीभ लपलपाना चाहता है। वह असफल रहता है। कूल्हों पर नीचे से मिल रहा अजगर की जीभ का मुलायम स्पर्श चन्दन वाली को चकित करता है। उस की समझ में नहीं आता कि यह क्या हो रहा है। गो-मूत्र का गिलास मिस गोगो ने अब भी इस तरह उठा रखा है कि वह किसी भी क्षण चन्दन वाली का चेहरा भिगो दें···"खबरदार जो नीचे देखा !" मिस गोगो कहती हैं, "सामने देखो ! मेरी आंखों में आंखें डाल कर कहो—बताओ मुझे, क्या तुम सिर्फ दोस्त ही थे मेरे ? बोलो ! बोलो वरना ?" और मिस गोगो उस गिलास को हिला-हिला कर चन्दन वाली का मानसिक शोषण कर रही हैं। चन्दन वाली इस तरह चुप है, जैसे जन्मजात गूंगा हो। मैं एक मजेदार बात देखने में समर्थ हूं। चन्दन वाली के दो बटन टूट गए थे। पिंजड़े पर बैठने के कारण चन्दन की पैण्ट, पैरों के बीच, जरा कस गई है। बटनों के अभाव में वहां कच्छे का सफेद कपड़ा उभर-सा आया है। बी. टी. साला क्लिक-क्लिक कर रहा होगा, फ्लैश-गन उस की बार-बार कौंधती होगी और सुन्दरा-सुन्दरी हर बार नया पोज़ देते हुए···चन्दन वाली जिस पोज़ में पिजड़ें पर बैठा है···अईअईयो ! मुझे हंसी आने वाली है। अजगर छत के छेद के बजाए मुंह सींखचों के बीच से बाहर निकालने के प्रयास में है। चन्दन वाली के दोनों हाथ पिंजड़े के कगार पर कसे हुए हैं। अरे ! अजगर अपनी लपलपाती जीभ से चन्दन के एक हाथ को चाटना शुरू कर चुका है ! चन्दन घबरा कर गो-मूत्र के गिलास का खतरा भूल जाता है। हुक्म का अनादर करता हुआ वह नीचे देख लेता है। अजगर पर निगाह पड़ते ही वह चीख कर अपने पिता को याद करता है। वह उछल कर भागता है। उस की भगदड़ को जगह देने के लिए मैं एक तरफ हट जाता हूं। मिस गोगो खिलखिलाने लगी हैं। चन्दन को भागते

से मैं समझ गया कि हुक्म मेरे लिए नहीं था।

मिस गोगो के हाथ में वह गिलास था ही, जो मूलतः चन्दन बाली को दिया गया था। पीछे हटने के हुक्म का पालन यदि चन्दन ने न किया, तो गिलास का पीला तरल उस के मुंह पर फेंक दिया जाएगा—इस पोज़ में मिस गोगो गिलास उठाए हुए थीं। चन्दन एक-एक कदम पीछे हटता था, मिस गोगो एक-एक कदम आगे आती थीं। मिस गोगो रुक गईं। इस से चन्दन ने भी पीछे हटना रोक दिया। अब वह उस परदे से बिल्कुल सटा हुआ था, जिस की ओट में अजगर वाला पिंजड़ा रखा था।

"प्यार के जोश में एक दिन तुम ने क्या कहा था, भूल गए, चन्दन ? मेरा अंग-अंग अपने पाश में जकड़ कर तुम बोले नहीं थे कि मूतो रमा, मैं पीऊंगा ? उतना प्यार केवल दोस्ती के नाते था —क्यों ? चुप क्यों हो ? कह दो न कि वे शब्द मेरे नहीं थे ! पीछे हटो। हटो पीछे। पीछे परदा है। मेरी ओर देखते रहो और परदा हटा दो। ठीक। बिल्कुल ठीक। एक कदम और हटो पीछे। बैठो। मैं कहती हूं—बैठ जाओ। मेरी आंखों में देखो और बैठ जाओ। बैठते हो या नहीं ?"—और मिस गोगो ने गो-मूत्र वाला गिलास इस तरह उठाया कि मैं ने देखा चन्दन वाली अजगर के पिंजड़े पर बैठ गया है। उसे समझ में नहीं आ रहा कि जिस पर वह बैठा है, वह है क्या चीज; लेकिन निगाहों को उस ने मिस गोगो पर ही केन्द्रित रखा है। उसे हुक्म है कि वह मिस गोगो की आंखों में देखे, नीचे कतई नहीं। हुक्म का पालन वह कर रहा है। उस का विकृत चेहरा इतना बदला हुआ है कि जैसे वह चेहरा चन्दन बाली का हो ही नहीं। पिंजड़े पर ज्यों ही वह बैठा है, त्यों ही पिंजड़े में जागते पड़े अजगर में हरकतें हुई हैं। अजगर का सिर मैं अचानक ऊपर उठते देखता हूं। अजगर की आंखें वैसी ही हैं, जैसी की होनी चाहिए। उस की जीभ उसी तरह लपलपा रही है, जिस तरह कि लपलपानी चाहिए। अजगर का मुंह पिंजड़े की छत तक पहुंच गया है। छत में बड़े-बड़े छेद हैं।

छेद में से अजगर अपने मुंह का नुकीला हिस्सा बाहर निकाल सकता है। जिन दो-तीन छेदों पर चन्दन वाली बैठा हुआ है, उन्हीं में से किसी एक छेद में से अजगर अपना नुकीला मुंह बाहर निकाल कर जीभ लपलपाना चाहता है। वह असफल रहता है। कूल्हों पर नीचे से मिल रहा अजगर की जीभ का मुलायम स्पर्श चन्दन वाली को चकित करता है। उस की समझ में नहीं आता कि यह क्या हो रहा है। गो-मूत्र का गिलास मिस गोगो ने अब भी इस तरह उठा रखा है कि वह किसी भी क्षण चन्दन वाली का चेहरा भिगो दें···"खबरदार जो नीचे देखा!" मिस गोगो कहती हैं, "सामने देखो! मेरी आंखों में आंखें डाल कर कहो—बताओ मुझे, क्या तुम सिर्फ दोस्त ही थे मेरे? बोलो! बोलो वरना?" और मिस गोगो उस गिलास को हिला-हिला कर चन्दन वाली का मानसिक शोषण कर रही हैं। चन्दन वाली इस तरह चुप है, जैसे जन्मजात गूंगा हो। मैं एक मजेदार बात देखने में समर्थ हूं। चन्दन वाली के दो बटन टूट गए थे। पिंजड़े पर बैठने के कारण चन्दन की पैण्ट, पैरों के बीच, जरा कस गई है। बटनों के अभाव में वहां कच्छे का सफ़ेद कपड़ा उभर-सा आया है। वी. टी. साला क्लिक-क्लिक कर रहा होगा, फ्लैश-गन उस की बार-बार कौंधती होगी और सुन्दरा-सुन्दरी हर बार नया पोज़ देते हुए···चन्दन वाली जिस पोज़ में पिंजड़ें पर बैठा है···अईअईयो! मुझे हंसी आने वाली है। अजगर छत के छेद के बजाए मुंह सींखचों के बीच से बाहर निकालने के प्रयास में है। चन्दन वाली के दोनों हाथ पिंजड़े के कगार पर कसे हुए हैं। अरे! अजगर अपनी लपलपाती जीभ से चन्दन के एक हाथ को चाटना शुरू कर चुका है! चन्दन घबरा कर गो-मूत्र के गिलास का खतरा भूल जाता है। हुक्म का अनादर करता हुआ वह नीचे देख लेता है। अजगर पर निगाह पड़ते ही वह चीख कर अपने पिता को याद करता है। वह उछल कर भागता है। उस की भगदड़ को जगह देने के लिए मैं एक तरफ हट जाता हूं। मिस गोगो खिलखिलाने लगी हैं। चन्दन को भागते

देख अजगर भी खुश हो रहा है। मन-ही-मन शायद अजगर भी ठहाके लगा रहा है। मिस गोगो ने गो-मूत्र का गिलास मेज पर रख दिया है, क्योंकि अब उन्हें दोनों हाथों से पेट पकड़ कर हंसने की जरूरत है। इस जरूरत को वह पूरा कर रही हैं। मैं ताक रहा हूं दरवाजे की ओर। दरवाजा खोल कर चन्दन वाली रफू-चक्कर हो चुका है। दरवाजा खुला पड़ा है। वह बन्द नहीं होगा, यदि बन्द न किया गया। सहसा मुझे भी पेट पकड़ कर हंसने की जरूरत महसूस होती है। मिस गोगो ने कुर्सी के हत्थे पर रखा वह गिलास उठा लिया है, जो मूलतः मुझे दिया गया था।

"आप न डरिए, बॉस! सूंघ कर देख लीजिए। स्वयं की तरह आप को भी मैं ने आरेंज-स्क्वैश ही दिया है। पीजिए।" और मिस गोगो ने वह गिलास पुनः मुझे दे दिया है, जो मूलतः मुझे ही मिला था। मैं इतना हंस रहा हूं कि गिलास छलक-छलक जाता है।

सेण्टर-टेबल पर वह गिलास ज्यों-का-त्यों रखा था, जो स्वयं मिस गोगो का था। मिस गोगो ने उसे उठा कर आरेंज-स्क्वैश पीने का प्रयास किया। मारे हंसी के वह न पी सकीं। छलक-छलक जा रहे अपने गिलास को मैं ने होंठों से लगाया। मैं ने आरेंज-स्क्वैश पीने का प्रयास किया। मारे हंसी के मैं न पी सका। हंसते-हंसते मैं दरवाजे के पास आया, जो खुला पड़ा था। मैं ने उसे बन्द कर दिया। सिटकनी चढ़ाने में मुझे खासा समय लगा, क्योंकि मैं हंस रहा था। हमारी हंसियां इतनी गडमड हो गईं कि मिस गोगो की आवाज़ मेरे मुंह से निकलने लगी और मेरी आवाज़ मिस गोगो के मुंह से! हाय-हाय, मज़ा आ गया! अजगर डोलता जा रहा था। मारे खुशी के मिस गोगो ने गो-मूत्र का गिलास उठा कर अजगर के पिंजड़े पर उलट दिया। पिंजड़े की छत के बड़े-बड़े छेदों में से गो-मूत्र अजगर पर बरसने लगा। अजगर झूम गया। ईहीहीही··· हा-हा·· हू-हू···हो-हो-हो···

तब सहसा एक चमत्कार हुआ—मैं ने मिस गोगो के अट्टहास

को करुण रोदन में बदल जाते देखा। चेहरे को हथेलियों के बीच छिपा कर वह गहरी सिसकियां लेने लगीं। मैं उन से कुछ न बोल सका। मैं केवल उन की पीठ थपथपाता रहा, मैं जान गया था— उस हरामजादे के लिए अब भी उन के मन में प्यार की कमी नहीं।

⊙ अगले दिन बी. टी. ने मुझे खबर दी कि रात को मिस गोगो जरूरत-से-ज्यादा खुल कर नाचीं। यदि ऐसा ही खुलापन उन्होंने समय-समय पर बरता, तो 'अलीबाबा' पर अश्लीलता का आरोप लगते देर नहीं।

बी. टी. को क्या मालूम कि मिस गोगो के उस खुलेपन का कारण क्या था। चन्दन बाली से विचित्र मुलाकात ने मिस गोगो को कितना आलोड़ित कर दिया था; बी. टी. को अनुमान ही क्या! उसी आलोड़न की प्रतिक्रिया में उन्होंने खुलापन बरता होगा। चूंकि ऐसा आलोड़न समय-समय पर होता नहीं रह सकता; इतना खुलापन वह बार-बार बरतेंगी, ऐसा खतरा मुझे दिखाई न दिया।

उस विचित्र मुलाकात का ब्यौरा बी. टी. को देते-देते मैं रह गया। मैं ने सोचा कि इस तरह मैं अनजाने में ही मिस गोगो की भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर जाऊंगा।

बी. टी. को स्थायी आदेश है कि वह प्रति सप्ताह, 'अलीबाबा' की तरफ से, मिस गोगो के कैबरे-कार्यक्रमों के फोटो खींचा करे। 'अलीबाबा' के काउण्टर पर मिस गोगो की उत्तेजक मुद्राओं के जो फोटो लगे हैं, उन्हें प्रति सप्ताह बदलना जरूरी होता है। उत्तेजक फोटो 'अलीबाबा' के बाहरी प्रवेश-द्वार के पास भी, एक शो-केस में लगे हैं, ताकि राह चलते लोग अपने नेत्रों को सुख पहुंचा सकें। उन उत्तेजक मुद्राओं में, मन्दिर पर से सभी परदे उठे हुए नहीं दिखाए जाते। यदि सभी परदे उठे हुए हों, तब तो लोगों के नेत्र उन की खोपड़ियों में से उछल कर बाहर निकल जाएं! मैं नहीं चाहता कि 'अलीबाबा' के प्रवेश-द्वार के पास, फर्श पर नेत्र-ही-नेत्र पड़े हुए हों।

देख अजगर भी खुश हो रहा है। मन-ही-मन शायद अजगर भी ठहाके लगा रहा है। मिस गोगो ने गो-मूत्र का गिलास मेज पर रख दिया है, क्योंकि अब उन्हें दोनों हाथों से पेट पकड़ कर हंसने की जरूरत है। इस जरूरत को वह पूरा कर रही हैं। मैं ताक रहा हूं दरवाजे की ओर। दरवाजा खोल कर चन्दन वाली रफू-चक्कर हो चुका है। दरवाजा खुला पड़ा है। वह बन्द नहीं होगा, यदि बन्द न किया गया। सहसा मुझे भी पेट पकड़ कर हंसने की जरूरत महसूस होती है। मिस गोगो ने कुर्सी के हत्थे पर रखा वह गिलास उठा लिया है, जो मूलतः मुझे दिया गया था।

"आप न डरिए, बॉस! सूंघ कर देख लीजिए। स्वयं की तरह आप को भी मैं ने आरेंज-स्क्वैश ही दिया है। पीजिए।" और मिस गोगो ने वह गिलास पुनः मुझे दे दिया है, जो मूलतः मुझे ही मिला था। मैं इतना हंस रहा हूं कि गिलास छलक-छलक जाता है।

सेण्टर-टेबल पर वह गिलास ज्यों-का-त्यों रखा था, जो स्वयं मिस गोगो का था। मिस गोगो ने उसे उठा कर आरेंज-स्क्वैश पीने का प्रयास किया। मारे हंसी के वह न पी सकीं। छलक-छलक जा रहे अपने गिलास को मैं ने होंठों से लगाया। मैं ने आरेंज-स्क्वैश पीने का प्रयास किया। मारे हंसी के मैं न पी सका। हंसते-हंसते मैं दरवाजे के पास आया, जो खुला पड़ा था। मैं ने उसे बन्द कर दिया। सिटकनी चढ़ाने में मुझे खासा समय लगा, क्योंकि मैं हंस रहा था। हमारी हंसियां इतनी गडमड हो गईं कि मिस गोगो की आवाज़ मेरे मुंह से निकलने लगी और मेरी आवाज़ मिस गोगो के मुंह से! हाय-हाय, मज़ा आ गया! अजगर डोलता जा रहा था। मारे खुशी के मिस गोगो ने गो-मूत्र का गिलास उठा कर अजगर के पिंजड़े पर उलट दिया। पिंजड़े की छत के बड़े-बड़े छेदों में से गो-मूत्र अजगर पर बरसने लगा। अजगर झूम गया। ईहीहीही··· हा-हा·· हू-हू···हो-हो-हो···

तब सहसा एक चमत्कार हुआ—मैं ने मिस गोगो के अट्टहास

को करुण रोदन में बदल जाते देखा। चेहरे को हथेलियों के बीच छिपा कर वह गहरी सिसकियां लेने लगीं। मैं उन से कुछ न बोल सका। मैं केवल उन की पीठ थपथपाता रहा, मैं जान गया था—उस हरामजादे के लिए अब भी उन के मन में प्यार की कमी नहीं।

⊙ अगले दिन वी. टी. ने मुझे खबर दी कि रात को मिस गोगो जरूरत-से-ज्यादा खुल कर नाचीं। यदि ऐसा ही खुलापन उन्होंने समय-समय पर बरता, तो 'अलीबाबा' पर अश्लीलता का आरोप लगते देर नहीं।

वी. टी. को क्या मालूम कि मिस गोगो के उस खुलेपन का कारण क्या था। चन्दन बाली से विचित्र मुलाकात ने मिस गोगो को कितना आलोड़ित कर दिया था; वी. टी. को अनुमान ही क्या! उसी आलोड़न की प्रतिक्रिया में उन्होंने खुलापन बरता होगा। चूंकि ऐसा आलोड़न समय-समय पर होता नहीं रह सकता; इतना खुलापन वह बार-बार बरतेंगी, ऐसा खतरा मुझे दिखाई न दिया।

उस विचित्र मुलाकात का ब्यौरा वी. टी. को देते-देते मैं रह गया। मैं ने सोचा कि इस तरह मैं अनजाने में ही मिस गोगो की भावनाओं के साथ खिलवाड़ कर जाऊंगा।

वी. टी. को स्थायी आदेश है कि वह प्रति सप्ताह, 'अलीबाबा' की तरफ से, मिस गोगो के कैबरे-कार्यक्रमों के फोटो खींचा करे। 'अलीबाबा' के काउण्टर पर मिस गोगो की उत्तेजक मुद्राओं के जो फोटो लगे हैं, उन्हें प्रति सप्ताह बदलना जरूरी होता है। उत्तेजक फोटो 'अलीबाबा' के बाहरी प्रवेश-द्वार के पास भी, एक शो-केस में लगे हैं, ताकि राह चलते लोग अपने नेत्रों को सुख पहुंचा सकें। उन उत्तेजक मुद्राओं में, मन्दिर पर से सभी परदे उठे हुए नहीं दिखाए जाते। यदि सभी परदे उठे हुए हों, तब तो लोगों के नेत्र उन की खोपड़ियों में से उछल कर बाहर निकल जाएं! मैं नहीं चाहता कि 'अलीबाबा' के प्रवेश-द्वार के पास, फर्श पर नेत्र-ही-नेत्र पड़े हुए हों।

खैर, यह तो हुआ मजाक। असलियत यह है कि शो-केस में प्रदर्शित मन्दिर यदि बिल्कुल ढका हुआ न हो, तो इसे 'सार्वजनिक शालीनता का उल्लंघन और अपमान' कह दिया जाएगा, जिससे 'अलीबाबा' को खामख्वाह कानूनी उलझनों में फंसना पड़ेगा।

कैबरे-कार्यक्रमों के फोटो वी. टी. ने कल रात खींचे थे। कैबरे-फ्लोर पर जो-कुछ उस ने देखा था, वह खतरनाक अवश्य था। अश्लील या असुन्दर वह हो-न-हो, खतरनाक वह अवश्य था। मिस गोगो को आदेश है कि अन्तिम परदा हट जाने के बाद मन्दिर ज्यादा देर तक रोशनी में न रहे। कल रात उन्होंने इस आदेश का पालन नहीं किया। मिस गोगो को यह भी आदेश है कि उन्हें अपने हाथ से अपना ही शरीर मसोसना जरा भी नहीं है। वह अपने तन की सुन्दरता प्रदर्शित करें, सुन्दर तन की उत्तेजक थिरकनें प्रदर्शित करें, लचीलापन और गोराई वह प्रदर्शित करें, लेकिन अपने उभारों को अपने ही हाथों से पकड़ें या मसोसें नहीं। ऐसी हरकतें कानूनी परेशानियां खड़ी कर सकती हैं। अदालत में यह सिद्ध करना नितान्त असम्भव है कि नारी का शरीर एक अश्लील चीज है। वकीलों के इस तर्क को मान लेने पर न्यायधीश मजबूर हो ही जाते हैं कि नारी का शरीर अश्लील नहीं, बल्कि सुन्दर चीज है और यदि उसे सुन्दरता के ही प्रतीक के रूप में प्रदर्शित किया जाए, तो उस प्रदर्शन को अश्लील करार नहीं दिया जा सकता। इंग्लैण्ड में कानून है कि किसी शो में अन्तिम वस्त्र का त्याग करने के बाद स्त्री या पुरुष यदि अपने शरीर को बल्कुिल हिलाएं नहीं—पलक भी न झपकाएं—तो उस का नग्न, स्थिर शरीर मात्र सौन्दर्य का पुंज होता है, न कि अश्लील। भारत में इस तरह का कोई कानून नहीं। असल में, कैबरे-नृत्यों के सन्दर्भ में देखें, तो ढंग का एक भी कानून हमारे संविधान में नहीं···इस में एक दिक्कत है। जिन के हाथ में कानून है, वे धाराओं-उपधाराओं का मनमाना अर्थ निकाल कर हम जैसों को तंग करते रहते हैं। वे अधिकारी किसी भी कैबरे-कार्यक्रम को

अश्लील सिद्ध करना चाह सकते हैं—कर भी सकते हैं—और ठीक उसी कार्यक्रम को, ठीक वे ही अधिकारी, 'मात्र सुन्दर और कलात्मक' की श्रेणी भी दे सकते हैं! यही कारण है कि इन अधिकारियों का स्वभाव बहुत ढुलमुल है। सब-कुछ इन के मूड पर आधार रखता है। इसी लिए इन अधिकारियों से जितना बच कर रहा जाए, उतना अच्छा। नृत्य के दौरान यदि नर्तकी अपने उभारों को अपने ही हाथों से पकड़े-मसोसे तो नृत्य 'सुन्दर' न रह कर 'यौनोत्तेजक' की श्रेणी में आ सकता है। कानून जिन के हाथ में है, वे चुटकियों में 'अली-बाबा' को धर दबोच सकते हैं; कैबरे दिखाने का लाइसेन्स वे रद्द भी कर सकते हैं। कल रात मिस गोगो ने थैलों को बार-बार दबोच कर प्रदर्शित किया। वी. टी. ने मुझे 'उन' क्षणों के फोटो भी दिखाए, जिन्हें रातोंरात डेवलप कर के वह ले आया था।

"अगर ये फोटो शो केस में, बाहर, रख दिए जाएं तो आग लग जाए।" वी. टी. बोला और मैं ने कहा, "आग लगे तो नहीं; हां, लोग लगा जरूर दें।"

"एक ही बात है।" कहते हुए वी. टी. ने अपने ब्रीफ-केस में से एक और लिफाफा निकाला। लिफाफे को खोले बिना ही मैं समझ गया कि उस में क्या होना चाहिए। सुन्दरा-सुन्दरी की मुद्राएं··· लिफाफा खुलने पर मेरा अनुमान सच निकला। मैं ने एक-एक कर सभी फोटो देखे। सब अच्छे थे। रेशा-रेशा साफ आया था। चूंकि मैं ऐसे अनेकानेक फोटो देख चुका हूं, एक-एक रेशे की स्पष्टता के बावजूद ऐसा न हुआ कि मैं उछल कर मेज पर खड़ा हो जाऊं। फोटो लिफाफे में रख मैं ने वी. टी. को वापस कर दिए। वी. टी. ने न पूछा कि फोटो कैसे हैं। उसे हमेशा एक विश्वास होता कि फोटो कैसे उतरे। आखिर उस ने अपनी कला के लिए विदेशों में बाज़ार तैयार किया है। भारत माता के लिए विदेशी मुद्राएं कमाना कोई हंसी-खेल नहीं। वी. टी. ने पूछा नहीं और मैं ने बताया नहीं कि फोटो कैसे उतरे। ब्रीफ-केस बन्द कर के उठता हुआ वह

खैर, यह तो हुआ मजाक। असलियत यह है कि शो-केस में प्रदर्शित मन्दिर यदि बिल्कुल ढका हुआ न हो, तो इसे 'सार्वजनिक शालीनता का उल्लंघन और अपमान' कह दिया जाएगा, जिससे 'अलीबाबा' को खामख्वाह कानूनी उलझनों में फंसना पड़ेगा।

कैबरे-कार्यक्रमों के फोटो वी. टी. ने कल रात खींचे थे। कैबरे-फ्लोर पर जो-कुछ उस ने देखा था, वह खतरनाक अवश्य था। अश्लील या असुन्दर वह हो-न-हो, खतरनाक वह अवश्य था। मिस गोगो को आदेश है कि अन्तिम परदा हट जाने के बाद मन्दिर ज्यादा देर तक रोशनी में न रहे। कल रात उन्होंने इस आदेश का पालन नहीं किया। मिस गोगो को यह भी आदेश है कि उन्हें अपने हाथ से अपना ही शरीर मसोसना जरा भी नहीं है। वह अपने तन की सुन्दरता प्रदर्शित करें, सुन्दर तन की उत्तेजक थिरकनें प्रदर्शित करें, लचीलापन और गोराई वह प्रदर्शित करें, लेकिन अपने उभारों को अपने ही हाथों से पकड़ें या मसोसें नहीं। ऐसी हरकतें कानूनी परेशानियां खड़ी कर सकती हैं। अदालत में यह सिद्ध करना नितान्त असम्भव है कि नारी का शरीर एक अश्लील चीज है। वकीलों के इस तर्क को मान लेने पर न्यायधीश मजबूर हो ही जाते हैं कि नारी का शरीर अश्लील नहीं, बल्कि सुन्दर चीज है और यदि उसे सुन्दरता के ही प्रतीक के रूप में प्रदर्शित किया जाए, तो उस प्रदर्शन को अश्लील करार नहीं दिया जा सकता। इंग्लैण्ड में कानून है कि किसी शो में अन्तिम वस्त्र का त्याग करने के बाद स्त्री या पुरुष यदि अपने शरीर को बल्कुल हिलाएं नहीं—पलक भी न झपकाएं—तो उस का नग्न, स्थिर शरीर मात्र सौन्दर्य का पुंज होता है, न कि अश्लील। भारत में इस तरह का कोई कानून नहीं। असल में, कैबरे-नृत्यों के सन्दर्भ में देखें, तो ढंग का एक भी कानून हमारे संविधान में नहीं···इस में एक दिक्कत है। जिन के हाथ में कानून है, वे धाराओं-उपधाराओं का मनमाना अर्थ निकाल कर हम जैसों को तंग करते रहते हैं। वे अधिकारी किसी भी कैबरे-कार्यक्रम को

अश्लील सिद्ध करना चाह सकते हैं—कर भी सकते हैं—और ठीक उसी कार्यक्रम को, ठीक वे ही अधिकारी, 'मात्र सुन्दर और कलात्मक' की श्रेणी भी दे सकते हैं! यही कारण है कि इन अधिकारियों का स्वभाव बहुत ढुलमुल है। सब-कुछ इन के मूड पर आधार रखता है। इसी लिए इन अधिकारियों से जितना बच कर रहा जाए, उतना अच्छा। नृत्य के दौरान यदि नर्तकी अपने उभारों को अपने ही हाथों से पकड़े-मसोसे तो नृत्य 'सुन्दर' न रह कर 'यौनोत्तेजक' की श्रेणी में आ सकता है। कानून जिन के हाथ में है, वे चुटकियों में 'अली-बाबा' को धर दबोच सकते हैं; कैबरे दिखाने का लाइसेन्स वे रद्द भी कर सकते हैं। कल रात मिस गोगो ने थैलों को बार-बार दबोच कर प्रदर्शित किया। वी. टी. ने मुझे 'उन' क्षणों के फोटो भी दिखाए, जिन्हें रातोंरात डेवलप कर के वह ले आया था।

"अगर ये फोटो शो केस में, बाहर, रख दिए जाएं तो आग लग जाए।" वी. टी. बोला और मैं ने कहा, "आग लगे तो नहीं; हां, लोग लगा जरूर दें।"

"एक ही बात है।" कहते हुए वी. टी. ने अपने ब्रीफ-केस में से एक और लिफाफा निकाला। लिफाफे को खोले बिना ही मैं समझ गया कि उस में क्या होना चाहिए। सुन्दरा-सुन्दरी की मुद्राएं··· लिफाफा खुलने पर मेरा अनुमान सच निकला। मैं ने एक-एक कर सभी फोटो देखे। सब अच्छे थे। रेशा-रेशा साफ आया था। चूंकि मैं ऐसे अनेकानेक फोटो देख चुका हूं, एक-एक रेशे की स्पष्टता के बावजूद ऐसा न हुआ कि मैं उछल कर मेज पर खड़ा हो जाऊं। फोटो लिफाफे में रख मैं ने वी. टी. को वापस कर दिए। वी. टी. ने न पूछा कि फोटो कैसे हैं। उसे हमेशा एक विश्वास होता कि फोटो कैसे उतरे। आखिर उस ने अपनी कला के लिए विदेशों में बाज़ार तैयार किया है। भारत माता के लिए विदेशी मुद्राएं कमाना कोई हंसी-खेल नहीं। वी. टी. ने पूछा नहीं और मैं ने बताया नहीं कि फोटो कैसे उतरे। ब्रीफ-केस बन्द कर के उठता हुआ वह

बुदबुदाया, "मिस गोगो को जरा समझाइएगा।"

"हां, वरना कल वह एक कदम और आगे जा सकती हैं।" मैं भी बुदबुदाया।

वी. टी. चला गया।

भले हीं मैं ने बुदबुदा कर सहमति दर्शाई थी कि मिस गोगो को समझाना आवश्यक है, लेकिन मैं जानता था कि समझाना अनावश्यक है। कैबरे-कलाकारों को खामख्वाह टोकना नहीं चाहिए, वरना उन की कल्पनाशीलता धुंधली पड़ने लगती है।

वी. टी. के जाने के बाद मैं ने मिस गोगो के नवीनतम फोटो काउण्टर पर भिजवा दिए। काउण्टर पर ऐसे फोटो प्रदर्शित नहीं हो सकते, जिन में मिस गोगो ने थैलों को दबोचा हुआ हो। शालीनता की सीमा काउण्टरों पर अलग हुआ करती है और कैबरे-कक्षों में अलग। मैं ने केवल चुनिन्दा फोटो काउण्टर पर भिजवाए। शेष को ड्रार में रख कर मैं 'चार-मीनार' के कश लेने लगा।

अब मुझे रिंग-मास्टर का इन्तजार था। मिस गोगो को मैं ने सूचित कर दिया था कि आज के प्रथम रिहर्सल के समय मैं मौजूद रहना चाहता हूं।

इन्तजार था रिंग-मास्टर का और आ पहुंची स्मिता। जब उसे पता चला कि आज पहला रिहर्सल है तो वह किलक उठी। "मैं भी साथ चलूंगी।" उसने कहा। फिर हम दोनों, कमरा बन्द कर, थोड़ी देर खेलते रहे। खेल के बीच रुक कर मैं ने सुन्दरे-सुन्दरी को फोन किया कि अब आप लोग शीघ्रातिशीघ्र यहां से चले जाने की सोचें। पता नहीं क्यों, उन के प्रति मेरी सहानुभूति एकाएक समाप्त हो गई थी। उन्होंने कहा कि वे तीन या चार दिनों में 'अलीबाबा' छोड़ देंगे। वी. टी. से मुलाकात करवा देने के लिए उन्होंने मुझे धन्यवाद दिया। उन्होंने वी. टी. के सही व्यावसायिक रुख और गहरे आत्म-विश्वास की प्रशंसा काफी अधिक की और मैं बोर होता हुआ सुनता रहा। सहसा जी चाहा कि पूछूं, 'आप लोग शादी कब

करने वाले हैं?' किन्तु यह सोच कर रुक गया कि कहीं वे इसे भी अपना अपमान न समझें। उन से झगड़ा मोल लेने या शराब पी कर उन के साथ बक-बक करने का अवकाश अभी नहीं। रिहर्सल देखने का बुलावा कभी भी आ सकता है।

"मैं ने नौकरी छोड़ दी है।" स्मिता ने कहा।

"क्यों?"

"मुझे आराम के लिए वक्त नहीं मिलता। नस-नस टूट जाती है।"

"लेकिन तुम तो कहती थीं कि यह घटिया नौकरी तुम्हें एक खास तरह के तनाव में रखती है, हमेशा याद दिलाती रहती है कि तुम्हें कोई छलांग..."

"याद दिलाए जाने की अब जरूरत ही क्या है? छलांग लगाने के लिए मेरी रगें तन चुकी हैं, उंगलियां सावधान हैं, आंखें और कान सचेत हो गए हैं, दिमाग एकदम चौकन्ना है। मैं क्षण भर के लिए भी नहीं भूल सकती कि कितनी बड़ी छलांग लगानी है मुझे। कैबरे-डान्सर बन कर मैं धरती कंपा दूंगी।"

"कल रात मिस गोगो ने धरती कंपा दी थी।" मैं ने कहा। मैं ने ड्रार खोल कर स्मिता को वे फोटो निकाल दिखाए, जिन में थैले दबोचे गए थे और जिन्हें शो-केस में रख देने पर आग लग जाती...स्मिता देखती रही। वह गम्भीर थी। निश्चय ही वह मन-ही-मन अपने थैलों के साथ मिस गोगो की तुलना कर रही थी। दोनों में इतना अन्तर है कि आमने-सामने वे ठहरतीं ही नहीं। स्मिता को वे फोटो मैं ने जान-बूझ कर दिखाए थे, ताकि वह इशारे में ही समझ जाए कि प्लास्टिक-सर्जरी के समय उसे अपनी किस खामी को दूर करने पर सब से ज्यादा ध्यान देना है। यदि स्मिता के थैले भारी न हुए तो कैबरे-डान्सर बन कर वह क्या खाक प्रलय मचाएगी! मिस गोगो की तुलना में स्मिता का चेहरा सुन्दर तो कम है, लेकिन नमकीन ज्यादा। चेहरे का महत्व विशेष है भी तो नहीं।

लोग चेहरा देख ही कहां पाते हैं उस वक्त ! यदि कोई जादूगरनी आ कर कैबरे-डान्स दिखाए और अन्तिम वस्त्र त्यागने से पहले, गर्दन पर से अपना सिर गायब कर दे; तब भी, लोगों को पता ही न चले कि सिर गायब हुआ है ! स्मिता का पेट भी जरा फूलित है। उस की बांहें उतनी कसी हुई, चिकनी और जवान नहीं लगतीं, जितनी मिस गोगो की...लेकिन शो-बिज़नेस ऐसा है कि इस में किसे, कब, कितनी सफलता मिल जाएगी; सही-सही भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। कैबरे-डान्स में तन की सुघड़ता से भी ज्यादा महत्व तन के आन्दोलनों का है। मुमकिन है, जनता को स्मिता के ही आन्दोलन इतने जानमारू लगें कि मिस गोगो भी फीकी पड़ जाएं...

अजी नहीं, जब तक यह अजगर मिस गोगो के पास है, तब तक उन की रंगत में फर्क आ नहीं सकता। अजगर तो मिस गोगो की प्रखर कल्पनाशीलता का जिन्दा प्रतीक है।

और भी किन-किन बातों का प्रतीक है अजगर ?

ऊंह, कहां के प्रतीक-व्रतीक ! अजगर याने अजगर ! फों !

"मैं बम्बई जाने वाली हूं।" स्मिता का स्वर सुना मैं ने। फोटो वह मुझे वापस कर चुकी थी।

"मैं नहीं चलूंगा। तुम खेलोगी किस के संग ?" मैं हंसा।

"मजाक न समझो। मैं सचमुच जाने वाली हूं बम्बई।"

"क्यों ?"

"यहां का प्लास्टिक-सर्जन कहता है कि बम्बई में मैं अपना कायाकल्प बेहतर करवा सकती हूं।"

"कब जा रही हो ?"

"कभी भी रवाना हो सकती हूं।"

"पांच हजार रुपए बम्बई में फुर से उड़ जाएंगे।" मैं बोला। स्मिता स्मित करने लगी, "तो वहां फुर्र से दस हजार आ भी जाएंगे। वहां फिल्म इण्डस्ट्री है। वहां न्यूड फोटोग्राफर्स हैं।"

"न्यूड फोटोग्राफर्स की बात तो समझ में आई। उस का इन्तजाम यहां दिल्ली में भी हो सकता है···लेकिन यह फिल्म इण्डस्ट्री वाला सपना खूब देखा तुम ने! वहां पहुंचते ही तुम हीरोईन बन जाओगी! हा, हा, हा!"

"हीरोईन मुझे बनना भी नहीं। लोग वहां केवल अपने भाग्य के बल पर हीरो-हीरोईन बनते हैं, प्रतिभा के बल पर नहीं। मैं भाग्य का खेल नहीं खेलना चाहती। मैं तो चाहती हूं पक्का निशाना। कैबरे-डान्सिग एक पक्का निशाना है—ए बिग श्योर शॉट!"

"फिर तुम ने फिल्म इण्डस्ट्री का नाम क्यों···"

"जहां फिल्में बनती हैं, वहां नीली फिल्में भी बनती हैं।" वह बोली, "मेरा क्या है। नीली फिल्मों में भी भाग ले लूंगी···मेरी तो अब एक ही मंजिल है—प्लास्टिक सर्जरी करवा लेना, ताकि कैबरे-डान्सर बन कर यों थिरकूं और यों थिरकूं और यों थिरकूं!" स्मिता ने थिरक-थिरक कर बताया।

"मेरी शुभ कामनाएं।" मैं बुदबुदाया।

उसी समय फोन घनघना उठा। रिसीवर उठा कर 'हैलो' कहने पर मुझे मिस गोगो का स्वर सुनाई दिया, "बॉस! एक सनसनी-खेज सूचना है।"

"क्या?"

"मैं ने आज ही अजगर को अपने हाथों से नहलाया—टब में डाल कर।"

"क्या कहा?"

"यस, बॉस! मेरी घिन चौबीस घण्टों में ही खत्म हो गई!"

"लेकिन···लेकिन आप ने अजगर को···"

"पिंजड़ा मैं ने खोला। उसे पिंजड़े में से बाहर भी मैं ने निकाला। मैं ने उसे टब में डाल दिया। ये अजगर पानी में बड़ी आसानी से तैर लेते हैं।" मिस गोगो ने कहा, "दसेक मिनट तक तैरता रहा, फिर मैं ने उसे उठा कर वापस पिंजड़े में रख दिया—

लाग चेहरा देख ही कहां पाते हैं उस वक्त ! यदि कोई जादूगरनी आ कर कैबरे-डान्स दिखाए और अन्तिम वस्त्र त्यागने से पहले, गर्दन पर से अपना सिर गायब कर दे; तब भी, लोगों को पता ही न चले कि सिर गायब हुआ है ! स्मिता का पेट भी जरा फूलित है। उस की बांहें उतनी कसी हुई, चिकनी और जवान नहीं लगतीं, जितनी मिस गोगो की···लेकिन शो-बिज़नेस ऐसा है कि इस में किसे, कब, कितनी सफलता मिल जाएगी; सही-सही भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। कैबरे-डान्स में तन की सुघड़ता से भी ज्यादा महत्व तन के आन्दोलनों का है। मुमकिन है, जनता को स्मिता के ही आन्दोलन इतने जानमारू लगें कि मिस गोगो भी फीकी पड़ जाएं···

अजी नहीं, जब तक यह अजगर मिस गोगो के पास है, तब तक उन की रंगत में फर्क आ नहीं सकता। अजगर तो मिस गोगो की प्रखर कल्पनाशीलता का जिन्दा प्रतीक है।

और भी किन-किन बातों का प्रतीक है अजगर ?

ऊंह, कहां के प्रतीक-व्रतीक ! अजगर याने अजगर ! फों !

"मैं बम्बई जाने वाली हूं।" स्मिता का स्वर सुना मैं ने। फोटो वह मुझे वापस कर चुकी थी।

"मैं नहीं चलूंगा। तुम खेलोगी किस के संग ?" मैं हंसा।

"मजाक न समझो। मैं सचमुच जाने वाली हूं बम्बई।"

"क्यों ?"

"यहां का प्लास्टिक-सर्जन कहता है कि बम्बई में मैं अपना कायाकल्प बेहतर करवा सकती हूं।"

"कब जा रही हो ?"

"कभी भी रवाना हो सकती हूं।"

"पांच हजार रुपए बम्बई में फुर से उड़ जाएंगे।" मैं बोला। स्मिता स्मित करने लगी, "तो वहां फुर्र से दस हजार आ भी जाएंगे। वहां फिल्म इण्डस्ट्री है। वहां न्यूड फोटोग्राफर्स हैं।"

"न्यूड फोटोग्राफर्स की बात तो समझ में आई। उस का इन्तजाम यहां दिल्ली में भी हो सकता है···लेकिन यह फिल्म इण्डस्ट्री वाला सपना खूब देखा तुम ने। वहां पहुंचते ही तुम हीरोईन बन जाओगी ! हा, हा, हा !"

"हीरोईन मुझे बनना भी नहीं। लोग वहां केवल अपने भाग्य के बल पर हीरो-हीरोईन बनते हैं, प्रतिभा के बल पर नहीं। मैं भाग्य का खेल नहीं खेलना चाहती। मैं तो चाहती हूं पक्का निशाना। कैबरे-डान्सिग एक पक्का निशाना है—ए बिग श्योर शॉट !"

"फिर तुम ने फिलम इण्डस्ट्री का नाम क्यों···"

"जहां फिल्में बनती हैं, वहां नीली फिल्में भी बनती हैं।" वह बोली, "मेरा क्या है। नीली फिल्मों में भी भाग ले लूंगी···मेरी तो अब एक ही मंजिल है—प्लास्टिक सर्जरी करवा लेना, ताकि कैबरे-डान्सर बन कर यों थिरकूं और यों थिरकूं और यों थिरकूं !" स्मिता ने थिरक-थिरक कर बताया।

"मेरी शुभ कामनाएं।" मैं बुदबुदाया।

उसी समय फोन घनघना उठा। रिसीवर उठा कर 'हैलो' कहने पर मुझे मिस गोगो का स्वर सुनाई दिया, "बॉस ! एक सनसनी-खेज सूचना है।"

"क्या ?"

"मैं ने आज ही अजगर को अपने हाथों से नहलाया—टब में डाल कर।"

"क्या कहा ?"

"यस, बॉस ! मेरी घिन चौबीस घण्टों में ही खत्म हो गई !"

"लेकिन···लेकिन आप ने अजगर को···"

"पिंजड़ा मैं ने खोला। उसे पिंजड़े में से बाहर भी मैं ने निकाला। मैं ने उसे टब में डाल दिया। ये अजगर पानी में बड़ी आसानी से तैर लेते हैं।" मिस गोगो ने कहा, "दसेक मिनट तक तैरता रहा, फिर मैं ने उसे उठा कर वापस पिंजड़े में रख दिया—

पोंछे बिना। सूख जाएगा अपने-आप !"

"सोचिए, मिस गोगो, अगर वह आप को अपने पाश में जकड़ लेता···भींच कर आप की हड्डियां तोड़ देता···"

"ऐसे कैसे तोड़ देता ! मैं ने यह काम रिंग-मास्टर की मौजूदगी में किया।"

"हुं···"

"सात दिन बाद जब इस का भोजन करने का दिन होगा, तब मैं इसे जिन्दा चूहे खिलाना भी सीखूंगी। कितना मज़ा आएगा।" कहते-कहते मिस गोगो को हंसी आ गई।

"चूहों का इन्तजाम करना मुश्किल काम है।" मैं धीमे से बोला।

"दाम कराए काम ! बढ़िया दाम पर हर हफ्ते अलमस्त चूहे ला देने का ठेका किसी को दे देंगे। क्या मुश्किल है !"

"हुं···रिहर्सल शुरू कब होगा ?"

"इसी लिए तो मैं ने फोन किया। शुरू होने में, बस, आप के आने की देर है।"

"मैं अभी आता हूं। अ···मैं अकेला नहीं रहूंगा।"

"कौन है आप के साथ ?"

"स्मिता।"

"···"

"वह आप को बधाई देने के लिए बहुत बेताब है।"

"···"

"हैलो, मिस गोगो ?"

"यस, बॉस !"

"आएं न हम दोनों ?"

"आ जाइए।"

"चुप कैसे रह गई थीं आप ?"

"यों ही।"

और कनेक्शन कट गया। रिसीवर क्रेडिल पर रख कर मैं ने स्मिता से कहा, "मिस गोगो को थोड़ा अखर जरूर गया कि तुम...रिहर्सल देखोगी।"

"बॉस, अभी उन्हें आप भूल कर भी न बताइए कि मैं भी कैबरे-डान्सर बन कर 'अलीबाबा' में ही शो देने वाली हूं।"

"ठीक है, नहीं बताऊंगा।"

"लो, तुम्हें पता भी न चला कि मैं ने तुम्हें 'आप' कह कर पुकारा!

"अरे!" मैं आंखें झपकाने लगा।

"मैं ने तुम्हें 'बॉस' भी कहा।"

"हां, ठीक है, इसी लिए मुझे पता न चला कि कब तुम ने 'आप' कह दिया। 'बॉस' के साथ 'आप' इतना अधिक जुड़ा हुआ है कि...खैर, छोड़ो। आओ, चलें।"

"जब मैं 'अलीबाबा' में डान्स करने लगूंगी, तब दूसरों के सामने तुम्हें 'आप' ही कहूंगी।"

"अभी तो 'तुम' कहती हो।"

"तो क्या! सम्बोधन बदलना कोई मुश्किल काम नहीं।"

"सच कहती हो! स्त्रियों के लिए सम्बोधन बदल देना वाकई चुटकियों का काम है।" मैं ने कहा।

"क्या मतलब?"

"मतलब कुछ नहीं। आओ, चलें।"

और हम दोनों मिस गोगो के कमरे की ओर कदम बढ़ाने लगे। सुन्दरे-सुन्दरी के बन्द कमरे से उन्मुक्त खिलखिलाहटें उठ रही थीं। खिलखिलाहटों को हम पीछे छोड़ गए।

मिस गोगो का कमरा भीतर से बन्द था। मैं ने काल-बेल बजाई, फिर इन्तजार किया। इन्तजार के दौरान मैं सोचने लगा कि कल के नाटक का क्या निष्कर्ष निकाला जाए? सम्बोधन बदल देने का काम किस ने किया था? मिस गोगो ने या मिस्टर चन्दन

पोंछे बिना। सूख जाएगा अपने-आप !"

"सोचिए, मिस गोगो, अगर वह आप को अपने पाश में जकड़ लेता···भींच कर आप की हड्डियां तोड़ देता···"

"ऐसे कैसे तोड़ देता ! मैं ने यह काम रिंग-मास्टर की मौजूदगी में किया।"

"हुं···"

"सात दिन बाद जब इस का भोजन करने का दिन होगा, तब मैं इसे जिन्दा चूहे खिलाना भी सीखूंगी। कितना मज़ा आएगा।" कहते-कहते मिस गोगो को हंसी आ गई।

"चूहों का इन्तजाम करना मुश्किल काम है।" मैं धीमे से बोला।

"दाम कराए काम ! बढ़िया दाम पर हर हफ्ते अलमस्त चूहे ला देने का ठेका किसी को दे देंगे। क्या मुश्किल है !"

"हुं···रिहर्सल शुरू कब होगा ?"

"इसी लिए तो मैं ने फोन किया। शुरू होने में, बस, आप के आने की देर है।"

"मैं अभी आता हूं। अ···मैं अकेला नहीं रहूंगा।"

"कौन है आप के साथ ?"

"स्मिता।"

"..."

"वह आप को बधाई देने के लिए बहुत बेताब है।"

"..."

"हैलो, मिस गोगो ?"

"यस, बॉस !"

"आएं न हम दोनों ?"

"आ जाइए।"

"चुप कैसे रह गई थीं आप ?"

"यों ही।"

और कनेक्शन कट गया। रिसीवर क्रेडिल पर रख कर मैं ने स्मिता से कहा, "मिस गोगो को थोड़ा अखर जरूर गया कि तुम···रिहर्सल देखोगी।"

"बॉस, अभी उन्हें आप भूल कर भी न बताइए कि मैं भी कैबरे-डान्सर बन कर 'अलीबाबा' में ही शो देने वाली हूं।"

"ठीक है, नहीं बताऊंगा।"

"लो, तुम्हें पता भी न चला कि मैं ने तुम्हें 'आप' कह कर पुकारा!

"अरे!" मैं आंखें झपकाने लगा।

"मैं ने तुम्हें 'बॉस' भी कहा।"

"हां, ठीक है, इसी लिए मुझे पता न चला कि कब तुम ने 'आप' कह दिया। 'बॉस' के साथ 'आप' इतना अधिक जुड़ा हुआ है कि···खैर, छोड़ो। आओ, चलें।"

"जब मैं 'अलीबाबा' में डान्स करने लगूंगी, तब दूसरों के सामने तुम्हें 'आप' ही कहूंगी।"

"अभी तो 'तुम' कहती हो।"

"तो क्या! सम्बोधन बदलना कोई मुश्किल काम नहीं।"

"सच कहती हो! स्त्रियों के लिए सम्बोधन बदल देना वाकई चुटकियों का काम है।" मैं ने कहा।

"क्या मतलब?"

"मतलब कुछ नहीं। आओ, चलें।"

और हम दोनों मिस गोगो के कमरे की ओर कदम बढ़ाने लगे। सुन्दरे-सुन्दरी के बन्द कमरे से उन्मुक्त खिलखिलाहटें उठ रही थीं। खिलखिलाहटों को हम पीछे छोड़ गए।

मिस गोगो का कमरा भीतर से बन्द था। मैं ने काल-बेल बजाई, फिर इन्तजार किया। इन्तजार के दौरान मैं सोचने लगा कि कल के नाटक का क्या निष्कर्ष निकाला जाए? सम्बोधन बदल देने का काम किस ने किया था? मिस गोगो ने या मिस्टर चन्दन

वाली ने ? स्मिता के सामने अभी मैं झूठ ही बोला हूं कि सम्बोधनों को बदल देना स्त्रियों के लिए चुटकियों का काम है। असल में, पुरुष भी सम्बोधनों को चुटकियों में बदल देते हैं। जब जिस का दाव लगता है, तब वह अपना दाव लगा ही देता है। कल का नाटक कितना सनसनीखेज़ था। दोनों पक्ष एकदम सच्चे मालूम पड़े थे। दोनों सच्चे हो नहीं सकते थे, क्योंकि वे परस्पर विरोधी थे। लेकिन दोनों किस कदर सच्चे मालूम पड़े थे ! दोनों की ढिठाई काबिल-ए-दाद थी। नाटक के अन्तिम चरण में चन्दन बाली की बोलती बन्द क्यों हो गई थी ? क्या इस का अर्थ यह लगाया जाए कि सम्बोधन बदल कर, प्रेमिका को 'हैलो, दोस्त !' कह देने का काम चन्दन वाली ने किया था ? नहीं। यह भी कतई असम्भव नहीं कि चन्दन बाली कसूरवार वाकई न हो। बोलती उस की इस लिए बन्द हो गई कि आरेंज-स्क्वैश के गिलास में अचानक जब उस ने गो-मूत्र की बू पहचानी, तो चकित रह गया वह। गो-मूत्र से सान देने का भय दिखा कर मिस गोगो ने बेचारे को अजगर के पिंजड़े पर बिठा दिया। कैसी हालत खस्ता हुई बेचारे की ! वैसी हालत में सच्चे-से-सच्चे आदमी की भी बोलती बन्द हो जाती। तो क्या, कसूरवार मिस गोगो को माना जाए ? क्या सचमुच उन्होंने अपना तन चन्दन बाली को समर्पित इस लिए किया था कि अपनी जवानी खुद उन्हीं से सही नहीं जा रही थी ? किन्तु···मिस गोगो के संवादों में क्या सच्चाई की तीखी लरज नहीं थी ? चन्दन के भाग जाने पर, अन्त में, रोई कैसी थीं वह ! ऊंह, दोनों सच्चे हों या झूठे, मुझे क्या ! मैं ने तो कल एक मजेदार नाटक देखा। लोगों को कैबरे में मजा आता होगा। मुझे कल के नाटक में मजा आया। कभी देखा है कोई ऐसा नाटक आप ने, कि जिस में दोनों सच्चे हों और झूठे भी हों ?

मैं ने काल-बेल दबाई, फिर इन्तजार किया। इन्तजार का फल हमेशा मीठा होता है। दरवाजा खुल गया। मिस गोगो ने नहीं,

दरवाजा एक पुरुष ने खोला था। उस की मूंछें इतनी घनघोर थीं कि उन के कारण उस का चेहरा छोटा, संकरा और लम्बा; अजीब-अजीब-सा लग रहा था। मैं समझ गया कि यही रिंग-मास्टर है।

"हैलो..." मैं मुस्कराया।

"हैलो..." वह मुस्कराया। हम दोनों को अन्दाज़े से पहचान कर उस ने रास्ता छोड़ दिया। मैं ने प्रवेश किया। स्मिता ने प्रवेश किया। दरवाजा बन्द। सिटकनी ऊपर। मिस गोगो कमरे में दिखाई न दीं।

एक परदे की ओट से मिस गोगो की आवाज़ आई, "कौन है?"

मैं बोला, "हम हैं।"

मेरा स्वर पहचान मिस गोगो परदे के पीछे से निकल आईं। वह केवल अजगर पहने हुई थीं। योजनानुसार, अजगर की गर्दन उन्हें केवल एक हाथ से पकड़नी चाहिए थी। मैं ने पाया कि गर्दन उन्होंने दोनों हाथों से पकड़ रखी थी। योजनानुसार मन्दिर की दोनों मोरियां अजगर की दुम द्वारा ढकी होनी चाहिए थीं। अजगर उनकी पीठ की ओर सिर्फ लटक रहा था, मोरियों को आशीर्वाद देने के लिए मुड़ा हुआ नहीं था। योजनानुसार अजगर पहनने के बाद मिस गोगो को सनसनाती मुस्कानें बिखेरनी चाहिए थीं। मिस गोगो का चेहरा फक एवं मुस्कान-रहित था। योजनानुसार, अजगर के ऊपरी हिस्से से थैलों की दोनों फुनगियां ढकी होनी चाहिए थीं। फुनगियां हमें सीधी-सीधी दृष्टिगोचर हो सकीं। "हैलो, माई डीयर!" मैं ने मिस गोगो से कहा। इस के उत्तर में भी मुस्कराना असम्भव रहा उन के लिए। बहुत धीमे स्वर में उन्होंने 'हैलो' कहा, फिर कांपना शुरू कर दिया। अजगर की गर्दन पर उन की दोनों मुट्ठियां और ज्यादा कस गईं। अजगर की जो लम्बाई उन की पीठ की तरफ लटक रही थी, उस में हिलोर-सी उठी। अजगर ने मुंह खोल दिया।

मैं अपनी आंखों पर यकीन न कर सका। अजगर के दांत थे! कितने बड़े-बड़े दांत! उस का मुंह खुलते ही वे कितने वीभत्स ढंग

बाली ने ? स्मिता के सामने अभी मैं झूठ ही बोला हूं कि सम्बोधनों को बदल देना स्त्रियों के लिए चुटकियों का काम है। असल में, पुरुष भी सम्बोधनों को चुटकियों में बदल देते हैं। जब जिस का दाव लगता है, तब वह अपना दाव लगा ही देता है। कल का नाटक कितना सनसनीखेज़ था। दोनों पक्ष एकदम सच्चे मालूम पड़े थे। दोनों सच्चे हो नहीं सकते थे, क्योंकि वे परस्पर विरोधी थे। लेकिन दोनों किस कदर सच्चे मालूम पड़े थे ! दोनों की ढिठाई काबिल-ए-दाद थी। नाटक के अन्तिम चरण में चन्दन बाली की बोलती बन्द क्यों हो गई थी ? क्या इस का अर्थ यह लगाया जाए कि सम्बोधन बदल कर, प्रेमिका को 'हैलो, दोस्त !' कह देने का काम चन्दन बाली ने किया था ? नहीं। यह भी कतई असम्भव नहीं कि चन्दन बाली कसूरवार वाकई न हो। बोलती उस की इस लिए बन्द हो गई कि आरेंज-स्क्वैश के गिलास में अचानक जब उस ने गो-मूत्र की बू पहचानी, तो चकित रह गया वह। गो-मूत्र से सान देने का भय दिखा कर मिस गोगो ने बेचारे को अजगर के पिंजड़े पर बिठा दिया। कैसी हालत खस्ता हुई बेचारे की ! वैसी हालत में सच्चे-से-सच्चे आदमी की भी बोलती बन्द हो जाती। तो क्या, कसूरवार मिस गोगो को माना जाए ? क्या सचमुच उन्होंने अपना तन चन्दन बाली को समर्पित इस लिए किया था कि अपनी जवानी खुद उन्हीं से सही नहीं जा रही थी ? किन्तु···मिस गोगो के संवादों में क्या सच्चाई की तीखी लरज नहीं थी ? चन्दन के भाग जाने पर, अन्त में, रोई कैसी थीं वह ! ऊंह, दोनों सच्चे हों या झूठे, मुझे क्या ! मैं ने तो कल एक मजेदार नाटक देखा। लोगों को कैबरे में मजा आता होगा। मुझे कल के नाटक में मजा आया। कभी देखा है कोई ऐसा नाटक आप ने, कि जिस में दोनों सच्चे हों और झूठे भी हों ?

मैं ने काल-बेल दबाई, फिर इन्तजार किया। इन्तजार का फल हमेशा मीठा होता है। दरवाजा खुल गया। मिस गोगो ने नहीं,

दरवाजा एक पुरुष ने खोला था। उस की मूंछें इतनी घनघोर थीं कि उन के कारण उस का चेहरा छोटा, संकरा और लम्बा; अजीब-अजीब-सा लग रहा था। मैं समझ गया कि यही रिंग-मास्टर है।

"हैलो..." मैं मुस्कराया।

"हैलो..." वह मुस्कराया। हम दोनों को अन्दाज़े से पहचान कर उस ने रास्ता छोड़ दिया। मैं ने प्रवेश किया। स्मिता ने प्रवेश किया। दरवाजा बन्द। सिटकनी ऊपर। मिस गोगो कमरे में दिखाई न दीं।

एक परदे की ओट से मिस गोगो की आवाज़ आई, "कौन है?"

मैं बोला, "हम हैं।"

मेरा स्वर पहचान मिस गोगो परदे के पीछे से निकल आईं। वह केवल अजगर पहने हुई थीं। योजनानुसार, अजगर की गर्दन उन्हें केवल एक हाथ से पकड़नी चाहिए थी। मैं ने पाया कि गर्दन उन्होंने दोनों हाथों से पकड़ रखी थी। योजनानुसार मन्दिर की दोनों मोरियां अजगर की दुम द्वारा ढकी होनी चाहिए थीं। अजगर उनकी पीठ की ओर सिर्फ लटक रहा था, मोरियों को आशीर्वाद देने के लिए मुड़ा हुआ नहीं था। योजनानुसार अजगर पहनने के बाद मिस गोगो को सनसनाती मुस्कानें बिखेरनी चाहिए थीं। मिस गोगो का चेहरा फक एवं मुस्कान-रहित था। योजनानुसार, अजगर के ऊपरी हिस्से से थैलों की दोनों फुनगियां ढकी होनी चाहिए थीं। फुनगियां हमें सीधी-सीधी दृष्टिगोचर हो सकीं। "हैलो, माई डीयर!" मैं ने मिस गोगो से कहा। इस के उत्तर में भी मुस्कराना असम्भव रहा उन के लिए। बहुत धीमे स्वर में उन्होंने 'हैलो' कहा, फिर कांपना शुरू कर दिया। अजगर की गर्दन पर उन की दोनों मुट्ठियां और ज्यादा कस गईं। अजगर की जो लम्बाई उन की पीठ की तरफ लटक रही थी, उस में हिलोर-सी उठी। अजगर ने मुंह खोल दिया।

मैं अपनी आंखों पर यकीन न कर सका। अजगर के दांत थे! कितने बड़े-बड़े दांत! उस का मुंह खुलते ही वे कितने वीभत्स ढंग

से दिखाई दे रहे थे। ठीक है, माना कि अजगर जहरीला नहीं, लेकिन इतने बड़े-बड़े दांत···ओह, नहीं, इस खेल को इतना खतरनाक नहीं होना चाहिए। मिस गोगो का चेहरा यदि इतना फक है और उन के हाथ-पैर यदि इतने झुरझुरा रहे हैं, तो आश्चर्य क्या है ? अजगर के दांत हर हालत में निकाल दिए जाने चाहिए। इतना खतरनाक कैबरे मैं मंच पर प्रस्तुत होने नहीं दूंगा।

"नो, नो, मिस गोगो···" रिंग-मास्टर ने उन के निकट जाते हुए कहा, "इतनी जोर से न दबाइए। अजगर मर जाएगा।"

अजगर की गर्दन पर अपनी दोनों मुट्ठियों की पकड़ मिस गोगो ने ढीली कर दी। अजगर ने मुंह बन्द कर के जीभ लपलपाई और हम दोनों की तरफ देखा। शायद वह हम दोनों से सहायता की आशा रख रहा था। हम उस के नजदीक भी न जा सके।

रिंग-मास्टर ने इस बात को बड़ी सहजता से लिया था कि मिस गोगो ने केवल अजगर धारण किया हुआ था। कितना आश्चर्य कि रिंग-मास्टर के स्वर में वह जोशीली कंपकंपी नहीं थी, जो मिस गोगो जैसी सुन्दरी को अभी-अभी जन्मे शिशु की पोशाक में देख कर होनी चाहिए थी। अजगर मिस गोगो ने पहना तो जरूर था, लेकिन कितने अस्त-व्यस्त ढंग से ! कोई भी पोशाक यदि इतनी अस्त-व्यस्त हो जाए, तो व्यक्ति को, अभी-अभी जन्मे शिशु की पोशाक में ही माना जाएगा। मैं ने अनुमान लगाया कि जरूर रिंग-मास्टर की नग्नाओं का आमना-सामना करने की आदत पहले से है। मुझे विश्वास था कि अनुमान मेरा गलत नहीं है। मैं ने उस दृश्य की कल्पना करनी चाही, जब मिस गोगो ने अजगर की गर्दन पकड़ कर उसे पिंजड़े में से निकाला होगा, फिर टब के पानी में छोड़ा होगा···जरूर मिस गोगो की रूह फना हो गई होगी···

"इस तरह खड़ी हो जाइए।" रिंग-मास्टर ने मिस गोगो को स्वयं 'उस तरह' खड़े हो कर बताया। मिस गोगो दोनों पैर फैला कर खड़ी हो गई। इस से उन की झुरझुरी और ज्यादा प्रकट हो जाने

लगी। रिंग-मास्टर मुस्कराया, "डरिए नहीं, यह तो आप का दोस्त है। फिर इस की गर्दन भी आप के हाथ में है। न, न, इतनी न कांपिए। मुस्कराइए भला? जरा-सा मुस्करा दीजिए। शाबाश! ठीक है। इसी तरह खड़ी रहिए।"

जिस तरह बंगालनों के लम्बे बाल उन के घुटनों तक पहुंचते हैं, उसी तरह वह प्यारा अजगर मिस गोगो की पीठ की तरफ, उन के घुटनों तक, बल्कि घुटनों से भी नीचे तक पहुंच रहा था। बड़े आलस्य के साथ वह लटका हुआ था। मिस गोगो चूंकि दोनों पैर फैला कर खड़ी थीं पीठ की तरफ लटकता अजगर सामने से देखने पर, मुझे मिस गोगो की दुम जैसा लग रहा था। कैसी ऊटपटांग बात कि मिस गोगो जैसी सुन्दरी के अजगर जैसी दुम हो! आकांक्षाओं के वशीभूत होकर मानव क्या-क्या रूप नहीं धरता।

रिंग-मास्टर मिस गोगो के आमने-सामने पहुंच कर रुका। अजगर को उस ने मिस गोगो के कन्धे के पास से पकड़ कर उसी तरह खींचा, जिस तरह रस्सी खींच कर कुए में से डोल निकली जाती है। इस से अजगर की लम्बाई का एक हिस्सा मिस गोगो के सामने की तरफ आ गया।

अब दोनों हाथों से नहीं, बल्कि अजगर की गर्दन एक ही हाथ से पकड़ी जानी थी, ताकि दूसरे हाथ से अजगर की उस लम्बाई को फुनगियों पर रखा जा सके, जो सामने की तरफ खींच ली गई थी। रिंग-मास्टर ने बहुत समझाया मिस गोगो को कि वह अजगर की गर्दन पर से एक हाथ छोड़ दें, किन्तु मिस गोगो की आंखों में पानी आ गया। उन्हें भय था कि ज्यों ही एक हाथ हटेगा, गर्दन फुला कर और जोर से झटका मार कर अजगर दूसरे हाथ से भी छूट जाएगा—फिर उस के लम्बे दांत मिस गोगो की कोमल काया में धंस जाएंगे। अन्ततः रिंग-मास्टर ने फैसला किया कि एक हाथ छोड़ने का अभ्यास दूसरे या तीसरे रिहर्सल के लिए रहने दिया जाए।

चूंकि अजगर की एक लम्बाई सामने की तरफ खींच ली गई

से दिखाई दे रहे थे। ठीक है, माना कि अजगर जहरीला नहीं, लेकिन इतने बड़े-बड़े दांत···ओह, नहीं, इस खेल को इतना खतरनाक नहीं होना चाहिए। मिस गोगो का चेहरा यदि इतना फक है और उन के हाथ-पैर यदि इतने झुरझुरा रहे हैं, तो आश्चर्य क्या है ? अजगर के दांत हर हालत में निकाल दिए जाने चाहिए। इतना खतर-नाक कैबरे मैं मंच पर प्रस्तुत होने नहीं दूंगा।

"नो, नो, मिस गोगो···" रिंग-मास्टर ने उन के निकट जाते हुए कहा, "इतनी जोर से न दबाइए। अजगर मर जाएगा।"

अजगर की गर्दन पर अपनी दोनों मुट्ठियों की पकड़ मिस गोगो ने ढीली कर दी। अजगर ने मुंह बन्द कर के जीभ लपलपाई और हम दोनों की तरफ देखा। शायद वह हम दोनों से सहायता की आशा रख रहा था। हम उस के नजदीक भी न जा सके।

रिंग-मास्टर ने इस बात को बड़ी सहजता से लिया था कि मिस गोगो ने केवल अजगर धारण किया हुआ था। कितना आश्चर्य कि रिंग-मास्टर के स्वर में वह जोशीली कंपकंपी नहीं थी, जो मिस गोगो जैसी सुन्दरी को अभी-अभी जन्मे शिशु की पोशाक में देख कर होनी चाहिए थी। अजगर मिस गोगो ने पहना तो जरूर था, लेकिन कितने अस्त-व्यस्त ढंग से ! कोई भी पोशाक यदि इतनी अस्त-व्यस्त हो जाए, तो व्यक्ति को, अभी-अभी जन्मे शिशु की पोशाक में ही माना जाएगा। मैं ने अनुमान लगाया कि जरूर रिंग-मास्टर को नग्नाओं का आमना-सामना करने की आदत पहले से है। मुझे विश्वास था कि अनुमान मेरा गलत नहीं है। मैं ने उस दृश्य की कल्पना करनी चाही, जब मिस गोगो ने अजगर की गर्दन पकड़ कर उसे पिंजड़े में से निकाला होगा, फिर टब के पानी में छोड़ा होगा···जरूर मिस गोगो की रूह फना हो गई होगी···

"इस तरह खड़ी हो जाइए।" रिंग-मास्टर ने मिस गोगो को स्वयं 'उस तरह' खड़े हो कर बताया। मिस गोगो दोनों पैर फैला कर खड़ी हो गई। इस से उन की झुरझुरी और ज्यादा प्रकट हो जाने

लगी। रिंग-मास्टर मुस्कराया, "डरिए नहीं, यह तो आप का दोस्त है। फिर इस की गर्दन भी आप के हाथ में है। न, न, इतनी न कांपिए। मुस्कराइए भला ? जरा-सा मुस्करा दीजिए। शाबाश ! ठीक है। इसी तरह खड़ी रहिए।"

जिस तरह बंगालनों के लम्बे बाल उन के घुटनों तक पहुंचते हैं, उसी तरह वह प्यारा अजगर मिस गोगो की पीठ की तरफ, उन के घुटनों तक, बल्कि घुटनों से भी नीचे तक पहुंच रहा था। बड़े आलस्य के साथ वह लटका हुआ था। मिस गोगो चूंकि दोनों पैर फैला कर खड़ी थीं पीठ की तरफ लटकता अजगर सामने से देखने पर, मुझे मिस गोगो की दुम जैसा लग रहा था। कैसी ऊटपटांग बात कि मिस गोगो जैसी सुन्दरी के अजगर जैसी दुम हो ! आकांक्षाओं के वशीभूत होकर मानव क्या-क्या रूप नहीं धरता।

रिंग-मास्टर मिस गोगो के आमने-सामने पहुंच कर रुका। अजगर को उस ने मिस गोगो के कन्धे के पास से पकड़ कर उसी तरह खींचा, जिस तरह रस्सी खींच कर कुएं में से डोल निकली जाती है। इस से अजगर की लम्बाई का एक हिस्सा मिस गोगो के सामने की तरफ आ गया।

अब दोनों हाथों से नहीं, बल्कि अजगर की गर्दन एक ही हाथ से पकड़ी जानी थी, ताकि दूसरे हाथ से अजगर की उस लम्बाई को फुनगियों पर रखा जा सके, जो सामने की तरफ खींच ली गई थी। रिंग-मास्टर ने बहुत समझाया मिस गोगो को कि वह अजगर की गर्दन पर से एक हाथ छोड़ दें, किन्तु मिस गोगो की आंखों में पानी आ गया। उन्हें भय था कि ज्यों ही एक हाथ हटेगा, गर्दन फुला कर और जोर से झटका मार कर अजगर दूसरे हाथ से भी छूट जाएगा —फिर उस के लम्बे दांत मिस गोगो की कोमल काया में धंस जाएंगे। अन्ततः रिंग-मास्टर ने फ़ैसला किया कि एक हाथ छोड़ने का अभ्यास दूसरे या तीसरे रिहर्सल के लिए रहने दिया जाए।

चूंकि अजगर की एक लम्बाई सामने की तरफ खींच ली गई

थी, मैं ने देखा कि अजगर की दुम अब मिस गोगो के घुटनों से नीचे तक नहीं पहुंच रही है। दुम अब घुटनों के ऊपर-ऊपर लटक रही थी। मिस गोगो के फैले हुए पैरों को सामने से देखने पर, अब भी यही अहसास मिल रहा था कि पीछे की तरफ, मिस गोगो की दुम जरूर है। फर्क केवल इतना आया है कि दुम छोटी और छरहरी हो कर ऊपर खिसक गई है। रिंग-मास्टर मिस गोगो के सामने उकड़ूं बैठ गया था। मिस गोगो के पैरों के बीच से उस ने अजगर की दुम का छोर पकड़ लिया। छोर को उस ने सामने खींचा। हाथ पीछे ले जा कर उस ने मन्दिर की मोरी नम्बर एक पर अजगर की लम्बाई व्यवस्थित की, फिर मोरी नम्बर दो को भी दुम द्वारा मूंद दिया।

रिंग-मास्टर की निगाहें ऊपर उठीं, ताकि मिस गोगो की आंखों में झांका जा सके। ज्यों ही अजगर ने मोरी नम्बर दो को ढका था त्यों ही मिस गोगो ने पलकें जोर से मींच ली थीं। चेहरा भी उनका विकृत हो गया था। "मिस गोगो..." रिंग-मास्टर बुदबुदाया और मिस गोगो ने आंखें खोलीं।

"अगर बहुत डर लग रहा हो तो रिहर्सल आज रहने दिया जाए।" रिंग-मास्टर ने उकड़ूं बैठे-बैठे ही कहा। अजगर की दुम उस ने मिस गोगो की नाभि के नीचे दबा रखी थी, ताकि मोरी नम्बर दो ढकी हुई ही रहे।

"नहीं, नहीं, रिहर्सल तो करना ही है। डरने से कैसे काम चलेगा?" मिस गोगो का यह उत्तर सुन कर मैं उनकी दिलेरी पर न्यौछावर हो गया।

रिंग-मास्टर ने समझाना शुरू किया, "दुम मैं ने नाभि के नीचे दबा रखी है। ज्यों ही हाथ हटाऊंगा, दुम जगह छोड़ने लगेगी—और ज्यों ही दुम जगह छोड़े, अजगर की गर्दन दबा दीजिए। इतनी जोर से न दबाइए कि दम घुटने लग जाए। अभी-अभी जितना आप ने दबाया था, उस से कुछ कम दबाइए। यह प्रैक्टिस हमें बार-बार करनी है। गर्दन दबने के साथ दुम हटने का सीधा सम्बन्ध है, यह

अजगर की समझ में आ जाना चाहिए। फिर यह हमेशा याद रखेगा कि मुझे न दुम हटानी है, न गर्दन दबवानी है।"

रिंग-मास्टर ने दुम पर से हाथ हटाया। दुम सरकने और मोरी नम्बर दो प्रकट होने लगी। इस के साथ ही मिस गोगो ने अजगर की गर्दन दबाई। रिंग-मास्टर ने दुम का छोर पकड़ कर वापस नाभि के नजदीक रख दिया। इस के साथ ही मिस गोगो ने अजगर की गर्दन दबाना रोक दिया। यह सारा दृश्य मुझे न तो सुन्दर लगा, न उत्तेजक। मैं ने स्मिता की राय जानने के लिए उसकी ओर निगाह घुमाई। स्मिता को पता ही न चला कि मैं ने आंखों-ही-आंखों में उस की राय जाननी चाही। वह लीन थी रिहर्सल देखने में। यदि मुझ से पूछा जाता तो मैं तटस्थता से यही कहता कि मिस गोगो ने वीभत्स ढंग से अजगर का लंगोट लगा लिया है।···लेकिन फिर मैं ने सोचा कि यह तो रिहर्सल है। मिस गोगो अभी सहज हुई ही कहां हैं। बल्कि यह रिहर्सल भी नहीं। यह यो सिर्फ ट्रेनिंग है—ट्रेनिंग भी अकेले अजगर की। ट्रेनिंग पूरी होने के बाद ही मिस गोगो अजगर को पहन कर नृत्य का रिहर्सल कर सकेंगी। सहजता उन में तभी आएगी। सहजता के आभाव में तो सुन्दर-से-सुन्दर नग्नता भी वीभत्स हो जाती है। इस का मूल्यांकन मुझे सहजता के आने के बाद ही करना चाहिए कि अजगर-नृत्य सुन्दर और सुरुचि-पूर्ण बन पड़ा है या नहीं।

और मैं यह भी सोचने लगा कि अजगर के दांत न निकाले जाएं तो भी क्या हर्ज! रिंग-मास्टर ने कुछ सोच-समझ कर ही दांत नहीं निकलवाए होंगे। दांतों के बिना अजगर बूढ़ा और कम-जोर लगने लगेगा। जंगली और खूंखार के बजाय वह पालतू और नपुंसक लगेगा, लेकिन दर्शकों के सामने यदि ये दांत प्रदर्शित हो सकें, तब कहना ही क्या। 'ब्यूटी एण्ड बीस्ट' के अहसाह को ये दांत इतनी खूबी से चारों दिशाओं में प्रसारित करेंगे कि दर्शक फिदा हो जाएंगे। सुन्दरी न केवल अजगर के पाश में है, वह अजगर के दांतों

थी, मैं ने देखा कि अजगर की दुम अब मिस गोगो के घुटनों से नीचे तक नहीं पहुंच रही है। दुम अब घुटनों के ऊपर-ऊपर लटक रही थी। मिस गोगो के फैले हुए पैरों को सामने से देखने पर, अब भी यही अहसास मिल रहा था कि पीछे की तरफ, मिस गोगो की दुम जरूर है। फर्क केवल इतना आया है कि दुम छोटी और छरहरी हो कर ऊपर खिसक गई है। रिंग-मास्टर मिस गोगो के सामने उकड़ूं बैठ गया था। मिस गोगो के पैरों के बीच से उस ने अजगर की दुम का छोर पकड़ लिया। छोर को उस ने सामने खींचा। हाथ पीछे ले जा कर उस ने मन्दिर की मोरी नम्बर एक पर अजगर की लम्बाई व्यवस्थित की, फिर मोरी नम्बर दो को भी दुम द्वारा मूंद दिया।

रिंग-मास्टर की निगाहें ऊपर उठीं, ताकि मिस गोगो की आंखों में झांका जा सके। ज्यों ही अजगर ने मोरी नम्बर दो को ढका था त्यों ही मिस गोगो ने पलकें जोर से मींच ली थीं। चेहरा भी उनका विकृत हो गया था। "मिस गोगो···" रिंग-मास्टर बुदबुदाया और मिस गोगो ने आंखें खोलीं।

"अगर बहुत डर लग रहा हो तो रिहर्सल आज रहने दिया जाए।" रिंग-मास्टर ने उकड़ूं बैठे-बैठे ही कहा। अजगर की दुम उस ने मिस गोगो की नाभि के नीचे दबा रखी थी, ताकि मोरी नम्बर दो ढकी हुई ही रहे।

"नहीं, नहीं, रिहर्सल तो करना ही है। डरने से कैसे काम चलेगा ?" मिस गोगो का यह उत्तर सुन कर मैं उनकी दिलेरी पर न्यौछावर हो गया।

रिंग-मास्टर ने समझाना शुरू किया, "दुम मैं ने नाभि के नीचे दबा रखी है। ज्यों ही हाथ हटाऊंगा, दुम जगह छोड़ने लगेगी—और ज्यों ही दुम जगह छोड़े, अजगर की गर्दन दबा दीजिए। इतनी जोर से न दवाइए कि दम घुटने लग जाए। अभी-अभी जितना आप ने दबाया था, उस से कुछ कम दबाइए। यह प्रैक्टिस हमें बार-बार करनी है। गर्दन दबने के साथ दुम हटने का सीधा सम्बन्ध है, यह

अजगर की समझ में आ जाना चाहिए। फिर यह हमेशा याद रखेगा कि मुझे न दुम हटानी है, न गर्दन दबवानी है।"

रिंग-मास्टर ने दुम पर से हाथ हटाया। दुम सरकने और मोरी नम्बर दो प्रकट होने लगी। इस के साथ ही मिस गोगो ने अजगर की गर्दन दबाई। रिंग-मास्टर ने दुम का छोर पकड़ कर वापस नाभि के नजदीक रख दिया। इस के साथ ही मिस गोगो ने अजगर की गर्दन दबाना रोक दिया। यह सारा दृश्य मुझे न तो सुन्दर लगा, न उत्तेजक। मैं ने स्मिता की राय जानने के लिए उसकी ओर निगाह घुमाई। स्मिता को पता ही न चला कि मैं ने आंखों-ही-आंखों में उस की राय जाननी चाही। वह लीन थी रिहर्सल देखने में। यदि मुझ से पूछा जाता तो मैं तटस्थता से यही कहता कि मिस गोगो ने वीभत्स ढंग से अजगर का लंगोट लगा लिया है।...लेकिन फिर मैं ने सोचा कि यह तो रिहर्सल है। मिस गोगो अभी सहज हुई ही कहां हैं। बल्कि यह रिहर्सल भी नहीं। यह यो सिर्फ ट्रेनिंग है—ट्रेनिंग भी अकेले अजगर की। ट्रेनिंग पूरी होने के बाद ही मिस गोगो अजगर को पहन कर नृत्य का रिहर्सल कर सकेंगी। सहजता उन में तभी आएगी। सहजता के आभाव में तो सुन्दर-से-सुन्दर नग्नता भी वीभत्स हो जाती है। इस का मूल्यांकन मुझे सहजता के आने के बाद ही करना चाहिए कि अजगर-नृत्य सुन्दर और सुरुचि-पूर्ण बन पड़ा है या नहीं।

और मैं यह भी सोचने लगा कि अजगर के दांत न निकाले जाएं तो भी क्या हर्ज! रिंग-मास्टर ने कुछ सोच-समझ कर ही दांत नहीं निकलवाए होंगे। दांतों के बिना अजगर बूढ़ा और कम-जोर लगने लगेगा। जंगली और खूंखार के बजाय वह पालतू और नपुंसक लगेगा, लेकिन दर्शकों के सामने यदि ये दांत प्रदर्शित हो सकें, तब कहना ही क्या। 'ब्यूटी एण्ड बीस्ट' के अहसाह को ये दांत इतनी खूबी से चारों दिशाओं में प्रसारित करेंगे कि दर्शक फिदा हो जाएंगे। सुन्दरी न केवल अजगर के पाश में है, वह अजगर के दांतों

का भी खतरा झेल रही है, यह बात अजगर-नृत्य की सफलता में चार चांद लगा देती है। ठीक है, रिंग-मास्टर से मैं कहूंगा ही नहीं कि दांत निकलवाए बिना अजगर मच पर नहीं जाएगा । लेकिन मुझे इन दांतों की पूरी जानकारी रिंग-मास्टर से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

अजगर वाकई गधा था। उस की बुद्धि में आ ही नहीं रहा था कि यदि उस ने दुम मोरी नम्बर दो पर से न हटाई, तो उस की गर्दन भी नहीं दबेगी। खीझ कर मिस गोगो उसे फिर इतने जोर से मसोस बैठीं कि बेचारे का मुंह खुल गया और दांत नजर आने लगे।

रिहर्सल उर्फ ट्रेनिंग में वही-वही दोहराया जा रहा था । बोर हो कर मैं ने रिंग-मास्टर को टोकते हुए कहा, "मैं अपने कमरे में जा रहा हूं। ७ नम्बर डायल करने पर मुझ से बात की जा सकेगी। ७ पर न मिलूं तो १३ पर डायल कीजिए—जो कि मेरा आफिस है। रिहर्सल के बाद यदि आप मेरे साथ कुछेक मिनट गुजार सकें तो खुशी होगी ।"

"मैं आप के दर्शन अवश्य करूगा।" रिंग-मास्टर ने दावा किया।

"स्मिता, यदि तुम चाहो तो रिहर्सल देख सकती हो।" मैं स्मिता से मुखातिब हुआ।

"नहीं, मैं भी चलूंगी।" स्मिता उठती हुई बोली, "अब फाइनल शो ही देखूंगी। हाय, मैं भी कैसी हूं! इतनी देर से आई बैठी हू और बधाई देना याद भी नहीं—जब कि आई हूं बधाई देने ।" स्मिता मिस गोगो के करीब जाने लगी, लेकिन थम गई। मिस गोगो के तन पर अजगर जा था! दूर से ही स्मिता ने मिस गोगो से कहा "बधाई, हजार-हजार बधाई। आप का आइडिया इतना मौलिक और जबर्दस्त है कि जी चाहता है, कदमों पर गिर जाऊ।"

"ओह, नो, नो, स्मिता, ऐसी कोई बात नहीं। "मिस गोगो मरियल स्वर में बोलीं। यदि अजगर पहने हुए न होतीं तो निश्चय

ही इतने मरियल स्वर में बोलने पर वह शर्म से डूब मरतीं।

"आप हजार या लाख नहीं, बल्कि करोड़ बधाइयों की पात्र हैं।"

"थैंक्यू वेरी मच, स्मिता। "मिस गोगो की वही मरियल पें-पें।

स्मिता ने रिंग-मास्टर से पूछा, "अजगर ने यदि गर्दन दबाने का मतलब अन्त तक न समझा—फिर ?"

"तो हम इस की गर्दन पर सूइयां चुभोएंगे।" रिंग-मास्टर मुस्कराया, "अगर फिर भी इस की बुद्धि में न आया तो सूइयां गर्म कर के दागेंगे।"

"हाय, बेचारा !"

"जो भी करेंगे, गर्दन पर ही करेंगे, क्यों कि मिस गोगो के हाथ में इस की गर्दन ही तो रहेगी। शायद मैं मिस गोगो को एक अंगूठी भी पहनाऊं।"

"अंगूठी ?"

"अंगूठी जैसी ही अंगूठी, लेकिन उस में दो-चार बारीक सूइयां लगी होंगी। नृत्य के दौरान अगर तुम हटने लगेगी तो मिस गोगो अपनी मुट्ठी कसेंगी, जिस से अजगर की गर्दन पर सूइयां चुभेंगी।"

"क्यों जी, अजगर के खून का रंग कैसा होता है ?" स्मिता ने बच्चों की तरह पूछा।

"खून सब का लाल होता है।"

"स्मिता, आओ, चलें।" मैं ने कहा।

"लेकिन बॉस, सूई चुभोने पर अजगर को खून निकलेगा।"

"निकलने दो—और मैं तुम्हारा बॉस अभी नहीं हुआ हूं। समझीं ?" मैं दरवाजे की ओर बढ़ता हुआ बोला, "चलो। इन्हें करने दो रिहर्सल।"

जब मैं दरवाजा खोल रहा था, मिस गोगो एक परदे के पीछे छिप गईं। बाहर, गलियारे से आता-जाता कोई व्यक्ति यदि भीतर निगाह डाले तो मिस गोगो अपने त्वचा-सूट में दिखाई न दे जाएं ? कैबरे-डान्सर होने का मतलब यह थोड़े ही कि हर ऐरे-गैरे नत्थू-खैरे

का भी खतरा झेल रही है, यह बात अजगर-नृत्य की सफलता में चार चांद लगा देती है। ठीक है, रिंग-मास्टर से मैं कहूंगा ही नहीं कि दांत निकलवाए बिना अजगर मंच पर नहीं जाएगा। लेकिन मुझे इन दांतों की पूरी जानकारी रिंग-मास्टर से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

अजगर वाकई गधा था। उस की बुद्धि में आ ही नहीं रहा था कि यदि उस ने दुम मोरी नम्बर दो पर से न हटाई, तो उस की गर्दन भी नहीं दबेगी। खीझ कर मिस गोगो उसे फिर इतने जोर से मसोस बैठीं कि बेचारे का मुंह खुल गया और दांत नजर आने लगे।

रिहर्सल उर्फ ट्रेनिंग में वही-वही दोहराया जा रहा था। बोर हो कर मैं ने रिंग-मास्टर को टोकते हुए कहा, "मैं अपने कमरे में जा रहा हूं। ७ नम्बर डायल करने पर मुझ से बात की जा सकेगी। ७ पर न मिलूं तो १३ पर डायल कीजिए—जो कि मेरा आफिस है। रिहर्सल के बाद यदि आप मेरे साथ कुछेक मिनट गुजार सकें तो खुशी होगी।"

"मैं आप के दर्शन अवश्य करूगा।" रिंग-मास्टर ने वादा किया।

"स्मिता, यदि तुम चाहो तो रिहर्सल देख सकती हो।" मैं स्मिता से मुखातिब हुआ।

"नहीं, मैं भी चलूंगी।" स्मिता उठती हुई बोली, "अब फाइनल शो ही देखूंगी। हाय, मैं भी कैसी हूं! इतनी देर से आई बैठी हू और बधाई देना याद भी नहीं—जब कि आई हूं बधाई देने।" स्मिता मिस गोगो के करीब जाने लगी, लेकिन थम गई। मिस गोगो के तन पर अजगर जा था! दूर से ही स्मिता ने मिस गोगो से कहा "बधाई, हजार-हजार बधाई। आप का आइडिया इतना मौलिक और जबर्दस्त है कि जी चाहता है, कदमों पर गिर जाऊ।"

"ओह, नो, नो, स्मिता, ऐसी कोई बात नहीं। "मिस गोगो मरियल स्वर में बोलीं। यदि अजगर पहने हुए न होतीं तो निश्चय

ही इतने मरियल स्वर में बोलने पर वह शर्म से डूब मरतीं।

"आप हजार या लाख नहीं, बल्कि करोड़ बधाइयों की पात्र हैं।"

"थैंक्यू वेरी मच, स्मिता। "मिस गोगो की वही मरियल पें-पें।

स्मिता ने रिंग-मास्टर से पूछा, "अजगर ने यदि गर्दन दबाने का मतलब अन्त तक न समझा—फिर ?"

"तो हम इस की गर्दन पर सूइयां चुभोएंगे ।" रिंग-मास्टर मुस्कराया, "अगर फिर भी इस की बुद्धि में न आया तो सूइयां गर्म कर के दागेंगे ।"

"हाय, बेचारा !"

"जो भी करेंगे, गर्दन पर ही करेंगे, क्यों कि मिस गोगो के हाथ में इस की गर्दन ही तो रहेगी । शायद मैं मिस गोगो को एक अंगूठी भी पहनाऊं ।"

"अंगूठी ?"

"अंगूठी जैसी ही अंगूठी, लेकिन उस में दो-चार बारीक सूइयां लगी होंगी । नृत्य के दौरान अगर तुम हटने लगेंगी तो मिस गोगो अपनी मुट्ठी कसेंगी, जिस से अजगर की गर्दन पर सूइयां चुभेंगी ।"

"क्यों जी, अजगर के खून का रंग कैसा होता है ?" स्मिता ने बच्चों की तरह पूछा ।

"खून सब का लाल होता है ।"

"स्मिता, आओ, चलें ।" मैं ने कहा ।

"लेकिन बॉस, सूई चुभोने पर अजगर को खून निकलेगा ।"

"निकलने दो—और मैं तुम्हारा बॉस अभी नहीं हुआ हूं । समझीं ?" मैं दरवाजे की ओर बढ़ता हुआ बोला, "चलो । इन्हें करने दो रिहर्सल ।"

जब मैं दरवाजा खोल रहा था, मिस गोगो एक परदे के पीछे छिप गईं । बाहर, गलियारे से आता-जाता कोई व्यक्ति यदि भीतर निगाह डाले तो मिस गोगो अपने त्वचा-सूट में दिखाई न दे जाएं ? कैबरे-डान्सर होने का मतलब यह थोड़े ही कि हर ऐरे-गैरे नत्थू-खैरे

के सामने…

मैं ने दरवाजा खोला। मैं बाहर। स्मिता बाहर। रिंग-मास्टर द्वारा दरवाजा बन्द। भीतर से सिटकनी ऊपर। मैं और स्मिता लिफ्ट की ओर बढ़ते हुए।

"क्या तुम चाहोगी कि बम्बई रवानगी के समय मैं तुम्हें विदा करने के लिए स्टेशन आऊं?" मैं ने स्मिता से पूछा और लिफ्ट का रजिस्ट्रेशन बटन दबाया। लिफ्ट ऊपर आने लगी। स्मिता आंखें फैला कर बोली, "तुम ऐसी औपचारिकताएं तब निभाना, जब मैं तुम्हारी कर्मचारिणी हो जाऊं।"

मैं ही-ही करने लगा। लिफ्ट ऊपर आ गई। उस ने मुझे उस मंजिल पर पहुंचाया, जिस मंजिल पर मेरा कमरा था। स्मिता मेरे कमरे में न आई। बाहर से ही वह कहीं चली गई। मैं ने पूछा कि कहां जा रही हो। उस के कई यार-दोस्त हैं। कहीं भी जाए। मैं उस की आज़ादी में दखल नहीं देता। जो युवती उस व्यवसाय में हो ,जिस में स्मिता है, उसे दखल देना सम्भव भी तो नहीं।

⊙ "सब से पहले तो मुझे इस बात पर आप को बधाई देनी चाहिए कि मिस गोगो की खूबसूरती को आप ने बहुत सहजता से लिया है। मैं ने पाया कि आप के शरीर या स्वर में रोमांच का कोई चिह्न नहीं था।" मैं ने रिंग-मास्टर से कहा। उस ने मेरे कमरे में एकाध मिनट पहले प्रवेश किया था। उस के और अपने लिए एस्प्रेसो कॉफी तथा पेस्ट्रियों का आर्डर मैं फोन पर दे चुका था।

"इस का एक कारण है।" रिंग-मास्टर अपनी घनघोर मूंछों पर हाथ फेरता हुआ बोला।

"क्या?"

"मैं लास-एंजिलिस में तीन वर्ष तक स्ट्रिप-टीज़ क्लबों में कम्पीयर और ट्रेनर का काम कर चुका हूं।"

"इसी लिए, इसी लिए!"

"जब 'द ग्रेट इण्डियन सरकस' लास-एंजिलिस में आया तो मैं

ने क्लब की नौकरी छोड़ दी ।"

"क्यों ?" मैं ने पूछा, "क्लबों की नौकरी तो इतनी रंगीन और फायदेमन्द···"

"आर्थिक दृष्टि से जरूर वह नौकरी फायदेमन्द थी, लेकिन··· बचपन से ही मैं ने किसी सरकस में काम करने का सपना देखा था, क्योंकि मुझे देश-विदेश में घूमने का बड़ा शौक है। लास-एंजिलिस में मैं इतना एकरस जीवन जी रहा था कि ऊब कर 'द ग्रेट इण्डियन सरकस' में चला आया ।"

"मैं पूरी तरह सहमत हूं। दूसरों के लिए जो जीवन रोमांचक, उत्तेजक और यौन-सनसनी से सराबोर है, वही जीवन उन के लिए तो एकरस ही है, जो उसी में आकण्ठ डूबे रहने पर मजबूर हैं। वे बेचारे एकदम ऊब जाते हैं, जबकि जनता उन से ईर्ष्या करती है !" मैं भाषण-शैली में बोला ।

तभी बैरा कॉफी और पेस्ट्रियां ले आया। बैरा गया । मैं ने और घनघोर मूंछों ने कॉफी के कप उठाए। चुस्कियां। पुनः चुस्कियां।

"लास-एंजिलिस आप पहुंच कैसे गए थे ?" मेरा प्रश्न ।

"मेरा जन्म ही वहीं हुआ था। मेरे मां-बाप कपड़ों का व्यापार करते हैं, अब भी वहीं हैं। वे मुझे सख्त नापसन्द करते हैं, हालांकि मैं इकलौता हूं !" घनघोर मूंछें मुस्कराईं ।

मैं ने फिर पूछा, "वहां के क्लबों में आप ट्रेनर किन के थे ? युवतियों के या जन्तुओं के ?"

"जन्तुओं का। इसी आधार पर तो मुझे सरकस में नौकरी मिली।"

"वहां भी आप ने कई अजगरों को ट्रेनिंग दी होगी ?"

"नहीं। मेरा ख्याल है कि अजगर-नृत्य मिस गोगो की मौलिक कल्पना है।"

"ओह, वाकई ?" मेरी छाती गर्व से फूल उठी ।

"हां, यही ख्याल है मेरा। लास-एंजिलिस में, या दुनिया के

किसी भी अन्य शहर में मैं ने अजगर-नृत्य न तो देखा, न उसका कोई समाचार ही पढ़ा। इस सरकस-कम्पनी के साथ मैं दुनिया के प्रायः हर बड़े शहर में घूम चुका हूं। लास-एंजिलिस के स्ट्रिप-क्लबों में मैं ने अजगरों को तो नहीं, हां, छिपकलियों को ट्रेनिंग अवश्य दी थी।"

"छिपकलियों को ट्रेनिंग ?" मैं ने आंखें झपकाईं।

"जी हां। मिस गोगो अजगर पहन कर नाचेंगी। संख्या में अजगर एक जीव है, अनेक नहीं। ठीक है न ? इस हिसाब से मिस गोगो की यह अजगर-पोशाक 'वन-पीस' है। और लास-एंजिलिस के क्लबों में उन दिनों लोग 'फोर-पीस' पोशाक पर जान छिड़कते थे।"

"'फोर-पीस' याने पोशाक के रूप में चार छिपकलियां..." मैं इतना चकित था कि वाक्य पूरा किस तरह करता ?

"जी हां। छोटी-छोटी दो छिपकलियां सामने, ऊपर चिपकी रहतीं। वहां चाहे कितने ही झटके क्यों न पड़ते, वे उखड़ने का नाम न लेतीं, न जगह से हटतीं।"

सुन कर मैं ने धीमे से एक सीटी बजाई। सीटी बज जाने के बाद भी मैं कई क्षणों तक होठों को गोल मोड़े रहा। हर चुस्की के साथ रिंग-मास्टर की मूंछें एस्प्रेसो कॉफी में जरा-जरा भीग जातीं, लेकिन मारे कौतूहल के मुझे घिन न हो सकी।

"पोशाक का तीसरा टुकड़ा, याने एक और छिपकली, सामने नीचे चिपकी रहती। पीछे भी, पोशाक के चौथे टुकड़े के रूप में एक छिपकली चिपकाई जाती।"

"गज़ब !" मैं ने कहा।

"छिपकलियों के इस खेल में मैं ने लड़कियों पर दो ऐसे प्रयोग किए थे, जिन्हें लास-एंजिलिस के अखबारों ने खूब प्रशंसित किया था। बिल्कुल मौलिक थे वे प्रयोग—जिस तरह यह अजगर-नृत्य मिस गोगो का मौलिक प्रयोग है।"

"आप तो बड़े दिलचस्प निकले !" मैं मुस्कराया, "अगर जाने की जल्दी न हो तो कॉफी का एकाध दौर और चलाया जाए।"

"कोई उतनी जल्दी भी नहीं है। कॉफी के दूसरे दौर की आवश्यकता नहीं। ज्यादा कॉफी मुझे सूट नहीं करती।"

"अगली बार मैं आप को व्हिस्की पर आमन्त्रित करूंगा।" मैं साभार बोला।

"धन्यवाद।"

"कौन-से थे आप के वे मौलिक प्रयोग, जो आप ने लड़कियों पर किए ?"

घनघोर मूंछों ने एक गहरी सांस ले कर शुरू किया, "शायद आप जानते हो कि संसार की केवल दो जातियों की छिपकलियों में जहर पाया जाता है—'गिला मान्स्टर' और 'एच. हारिडम'।"

"अच्छा ? सिर्फ दो ही छिपकलियां जहरीली होती हैं ? मैं ने तो सोचा था कि कीड़े-मकोड़े खाती हैं, इस लिए सभी जहरीली होती हैं।"

"नहीं, सब जहरीली नहीं होतीं—चाहे हमारे अन्धविश्वास कुछ भी हों। छिपकलियों की प्रमुख जातियां हैं ४८७। उन में से केवल दो में सांप जैसा जहर पाया जाता है, जो शिकार के नाड़ी-तन्त्र पर सीधा असर करता है। इन में भी, प्रसिद्ध केवल एक ही है—'गिला मान्स्टर', जो एरीज़ोना के मरुस्थल में मिलती है। 'एच. हारिडम' मिलती है सिर्फ मेक्सिको में। मैं ने नंगी लड़कियों को 'गिला मान्स्टर' पहना कर नचाया—समझे आप ?—और उन 'गिला मान्स्टरों' की जहर की थैलियां निकाली नहीं गई थीं।"

"असम्भव !"

"असम्भव को सम्भव कर दिखाया, इसी लिए तो मेरी उतनी प्रशंसा हुई।"

"अगर एतराज न हो तो मुझे अपना तरीका विस्तार से बताइए।"

किसी भी अन्य शहर में मैं ने अजगर-नृत्य न तो देखा, न उसका कोई समाचार ही पढ़ा। इस सरकस-कम्पनी के साथ मैं दुनिया के प्रायः हर बड़े शहर में घूम चुका हूं। लास-एंजिलिस के स्ट्रिप-क्लबों में मैं ने अजगरों को तो नहीं, हां, छिपकलियों को ट्रेनिंग अवश्य दी थी।"

"छिपकलियों को ट्रेनिंग?" मैं ने आंखें झपकाईं।

"जी हां। मिस गोगो अजगर पहन कर नाचेंगी। संख्या में अजगर एक जीव है, अनेक नहीं। ठीक है न? इस हिसाब से मिस गोगो की यह अजगर-पोशाक 'वन-पीस' है। और लास-एंजिलिस के क्लबों में उन दिनों लोग 'फोर-पीस' पोशाक पर जान छिड़कते थे।"

"'फोर-पीस' याने पोशाक के रूप में चार छिपकलियां···" मैं इतना चकित था कि वाक्य पूरा किस तरह करता?

"जी हां। छोटी-छोटी दो छिपकलियां सामने, ऊपर चिपकी रहतीं। वहां चाहे कितने ही झटके क्यों न पड़ते, वे उखड़ने का नाम न लेतीं, न जगह से हटतीं।"

सुन कर मैं ने धीमे से एक सीटी बजाई। सीटी बज जाने के बाद भी मैं कई क्षणों तक होठों को गोल मोड़े रहा। हर चुस्की के साथ रिंग-मास्टर की मूंछें एस्प्रेसो कॉफी में जरा-जरा भीग जातीं, लेकिन मारे कौतूहल के मुझे घिन न हो सकी।

"पोशाक का तीसरा टुकड़ा, याने एक और छिपकली, सामने नीचे चिपकी रहती। पीछे भी, पोशाक के चौथे टुकड़े के रूप में एक छिपकली चिपकाई जाती।"

"गज़ब!" मैं ने कहा।

"छिपकलियों के इस खेल में मैं ने लड़कियों पर दो ऐसे प्रयोग किए थे, जिन्हें लास-एंजिलिस के अखबारों ने खूब प्रशंसित किया था। बिल्कुल मौलिक थे वे प्रयोग—जिस तरह यह अजगर-नृत्य मिस गोगो का मौलिक प्रयोग है।"

"आप तो बड़े दिलचस्प निकले !" मैं मुस्कराया, "अगर जाने की जल्दी न हो तो कॉफी का एकाध दौर और चलाया जाए।"

"कोई उतनी जल्दी भी नहीं है। कॉफी के दूसरे दौर की आवश्यकता नहीं। ज्यादा कॉफी मुझे सूट नहीं करती।"

"अगली बार मैं आप को व्हिस्की पर आमन्त्रित करूंगा।" मैं साभार बोला।

"धन्यवाद।"

"कौन-से थे आप के वे मौलिक प्रयोग, जो आप ने लड़कियों पर किए ?"

घनघोर मूंछों ने एक गहरी सांस ले कर शुरू किया, "शायद आप जानते हो कि संसार की केवल दो जातियों की छिपकलियों में जहर पाया जाता है—'गिला मान्स्टर' और 'एच. हारिडम'।"

"अच्छा ? सिर्फ दो ही छिपकलियां जहरीली होती हैं ? मैं ने तो सोचा था कि कीड़े-मकोड़े खाती हैं, इस लिए सभी जहरीली होती हैं।"

"नहीं, सब जहरीली नहीं होतीं—चाहे हमारे अन्धविश्वास कुछ भी हों। छिपकलियों की प्रमुख जातियां हैं ४८७। उन में से केवल दो में सांप जैसा जहर पाया जाता है, जो शिकार के नाड़ी-तन्त्र पर सीधा असर करता है। इन में भी, प्रसिद्ध केवल एक ही है—'गिला मान्स्टर', जो एरीज़ोना के मरुस्थल में मिलती है। 'एच. हारिडम' मिलती है सिर्फ मेक्सिको में। मैं ने नंगी लड़कियों को 'गिला मान्स्टर' पहना कर नचाया—समझे आप ?—और उन 'गिला मान्स्टरों' की जहर की थैलियां निकाली नहीं गई थीं।"

"असम्भव !"

"असम्भव को सम्भव कर दिखाया, इसी लिए तो मेरी उतनी प्रशंसा हुई।"

"अगर एतराज न हो तो मुझे अपना तरीका विस्तार से बताइए।"

" 'गिला मान्स्टर' की लम्बाई होती है दो फीट तक—याने, पूरे वक्ष को ढकने के लिए एक ही 'गिला मान्स्टर' काफी है।" रिंग-मास्टर ने बताना शुरू किया, "पहले तो मैं ने 'गिला मान्स्टरों' को नारी-मूर्त्तियों के वक्ष पर चिपकाया, फिर उन मूर्त्तियों को खूब हिलाया-डुलाया। अगर छिपकली वक्ष पर से उखड़ जाती, तो उसे भोजन न मिलता। उखड़ना तो दूर, अगर वह अपनी जगह से हट भी जाती तो उसे भूखा रहने की सजा मिलती। वक्ष के गुम्बदों पर चिपकने और गुम्बदों के खूब हिलने-डुलने के बाद उसे स्वादिष्ट, नन्हीं-नन्हीं छिपकलियां खाने को दी जातीं।"

"क्या छिपकलियां छिपकलियों को खा जाती हैं?"

"हां। मैं ने 'गिला मान्स्टर' छिपकलियों को यह शीघ्र ही समझा दिया कि वक्ष पर चिपकाए जाने के बाद उन्हें जरा भी हटना या उखड़ना नहीं है—चाहे कितना ही तीव्र आन्दोलन वक्ष में क्यों न हो। फिर मैं ने मूर्त्तियों के बजाए जीवित लड़कियों के वक्ष 'गिला मान्स्टरों' द्वारा ढकने शुरू किए। जीवित वक्ष के आन्दोलन मुर्दा आन्दोलनों से जरा अलग तरह के होने के कारण 'गिला मान्स्टरों' को शुरू में दिक्कत तो हुई, लेकिन मामला एक-दो दिनों में सम्भल गया। हां, लड़कियों का डर दूर करने में अवश्य बहुत धैर्य और साहस से काम लेना पड़ा, क्योंकि ये 'गिला मान्स्टर' छिपकलियां जब काटती हैं, तब सिर्फ काटती नहीं है।"

"तो?"

"काटने के साथ ही ये चिपक भी जाती हैं और घाव को बार-बार तब तक दबाती रहती हैं, जब तक उन्हें पूरी तसल्ली न हो जाए कि जहर शिकार की रगों में पहुंच चुका है।"

"ओह!" मैं ने अपनी ठुड्डी पर हाथ रखा।

"सब से पहले तो मैं ने लड़कियों के वक्ष के भारी बीमे उतर-वाए। फिर उन्हें वचन दिया कि कैबरे-डान्स के समय हमेशा एक डॉक्टर मौजूद रहा करेगा। मैं ने उन्हें 'गिला मान्स्टर' के स्वभाव

का परिचय देते हुए कहा कि यह छिपकली जहरीली होते हुए भी जहर को इस्तेमाल तब तक नहीं करती, जब तक इसे बहुत ज्यादा छेड़ा न जाए। वक्ष पर चिपकना और वक्ष के झटके लगना—इन दो क्रियाओं के साथ तो शीघ्र ही मिलने वाली खुराक का सीधा सम्बन्ध है। वक्ष के आंदोलन 'गिला मान्स्टर' को प्रसन्न करेंगे, छेड़ेंगे नहीं। बड़ी मुश्किल से लड़कियां तैयार हुईं, लेकिन 'गिला मान्स्टर' की ब्रेसियर पहन कर लड़कियां एक बार मंच पर आईं नहीं कि उनकी झिझक दूर हो गई। क्या बताऊं, हमारा वह शो कितना जबर्दस्त हिट साबित हुआ।"

"दर्शकों को पता कैसे चलता था कि 'गिला मान्स्टर' की जहरीली थैलियां निकाली नहीं गई हैं?" मैं ने पूछा।

"कैबरे-डान्सर अपनी ब्रेसियर उर्फ 'गिला मान्स्टर' उतार कर मंच की एक मेज पर रख देती। फिर वह परदे की ओट में हो जाती और 'गिला मान्स्टर' को क्लब का कर्मचारी नन्ही-नन्ही छिपकलियां खिलाना शुरू करता। तब दर्शक 'गिला मान्स्टर' के जहरीले दांत देख सकते। यदि किसी को शक होता कि दांत भले न निकाले गए हों, किन्तु जहरीली थैलियां निकाल दी गई हैं, तो उसे मंच पर आ कर 'गिला मान्स्टर' की जांच करने या करवाने की पूरी छूट हुआ करती। अखबारों ने मेरी प्रशंसा के पुल बांधने से पहले स्वयं अपने डॉक्टर भेज कर 'गिला मान्स्टरों' की जांच करवाई थी।"

"खूब!" मैं बोला, "और आप का दूसरा प्रयोग क्या था?"

"उस प्रयोग का नाम मैं ने रखा था 'कांच-कैबरे'।"

" 'कांच-कैबरे'? वह क्यों?" मैं जिज्ञासु बना।

"क्योंकि उस में जो छिपकलियां भाग लेती थीं, वे कांच की तरह टूट सकती थीं और टूटने के बावजूद मरती नहीं थीं!"

"अरे!"

" 'ग्लास-स्नेक' नामक छिपकलियां देखने में बिल्कुल सांप जैसी

" 'गिला मान्स्टर' की लम्बाई होती है दो फीट तक—याने, पूरे वक्ष को ढकने के लिए एक ही 'गिला मान्स्टर' काफी है।" रिंग-मास्टर ने बताना शुरू किया, "पहले तो मैं ने 'गिला मान्स्टरों' को नारी-मूर्त्तियों के वक्ष पर चिपकाया, फिर उन मूर्त्तियों को खूब हिलाया-डुलाया। अगर छिपकली वक्ष पर से उखड़ जाती, तो उसे भोजन न मिलता। उखड़ना तो दूर, अगर वह अपनी जगह से हट भी जाती तो उसे भूखा रहने की सजा मिलती। वक्ष के गुम्बदों पर चिपकने और गुम्बदों के खूब हिलने-डुलने के बाद उसे स्वादिष्ट, नन्हीं-नन्हीं छिपकलियां खाने को दी जातीं।"

"क्या छिपकलियां छिपकलियों को खा जाती हैं?"

"हां। मैं ने 'गिला मान्स्टर' छिपकलियों को यह शीघ्र ही समझा दिया कि वक्ष पर चिपकाए जाने के बाद उन्हें जरा भी हटना या उखड़ना नहीं है—चाहे कितना ही तीव्र आन्दोलन वक्ष में क्यों न हो। फिर मैं ने मूर्त्तियों के बजाए जीवित लड़कियों के वक्ष 'गिला मान्स्टरों' द्वारा ढकने शुरू किए। जीवित वक्ष के आन्दोलन मुर्दा आन्दोलनों से जरा अलग तरह के होने के कारण 'गिला मान्स्टरों' को शुरू में दिक्कत तो हुई, लेकिन मामला एक-दो दिनों में सम्भल गया। हां, लड़कियों का डर दूर करने में अवश्य बहुत धैर्य और साहस से काम लेना पड़ा, क्योंकि ये 'गिला मान्स्टर' छिपकलियां जब काटती हैं, तब सिर्फ काटती नहीं है।"

"तो?"

"काटने के साथ ही ये चिपक भी जाती हैं और घाव को बार-बार तब तक दबाती रहती हैं, जब तक उन्हें पूरी तसल्ली न हो जाए कि जहर शिकार की रगों में पहुंच चुका है।"

"ओह!" मैं ने अपनी ठुड्डी पर हाथ रखा।

"सब से पहले तो मैं ने लड़कियों के वक्ष के भारी बीमे उतरवाए। फिर उन्हें वचन दिया कि कैबरे-डान्स के समय हमेशा एक डॉक्टर मौजूद रहा करेगा। मैं ने उन्हें 'गिला मान्स्टर' के स्वभाव

का परिचय देते हुए कहा कि यह छिपकली जहरीली होते हुए भी जहर को इस्तेमाल तब तक नहीं करती, जब तक इसे बहुत ज्यादा छेड़ा न जाए। वक्ष पर चिपकना और वक्ष के झटके लगना—इन दो क्रियाओं के साथ तो शीघ्र ही मिलने वाली खुराक का सीधा सम्बन्ध है। वक्ष के आंदोलन 'गिला मान्स्टर' को प्रसन्न करेंगे, छेड़ेंगे नहीं। बड़ी मुश्किल से लड़कियां तैयार हुईं, लेकिन 'गिला मान्स्टर' की ब्रेसियर पहन कर लड़कियां एक बार मंच पर आईं नहीं कि उनकी झिझक दूर हो गई। क्या बताऊं, हमारा वह शो कितना जबर्दस्त हिट साबित हुआ।"

"दर्शकों को पता कैसे चलता था कि 'गिला मान्स्टर' की जहरीली थैलियां निकाली नहीं गई हैं?" मैं ने पूछा।

"कैबरे-डान्सर अपनी ब्रेसियर उर्फ 'गिला मान्स्टर' उतार कर मंच की एक मेज पर रख देती। फिर वह परदे की ओट में हो जाती और 'गिला मान्स्टर' को क्लब का कर्मचारी नन्ही-नन्ही छिपकलियां खिलाना शुरू करता। तब दर्शक 'गिला मान्स्टर' के जहरीले दांत देख सकते। यदि किसी को शक होता कि दांत भले न निकाले गए हों, किन्तु जहरीली थैलियां निकाल दी गई हैं, तो उसे मंच पर आ कर 'गिला मान्स्टर' की जांच करने या करवाने की पूरी छूट हुआ करती। अखबारों ने मेरी प्रशंसा के पुल बांधने से पहले स्वयं अपने डॉक्टर भेज कर 'गिला मान्स्टरों' की जांच करवाई थी।"

"खूब!" मैं बोला, "और आप का दूसरा प्रयोग क्या था?"

"उस प्रयोग का नाम मैं ने रखा था 'कांच-कैबरे'।"

" 'कांच-कैबरे'? वह क्यों?" मैं जिज्ञासु बना।

"क्योंकि उस में जो छिपकलियां भाग लेती थीं, वे कांच की तरह टूट सकती थीं और टूटने के बावजूद मरती नहीं थीं!"

"अरे!"

" 'ग्लास-स्नेक' नामक छिपकलियां देखने में बिल्कुल सांप जैसी

नजर आती हैं, क्योंकि उन के पैर होते ही नहीं और उनकी औसत लम्बाई है तीन फुट। कुल लम्बाई का दो-तिहाई हिस्सा केवल दुम-ही-दुम होता है। 'ग्लास-स्नेक' छिपकलियों को देख कर कोई यह मानने के लिए तैयार ही न हो कि ये भी छिपकलियां हैं।"

"मैं ने 'ग्लास-स्नेक' का नाम ही आज पहली बार सुना।"

"ये छिपकलियां अमेरिका में बहुतायत से मिलती हैं। उत्तर अफ्रीका, दक्षिण-पश्चिम यूरोप और एशिया के कुछ हिस्सों में भी ये पाई गई हैं। इन का केवल नाम ही नहीं है 'कांच के सांप'—सचमुच ये कांच जैसी ही नाजुक हैं।"

"कैसे ?"

"अन्य छिपकलियों की दुमें तो झटका खा कर टूटती हैं, लेकिन 'कांच के सांप' की दुम को आप जरा-सा छू भर दीजिए—दुम आप के पास रह जाएगी, 'कांच का सांप' लपक कर छू हो जाएगा।"

"अरे !"

"अब सोचिए कि इन 'ग्लास-स्नेक' छिपकलियों को मैं ने ट्रेनिंग किस तरह दी होंगी। ट्रेनिंग के दौरान मुझे एक बार भी इनकी दुम पर स्पर्श नहीं करना था—न हाथ से, न अपनी छड़ी से। मेरे धैर्य और प्रयोगशीलता की अत्यन्त कठिन परीक्षा 'कांच के सांपों' ने ली।" घनघोर मूंछों ने अपनी घनघोर मूंछों पर हाथ फेरा।

"भूल-चूक से कई 'कांच के सांप' टूट गए होंगे—है न ?" मैं ने कहा।

"हां···और तब मुझे उन की लम्बी दुमें फिर से निकलने का इन्तजार करना पड़ता। दुम-विहीन 'कांच के सांपों' से मैं रिहसल भी न करवाता, क्योंकि मच पर वे 'कांच के सांप' अपनी दुमों के साथ ही जाते थे।" मेरा ज्ञान-वर्द्धन होता रहा, "उन्हें भी लड़कियां अपनी ब्रेसियर बना कर ही पहनतीं। कल्पना करिए कि वे किस तरह पहनती होंगी, क्योंकि दुम पर हल्का-सा भी स्पर्श हुआ नहीं कि दुम यह गई, वह गई !"

मैं शरमा कर बोला, "कल्पना भी मैं नहीं कर सकता। आप बताइए।"

और उस ने बताया, "रिहर्सल हो या फाइनल शो; उन छिपकलियों को हम हमेशा गर्दन पकड़ कर ही उठाया करते। उठाते ही उन की दुमें लटक जातीं। 'कांच-कैबरे' के लिए मैं ने लड़कियों का चुनाव बहुत कम किया था। अधिक-से-अधिक ऊंचे उठे वक्ष की लड़कियां ही मेरे काम की थीं। 'कांच के सांप' मैं वक्ष के शिखरों पर एक-एक रख देता—और उस वक्त भी उन 'सांपों' उर्फ 'छिपकलियों' की दुमें लटक रही होतीं। यदि उठे हुए वक्षों की ही लड़कियां न चुनी जातीं, तो छोटे वक्षों के शिखरों से लटकती दुमें, डान्सर के पेट को स्पर्श कर लेतीं।"

"और स्पर्श के साथ ही दुम अलग, छिपकली अलग।"

"हां, यही होता। इसी लिए मैं लड़कियां नहीं चुनता था, वक्ष चुनता था। उन लड़कियों को डान्स भी इतनी नजाकत से करना पड़ता कि 'कांच के सांपों' की दुमें डान्स की लय के साथ, दाए-बाए तो हिलें, किन्तु पीछे की तरफ न हिलें। अगर दुमें पीछे भी हिलने लगतीं तो डान्सर के पेट को न छू लेतीं?"

"बड़ा तकनीकी मामला है यह।" मैं ने कहा।

"निस्सन्देह! और मैं ने 'कांच-कैबरे' की इस कल्पना को साकार कर दिखाया था।"

"अखबारों ने इस कैबरे की भी खूब प्रशंसा की होगी?"

"इतनी प्रशंसा कि मैं घमण्डी हो गया था!"

"स्वाभाविक है, स्वाभाविक है।"

"डान्स के अन्तिम चरण में क्या होता था, जानते हैं? दर्शकों को चुनौती दी जाती कि जिस में भी साहस हो, वह उठ कर आगे आए और इन नाचती लड़कियों पर से 'कांच के सांप' उतार ले। लोग उठते, लड़कियों तक पहुंचते—लेकिन, जैसा कि स्वाभाविक है, वे 'कांच के सांपों' की गर्दन पकड़ने का साहस न कर पाते।

नजर आती हैं, क्योंकि उन के पैर होते ही नहीं और उनकी औसत लम्बाई है तीन फुट। कुल लम्बाई का दो-तिहाई हिस्सा केवल दुम-ही-दुम होता है। 'ग्लास-स्नेक' छिपकलियों को देख कर कोई यह मानने के लिए तैयार ही न हो कि ये भी छिपकलियां हैं।"

"मैं ने 'ग्लास-स्नेक' का नाम ही आज पहली बार सुना।"

"ये छिपकलियां अमेरिका में बहुतायत से मिलती हैं। उत्तर अफ्रीका, दक्षिण-पश्चिम यूरोप और एशिया के कुछ हिस्सों में भी ये पाई गई हैं। इन का केवल नाम ही नहीं है 'कांच के सांप'—सचमुच ये कांच जैसी ही नाजुक हैं।"

"कैसे ?"

"अन्य छिपकलियों की दुमें तो झटका खा कर टूटती हैं, लेकिन 'कांच के सांप' की दुम को आप जरा-सा छू भर दीजिए—दुम आप के पास रह जाएगी, 'कांच का सांप' लपक कर छू हो जाएगा।"

"अरे !"

"अब सोचिए कि इन 'ग्लास-स्नेक' छिपकलियों को मैं ने ट्रेनिंग किस तरह दो होंगी। ट्रेनिंग के दौरान मुझे एक बार भी इनकी दुम पर स्पर्श नहीं करना था—न हाथ से, न अपनी छड़ी से। मेरे धैर्य और प्रयोगशीलता की अत्यन्त कठिन परीक्षा 'कांच के सांपों' ने ली।" घनघोर मूंछों ने अपनी घनघोर मूंछों पर हाथ फेरा।

"भूल-चूक से कई 'कांच के सांप' टूट गए होंगे—है न ?" मैं ने कहा।

"हां···और तब मुझे उन की लम्बी दुमें फिर से निकलने का इन्तजार करना पड़ता। दुम-विहीन 'कांच के सांपों' से मैं रिहर्सल भी न करवाता, क्योकि मंच पर वे 'कांच के सांप' अपनी दुमों के साथ ही जाते थे।" मेरा ज्ञान-वर्द्धन होता रहा, "उन्हें भी लड़कियां अपनी ब्रेसियर बना कर ही पहनतीं। कल्पना करिए कि वे किस तरह पहनती होंगी, क्योंकि दुम पर हल्का-सा भी स्पर्श हुआ नहीं कि दुम यह गई, वह गई !"

मैं शरमा कर बोला, "कल्पना भी मैं नहीं कर सकता। आप बताइए।"

और उस ने बताया, "रिहर्सल हो या फाइनल शो; उन छिपकलियों को हम हमेशा गर्दन पकड़ कर ही उठाया करते। उठाते ही उन की दुमें लटक जातीं। 'कांच-कैबरे' के लिए मैं ने लड़कियों का चुनाव बहुत कम किया था। अधिक-से-अधिक ऊंचे उठे वक्ष की लड़कियां ही मेरे काम की थीं। 'कांच के सांप' मैं वक्ष के शिखरों पर एक-एक रख देता—और उस वक्त भी उन 'सांपों' उर्फ 'छिपकलियों' की दुमें लटक रही होतीं। यदि उठे हुए वक्षों की ही लड़कियां न चुनी जातीं, तो छोटे वक्षों के शिखरों से लटकती दुमें, डान्सर के पेट को स्पर्श कर लेतीं।"

"और स्पर्श के साथ ही दुम अलग, छिपकली अलग।"

"हां, यही होता। इसी लिए मैं लड़कियां नहीं चुनता था, वक्ष चुनता था। उन लड़कियों को डान्स भी इतनी नजाकत से करना पड़ता कि 'कांच के सांपों' की दुमें डान्स की लय के साथ, दाए-बाए तो हिलें, किन्तु पीछे की तरफ न हिलें। अगर दुमें पीछे भी हिलने लगतीं तो डान्सर के पेट को न छू लेतीं?"

"बड़ा तकनीकी मामला है यह।" मैं ने कहा।

"निस्सन्देह! और मैं ने 'कांच-कैबरे' की इस कल्पना को साकार कर दिखाया था।"

"अखबारों ने इस कैबरे की भी खूब प्रशंसा की होगी?"

"इतनी प्रशंसा कि मैं घमण्डी हो गया था!"

"स्वाभाविक है, स्वाभाविक है।"

"डान्स के अन्तिम चरण में क्या होता था, जानते हैं? दर्शकों को चुनौती दी जाती कि जिस में भी साहस हो, वह उठ कर आगे आए और इन नाचती लड़कियों पर से 'कांच के सांप' उतार ले। लोग उठते, लड़कियों तक पहुंचते—लेकिन, जैसा कि स्वाभाविक है, वे 'कांच के सांपों' की गर्दन पकड़ने का साहस न कर पाते।

अव्वल तो वे यही न जान रहे होते कि सांप जैसे लम्बे ये प्राणी सांप ही हैं या कुछ और। बहुत गौर से देख कर वे उन्हें पहचानना चाहते। फिर वे गर्दन के बजाए उन की दुम पकड़ लेते, ताकि खींच कर उन्हें वक्ष पर से उतार लें। दुम उन्होंने पकड़ी नहीं कि दुम उनके हाथ में! मुंह बा कर देखते रह जाते वे। उन्हें यही लगता कि दुम के साथ अवश्य कोई दुर्घटना हुई है। वे दूसरी डान्सर के नजदीक पहुंचते और उसके वक्ष पर से भी 'कांच का सांप' उतार लेना चाहते। यहां भी केवल दुम उन के हाथ लगती। और क्लब में जोरों के ठहाके गूंजते। बड़ी सनसनी फैलती उस वक्त, जब लोग भरे-भराए वक्ष के शिखर नग्न करने के लिए हाथ बढ़ाते, किन्तु 'कांच का सांप' शिखर पर ज्यों-का-त्यों ही चिपका रहता और सिर्फ अपनी दुम अलग कर देता। डान्सर मुस्कराती, इठलाती, भाग जाती। शिखर उस के किसी की निगाह में न आते—और फिर भी हर दर्शक गदगदायमान!"

सुन कर मैं भी गदगदायमान हो गया। मुझे रिंग-मास्टर की पीठ थपथपाने की इच्छा होने लगी। मैं ने उसी क्षण स्वयं को रोक लिया। मदमस्त मूंछों ने मुझे डरा जो दिया था!

⊙ 'अलीबाबा' नाम अधूरा-सा नहीं लगता क्या? चालीस चोर कहां छूट गए? धन्यवाद अजगर-नृत्य को कि नाम का यह अधूरापन अब दूर होने वाला है। अजगर नृत्य के लिए एक विशेष कक्ष तैयार हो चुका है। उस कक्ष का वातावरण ऐसा है जैसे भीतर से कोई गुफा। गिन कर चालीस कुर्सियां लगाई गई हैं वहां। कुर्सियां भी कैसी? पहली नजर में तो यही लगे कि कुर्सी के आकार में चट्टान के दो-तीन टुकड़े सजा दिए गए हैं। इस का पता तो कुर्सी में बैठने के बाद ही चले कि कितने मुलायम गद्दे छिपे हैं उसकी सीट में। पीठ टिकाने का हिस्सा भी इतना मुलायम कि गुदगुदी! ज्यादा न कम, पूरी चालीस हैं ऐसी कुर्सियां, जिसके बीच है वह मंच, जिस पर मिस गोगो अजगर-नृत्य पेश करेंगी।

यहां भी मिस गोगो की सूझ-बूझ ने अपना कमाल दिखाया है। उन्होंने ही मुझे इंगित किया कि 'अलीबाबा' नाम में कैसा अधूरापन है। फिर उन्हीं ने सुझाव दिया कि 'चालीस चोरों' का एक आलीशान कक्ष अलग से तैयार करवाया जाए।

जो मनचले कैबरे-डान्स देखने आते हैं, वे अपने रुपयों की पूरी वसूली के मूड में होते हैं। डान्सर का बदन छू लेने का कोई अवसर वे नहीं चूकते। कभी-कभी वे चिकोटी भी काटने का सौभाग्य प्राप्त कर लेते हैं। डान्सर के साथ कई बार वे बहुत अभद्रता से ठिठोली भी करते हैं। मुस्टण्डे बैरों को आदेश तो है कि अभद्र मनचलों को निकाल बाहर किया जाए, या फिर, धमका कर शान्त किया जाए—लेकिन जहां तक सम्भव होता है, मुस्टण्डे बैरे बीच में पड़ते नहीं। अपनी सम्मान-रक्षा का अधिकतम प्रयास कैबरे-डान्सर को स्वयं ही करना पड़ता है। यदि बार-बार मुस्टण्डे बैरे बीच-बचाव करने लग जाएं, तब तो चुटकियों में बदनामी फैलती नजर आए कि 'अली-बाबा' में कैबरे देखने का मज़ा ही नहीं, अदने बैरे भी वहां इतना दखल देते हैं कि···इसी लिए कैबरे-डान्सर की एक बहुत बड़ी समस्या होती है मनचलों को इस तरह वश में रखने की कि उन्हें पता भी न चले, कब उन्हें नाथ लिया गया।

मिस गोगो ने कितनी खूबसूरती से हल किया है इस समस्या को !

चालीस चोरों का चुनाव मिस गोगो स्वयं करेंगी। कैबरे देखने आए मेहमानों में से चालीस व्यक्ति वह इसी आधार पर ही तो चुनेंगी कि जिस ने अपनी मनचलई ज्यादा दिखाई, उस की छुट्टी कर दी मिस गोगो ने। और जिस मनचले ने शो देखते समय अपनी शराफत का सबूत दिया, उसे मिस गोगो ने 'चोर' का नकाब दे कर सम्मानित किया।

अब, प्रत्येक कैबरे-शो में इसी तरह चालीस व्यक्तियों के चुनाव हुआ करेंगे। हर शो में मिस गोगो चालीस नकाब बांटेंगी।

अव्वल तो वे यही न जान रहे होते कि सांप जैसे लम्बे ये प्राणी सांप ही हैं या कुछ और। बहुत गौर से देख कर वे उन्हें पहचानना चाहते। फिर वे गर्दन के बजाए उन की दुम पकड़ लेते, ताकि खींच कर उन्हें वक्ष पर से उतार लें। दुम उन्होंने पकड़ी नहीं कि दुम उनके हाथ में! मुंह बा कर देखते रह जाते वे। उन्हें यही लगता कि दुम के साथ अवश्य कोई दुर्घटना हुई है। वे दूसरी डान्सर के नजदीक पहुंचते और उसके वक्ष पर से भी 'कांच का सांप' उतार लेना चाहते। यहां भी केवल दुम उन के हाथ लगती। और क्लब में जोरों के ठहाके गूंजते। बड़ी सनसनी फैलती उस वक्त, जब लोग भरे-भराए वक्ष के शिखर नग्न करने के लिए हाथ बढ़ाते, किन्तु 'कांच का सांप' शिखर पर ज्यों-का-त्यों ही चिपका रहता और सिर्फ अपनी दुम अलग कर देता। डान्सर मुस्कराती, इठलाती, भाग जाती। शिखर उस के किसी की निगाह में न आते—और फिर भी हर दर्शक गदगदायमान!''

सुन कर मैं भी गदगदायमान हो गया। मुझे रिंग-मास्टर की पीठ थपथपाने की इच्छा होने लगी। मैं ने उसी क्षण स्वयं को रोक लिया। मदमस्त मूंछों ने मुझे डरा जो दिया था!

⊙ 'अलीबाबा' नाम अधूरा-सा नहीं लगता क्या? चालीस चोर कहां छूट गए? धन्यवाद अजगर-नृत्य को कि नाम का यह अधूरापन अब दूर होने वाला है। अजगर नृत्य के लिए एक विशेष कक्ष तैयार हो चुका है। उस कक्ष का वातावरण ऐसा है जैसे भीतर से कोई गुफा। गिन कर चालीस कुर्सियां लगाई गई हैं वहां। कुर्सियां भी कैसी? पहली नजर में तो यही लगे कि कुर्सी के आकार में चट्टान के दो-तीन टुकड़े सजा दिए गए हैं। इस का पता तो कुर्सी में बैठने के बाद ही चले कि कितने मुलायम गद्दे छिपे हैं उसकी सीट में। पीठ टिकाने का हिस्सा भी इतना मुलायम कि गुदगुदी! ज्यादा न कम, पूरी चालीस हैं ऐसी कुर्सियां, जिसके बीच है वह मंच, जिस पर मिस गोगो अजगर-नृत्य पेश करेंगी।

यहां भी मिस गोगो की सूझ-बूझ ने अपना कमाल दिखाया है। उन्होंने ही मुझे इंगित किया कि 'अलीबाबा' नाम में कैसा अधूरापन है। फिर उन्हीं ने सुझाव दिया कि 'चालीस चोरों' का एक आलीशान कक्ष अलग से तैयार करवाया जाए।

जो मनचले कैबरे-डान्स देखने आते हैं, वे अपने रुपयों की पूरी वसूली के मूड में होते हैं। डान्सर का बदन छू लेने का कोई अवसर वे नहीं चूकते। कभी-कभी वे चिकोटी भी काटने का सौभाग्य प्राप्त कर लेते हैं। डान्सर के साथ कई बार वे बहुत अभद्रता से ठिठोली भी करते हैं। मुस्टण्डे बैरों को आदेश तो है कि अभद्र मनचलों को निकाल बाहर किया जाए, या फिर, धमका कर शान्त किया जाए—लेकिन जहां तक सम्भव होता है, मुस्टण्डे बैरे बीच में पड़ते नहीं। अपनी सम्मान-रक्षा का अधिकतम प्रयास कैबरे-डान्सर को स्वयं ही करना पड़ता है। यदि बार-बार मुस्टण्डे बैरे बीच-बचाव करने लग जाएं, तब तो चुटकियों में बदनामी फैलती नजर आए कि 'अली-बाबा' में कैबरे देखने का मज़ा ही नहीं, अदने बैरे भी वहां इतना दखल देते हैं कि···इसी लिए कैब्रे-डान्सर की एक बहुत बड़ी समस्या होती है मनचलों को इस तरह वश में रखने की कि उन्हें पता भी न चले, कब उन्हें नाथ लिया गया।

मिस गोगो ने कितनी ख़ूबसूरती से हल किया है इस समस्या को!

चालीस चोरों का चुनाव मिस गोगो स्वयं करेंगी। कैबरे देखने आए मेहमानों में से चालीस व्यक्ति वह इसी आधार पर ही तो चुनेंगी कि जिस ने अपनी मनचलई ज्यादा दिखाई, उस की छुट्टी कर दी मिस गोगो ने। और जिस मनचले ने शो देखते समय अपनी शराफत का सबूत दिया, उसे मिस गोगो ने 'चोर' का नकाब दे कर सम्मानित किया।

अब, प्रत्येक कैबरे-शो में इसी तरह चालीस व्यक्तियों के चुनाव हुआ करेंगे। हर शो में मिस गोगो चालीस नकाब बांटेंगी।

नाचती-नाचती वह उस मेज़ के पास पहुंचेंगी, जिस पर उन्हें भलेमानस बैठे नजर आएंगे। प्रत्येक भलेमानस के लिए एक-एक नकाब मेज पर रख, इठला कर वह दूर सरक जाएंगी और अपना अंग-अंग मथेंगी। कैबरे-कक्ष में पहले की तुलना में डेढ़ गुना दर्शक बैठ सकें, इस का इन्तजाम हो चुका है। कार्यक्रमों में अजगर-नृत्य का समावेश होने के बाद भी टिकट की दरें बढ़ाई नहीं जा रहीं। बढ़ाए जा रहे हैं केवल दर्शक, ताकि प्रत्येक शो में ज्यादा आमदनी हो सके। अजगर-नृत्य है तो एक डी-लक्स शो, लेकिन उस का अलग से कोई टिकट नहीं है। मिस गोगो ने ही सुझाया है यह आइडिया कि अजगर-नृत्य के टिकट अलग से रखने के बजाए उस के साथ 'स्वयंवर जैसी भावना' जोड़ दी जाए। जब मिस गोगो चालीस व्यक्तियों का चुनाव करेंगी, तब वे चालीस 'चोर' कितने फूलित-फूलित नजर आएंगे! ह, ह, ह···

चालीस चट्टानी कुर्सियों का वह विशेष कक्ष, कैबरे-कक्ष से जुड़ा हुआ ही है। उस के प्रवेश-द्वार पर लिखा है—चालीस चोरों का एक खजाना! जिन-जिन को मिस गोगो नकाब के उपहार देंगी, केवल वे ही उस विशेष कक्ष में प्रवेश पा सकेंगे। वहां, कुर्सियों में बैठने से पूर्व उन्हें बाकायदा अपने चेहरे नकाब पहन कर छिपा लेने होंगे! तब, उन के सम्मुख मिस गोगो सिर्फ अजगर पहन कर नाचेंगी।

विशेष कक्ष में चालीस व्यक्तियों के चले जाने पर, शेष बच रहे मेहमानों के साथ 'अन्याय' न हो, इस भावना से, ठीक अजगर-नृत्य जितनी ही अवधि का एक कैबरे-आइटम किसी अन्य नर्तकी द्वारा पेश किया जाएगा।

मेरे सामने यह एक समस्या ही थी न कि स्मिता के कैबरे-डान्स, मिस गोगो के कार्यक्रमों के बीच, ठूंसे किस तरह जाएं। अब यह समस्या अपने-आप हल हो गई है। चालीस 'चोरों' के सामने जब मिस गोगो अजगर पहन कर नाचेंगी, तब अन्य मेहमानों के नेत्रों की सेवा के लिए स्मिता का तन बिलोया जाएगा।

स्मिता बम्बई से अभी लौटी नहीं। पत्र आया था उस का कि प्लास्टिक-सर्जरी के दौर सफलता पूर्वक चल रहे हैं और वह दिनों-दिन इतनी विद्युतमय होती जा रही है कि पहचानना भी मुश्किल।

स्मिता की बम्बई से वापसी कब होगी, मैं ठीक-ठीक नहीं जानता। जब तक स्मिता दिल्ली लौट कर कैबरे-डान्स के रिहर्सलों से लैस नहीं हो जाती, तब तक कोई डान्सर 'अलीबाबा' में पेश की जाती रहेगी। स्मिता के लैस हो जाने पर उस डान्सर की छुट्टी।

लेकिन···मेरा ख्याल है कि मिस गोगो की तरह स्मिता 'अलीबाबा' में अपने शो निरन्तर दे नहीं पाएगी। स्मिता के तबादले समय-समय पर करते रहने पड़ेंगे। स्मिता चाहे जितना विद्युतमय बदन ले कर आए, उस के मोटे दिमाग की प्लास्टिक-सर्जरी किस तरह हो सकेगी? इधर, मिस गोगो का दिमाग इतना तेज और कल्पनाशील है कि···

चोरों की जो चालीस नकाब दिए जाएंगे, वे उन की अपनी सम्पत्ति होंगे। 'अलीबाबा' उन नकाबों की वापसी की आशा नहीं रखेगा। वे सम्मानित मेहमान, मिस गोगो द्वारा अपना चुनाव होने की मधुर याद में, उन नकाबों को ताउम्र सीने से लगाए रख सकेंगे।

⊙ अजगर-नृत्य की घोषणाएं अखबारों में नियमित होने लगी हैं। कार्यक्रम के आरम्भ की तिथि निश्चित हो गई है। परसों से एडवान्स-बुकिंग शुरू होगी। फोन-काल अभी से दनादन आ रहे हैं। जनता के खून में उबाल है। जिया बेकरार है, छाई बहार है; आ जा ओ री डान्सर, तेरा इन्तजार है!

⊙ 'द ग्रेट इण्डियन सरकस' दिल्ली से विदा ले कर बम्बई जा चुका। स्मिता अब भी बम्बई में है। 'द ग्रेट इण्डियन सरकस' वहां दो-चार मास तो चलेगा ही। स्मिता को चाहिए कि रिंग-मास्टर से मुलाकात करे। ओह, याद आया; यहां मैं ने रिंग-मास्टर से उसका औपचारिक परिचय नहीं कराया था। भूल गया था। लेकिन

नाचती-नाचती वह उस मेज़ के पास पहुंचेंगी, जिस पर उन्हें भलेमानस बैठे नजर आएंगे। प्रत्येक भलेमानस के लिए एक-एक नकाब मेज पर रख, इठला कर वह दूर सरक जाएंगी और अपना अंग-अंग मथेंगी। कैबरे-कक्ष में पहले की तुलना में डेढ़ गुना दर्शक बैठ सकें, इस का इन्तजाम हो चुका है। कार्यक्रमों में अजगर-नृत्य का समावेश होने के बाद भी टिकट की दरें बढ़ाई नहीं जा रहीं। बढ़ाए जा रहे हैं केवल दर्शक, ताकि प्रत्येक शो में ज्यादा आमदनी हो सके। अजगर-नृत्य है तो एक डी-लक्स शो, लेकिन उस का अलग से कोई टिकट नहीं है। मिस गोगो ने ही सुझाया है यह आइडिया कि अजगर-नृत्य के टिकट अलग से रखने के बजाए उस के साथ 'स्वयंवर जैसी भावना' जोड़ दी जाए। जब मिस गोगो चालीस व्यक्तियों का चुनाव करेंगी, तब वे चालीस 'चोर' कितने फूलित-फूलित नजर आएंगे! ह, ह, ह···

चालीस चट्टानी कुर्सियों का वह विशेष कक्ष, कैबरे-कक्ष से जुड़ा हुआ ही है। उस के प्रवेश-द्वार पर लिखा है—चालीस चोरों का एक खजाना! जिन-जिन को मिस गोगो नकाब के उपहार देंगी, केवल वे ही उस विशेष कक्ष में प्रवेश पा सकेंगे। वहां, कुर्सियों में बैठने से पूर्व उन्हें बाकायदा अपने चेहरे नकाब पहन कर छिपा लेने होंगे! तब, उन के सम्मुख मिस गोगो सिर्फ अजगर पहन कर नाचेंगी।

विशेष कक्ष में चालीस व्यक्तियों के चले जाने पर, शेष बच रहे मेहमानों के साथ 'अन्याय' न हो, इस भावना से, ठीक अजगर-नृत्य जितनी ही अवधि का एक कैबरे-आइटम किसी अन्य नर्तकी द्वारा पेश किया जाएगा।

मेरे सामने यह एक समस्या ही थी न कि स्मिता के कैबरे-डान्स, मिस गोगो के कार्यक्रमों के बीच, ठूंसे किस तरह जाएं। अब यह समस्या अपने-आप हल हो गई है। चालीस 'चोरों' के सामने जब मिस गोगो अजगर पहन कर नाचेंगी, तब अन्य मेहमानों के नेत्रों की सेवा के लिए स्मिता का तन बिलोया जाएगा।

स्मिता बम्बई से अभी लौटी नहीं। पत्र आया था उस का कि प्लास्टिक-सर्जरी के दौर सफलता पूर्वक चल रहे हैं और वह दिनों-दिन इतनी विद्युतमय होती जा रही है कि पहचानना भी मुश्किल।

स्मिता की बम्बई से वापसी कब होगी, मैं ठीक-ठीक नहीं जानता। जब तक स्मिता दिल्ली लौट कर कैबरे-डान्स के रिहर्सलों से लैस नहीं हो जाती, तब तक कोई डान्सर 'अलीबाबा' में पेश की जाती रहेगी। स्मिता के लैस हो जाने पर उस डान्सर की छुट्टी।

लेकिन···मेरा ख्याल है कि मिस गोगो की तरह स्मिता 'अलीबाबा' में अपने शो निरन्तर दे नहीं पाएगी। स्मिता के तबादले समय-समय पर करते रहने पड़ेंगे। स्मिता चाहे जितना विद्युत-मय बदन ले कर आए, उस के मोटे दिमाग की प्लास्टिक-सर्जरी किस तरह हो सकेगी? इधर, मिस गोगो का दिमाग इतना तेज और कल्पनाशील है कि···

चोरों की जो चालीस नकाब दिए जाएंगे, वे उन की अपनी सम्पत्ति होंगे। 'अलीबाबा' उन नकाबों की वापसी की आशा नहीं रखेगा। वे सम्मानित मेहमान, मिस गोगो द्वारा अपना चुनाव होने की मधुर याद में, उन नकाबों को ताउम्र सीने से लगाए रख सकेंगे।

⊙ अजगर-नृत्य की घोषणाएं अखबारों में नियमित होने लगी हैं। कार्यक्रम के आरम्भ की तिथि निश्चित हो गई है। परसों से एडवान्स-बुकिंग शुरू होगी। फोन-काल अभी से दनादन आ रहे हैं। जनता के खून में उबाल है। जिया बेकरार है, छाई बहार है; आ जा ओ री डान्सर, तेरा इन्तजार है!

⊙ 'द ग्रेट इण्डियन सरकस' दिल्ली से विदा ले कर बम्बई जा चुका। स्मिता अब भी बम्बई में है। 'द ग्रेट इण्डियन सरकस' वहां दो-चार मास तो चलेगा ही। स्मिता को चाहिए कि रिंग-मास्टर से मुलाकात करे। ओह, याद आया; यहां मैं ने रिंग-मास्टर से उसका औपचारिक परिचय नहीं कराया था। भूल गया था। लेकिन

अपरिचय के बावजूद स्मिता रिंग-मास्टर से मिल सकती है। आखिर उसे अब कैबरे-डान्सर बनना ही है। नए-नए आइटम उसे ईजाद करने ही होंगे। क्या स्मिता एकाध 'कांच-कैबरे' पेश नहीं कर सकती? अरे, हट, यह क्या सोचा मैं ने? स्मिता के पास जो मैदानी इलाका है, उस में 'कांच के सांप' बसेंगे कैसे? नृत्य के झटके शुरू हुए नहीं कि 'कांच के सांपों' की दुमें स्मिता के पेट पर स्पर्श कर लेंगी—दुम यह जा, वह जा! यदि कोई भूचाल इतना जबर्दस्त आए कि मैदानी इलाके में गौरीशंकर अंकुरित हो जाए, तभी 'कांच-कैबरे' सम्भव हो सके स्मिता के लिए। क्या प्लास्टिक-सर्जर गौरीशंकर अंकुरित कर सकेगा? थोड़ा-बहुत फर्क तो खैर वह लाएगा ही, लेकिन 'कांच-कैबरे' के लिए शिखरों की ऊंचाई जितनी चाहिए, उतनी···उंह, मैं भी यह क्या सोचने लग गया! भारत में 'कांच के सांप' उपलब्ध हैं ही कहां? उन्हें नियमित रूप से विदेश से मंगवाता रहूं, यह मंहगा सौदा है। चलो, महंगा न सही, क्योंकि दाम भी तो चौगुने वसूलूंगा, किन्तु दिक्कतभरा यह इतना है कि···

मैदानी इलाके के बावजूद स्मिता को चाहिए कि रिंग-मास्टर से मुलाकात करे। दोनों मिल कर कोई आइटम ऐसा तैयार अवश्य कर सकते हैं कि जो भारत में बिना किसी दिक्कत के पेश किया जा सके और जो सनसनीखेज़ इतना हो कि लोग कहें, 'स्मिता के कैबरे तो मिस गोगो की याद दिलाते हैं!' भारत में क्या जीव-जन्तुओं की कोई कमी है? दोनों शिखरों को छिपाने का जिम्मा क्या गिर-गिटों को नहीं सौंपा जा सकता? रस्सी की तरह पतले और बहुत लम्बे 'धामन' सांप यहां मिलते हैं। उन्हें शिखरों पर कस दिया जाए, उन्हीं की एक लम्बाई नीचे ले जा कर दोनों मोरियां बन्द कर दी जाएं। भारतीय बन्दर और मेढक भी इस्तेमाल किए जा सकते हैं। 'ब्यूटी एण्ड बीस्ट' का ही अहसास देना हो तो अपने श्री भालूचन्द्रजी क्या बुरे हैं? बाकायदा टांगें उठा-उठा कर ब्यूटी के साथ नाचें, ब्यूटी को प्यार से आलिंगन में लें, ब्यूटी को झुक-झुक कर

घूमें ! कुछ भी ऐसा सोचा जा सकता है कि जिस में स्मिता रिंग-मास्टर की प्रतिभा का उपयोग कर के रातोंरात धनवान हो जाए। भालूचन्द्रजी जब टांगें उठा कर नाचेंगे, तब लोग हंसेंगे, और अगर किसी ने 'अलीबाबा' पर अश्लीलता का आरोप लगाया तो मैं उस की छाती पर चढ़ बैठूंगा और पूछूंगा, "बड़े भाई, जंगल में कच्छे किस पेड़ पर उगते हैं ?"

वाकई कम्बख्त स्मिता की कमर जितनी पतली है, दिमाग उतना ही मोटा। उसे सूझेगा ही नहीं कि रिंग-मास्टर की शरण में जाने के क्या लाभ हैं। मुझे चिट्ठी लिख कर सुझा देना चाहिए कि अरी ओ स्मिता, जाग और देख, तेरे सामने कौन खड़ा है !

मैं ने द्वार खोला है। मैं चिट्ठी लिखने बैठ गया हूं। थोड़ी आशंका भी है मन में कि रिंग-मास्टर और स्मिता का मिलन मिस गोगो के लिए एक नई होड़ पैदा न कर दे, लेकिन मुझ से रहा नहीं जा रहा। मिस गोगो मेरी कर्मचारिणी हैं। वह मेरी 'वह' थोड़े हैं। स्मिता तो मेरी 'वह' है। मिस गोगो से ज्यादा मुझे स्मिता के हितों का ध्यान रखना चाहिए।

इस के अलावा, स्मिता अपने कैबरे 'अलीबाबा' में ही तो दिखाएगी। अभी अजगर-नृत्य 'अलीबाबा' का इकलौता शानदार आकर्षण है। फिर श्री भालूचन्द्र का टांग-उठाऊ नृत्य भी···माफ करें, उस नृत्य का नाम 'टांग-उठाऊ' नहीं रख सकूंगा। अभी यह शब्द मैं ने केवल एक सुविधा के लिए बनाया···वह टां.-ऊ. नृत्य भी, स्मिता के सहयोग से, 'अलीबाबा' के मंच पर आ जाएगा और शानदार आकर्षणों की संख्या बढ़ाएगा। इस में मिस गोगो के लिए होड़ की स्थिति कहां है ? वह अपनी जगह, स्मिता अपनी जगह। मुझे ऐसी आशका अभी है तो अवश्य कि स्मिता के तबादले समय-समय पर करते रहने पड़ेंगे, लेकिन यदि स्मिता भी कोई धांसू चीज ले आती है तो मिस गोगो की ही तरह उसे भी 'अलीबाबा' में एक लम्बी, अनिश्चित अवधि के लिए क्यों न बांध लिया जाए ? आज

अपरिचय के बावजूद स्मिता रिंग-मास्टर से मिल सकती है। आखिर उसे अब कैबरे-डान्सर बनना ही है। नए-नए आइटम उसे ईजाद करने ही होंगे। क्या स्मिता एकाध 'कांच-कैबरे' पेश नहीं कर सकती? अरे, हट, यह क्या सोचा मैं ने? स्मिता के पास जो मैदानी इलाका है, उस में 'कांच के सांप' बसेंगे कैसे? नृत्य के झटके शुरू हुए नहीं कि 'कांच के सांपों' की दुमें स्मिता के पेट पर स्पर्श कर लेंगी—दुम यह जा, वह जा! यदि कोई भूचाल इतना जबर्दस्त आए कि मैदानी इलाके में गौरीशंकर अंकुरित हो जाए, तभी 'कांच-कैबरे' सम्भव हो सके स्मिता के लिए। क्या प्लास्टिक-सर्जन गौरीशंकर अंकुरित कर सकेगा? थोड़ा-बहुत फर्क तो खैर वह लाएगा ही, लेकिन 'कांच-कैबरे' के लिए शिखरों की ऊंचाई जितनी चाहिए, उतनी···उंह, मैं भी यह क्या सोचने लग गया! भारत में 'कांच के सांप' उपलब्ध हैं ही कहां? उन्हें नियमित रूप से विदेश से मंगवाता रहूं, यह मंहगा सौदा है। चलो, महंगा न सही, क्योंकि दाम भी तो चौगुने वसूलूंगा, किन्तु दिक्कतभरा यह इतना है कि···

मैदानी इलाके के बावजूद स्मिता को चाहिए कि रिंग-मास्टर से मुलाकात करे। दोनों मिल कर कोई आइटम ऐसा तैयार अवश्य कर सकते हैं कि जो भारत में बिना किसी दिक्कत के पेश किया जा सके और जो सनसनीखेज़ इतना हो कि लोग कहें, 'स्मिता के कैबरे तो मिस गोगो की याद दिलाते हैं!' भारत में क्या जीव-जन्तुओं की कोई कमी है? दोनों शिखरों को छिपाने का जिम्मा क्या गिर-गिटों को नहीं सौंपा जा सकता? रस्सी की तरह पतले और बहुत लम्बे 'धामन' सांप यहां मिलते हैं। उन्हें शिखरों पर कस दिया जाए, उन्हीं की एक लम्बाई नीचे ले जा कर दोनों मोरियां बन्द कर दी जाएं। भारतीय बन्दर और मेढक भी इस्तेमाल किए जा सकते हैं। 'ब्यूटी एण्ड बीस्ट' का ही अहसास देना हो तो अपने श्री भालूचन्द्रजी क्या बुरे हैं? बाकायदा टांगें उठा-उठा कर ब्यूटी के साथ नाचें, ब्यूटी को प्यार से आलिंगन में लें, ब्यूटी को झुक-झुक कर

चूमें ! कुछ भी ऐसा सोचा जा सकता है कि जिस में स्मिता रिंग-मास्टर की प्रतिभा का उपयोग कर के रातोंरात धनवान हो जाए। भालूचन्द्रजी जब टांगें उठा कर नाचेंगे, तब लोग हंसेंगे, और अगर किसी ने 'अलीबाबा' पर अश्लीलता का आरोप लगाया तो मैं उस की छाती पर चढ़ बैठूंगा और पूछूंगा, "बड़े भाई, जंगल में कच्छे किस पेड़ पर उगते हैं ?"

वाकई कम्बख्त स्मिता की कमर जितनी पतली है, दिमाग उतना ही मोटा। उसे सूझेगा ही नहीं कि रिंग-मास्टर की शरण में जाने के क्या लाभ हैं। मुझे चिट्ठी लिख कर सुझा देना चाहिए कि अरी ओ स्मिता, जाग और देख, तेरे सामने कौन खड़ा है !

मैं ने द्वार खोला है। मैं चिट्ठी लिखने बैठ गया हूं। थोड़ी आशंका भी है मन में कि रिंग-मास्टर और स्मिता का मिलन मिस गोगो के लिए एक नई होड़ पैदा न कर दे, लेकिन मुझ से रहा नहीं जा रहा। मिस गोगो मेरी कर्मचारिणी हैं। वह मेरी 'वह' थोड़े हैं। स्मिता तो मेरी 'वह' है। मिस गोगो से ज्यादा मुझे स्मिता के हितों का ध्यान रखना चाहिए।

इस के अलावा, स्मिता अपने कैबरे 'अलीबाबा' में ही तो दिखाएगी। अभी अजगर-नृत्य 'अलीबाबा' का इकलौता शानदार आकर्षण है। फिर श्री भालूचन्द्र का टांग-उठाऊ नृत्य भी···माफ करें, उस नृत्य का नाम 'टांग-उठाऊ' नहीं रख सकूंगा। अभी यह शब्द मैं ने केवल एक सुविधा के लिए बनाया···वह टां.-ऊ. नृत्य भी, स्मिता के सहयोग से, 'अलीबाबा' के मंच पर आ जाएगा और शानदार आकर्षणों की संख्या बढ़ाएगा। इस में मिस गोगो के लिए होड़ की स्थिति कहां है ? वह अपनी जगह, स्मिता अपनी जगह। मुझे ऐसी आशका अभी है तो अवश्य कि स्मिता के तबादले समय-समय पर करते रहने पड़ेगे, लेकिन यदि स्मिता भी कोई धांसू चीज ले आती है तो मिस गोगो की ही तरह उसे भी 'अलीबाबा' में एक लम्बी, अनिश्चित अवधि के लिए क्यों न बांध लिया जाए ? आज

एक धांसू चीज, कल दूसरी, परसों तीसरी और चौथी···सिलसिला एक बार शुरू हुआ नहीं कि स्मिता का दिमाग भी शायद मिस गोगो जैसी ही तेजी से चलने लगे।

चिट्ठी में ये सारी बातें मैं स्मिता को लिख रहा हूं। चिट्ठी लम्बी हुई जा रही है। कोई बात नहीं। मैं मिस गोगो का केवल संरक्षक हूं, जबकि स्मिता का मैं शुभ-चिन्तक हूं। मुझे तो खुशियां मनानी चाहिए कि चिट्ठी लम्बी हुई जा रही है।

'···किन्तु मुझे यहां यह स्पष्ट कर ही देना चाहिए, डार्लिंग, कि तुम्हारे कैबरे-आइटमों पर पहला अधिकार "अलीबाबा" का रहेगा। "अलीबाबा" द्वारा अस्वीकृत आइटम ही तुम दूसरे होटलों में दे सकागी। वैसे तो···काफी मुमकिन है, मैं तुम्हें "अलीबाबा" में नियमित रूप से ही रखना चाहूं, बशर्ते तुम प्लास्टिक-सर्जरी इस तरह करवाओ कि दीर्घ-उरोजा बन जाओ। तुम्हें बताने की जरूरत नहीं कि यह दीर्घता कैबरे की जान होती है। बम्बई में कैबरे की परम्परा दिल्ली से पुरानी है। वहां तुम्हें कोई बहुत अच्छा शिक्षक भी मिल सकता है, जो दिल्ली में शायद न मिले। यदि शिक्षक वहां मिलता हो, तो समझना यही कि बम्बई में तुम्हें केवल प्लास्टिक-सर्जरी नहीं करवानी, बल्कि कैबरे का पूरा ज्ञान भी प्राप्त करना है।'—स्मिता के नाम मेरी कलम चलती जा रही है—'अन्त में एक बात और। मिस गोगो को भूल कर भी ज्ञात नहीं होना चाहिए कि मैं ने ही तुम्हें रिंग-मास्टर से मिलने की सलाह दी। मेरा यह पत्र नितान्त निजी और गुप्त है। मिस गोगो को मैं ऐसी गलतफहमी में नहीं डालना चाहता कि मैं ने ही उन से होड़ करने वाली नर्तकी का सर्जन किया। पोज तुम्हें यही करना है कि रिंग-मास्टर से मिलने का आइडिया तुम्हारा अपना है। फिर तुम्हारी दिल्ली-वापसी पर, "अलीबाबा" में तुम्हें रखते समय, मैं मिस गोगो से कहूंगा कि माई डीयर मिस गोगो, मैं मजबूर हूं। अगर स्मिता को "अलीबाबा" में नहीं रखता, तो वह किसी और होटल की शोभा बढ़ाएगी, जिस

से हमें दोहरा घाटा होगा। पहला घाटा तो यह कि "अलीबाबा" एक नई डान्सर खोएगा। दूसरा यह कि बाजार में नई होड़ का मुकाबला भी करना होगा। जाहिर है कि मिस गोगो को हां कहनी पड़ेगी। सारी बात आई न समझ में ? बेहतर हो, यदि तुम मेरे इस पत्र को पढ़ कर इसी वक्त फाड़ दो, क्योंकि तुम्हारे अनजाने में ही यह पत्र मिस गोगो द्वारा कभी भी पढ़ा जा सकता है। न जाने कौन-सा जादू है कि औरतों के पास दूसरों के पत्र पहुंच ही जाते हैं—किसी-न-किसी दिन।...'

पत्र के समापन पर मैं लिखता हूं—'तुम्हारे फूल का नुकीला कांटा', फिर हस्ताक्षर करता हूं। तब मैं चिट्ठी को लिफाफे में रख कर उस के गोंद पर जीभ फेरता हूं। स्मिता को लिखी चिट्ठियां मैं हमेशा जीभ फेर कर ही बन्द करता हूं। यह कल्पना मुझे आनन्दित करती है कि मेरी जीभ स्मिता पर ही फिर रही है। बन्द लिफाफे पर स्मिता का नाम-पता मैं लिखने वाला हूं कि—

प्रवेश—मिस गोगो।

मैं कलम बन्द कर, नाम-पता-विहीन लिफाफे को कलम के ही साथ, ड्रार में रख लेता हूं। मिस गोगो की तरफ देखता हूं मुस्कराता हूं। वह नहीं मुस्करातीं। पूछतीं भी नहीं कि चिट्ठी मैं किसे लिख रहा था। अजगर-नृत्य दर्शकों के सामने पहली बार पेश करने के क्षण ज्यों-ज्यों नजदीक आ रहे हैं, मिस गोगो में एक व्यापाराना गम्भीरता मुखर हो रही है। "कल से हमें अजगर-नृत्य शुरू करना है।" मेरे सामने की कुर्सी में बैठती हुई वह बोली हैं।

"नृत्य 'मुझे शुरू करना है' के बजाए आप ने 'हमें शुरू करना है' कहा। मुझे अत्यन्त खुशी हुई।" मैं ने कहा, "आप के शब्दों से जाहिर हो गया कि महत्व अकेले नृत्य का नहीं है। महत्व उस मंच का भी है, जिस का निर्माण केवल 'अलीबाबा' कर सकता है।"

"मैं ने वह वाक्य सहजता से कहा था, इतने गम्भीर अर्थ में नहीं।" मिस गोगो इस बार भी न मुस्कराईं, लेकिन मैं इस बार

एक धांसू चीज, कल दूसरी, परसों तीसरी और चौथी···सिलसिला एक बार शुरू हुआ नहीं कि स्मिता का दिमाग भी शायद मिस गोगो जैसी ही तेजी से चलने लगे।

चिट्ठी में ये सारी बातें मैं स्मिता को लिख रहा हूं। चिट्ठी लम्बी हुई जा रही है। कोई बात नहीं। मैं मिस गोगो का केवल संरक्षक हूं, जबकि स्मिता का मैं शुभ-चिन्तक हूं। मुझे तो खुशियां मनानी चाहिए कि चिट्ठी लम्बी हुई जा रही है।

'···किन्तु मुझे यहां यह स्पष्ट कर ही देना चाहिए, डार्लिंग, कि तुम्हारे कैबरे-आइटमों पर पहला अधिकार "अलीबाबा" का रहेगा। "अलीबाबा" द्वारा अस्वीकृत आइटम ही तुम दूसरे होटलों में दे सकोगी। वैसे तो···काफी मुमकिन है, मैं तुम्हें "अलीबाबा" में नियमित रूप से ही रखना चाहूं, बशर्ते तुम प्लास्टिक-सर्जरी इस तरह करवाओ कि दीर्घ-उरोजा बन जाओ। तुम्हें बताने की जरूरत नहीं कि यह दीर्घता कैबरे की जान होती है। बम्बई में कैबरे की परम्परा दिल्ली से पुरानी है। वहां तुम्हें कोई बहुत अच्छा शिक्षक भी मिल सकता है, जो दिल्ली में शायद न मिले। यदि शिक्षक वहां मिलता हो, तो समझना यही कि बम्बई में तुम्हें केवल प्लास्टिक-सर्जरी नहीं करवानी, बल्कि कैबरे का पूरा ज्ञान भी प्राप्त करना है।'—स्मिता के नाम मेरी कलम चलती जा रही है—'अन्त में एक बात और। मिस गोगो को भूल कर भी ज्ञात नहीं होना चाहिए कि मैं ने ही तुम्हें रिंग-मास्टर से मिलने की सलाह दी। मेरा यह पत्र नितान्त निजी और गुप्त है। मिस गोगो को मैं ऐसी गलतफहमी में नहीं डालना चाहता कि मैं ने ही उन से होड़ करने वाली नर्तकी का सर्जन किया। पोज तुम्हें यही करना है कि रिंग-मास्टर से मिलने का आइडिया तुम्हारा अपना है। फिर तुम्हारी दिल्ली-वापसी पर, "अलीबाबा" में तुम्हें रखते समय, मैं मिस गोगो से कहूंगा कि माई डीयर मिस गोगो, मैं मजबूर हूं। अगर स्मिता को "अलीबाबा" में नहीं रखता, तो वह किसी और होटल की शोभा बढ़ाएगी, जिस

से हमें दोहरा घाटा होगा। पहला घाटा तो यह कि "अलीबाबा" एक नई डान्सर खोएगा। दूसरा यह कि बाजार में नई होड़ का मुकाबला भी करना होगा। जाहिर है कि मिस गोगो को हां कहनी पड़ेगी। सारी बात आई न समझ में ? बेहतर हो, यदि तुम मेरे इस पत्र को पढ़ कर इसी वक्त फाड़ दो, क्योंकि तुम्हारे अनजाने में ही यह पत्र मिस गोगो द्वारा कभी भी पढ़ा जा सकता है। न जाने कौन-सा जादू है कि औरतों के पास दूसरों के पत्र पहुंच ही जाते हैं—किसी-न-किसी दिन।...'

पत्र के समापन पर मैं लिखता हूं—'तुम्हारे फूल का नुकीला कांटा', फिर हस्ताक्षर करता हूं। तब मैं चिट्ठी को लिफाफे में रख कर उस के गोंद पर जीभ फेरता हूं। स्मिता को लिखी चिट्ठियां मैं हमेशा जीभ फेर कर ही बन्द करता हूं। यह कल्पना मुझे आनन्दित करती है कि मेरी जीभ स्मिता पर ही फिर रही है। बन्द लिफाफे पर स्मिता का नाम-पता मैं लिखने वाला हूं कि—

प्रवेश—मिस गोगो।

मैं कलम बन्द कर, नाम-पता-विहीन लिफाफे को कलम के ही साथ, ड्रार में रख लेता हूं। मिस गोगो की तरफ देखता हूं मुस्कराता हूं। वह नहीं मुस्करातीं। पूछतीं भी नहीं कि चिट्ठी मैं किसे लिख रहा था। अजगर-नृत्य दर्शकों के सामने पहली बार पेश करने के क्षण ज्यों-ज्यों नजदीक आ रहे हैं, मिस गोगो में एक व्यापाराना गम्भीरता मुखर हो रही है। "कल से हमें अजगर-नृत्य शुरू करना है।" मेरे सामने की कुर्सी में बैठती हुई वह बोली हैं।

"नृत्य 'मुझे शुरू करना है' के बजाए आप ने 'हमें शुरू करना है' कहा। मुझे अत्यन्त खुशी हुई।" मैं ने कहा, "आप के शब्दों से जाहिर हो गया कि महत्व अकेले नृत्य का नहीं है। महत्व उस मंच का भी है, जिस का निर्माण केवल 'अलीबाबा' कर सकता है।"

"मैं ने वह वाक्य सहजता से कहा था, इतने गम्भीर अर्थ में नहीं।" मिस गोगो इस बार भी न मुस्कराईं, लेकिन मैं इस बार

भी मुस्कराया और बोला, "मैं आप के स्वभाव का कायल हूं, मिस गोगो।"

"कार्यक्रम में एक सुधार मेरे दिमाग में आया है। आप की राय पूछनी है।"

"सुधार?"

"यस, बॉस ! मैं चालीस नकाब चालीस मेहमानों को बांटूंगी—है न ?"

"हां-हां।"

"सोचती हूं, नकाब मैं सिर्फ बांटूं नहीं; मेहमानों के चेहरों पर स्वयं बांध भी दूं। इस में मेहमानों को आत्मीयता का आभास मिलेगा। साथ-साथ, अपने चेहरे और सिर पर वे मेरी उंगलियों का स्पर्श भी पा सकेंगे।"

"गुड आइडिया।" मैं खिल गया।

"किन्तु चालीस नकाब बांधने में चालीस-पैंतालीस मिनट लग जाएंगे। यह बहुत ज्यादा है। रोज नकाब सप्लाई करने का ठेका आप ने जिस दरजी को दिया है, जरा उसे फोन तो करिए। कहिए कि नकाबों के पीछे वह तसमे न लगाए। तसमों के बजाए वह लगा दे रबर, ताकि हर नकाब चुटकियों में पहनाया जा सके।

"कल के शो के लिए सारे नकाब आज शाम को आ जाएंगे।" मैं ने सोच में पड़ते हुए कहा, "उन में तसमे अब तक लग भी चुके होंगे। तसमे निकाल कर सब में रबर लगाना आज शाम तक तो मुश्किल ही है।"

"मुश्किल क्या है ! दाम कराए काम ! फोन करिए तो सही। दरजी से कहिए कि नकाब वह आज शाम के बजाए भले कल सुबह ले आए, किन्तु लाए रबर वाले ही।"

"ओके, मैं अभी फोन करता हूं।"

"बस, यही कहने आई थी।" मिस गोगो उठीं और जाने लगीं।

(.) वाकई दाम कराए काम ! अगले दिन सुबह होते-होते सौ नकाब रबर वाले आ गए। रोज अजगर-नृत्य के दो शो होंगे। प्रत्येक शो के चालीस के हिसाब से कुल नकाब चाहिए अस्सी। बीस हुए अतिरिक्त; ताकि यदि कोई फट जाए या फटा हुआ निकले तो मुश्किल न हो। एक परिचित दरजी को रोज सौ-सौ नकाब लाते रहने का ठेका दे कर मैं ने इस पचड़े से मुक्ति पा ली है। रोज के बीस-बीस नकाबों की बचत जब बहुत जमा हो जाएगी, तब किसी-किसी दिन नकाब नहीं मंगाए जाएंगे।

आज ! आज ही है वह सनसनीखेज़ दिन, जिसके डूबने का बेकरारी से इन्तजार है सारी दिल्ली की जनता को। हर अखबार में प्रकाशित विज्ञापन अजगर के बड़े-बड़े फोटो प्रदर्शित कर रहे हैं। फोटो के नीचे लिखा है—इस अजगर का नाम है ठोलू। यही है वह ठोलू, जो एक सनसनाती सुन्दरी को इस तरह पेश करेगा, जिस तरह आज तक दुनिया की कोई सुन्दरी कभी कहीं पेश नहीं की गई। पूरा विवरण होटल 'अलीबाबा' से। लिखिए। मिलिए। फोन करिए। कैबरे-डान्सरों का अनोखा हरम—'अलीबाबा' ! याद रखिए, 'अलीबाबा' के कैबरे-शो पूरी दिल्ली में सब से बेहतर हैं।

हर अखबार में ठोलू ही ठोलू। एक अजगर का यह ठोलू नाम है न मजेदार ? यह मेरा आविष्कार है।

आदेशानुसार, विज्ञापनों की सभी कतरनें काउण्टर-क्लर्क ने मुझे मेरे आफिस में भिजवा दी हैं। मेरा निजी कमरा जिस मंजिल पर है, आफिस भी उसी मंजिल पर। एक-एक कतरन उठा कर मैं देखता हूं और देखता रह जाता हूं। घणणणण ! घणणणण ! फोन बजता है। मैं रिसीवर उठाता हूं।

"आप से मिलने के लिए 'हिन्दुस्तान समाचार', 'समाचार भारती', 'पी. टी. आई.', 'द हिन्दुस्तान टाइम्स', 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'सन्ध्या-काल' और 'द टाइम्स आफ इण्डिया, दिल्ली संस्करण' के प्रतिनिधि आए हुए हैं। बहुत जिद कर रहे

भी मुस्कराया और बोला, "मैं आप के स्वभाव का कायल हूं, मिस गोगो।"

"कार्यक्रम में एक सुधार मेरे दिमाग में आया है। आप की राय पूछनी है।"

"सुधार ?"

"यस, बॉस ! मैं चालीस नकाब चालीस मेहमानों को बांटूंगी—है न ?"

"हां-हां।"

"सोचती हूं, नकाब मैं सिर्फ बांटूं नहीं; मेहमानों के चेहरों पर स्वयं बांध भी दूं। इस में मेहमानों को आत्मीयेता का आभास मिलेगा। साथ-साथ, अपने चेहरे और सिर पर वे मेरी उंगलियों का स्पर्श भी पा सकेंगे।"

"गुड आइडिया।" मैं खिल गया।

"किन्तु चालीस नकाब बांधने में चालीस-पैंतालीस मिनट लग जाएंगे। यह बहुत ज्यादा है। रोज नकाब सप्लाई करने का ठेका आप ने जिस दरजी को दिया है, जरा उसे फोन तो करिए। कहिए कि नकाबों के पीछे वह तसमे न लगाए। तसमों के बजाए वह लगा दे रबर, ताकि हर नकाब चुटकियों में पहनाया जा सके।

"कल के शो के लिए सारे नकाब आज शाम को आ जाएंगे।" मैं ने सोच में पड़ते हुए कहा, "उन में तसमे अब तक लग भी चुके होंगे। तसमे निकाल कर सब में रबर लगाना आज शाम तक तो मुश्किल ही है।"

"मुश्किल क्या है ! दाम कराए काम ! फोन करिए तो सही। दरजी से कहिए कि नकाब वह आज शाम के बजाए भले कल सुबह ले आए, किन्तु लाए रबर वाले ही।"

"ओके, मैं अभी फोन करता हूं।"

"बस, यही कहने आई थी।" मिस गोगो उठीं और जाने लगीं।

⊙ वाकई दाम कराए काम ! अगले दिन सुबह होते-होते सौ नकाब रबर वाले आ गए। रोज अजगर-नृत्य के दो शो होंगे। प्रत्येक शो के चालीस के हिसाब से कुल नकाब चाहिए अस्सी। बीस हुए अतिरिक्त; ताकि यदि कोई फट जाए या फटा हुआ निकले तो मुश्किल न हो। एक परिचित दरजी को रोज सौ-सौ नकाब लाते रहने का ठेका दे कर मैं ने इस पचड़े से मुक्ति पा ली है। रोज के बीस-बीस नकाबों की बचत जब बहुत जमा हो जाएगी, तब किसी-किसी दिन नकाब नहीं मंगाए जाएंगे।

आज ! आज ही है वह सनसनीखेज़ दिन, जिसके डूबने का बेकरारी से इन्तजार है सारी दिल्ली की जनता को। हर अखबार में प्रकाशित विज्ञापन अजगर के बड़े-बड़े फोटो प्रदर्शित कर रहे हैं। फोटो के नीचे लिखा है—इस अजगर का नाम है ठोलू। यही है वह ठोलू, जो एक सनसनाती सुन्दरी को इस तरह पेश करेगा, जिस तरह आज तक दुनिया की कोई सुन्दरी कभी कहीं पेश नहीं की गई। पूरा विवरण होटल 'अलीबाबा' से। लिखिए। मिलिए। फोन करिए। कैबरे-डान्सरों का अनोखा हरम—'अलीबाबा' ! याद रखिए, 'अलीबाबा' के कैबरे-शो पूरी दिल्ली में सब से बेहतर हैं।

हर अखबार में ठोलू ही ठोलू। एक अजगर का यह ठोलू नाम है न मजेदार ? यह मेरा आविष्कार है।

आदेशानुसार, विज्ञापनों की सभी कतरनें काउण्टर-क्लर्क ने मुझे मेरे आफिस में भिजवा दी हैं। मेरा निजी कमरा जिस मंजिल पर है, आफिस भी उसी मंजिल पर। एक-एक कतरन उठा कर मैं देखता हूं और देखता रह जाता हूं। घणणण ! घणणण ! फोन बजता है। मैं रिसीवर उठाता हू।

"आप से मिलने के लिए 'हिन्दुस्तान समाचार', 'समाचार भारती', 'पी. टी. आई.', 'द हिन्दुस्तान टाइम्स', 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान', 'सन्ध्या-काल' और 'द टाइम्स आफ इण्डिया, दिल्ली संस्करण' के प्रतिनिधि आए हुए हैं। बहुत जिद कर रहे

हैं।" काउण्टर-क्लर्क ने मजबूर स्वर में बताया है।

"एक-साथ इतने प्रतिनिधि ?" मैं ने आश्चर्य किया है।

"जी हां।"

"क्यों आए हैं ?"

"वही—अजगर-नृत्य की रिपोर्ट लिखना चाहते हैं।"

"यों कहिए न कि रिपोर्ट के बहाने अजगर-नृत्य मुफ्त में देखना चाहते हैं।" मैं इतने धीमे स्वर में बोलता हूं कि काउण्टर पर मेरे शब्द केवल क्लर्क के कानों तक पहुंचें, नजदीक ही खड़े पत्रकार सुन न लें।

"जी हां, यही बात है।"

"बता दीजिए कि अजगर-नृत्य की सीटें लिमिटेड हैं और एक भी पास की गुंजाइश नहीं। इस के अलावा, अजगर-नृत्य के फोटो हम किसी सूरत में नहीं खींचने देंगे। जहां तक विवरण का सवाल है, वह तो अजगर-नृत्य की परिचय-पुस्तिका से ले कर भी छापा जा सकता है।"

"मैं ने सब समझाया है, पर वे मानते नहीं। मेरा घेराव कर दिया है।

"मुझे दिक मत करिए। उन्हें भगा दीजिए।" कह मैं ने रिसीवर पटक दिया है।

रिसीवर मैं ने अपने गुस्से के दिखाने के लिए ही पटका है, जबकि असलियत में, इतने सारे पत्रकारों की टोली यहां आना मेरी असीम खुशी का ही कारण बना है। मारे खुशी के मुझे स्मिता की याद आ जाती है और फिर सुन्द्ररा-सुन्दरी की। सुन्दरा-सुन्दरी कब के 'अलीबाबा' से जा चुके। उन की मुद्राओं का सेट वी. टी. यहां छोड़ गया है। आज के अजगर-नृत्य को वी. टी. का कैमरा कवर करेगा। मैं अपनी खुशी को और जोरदार बनाने के लिए मुद्राओं का सेट ड्रार से निकाल कर देखने लगता हूं। सनसनी तो खैर क्या होगी है, लेकिन मज़ा बहुत आता है। घरररर ! घरर-

णए ! फिर किस का फोन ? मेरा रिसीवर उठाना । 'हैलो' कहना। "ओहो ! आप हैं !" मेरा बोल उठना, "कहिए, मिस्टर चन्दन वाली, क्या हाल हैं ?"

"आप की दुआ है।" चन्दन वाली का स्वर फोन पर भी परिचित लग रहा है।

"कैसे याद किया ?" मैं ने पूछा है।

"अ...बात यह है...मैं ने आज के शो का टिकट मंगवा रखा है। मेरा मतलब है, आज का कैबरे-आइटम..."

"जी।"

"अजगर-नृत्य की विवरण-पुस्तिका के अनुसार केवल चालीस व्यक्ति, जिन का चुनाव मिस गोगो ऐन मौके पर करेंगी, अजगर-नृत्य देख सकेंगे।"

"जी हां, किन्तु शेष मेहमानों की भी तबीयत खुश कर दी जाएगी। जापानी गुड़िया मिस मिचिको सब के सामने..."

"जी, लेकिन.. मेरी रुचि सिर्फ अजगर-नृत्य में है।"

"तो ?"

"फ़र्ज़ करिए, मिस गोगो ने मुझे नकाब न दिया। सम्भावना यही है कि वह नहीं देंगी।"

"मैं कैसे कह सकता हूं।"

"मुझे यही लगता है। जो भी है...फोन मैं ने इस लिए किया कि क्या आप...एक दोस्त के नाते—यदि मेरा चुनाव न हो तो...मुझे कोई पास-वास नहीं दे..."

"सॉरी ! एक भी पास या वास की गुंजाइश नहीं है।" मैं ने फौरन कहा है, "मिस गोगो को भी, दया कर, इस बारे में फोन मत करिएगा। वह एकदम चिढ़ जाएंगी।"

"नहीं, नहीं, उन्हें क्यों करूंगा फोन ? इसी लिए तो मैं ने आप को कष्ट दिया। एक खास वजह है कि क्यों मैं इस नृत्य को देखना चाहता हूं।"

हैं।" काउण्टर-क्लर्क ने मजबूर स्वर में बताया है।

"एक-साथ इतने प्रतिनिधि ?" मैं ने आश्चर्य किया है।

"जी हां।"

"क्यों आए हैं ?"

"वही—अजगर-नृत्य की रिपोर्ट लिखना चाहते हैं।"

"यों कहिए न कि रिपोर्ट के बहाने अजगर-नृत्य मुफ्त में देखना चाहते हैं।" मैं इतने धीमे स्वर में बोलता हूं कि काउण्टर पर मेरे शब्द केवल क्लर्क के कानों तक पहुंचें, नजदीक ही खड़े पत्रकार सुन न लें।

"जी हां, यही बात है।"

"बता दीजिए कि अजगर-नृत्य की सीटें लिमिटेड हैं और एक भी पास की गुंजाइश नहीं। इस के अलावा, अजगर-नृत्य के फोटो हम किसी सूरत में नहीं खींचने देंगे। जहां तक विवरण का सवाल है, वह तो अजगर-नृत्य की परिचय-पुस्तिका से ले कर भी छापा जा सकता है।"

"मैं ने सब समझाया है, पर वे मानते नहीं। मेरा घेराव कर दिया है।

"मुझे दिक मत करिए। उन्हें भगा दीजिए।" कह मैं ने रिसीवर पटक दिया है।

रिसीवर मैं ने अपने गुस्से के दिखाने के लिए ही पटका है, जबकि असलियत में, इतने सारे पत्रकारों की टोली यहां आना मेरी असीम खुशी का ही कारण बना है। मारे खुशी के मुझे स्मिता की याद आ जाती है और फिर सुन्दरा-सुन्दरी की। सुन्दरा-सुन्दरी कब के 'अलीबाबा' से जा चुके। उन की मुद्राओं का सेट वी. टी. यहां छोड़ गया है। आज के अजगर-नृत्य को वी. टी. का कैमरा कवर करेगा। मैं अपनी खुशी को और जोरदार बनाने के लिए मुद्राओं का सेट ड्रार से निकाल कर देखने लगता हूं। सनसनी तो खैर क्या होगी है, लेकिन मजा बहुत आता है। घणणणण ! घण-

-एगा ! फिर किस का फोन ? मेरा रिसीवर उठाना। 'हैलो' कहना। "ओहो ! आप हैं !" मेरा बोल उठना, "कहिए, मिस्टर चन्दन वाली, क्या हाल हैं ?"

"आप की दुआ है।" चन्दन वाली का स्वर फोन पर भी परिचित लग रहा है।

"कैसे याद किया ?" मैं ने पूछा है।

"अ...बात यह है...मैं ने आज के शो का टिकट मंगवा रखा है। मेरा मतलब है, आज का कैबरे-आइटम..."

"जी।"

"अजगर-नृत्य की विवरण-पुस्तिका के अनुसार केवल चालीस व्यक्ति, जिन का चुनाव मिस गोगो ऐन मौके पर करेंगी, अजगर-नृत्य देख सकेंगे।"

"जी हां, किन्तु शेष मेहमानों की भी तबीयत खुश कर दी जाएगी। जापानी गुड़िया मिस मिचिको सब के सामने..."

"जी, लेकिन.. मेरी रुचि सिर्फ अजगर-नृत्य में है।"

"तो ?"

"फ़र्ज़ करिए, मिस गोगो ने मुझे नकाब न दिया। सम्भावना यही है कि वह नहीं देंगी।"

"मैं कैसे कह सकता हूं।"

"मुझे यही लगता है। जो भी है...फोन मैं ने इस लिए किया कि क्या आप...एक दोस्त के नाते—यदि मेरा चुनाव न हो तो... मुझे कोई पास-वास नहीं दे..."

"सॉरी ! एक भी पास या वास की गुंजाइश नहीं है।" मैं ने फौरन कहा है, "मिस गोगो को भी, दया कर, इस बारे में फोन मत करिएगा। वह एकदम चिढ़ जाएंगी।"

"नहीं, नहीं, उन्हें क्यों करूंगा फोन ? इसी लिए तो मैं ने आप को कष्ट दिया। एक खास वजह है कि क्यों मैं इस नृत्य को देखना चाहता हूं।"

"कौन-सी खास वजह, वकील साहब ?" मैं ने सावधान होते जाते हुए पूछा है। ये वकील मुझे कभी भी पचड़े में डाल सकते हैं। ये तो पत्रकारों से भी ज्यादा पहुंचे हुए होते हैं।

"वजह आप आलरेडी जानते हैं।"

"नहीं तो !"

"मेरे और रमा बिन्द्रा के सम्बन्ध आप से छिपे तो हैं नहीं।"

"ओह, हां, जी हां···लेकिन क्या आप इसी वजह से अजगर-नृत्य देखने को बेताब हैं ?"

"जी हां।"

"यह तो एक ऐसा वजह है कि आप को 'अलीबाबा' की परछाईं से भी दूर रहना चाहिए। अगर सचमुच आप मिस गोगो के प्रेमी थे तो—"

"प्रेमी नहीं, मैं दोस्त था और रहूंगा। हमेशा।"

"सॉरी, मैं आप की कोई मदद नहीं कर सकता।"

"मैं देखना चाहता हूं कि मेरी एक खूबसूरत दोस्त कितनी दिलेर आर्टिस्ट है। प्लीज़···"

"कैबरे देखने आप शौक से आइए। मैं क्यों रोकूं ? आपने टिकट जो एडान्स बुकिंग में खरीदा है—एडवान्स बुकिंग में ही खरीदा है न ?"

"जी हां, दूसरा कोई चारा भी नहीं था।"

"इसी लिए तो कहता हूं कि मैं क्यों रोकूं ? टिकट आप के पास है। शो देखने के लिए शौक से आइए···और यह मिस गोगो पर छोड़ दीजिए कि आप का चुनाव वह करती हैं या नहीं। यक़ीन जानिए कि वह आप को पहचान अवश्य लेंगी—चाहे आप कहीं भी बैठे होंगे ! मुझे तंग न करिए। मैं बीच में नहीं पड़ सकता। बाय-बाय !" और मैं ने रिसीवर पटक कर, काफ़ी देर तक, मन्द-मन्द मुस्कान जारी रखी।

सहसा मुस्कान डूबने लगी मेरी। यह चन्दन बाली अवश्य सफेद

झूठ बोला है। अपनी दिलेर दोस्त का कमाल देखने के लिए नहीं, बल्कि किसी और ही 'खास वजह' से यह अजगर-नृत्य देखने को बेताब है। क्या इरादा है इस वकील के बच्चे का? उस दिन मिस गोगो ने उसे कोई कम अपमानित नहीं किया था। आश्चर्य कैसा यदि वह बदला लेना चाहता हो? आज शो का पहला ही दिन है। यह चन्दनवा कम्बख्त आज ही कोई बदमाशी न करे। इस पर निगाह रखनी पड़ेगी। कैबरे-कक्ष में मैं खुद हाजिर रहूंगा आज। लेकिन आखिर किस तरह की बदमाशी वह कर सकता है? 'वह असमर्थ है, वह असमर्थ है', मैं मन-ही-मन दोहराता हूं, किन्तु रुकी हुई मुस्कान जारी नहीं होती, सो नहीं ही होती। घरणरण! घरणरण! साला यह हरामी फोन! "हैलो?"

"सर!" महिला काउण्टर-क्लर्क की आवाज़, "मिस गोगो ने अभी-अभी मुझे आदेश दिया है कि आज एक भी फोन उन के एक्स्टेन्शन पर न दिया जाए। आज वह किसी से मिलना भी नहीं चाहतीं। उन्होंने कहा है कि उन के इस आदेश की सूचना मैं आप को दे दूं।"

"थैंक्यू वेरी मच।" मैं कहता हूं और मेरे हाथ में सुन्दरा-सुन्दरी की मुद्रा है।

"उन्होंने एक और सूचना आप तक भिजवाई है।"

"कहिए।"

"मिस्टर चन्दन बाली नाम के कोई साहब हैं। उन्होंने अभी-अभी मिस गोगो से फोन पर बातचीत करने का प्रयास किया, लेकिन मिस गोगो ने नाम सुनते ही कनेक्शन काट दिया।"

"क्या यही वह 'एक और सूचना' है, जो मुझे दी जानी है?" मैं सुन्दरे-सुन्दरी की एक और मुद्रा पर दृष्टि-घात करते-करते, गम्भीरता से पूछता हूं।

"यस, सर।"

"थैंक्यू वेरी मच।" कह कर मैं ने फोन रखा ही है कि मिनट

"कौन-सी खास वजह, वकील साहब ?" मैं ने सावधान होते जाते हुए पूछा है। ये वकील मुझे कभी भी पचड़े में डाल सकते हैं। ये तो पत्रकारों से भी ज्यादा पहुंचे हुए होते हैं।

"वजह आप आलरेडी जानते हैं।"

"नहीं तो !"

"मेरे और रमा बिन्द्रा के सम्बन्ध आप से छिपे तो हैं नहीं।"

"ओह, हां, जी हां…लेकिन क्या आप इसी वजह से अजगर-नृत्य देखने को बेताब हैं ?"

"जी हां।"

"यह तो एक ऐसा वजह है कि आप को 'अलीबाबा' की परछाईं से भी दूर रहना चाहिए। अगर सचमुच आप मिस गोगो के प्रेमी थे तो—"

"प्रेमी नहीं, मैं दोस्त था और रहूंगा। हमेशा।"

"सॉरी, मैं आप की कोई मदद नहीं कर सकता।"

"मैं देखना चाहता हूं कि मेरी एक खूबसूरत दोस्त कितनी दिलेर आर्टिस्ट है। प्लीज़…"

"कैबरे देखने आप शौक से आइए। मैं क्यों रोकूं ? आपने टिकट जो एडान्स बुकिंग में खरीदा है—एडवान्स बुकिंग में ही खरीदा है न ?"

"जी हां, दूसरा कोई चारा भी नहीं था।"

"इसी लिए तो कहता हूं कि मैं क्यों रोकूं ? टिकट आप के पास है। शो देखने के लिए शौक से आइए…और यह मिस गोगो पर छोड़ दीजिए कि आप का चुनाव वह करती हैं या नहीं। यकीन जानिए कि वह आप को पहचान अवश्य लेंगी—चाहे आप कहीं भी बैठे होंगे ! मुझे तंग न करिए। मैं बीच में नहीं पड़ सकता। बाय-बाय !" और मैं ने रिसीवर पटक कर, काफ़ी देर तक, मन्द-मन्द मुस्कान जारी रखी।

सहसा मुस्कान डूबने लगी मेरी। यह चन्दन वाली अवश्य सफेद

झूठ बोला है। अपनी दिलेर दोस्त का कमाल देखने के लिए नहीं, बल्कि किसी और ही 'खास वजह' से यह अजगर-नृत्य देखने को बेताब है। क्या इरादा है इस वकील के बच्चे का? उस दिन मिस गोगो ने उसे कोई कम अपमानित नहीं किया था। आश्चर्य कैसा यदि वह बदला लेना चाहता हो? आज शो का पहला ही दिन है। यह चन्दनवा कम्बख्त आज ही कोई बदमाशी न करे। इस पर निगाह रखनी पड़ेगी। कैबरे-कक्ष में मैं खुद हाजिर रहूंगा आज। लेकिन आखिर किस तरह की बदमाशी वह कर सकता है? 'वह असमर्थ है, वह असमर्थ है', मैं मन-ही-मन दोहराता हूं, किन्तु रुकी हुई मुस्कान जारी नहीं होती, सो नहीं ही होती। घरणरण! घरणरण! साला यह हरामी फोन! "हैलो?"

"सर!" महिला काउण्टर-क्लर्क की आवाज़, "मिस गोगो ने अभी-अभी मुझे आदेश दिया है कि आज एक भी फोन उन के एक्स्टेन्शन पर न दिया जाए। आज वह किसी से मिलना भी नहीं चाहतीं। उन्होंने कहा है कि उन के इस आदेश की सूचना मैं आप को दे दूं।"

"थैंक्यू वेरी मच।" मैं कहता हूं और मेरे हाथ में सुन्दरा-सुन्दरी की मुद्रा है।

"उन्होंने एक और सूचना आप तक भिजवाई है।"

"कहिए।"

"मिस्टर चन्दन बाली नाम के कोई साहब हैं। उन्होंने अभी-अभी मिस गोगो से फोन पर बातचीत करने का प्रयास किया, लेकिन मिस गोगो ने नाम सुनते ही कनेक्शन काट दिया।"

"क्या यही वह 'एक और सूचना' है, जो मुझे दी जानी है?" मैं सुन्दरे-सुन्दरी की एक और मुद्रा पर दृष्टि-घात करते-करते, गम्भीरता से पूछता हूं।

"यस, सर।"

"थैंक्यू वेरी मच।" कह कर मैं ने फोन रखा ही है कि मिनट

भर में—घणणणण ! घणणणण ! मेरी मुट्ठियां भिंच जाती है। अभी जब मैं मुद्राओं द्वारा नयनसुख लूटने के मूड में हूं, साला यह काला-कलूटा फोन का बच्चा···किन्तु रिसीवर उठाते ही मैं अपने स्वर में शान्ति का ढोंग रच लेता हूं, "हैलो ?"

जो स्वर और शब्द मैं सुनता हूं, उन से मेरी स्मृति झनझनाए बिना नहीं रहती। इस बार फोन किया है इन्द्र खोसला ने। चिरंजीव कुमारी रमा बिन्द्रा के पूज्य बड़े भाई साहब श्रीमान इन्द्र खोसला बोले कि अजगर-नृत्य देखना, एक खास वजह से, उन के लिए बड़ा जरूरी है, लेकिन चूंकि मिस गोगो फोन पर आज उपलब्ध नहीं वह उन से बतिया नहीं पा रहे।

"वह खास वजह कौन-सी है, भाई साहब ?" मैं ने इन्द्र खोसला को 'भाई साहब' कह दिया है, हलांकि मेरा व्यंग्य उस के पल्ले नहीं पड़ा होगा। कैसा रहे, अगर आज मैं इन्द्र खोसला को फोन पर ही ठांय-ठांय कर दूं ?

मेरे प्रश्न के उत्तर में वह बोला है, "जी, बात यह है, मुझे नौकरा मिल गई है।"

"क्या यह नौकरी मिल जाने की ही खुशी है कि आप अपनी बहनजी का नंगा नाच देखना चाहते हैं ?" मैं बिना हंसे ठांय-ठांय कर देता हूं, हालांकि मुझे भय है कि कहीं ठांय-ठांय के बीच ही मैं अचानक हंस न पड़ूं। फोन के उस छोर पर इन्द्र खोसला जरूर हक्का-बक्का रह गया होगा, लेकिन जो मैं ने अभी कहा, झूठ तो नहीं कहा ? मैं गदगदायमान हूं।

"जी, बात यह है···" इन्द्र खोसला एक खामोशी के बाद ही शुरू कर पाता है।

"कहिए, कहिए।"

"मेरी नौकरी 'जीव-रक्षा-परिषद' में लगी है। उस दिन मैं जहां हड़बड़ी में इण्टरव्यू देने गया था न ? वहीं।"

"बड़ी खुशी की बात है।"

"उसी 'जीव-रक्षा-परिषद' ने मुझे अजगर-नृत्य देखने की जिम्मेदारी सौंपी है। अब मान लीजिए कि मिस बिन्द्रा...सॉरी...मिस गोगो मेरा चुनाव नहीं करतीं।"

"जी हां, ऐसा हो सकता है।"

"किन्तु मैं आज ही अजगर-नृत्य देखना चाहता हूं। कैबरे का आज का टिकट 'जीव-रक्षा-परिषद' ने मंगवा रखा है। परिषद के पास इतने फण्ड्स नहीं हैं कि ऐसा खर्च वह बार-बार कर पाए। आई काण्ट टेक चान्सेस।"

"तो मैं क्या करूं ?"

"अगर चालीस व्यक्तियों में मेरा चुनाव न हो, तो प्लीज...क्या आप मुझे कोई पास दिला..."

"नो, नो, नो, मिस्टर खोसला, यह बिल्कुल नामुमकिन है। वहां कुल चालीस ही सीटें हैं, जो भर जाएंगी। आज तो वह आइटम मुझे भी देखने को नहीं मिलेगा।"

"मुझे सीट की जरूरत नहीं है। मैं वहां खड़े-खड़े नृत्य देख लूंगा।"

"खूब कही आप ने ? कैबरे है या नौटंकी ?"

"जी, मैं...कैसे समझाऊं आप को ? मैं मजबूर हूं, साहब, बेहद मजबूर ! यह मेरी इज्जत और नौकरी का सवाल है। अगर मैं ने अजगर-नृत्य आज न देखा, तो यहां परिषद में मेरा इम्प्रेशन एकदम खराब हो जाएगा। यहां मैं सब से कह बैठा हूं कि मिस गोगो से मेरी जान-पहचान है। मेरी नाक कट जाएगी, अगर मिस गोगो ने मुझे नकाब न दिया। मुझे अजगर-नृत्य हर हालत में आज ही देखना है।"

"मुझे समझ में नहीं आता कि 'जीव-रक्षा-परिषद' जैसी संस्था को अजगर-नृत्य में इतनी दिलचस्पी क्यों है।"

"जी, बात यह है..."

"कहिए, कहिए, रुकिए मत, मेरे पास वक्त नहीं है।"

"अजगर-नृत्य अपनी आंखों से देख कर, परिषद के लिए मुझे

भर में—घरररर ! घरररर ! मेरी मुट्ठियां भिंच जाती है । अभी जब मैं मुद्राओं द्वारा नयनसुख लूटने के मूड में हूं, साला यह काला-कलूटा फोन का बच्चा···किन्तु रिसीवर उठाते ही मैं अपने स्वर में शान्ति का ढोंग रच लेता हूं, "हैलो ?"

जो स्वर और शब्द मैं सुनता हूं, उन से मेरी स्मृति झनझनाए बिना नहीं रहती । इस बार फोन किया है इन्द्र खोसला ने । चिरंजीव कुमारी रमा बिन्द्रा के पूज्य बड़े भाई साहब श्रीमान इन्द्र खोसला बोले कि अजगर-नृत्य देखना, एक खास वजह से, उन के लिए बड़ा जरूरी है, लेकिन चूंकि मिस गोगो फोन पर आज उपलब्ध नहीं वह उन से बतिया नहीं पा रहे ।

"वह खास वजह कौन-सी है, भाई साहब ?" मैं ने इन्द्र खोसला को 'भाई साहब' कह दिया है, हलांकि मेरा व्यंग्य उस के पल्ले नहीं पड़ा होगा । कैसा रहे, अगर आज मैं इन्द्र खोसला को फोन पर ही ठांय-ठांय कर दूं ?

मेरे प्रश्न के उत्तर में वह बोला है, "जी, बात यह है, मुझे नौकरी मिल गई है ।"

"क्या यह नौकरी मिल जाने की ही खुशी है कि आप अपनी बहनजी का नंगा नाच देखना चाहते हैं ?" मैं बिना हंसे ठांय-ठांय कर देता हूं, हालांकि मुझे भय है कि कहीं ठांय-ठांय के बीच ही मैं अचानक हंस न पड़ूं । फोन के उस छोर पर इन्द्र खोसला जरूर हक्का-बक्का रह गया होगा, लेकिन जो मैं ने अभी कहा, झूठ तो नहीं कहा ? मैं गदगदायमान हूं ।

"जी, बात यह है···" इन्द्र खोसला एक खामोशी के बाद ही शुरू कर पाता है ।

"कहिए, कहिए ।"

"मेरी नौकरी 'जीव-रक्षा-परिषद' में लगी है । उस दिन मैं जहां हड़बड़ी में इण्टरव्यू देने गया था न ? वहीं ।"

"बड़ी खुशी की बात है ।"

"उसी 'जीव-रक्षा-परिषद' ने मुझे अजगर-नृत्य देखने की जिम्मेदारी सौंपी है। अब मान लीजिए कि मिस बिन्द्रा...सॉरी...मिस गोगो मेरा चुनाव नहीं करतीं।"

"जी हां, ऐसा हो सकता है।"

"किन्तु मैं आज ही अजगर-नृत्य देखना चाहता हूं। कैबरे का आज का टिकट 'जीव-रक्षा-परिषद' ने मंगवा रखा है। परिषद के पास इतने फण्ड्स नहीं हैं कि ऐसा खर्च वह बार-बार कर पाए। आई काण्ट टेक चान्सेस।"

"तो मैं क्या करूं ?"

"अगर चालीस व्यक्तियों में मेरा चुनाव न हो, तो प्लीज...क्या आप मुझे कोई पास दिला..."

"नो, नो, नो, मिस्टर खोसला, यह बिल्कुल नामुमकिन है। वहां कुल चालीस ही सीटें हैं, जो भर जाएंगी। आज तो वह आइटम मुझे भी देखने को नहीं मिलेगा।"

"मुझे सीट की जरूरत नहीं है। मैं वहां खड़े-खड़े नृत्य देख लूंगा।"

"खूब कही आप ने ? कैबरे है या नौटंकी ?"

"जी, मैं...कैसे समझाऊं आप को ? मैं मजबूर हूं, साहब, बेहद मजबूर ! यह मेरी इज्जत और नौकरी का सवाल है। अगर मैं ने अजगर-नृत्य आज न देखा, तो यहां परिषद में मेरा इम्प्रेशन एकदम खराब हो जाएगा। यहां मैं सब से कह बैठा हूं कि मिस गोगो से मेरी जान-पहचान है। मेरी नाक कट जाएगी, अगर मिस गोगो ने मुझे नकाब न दिया। मुझे अजगर-नृत्य हर हालत में आज ही देखना है।"

"मुझे समझ में नहीं आता कि 'जीव-रक्षा-परिषद' जैसी संस्था को अजगर-नृत्य में इतनी दिलचस्पी क्यों है।"

"जी, बात यह है..."

"कहिए, कहिए, रुकिए मत, मेरे पास वक्त नहीं है।"

"अजगर-नृत्य अपनी आंखों से देख कर, परिषद के लिए मुझे

एक रिपोर्ट तैयार करनी है ।"

"रिपोर्ट ?"

"जी हां···मुझे इसकी जांच करनी है कि नृत्य के दौरान अजगर के साथ···"

"अजगर नहीं, उसे ठोलू कहिए । उस का बाक़ायदा एक नाम है ।"

"आय'म सॉरी ! मुझे इस की जांच करनी है कि नृत्य के दौरान ठोलू जी के साथ किसी तरह की कोई बेरहमी तो नहीं बरती जाती ? हमारी 'जीव-रक्षा-परिषद' ठोलू जी के हितों की रक्षा करना अपना पावन कर्तव्य···"

इन्द्र खोसला का वाक्य पूरा होने से पहले ही मैं अट्टहास करने लगता हूं । अट्टहास रोक कर मैं ने कहा है, "सॉरी, भाई साहब, मैं आप की कोई मदद नहीं कर सकता, लेकिन मेरी हार्दिक शुभ कामनाएं आप के साथ हैं ।"—और मैं ने गुस्से के दिखावे के लिए जोर से रिसीवर पटकने के बाद, हंस-हंस कर तीन-चार तालियां बजा दी हैं ।

⊙ मैं चुप और अकेला बैठा हूं । सूखी डाल पर कोई उल्लू चुपचाप और अकेला बैठ कर किसी जलसे को देख रहा हो, ऐसी स्थिति है मेरी । चन्दन बाली और इन्द्र खोसला की मेजें काफी नजदीक हैं । मैं कह नहीं सकता कि जब उन्होंने पहली बार, यहां, कैबरे-कक्ष में, एक-दूसरे को देखा होगा, तब कैसे भाव उन के चेहरों पर आए होंगे । मैं जब यहां पधारा, तब शो शुरू हो गया था और मेहमान अपनी-अपनी सीटों पर बैठ चुके थे । चन्दन बाली और इन्द्र खोसला एक-दूसरे को पहचानते अवश्य होंगे । यह भी अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है कि वे आपस में बोलते न होंगे । वे दो ऐसी मेजों पर क्यों बैठे, जो कि नजदीक-नजदीक हैं ? वे दूर की मेजें भी चुन सकते थे । मेरा ख्याल है, दूर की मेजें उन्हें मिल न पाईं । बहरहाल···वे दोनों यहां हैं । मैं दोनों की निगाहों में आ

चुका हूं। दोनों ने ही मेरी ओर से उपेक्षा के साथ निगाहें फेर ली हैं। उंह, मेरा क्या बिगड़ता है!

अनेकानेक हफ्तों बाद आज मैं कैबरे शो देखने आया हूं। देखने क्या आया हूं, केवल फर्ज़ निभाने को हाजिर हुआ हूं। इन्द्र खोसला मुझे उतना बुरा नहीं लगता, जितना चन्दन वाली। यहां, फर्ज़ मेरा यही है कि मैं चन्दन वाली को कोई नाजायज हरकत न करने दूं।

खूब नाची हैं मिस गोगो! आर्केस्ट्रा भी आज अजब मस्ती में है। रोशनियों के जलने-बुझने और रंग बदलने की व्यवस्था भी आज इतनी सुचारु है कि क्या कहन! एकदम ठस है पूरा हाल। एडवांस बुकिंग की मेज के सामने उत्सुक मेहमानों की कतार कितनी लम्बी हमेशा होती है, मैं ने अपनी आंखों से देखा है। यह स्थिति 'हाउस-फुल' नहीं, 'सुपर हाउस-फुल' कहलाती है। ये ही हैं वे कार्यक्रम, जो 'स्मैश-हिट' की उपाधि पाया करते हैं। मिस गोगो में अब जो व्यापाराना रूखापन उभरने लगा है, अभी उस की परछाईं भी उन के चेहरे पर नहीं। क्या इठलाई हैं और क्या मुस्कराई हैं! कन्धे क्या हिलाए हैं, इन्द्र का सिंहासन हिला दिया है। क्या मैं इन्द्र नहीं? थैले आज़ाद हैं। चालीस नकाबों को एक ट्रे में रख कर हेड-बटलर मिस गोगो की ओर बढ़ रहा है। फ़ुनगियां उड़ानें भर रही हैं। मिस गोगो ने मेजों और व्यक्तियों का चुनाव प्रारम्भ किया है। बटलर उनके पीछे-पीछे चलता है और वह, मेहमानों के बीच जगह-जगह रुकती हैं, हंस-हंस कर, झूम-झूम कर वह अनेक चेहरों को नकाबों से ढांक चुकी हैं। अब थोड़े-से ही चेहरे बच रहे हैं। नहीं, चेहरे तो अनेक बच रहे हैं। ये नकाब ही हैं, जो ट्रे में अब ज्यादा नहीं हैं। नकाब पहनते समय अगर कोई मेहमान ज्यादा झेंप जाता है, उंगलियों या फुनगियों का अपने गालों पर स्पर्श पा कर यदि कोई ज्यादा लाल पड़ जाता है, तो पूरे हाल में अपने-आप तालियां बजने लगती हैं और आर्केस्ट्रा तेज हो जाता है।

अरे, यह क्या? मिस गोगो ने यों तीर की तरह मेरी दिशा में

एक रिपोर्ट तैयार करनी है ।"

"रिपोर्ट ?"

"जी हां···मुझे इसकी जांच करनी है कि नृत्य के दौरान अजगर के साथ···"

"अजगर नहीं, उसे ठोलू कहिए । उस का बाकायदा एक नाम है ।"

"आय'म सॉरी ! मुझे इस की जांच करनी है कि नृत्य के दौरान ठोलू जी के साथ किसी तरह की कोई बेरहमी तो नहीं बरती जाती ? हमारी 'जीव-रक्षा-परिषद' ठोलू जी के हितों की रक्षा करना अपना पावन कर्तव्य···"

इन्द्र खोसला का वाक्य पूरा होने से पहले ही मैं अट्टहास करने लगता हूं । अट्टहास रोक कर मैं ने कहा है, "सॉरी, भाई साहब, मैं आप की कोई मदद नहीं कर सकता, लेकिन मेरी हार्दिक शुभ कामनाएं आप के साथ हैं ।"—और मैं ने गुस्से के दिखावे के लिए जोर से रिसीवर पटकने के बाद, हंस-हंस कर तीन-चार तालियां बजा दी हैं ।

⊙ मैं चुप और अकेला बैठा हूं । सूखी डाल पर कोई उल्लू चुपचाप और अकेला बैठ कर किसी जलसे को देख रहा हो, ऐसी स्थिति है मेरी । चन्दन बाली और इन्द्र खोसला की मेजें काफी नजदीक हैं । मैं कह नहीं सकता कि जब उन्होंने पहली बार, यहां, कैबरे-कक्ष में, एक-दूसरे को देखा होगा, तब कैसे भाव उन के चेहरों पर आए होंगे । मैं जब यहां पधारा, तब शो शुरू हो गया था और मेहमान अपनी-अपनी सीटों पर बैठ चुके थे । चन्दन बाली और इन्द्र खोसला एक-दूसरे को पहचानते अवश्य होंगे । यह भी अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है कि वे आपस में बोलते न होंगे । वे दो ऐसी मेजों पर क्यों बैठे, जो कि नजदीक-नजदीक हैं ? वे दूर की मेजें भी चुन सकते थे । मेरा ख्याल है, दूर की मेजें उन्हें मिल न पाईं । बहरहाल···वे दोनों यहां हैं । मैं दोनों की निगाहों में आ

चुका हूं। दोनों ने ही मेरी ओर से उपेक्षा के साथ निगाहें फेर ली हैं। उंह, मेरा क्या बिगड़ता है !

अनेकानेक हफ्तों बाद आज मैं कैबरे शो देखने आया हूं। देखने क्या आया हूं, केवल फर्ज़ निभाने को हाजिर हुआ हूं। इन्द्र खोसला मुझे उतना बुरा नहीं लगता, जितना चन्दन वाली। यहां, फर्ज़ मेरा यही है कि मैं चन्दन वाली को कोई नाजायज हरकत न करने दूं।

खूब नाची हैं मिस गोगो ! आर्केस्ट्रा भी आज अजब मस्ती में है। रोशनियों के जलने-बुझने और रंग बदलने की व्यवस्था भी आज इतनी सुचारु है कि क्या कहन ! एकदम ठस है पूरा हाल। एडवांस बुकिंग की मेज के सामने उत्सुक मेहमानों की कतार कितनी लम्बी हमेशा होती है, मैं ने अपनी आंखों से देखा है। यह स्थिति 'हाउस-फुल' नहीं, 'सुपर हाउस-फुल' कहलाती है। ये ही हैं वे कार्यक्रम, जो 'स्मैश-हिट' की उपाधि पाया करते हैं। मिस गोगो में अब जो व्यापाराना रुखापन उभरने लगा है, अभी उस की परछाईं भी उन के चेहरे पर नहीं। क्या इठलाई हैं और क्या मुस्कराई हैं ! कन्धे क्या हिलाए हैं, इन्द्र का सिंहासन हिला दिया है। क्या मैं इन्द्र नहीं ? थैले आज़ाद हैं। चालीस नकाबों को एक ट्रे में रख कर हेड-बटलर मिस गोगो की ओर बढ़ रहा है। फ़ुनगियां उड़ानें भर रही हैं। मिस गोगो ने मेजों और व्यक्तियों का चुनाव प्रारम्भ किया है। बटलर उनके पीछे-पीछे चलता है और वह, मेहमानों के बीच जगह-जगह रुकती हैं, हंस-हंस कर, झूम-झूम कर वह अनेक चेहरों को नकाबों से ढांक चुकी हैं। अब थोड़े-से ही चेहरे बच रहे हैं। नहीं, चेहरे तो अनेक बच रहे हैं। ये नकाब ही हैं, जो ट्रे में अब ज्यादा नहीं हैं। नकाब पहनते समय अगर कोई मेहमान ज्यादा झेंप जाता है, उंगलियों या फुनगियों का अपने गालों पर स्पर्श पा कर यदि कोई ज्यादा लाल पड़ जाता है, तो पूरे हाल में अपने-आप तालियां बजने लगती हैं और आर्केस्ट्रा तेज हो जाता है।

अरे, यह क्या ? मिस गोगो ने यों तीर की तरह मेरी दिशा में

झपटना शुरू क्यों कर दिया ? ओह ! उन्होंने तो मुझे ही एक नकाब पहना दिया। हरे कृष्ण ! हरे कृष्ण ! तालियां, तालियां ! अनेक मेहमान पहचानते होंगे मुझे—कि यह तो 'अलीबाबा' का पिता है। मैं कुर्सी से उठ खड़ा होता हूं। इधर झुकता हूं, उधर झुकता हूं, ताकि मेहमानों को धन्यवाद दे सकूं। हाल के किसी कोने में कोई फिर से ताली बजा देता है। इस से तालियों की लहर-सी उठती है, जो इधर-से-उधर रेंग जाती है···

मैं देखता हूं, दो और चेहरे गायब हैं। इन्द्र खोसला और चन्दन बाली के चेहरे इसलिए गायब हैं कि मिस गोगो ने उन पर नकाब चढ़ा दिए हैं। इसे कहते हैं साहस ! इन्द्र खोसला और चन्दन बाली ने खामख्वाह बोर किया था मुझे फोन करके। मिस गोगो कितनी उदार हैं। केवल थैले नहीं, उनका दिल भी कितना बड़ा है !

चालीसों चोर चुन लिए गए हैं। अब ठोलू पहनने के लिए मिस गोगो ग्रीन-रूम की ओर चली गई हैं। बाईस वर्षीय जापानी गुड़िया मिचिको के मंच पर आने और स्ट्रिप करने की तैयारी है। 'चालीस चोरों के एक खज़ाने' का द्वार खुल गया है। चालीसों नकाब एक-एक कर भीतर जा रहे हैं। इन्द्र खोसला भीतर। कुछ और नकाबों के बाद मैं भीतर। पुनः कुछ और नकाबों के बाद—चन्दन बाली भीतर।

इसके बाद जो हुआ, उस की कल्पना भी कोई माई का लाल नहीं कर सकता। ठोलू धारण करके मिस गोगो ने चालीस चोरों के सामने इठलाना शुरू किया ही था कि ठोलू ने केंचुल छोड़ दी ! मिस गोगो उस की गर्दन अच्छी तरह पकड़ हुए थीं, लेकिन केंचुल में से निकल कर, एक बोदी आवाज के साथ, ठोलू फर्श पर गिरा और ऐंठने-सा लगा। फिर अचानक वह बढ़ा चालीस चोरों की तरफ ! मिस गोगो ने भयंकर चीत्कार किया। उन की आंखें ऐसे फट गई थीं, जैसे किसी ने उन्हें छुरा भोंक दिया हो। ठोलू के बजाए अब केवल केंचुल की गर्दन ही उनकी मुट्ठी में थी ! केंचुल

मोरी नम्बर एक और दो को कैसे ढांकती ? सफेद, चितकबरे और ज़रा-ज़रा पारदर्शी, लम्बे फीते की तरह ठोलू की केंचुल, मिस गोगो की पीठ की तरफ लटक रही थी।

चालीसों चोर हाहाकार करते हुए इधर-उधर भाग रहे थे। ठोलू कहां था ? वह इधर सरकता, उधर सरकता। आगे देखता, पीछे देखता। ऊपर देखता, नीचे देखता। जीभ लपलपाता। मुंह खोलता। दांत दिखाता। फूत्कारता। भय के मारे मेरी जान निकली जा रही थी। अवश्य मैं चीखों-पर-चीखें मार रहा था, हालांकि कौन-सी चीख मेरी है और कौन-सी दूसरों की, पता नहीं चलता था। चाहे जिस दिशा में मैं भागता, लगता यही कि ठोलू मुझे पीछे से दबोचने वाला है। भागते-भागते कभी कोई चोर इधर चढ़ जाता, कभी उधर। चोर इस कुर्सी से उस कुर्सी पर छलांगें भी लगाते दिखाई दिए। एक बार मैं और चन्दन वाली एकदम भिड़ गए। भिड़ने के बावजूद हम अपरिचित बने रहे और विपरीत दिशाओं में भागे। दूसरी बार मैं इन्द्र खोसला के साथ टकराने ही वाला था कि दूर से ही मैं दिशा बदल कर भागा।

मेरी आंखें मिस गोगो को ढूंढ़ रही थीं। वस्त्रों में लिपटी सुन्दरी भी भीड़ में अलग दिखाई दे जाती है। यदि वस्त्र न हों, किन्तु सुन्दरी हो, फिर तो उसे भयानक-से-भयानक भीड़ में भी दीख जाना चाहिए। कैसा आश्चर्य कि इस के बावजूद मिस गोगो का कहीं अता-पता नहीं था।

चोरों में उतना हड़कम्प मचने का कारण, असल में, अजगर हाथ से छूट जाना नहीं था। छूटा हुआ अजगर फिर से दबोचा भी जा सकता था। मिस गोगो ठोलू को पुन: इतनी खूबी से पहन लेतीं कि चोर समझते—अजगर का हाथ से छूटना और फिर से पहना जाना नृत्य का ही एक अंग है।

लेकिन अजगर हाथ से केवल छूटा ही नहीं। एक तो उसने केंचुल छोड़ कर गिरते समय बड़ी डरावनी छटपटाहट दिखाई।

झपटना शुरू क्यों कर दिया ? ओह ! उन्होंने तो मुझे ही एक नकाब पहना दिया। हरे कृष्ण ! हरे कृष्ण ! तालियां, तालियां ! अनेक मेहमान पहचानते होंगे मुझे—कि यह तो 'अलीबाबा' का पिता है। मैं कुर्सी से उठ खड़ा होता हूं। इधर झुकता हूं, उधर झुकता हूं, ताकि मेहमानों को धन्यवाद दे सकूं। हाल के किसी कोने में कोई फिर से ताली बजा देता है। इस से तालियों की लहर-सी उठती है, जो इधर-से-उधर रेंग जाती है···

मैं देखता हूं, दो और चेहरे गायब हैं। इन्द्र खोसला और चन्दन बाली के चेहरे इसलिए गायब हैं कि मिस गोगो ने उन पर नकाब चढ़ा दिए हैं। इसे कहते हैं साहस ! इन्द्र खोसला और चन्दन बाली ने खामख्वाह बोर किया था मुझे फोन करके। मिस गोगो कितनी उदार हैं। केवल थैले नहीं, उनका दिल भी कितना बड़ा है !

चालीसों चोर चुन लिए गए हैं। अब ठोलू पहनने के लिए मिस गोगो ग्रीन-रूम की ओर चली गई हैं। बाईस वर्षीय जापानी गुड़िया मिचिको के मंच पर आने और स्ट्रिप करने की तैयारी है। 'चालीस चोरों के एक खज़ाने' का द्वार खुल गया है। चालीसों नक़ाब एक-एक कर भीतर जा रहे हैं। इन्द्र खोसला भीतर। कुछ और नकाबों के बाद मैं भीतर। पुनः कुछ और नक़ाबों के बाद—चन्दन बाली भीतर।

इसके बाद जो हुआ, उस की कल्पना भी कोई माई का लाल नहीं कर सकता। ठोलू धारण करके मिस गोगो ने चालीस चोरों के सामने इठलाना शुरू किया ही था कि ठोलू ने केंचुल छोड़ दी ! मिस गोगो उस की गर्दन अच्छी तरह पकड़ हुए थीं, लेकिन केंचुल में से निकल कर, एक बोदी आवाज के साथ, ठोलू फर्श पर गिरा और ऐंठने-सा लगा। फिर अचानक वह बढ़ा चालीस चोरों की तरफ ! मिस गोगो ने भयंकर चीत्कार किया। उन की आंखें ऐसे फट गई थीं, जैसे किसी ने उन्हें छुरा भोंक दिया हो। ठोलू के बजाए अब केवल केंचुल की गर्दन ही उनकी मुट्ठी में थी ! केंचुल

मोरी नम्बर एक और दो को कैसे ढांकती ? सफेद, चितकबरे और ज़रा-ज़रा पारदर्शी, लम्बे फीते की तरह ठोलू की केंचुल, मिस गोगो की पीठ की तरफ लटक रही थी।

चालीसों चोर हाहाकार करते हुए इधर-उधर भाग रहे थे। ठोलू कहां था ? वह इधर सरकता, उधर सरकता। आगे देखता, पीछे देखता। ऊपर देखता, नीचे देखता। जीभ लपलपाता। मुंह खोलता। दांत दिखाता। फूत्कारता। भय के मारे मेरी जान निकली जा रही थी। अवश्य मैं चीखों-पर-चीखें मार रहा था, हालांकि कौन-सी चीख मेरी है और कौन-सी दूसरों की, पता नहीं चलता था। चाहे जिस दिशा में मैं भागता, लगता यही कि ठोलू मुझे पीछे से दबोचने वाला है। भागते-भागते कभी कोई चोर इधर चढ़ जाता, कभी उधर। चोर इस कुर्सी से उस कुर्सी पर छलांगें भी लगाते दिखाई दिए। एक बार मैं और चन्दन वाली एकदम भिड़ गए। भिड़ने के बावजूद हम अपरिचित बने रहे और विपरीत दिशाओं में भागे। दूसरी बार मैं इन्द्र खोसला के साथ टकराने ही वाला था कि दूर से ही मैं दिशा बदल कर भागा।

मेरी आंखें मिस गोगो को ढूंढ़ रही थीं। वस्त्रों में लिपटी सुन्दरी भी भीड़ में अलग दिखाई दे जाती है। यदि वस्त्र न हों, किन्तु सुन्दरी हो, फिर तो उसे भयानक-से-भयानक भीड़ में भी दीख जाना चाहिए। कैसा आश्चर्य कि इस के बावजूद मिस गोगो का कहीं अता-पता नहीं था।

चोरों में उतना हड़कम्प मचने का कारण, असल में, अजगर हाथ से छूट जाना नहीं था। छूटा हुआ अजगर फिर से दबोचा भी जा सकता था। मिस गोगो ठोलू को पुनः इतनी खूबी से पहन लेतीं कि चोर समझते—अजगर का हाथ से छूटना और फिर से पहना जाना नृत्य का ही एक अंग है।

लेकिन अजगर हाथ से केवल छूटा ही नहीं। एक तो उसने केंचुल छोड़ कर गिरते समय बड़ी डरावनी छटपटाहट दिखाई।

फिर, केंचुल में से ताज़ा-ताज़ा निकला होने के कारण वह चमकीला व चिकना हो गया, जिस से छत में लगी अनेक रोशनियां उस के तमाम जिस्म में बिम्बित हुईं। तीसरे, फर्श पर गिरने के बाद वह कुछ इस तरह कुलबुलाया, मानो अंगड़ाई-सी ले रहा हो। ये तीनों बातें इतनी ताबड़तोड़ हुईं कि चोरों के होश फाख्ता !

चालीसों चोर चीखने लगे। अजगर चीखें नहीं सुन सकता। चीखें वायु के माध्यम से सुनाई पड़ती हैं, जबकि वायु की कंपकंपी पकड़ने के लिए अजगर के कान ही नहीं। चालीस चोरों की चीखें भी बहरे ठोलू को चौंका नहीं सकती थीं। यदि चीखने के साथ-साथ चोरों ने भागना भी शुरू न कर दिया होता, तो ठोलू कतई न घबराता—लेकिन चोर भागे। इस से फर्श कांपा। फर्श या जमीन की कंपकंपी सांप अपने सम्पूर्ण शरीर में महसूस करते हैं। यही सांपों का 'सुनना' है। ठोलू ने फर्श की कंपकंपी अपने सम्पूर्ण शरीर में घूमती महसूस की। घबरा गया ठोलू। उसने मुंह खोल कर और सिर उठा कर अपने दांत भी दिखाए कि चालीसों चोर और भी चीखने-भागने लगे। ठोलू इससे और ज्यादा घबराया। कहीं छिप जाने की कोशिश में यह इधर लपका, उधर लपका।

मैं इधर लपक रहा हूं, उधर लपक रहा हूं।

अचानक मैं ने ठोलू को ठीक अपने सामने देखा। एक चट्टानी कुर्सी मैं ने पार की ही थी कि फों ! ठोलू ! मेरी घिग्घी बंध गई। अगर मैं जादूगर होता तो ठोलू से बचने के लिए फौरन गायब हो जाता। मुझे डराने के लिए ठोलू ने जीभ लपलपाई। उसे डराने के लिए मैं कैसे अपनी जीभ लपलपाता? वह आगे बढ़ा। मैं पीछे हटा। उस की आंखें मेरी आंखों में। मेरी आंखें उसकी आंखों में। उस ने लम्बे-लम्बे और भीतर की तरफ मुड़े अपने दांत दिखाए। मेरे दांत इतने प्रभावशाली नहीं थे कि मैं भी दांत दिखाता। मैं ने कस कर अपना मुंह बन्द कर लिया। घटिया दांत दिखा कर मैं अपने ही आप को बेइज्जत करना नहीं चाहता था। या तो मैं फर्श

पर गिर पड़ा था या ठोलू का सिर मुझ से बहुत ऊपर तक उठ गया था, क्योंकि अब उस की जीभ मेरी आंखों के सामने न लपलपा कर, मेरी खोपड़ी के ऊपर लपलपा रही थी। घबराया हुआ और कुण्ठित ठोलू मुझ पर अब वार करने ही वाला था। ठोलू का दंश खतरनाक नहीं, क्योंकि अजगरों में जहर नहीं हुआ करता, लेकिन ठोलू यदि अपनी कुण्डली में मुझे कस कर भींच दे—फिर ?

अचानक मेरी वाणी लौट आई। मुझे याद आया कि क्यों न मैं जोर से चीखूं। मैं इतने जोर से चीखा कि उस हंगामे का जबर्दस्त शोर भी शरमा गया।

किन्तु मेरे चीखने का ठोलू पर क्या असर पड़ता ? वह बहरा जो था। पुन उसका मुंह खुला, जीभ लपलपाई और दांत दिखाई दिए। मैं ने दोनों हाथों से अपने चेहरे का बचाव करना चाहा। अगले ही क्षण ठोलू ने तड़ाक से अपना सिर मुझ पर मारा। अवश्य वह मेरी गर्दन में अपने दांत घुसाना चाहता था, लेकिन बचाव के लिए मैं ने हाथ उठाए हुए थे। मेरा दाहिना हाथ ठोलू के के मुंह में चला गया। मैं चीखता और रोता हुआ गुलांटें खाने लगा। बिल्कुल किसी बबुए की तरह मैं उलट-पुलट रहा था। ठोलू इस कोशिश में था कि मुझ पर अपनी कुण्डली कस ही दे, लेकिन पालतू जीव होने के कारण उस में उतना हिंस्र भाव नहीं था, जितना कि एक जंगली अजगर में होता। ठोलू घबराया हुआ भी कम नहीं था। उस ने मेरा पूरा हाथ अपने मुंह में भर तो लिया था, किन्तु समय उसे ऐसा लग रहा होगा कि कहीं वह कोई भयंकर भूल न कर रहा हो। शायद यही था वह कारण, या शायद मेरी तकदीर ही बुलन्द थी, कि क्यों ठोलू मुझ पर अपनी कुण्डली कसने में सफल न हुआ। मैं उलट-पुलट रहा था और मेरे साथ ठोलू भी। फर्क केवल इतना था कि मैं चीखें मार रहा था और वह खामोश था।

अचानक मैं पस्त हो गया। ठोलू के मुंह में से अपना हाथ

फिर, केंचुल में से ताज़ा-ताज़ा निकला होने के कारण वह चमकीला व चिकना हो गया, जिस से छत में लगी अनेक रोशनियां उस के तमाम जिस्म में बिम्बित हुईं। तीसरे, फर्श पर गिरने के बाद वह कुछ इस तरह कुलबुलाया, मानो अंगड़ाई-सी ले रहा हो। ये तीनों बातें इतनी ताबड़तोड़ हुईं कि चोरों के होश फाख्ता !

चालीसों चोर चीखने लगे। अजगर चीखें नहीं सुन सकता। चीखें वायु के माध्यम से सुनाई पड़ती हैं, जबकि वायु की कंपकंपी पकड़ने के लिए अजगर के कान ही नहीं। चालीस चोरों की चीखें भी बहरे ठोलू को चौंका नहीं सकती थीं। यदि चीखने के साथ-साथ चोरों ने भागना भी शुरू न कर दिया होता, तो ठोलू कतई न घबराता—लेकिन चोर भागे। इस से फर्श कांपा। फर्श या जमीन की कंपकंपी सांप अपने सम्पूर्ण शरीर में महसूस करते हैं। यही सांपों का 'सुनना' है। ठोलू ने फर्श की कंपकंपी अपने सम्पूर्ण शरीर में घूमती महसूस की। घबरा गया ठोलू। उसने मुंह खोल कर और सिर उठा कर अपने दांत भी दिखाए कि चालीसों चोर और भी चीखने-भागने लगे। ठोलू इससे और ज्यादा घबराया। कहीं छिप जाने की कोशिश में यह इधर लपका, उधर लपका।

मैं इधर लपक रहा हूं, उधर लपक रहा हूं।

अचानक मैं ने ठोलू को ठीक अपने सामने देखा। एक चट्टानी कुर्सी मैं ने पार की ही थी कि फों ! ठोलू ! मेरी घिग्घी बंध गई। अगर मैं जादूगर होता तो ठोलू से बचने के लिए फौरन गायब हो जाता। मुझे डराने के लिए ठोलू ने जीभ लपलपाई। उसे डराने के लिए मैं कैसे अपनी जीभ लपलपाता ? वह आगे बढ़ा। मैं पीछे हटा। उस की आंखें मेरी आंखों में। मेरी आंखें उसकी आंखों में। उस ने लम्बे-लम्बे और भीतर की तरफ मुड़े अपने दांत दिखाए। मेरे दांत इतने प्रभावशाली नहीं थे कि मैं भी दांत दिखाता। मैं ने कस कर अपना मुंह बन्द कर लिया। घटिया दांत दिखा कर मैं अपने ही आप को बेइज्जत करना नहीं चाहता था। या तो मैं फर्श

पर गिर पड़ा था या ठोलू का सिर मुझ से बहुत ऊपर तक उठ गया था, क्योंकि अब उस की जीभ मेरी आंखों के सामने न लपलपा कर, मेरी खोपड़ी के ऊपर लपलपा रही थी। घबराया हुआ और कुण्ठित ठोलू मुझ पर अब वार करने ही वाला था। ठोलू का दंश खतरनाक नहीं, क्योंकि अजगरों में जहर नहीं हुआ करता, लेकिन ठोलू यदि अपनी कुण्डली में मुझे कस कर भींच दे—फिर ?

अचानक मेरी वाणी लौट आई। मुझे याद आया कि क्यों न मैं जोर से चीखूं। मैं इतने जोर से चीखा कि उस हंगामे का जबर्दस्त शोर भी शरमा गया।

किन्तु मेरे चीखने का ठोलू पर क्या असर पड़ता ? वह बहरा जो था। पुन उसका मुंह खुला, जीभ लपलपाई और दांत दिखाई दिए। मैं ने दोनों हाथों से अपने चेहरे का बचाव करना चाहा। अगले ही क्षण ठोलू ने तड़ाक से अपना सिर मुझ पर मारा। अवश्य वह मेरी गर्दन में अपने दांत घुसाना चाहता था, लेकिन बचाव के लिए मैं ने हाथ उठाए हुए थे। मेरा दाहिना हाथ ठोलू के के मुंह में चला गया। मैं चीखता और रोता हुआ गुलांटें खाने लगा। बिलकुल किसी बबुए की तरह मैं उलट-पुलट रहा था। ठोलू इस कोशिश में था कि मुझ पर अपनी कुण्डली कस ही दे, लेकिन पालतू जीव होने के कारण उस में उतना हिंस्र भाव नहीं था, जितना कि एक जंगली अजगर में होता। ठोलू घबराया हुआ भी कम नहीं था। उस ने मेरा पूरा हाथ अपने मुंह में भर तो लिया था, किन्तु समय उसे ऐसा लग रहा होगा कि कहीं वह कोई भयंकर भूल न कर रहा हो। शायद यही था वह कारण, या शायद मेरी तकदीर ही बुलन्द थी, कि क्यों ठोलू मुझ पर अपनी कुण्डली कसने में सफल न हुआ। मैं उलट-पुलट रहा था और मेरे साथ ठोलू भी। फर्क केवल इतना था कि मैं चीखें मार रहा था और वह खामोश था।

अचानक मैं पस्त हो गया। ठोलू के मुंह में से अपना हाथ

छुड़ाने की हर कोशिश डूब-सी गई। सारी ताकत ऐसी नदारद कि चीखना भी नामुमकिन ! मैं ने मरने की तैयारी कर ली।

फिर पता न चला कि क्या हुआ।

ॐमैं ने आंखें खोली हैं। देखता हूं, मेरे सिरहाने एक लड़की बैठी है, जिस की गर्दन के ऊपर ठोलू का सिर लगा हुआ है। ठोलू की आंखें चमक रही हैं, जीभ लपलपा रही है। उस का मुंह खुलता है, दांत दिखाई पड़ते हैं। मैं चीत्कार करता हूं, "बचाओ !" मैं आंखें भींच लेता हूं। पुनः पलकें उठाता हूं। देखता हूं, मेरे सिरहाने एक लड़की बैठी है, जिसकी गर्दन के ऊपर स्मिता का सिर लगा हुआ है। अरे, यह तो स्मिता का चेहरा है ! लेकिन क्या यह स्मिता ही है ? इतनी नई-नई ? (ओह, प्लास्टिक सर्जरी !) मैं भौंचक हूं। फिर ध्यान देता हूं कि मैं अपने ही कमरे में हूं। दाहिना हाथ उठा कर आंखों के सामने लाता हूं। हाथ पर पट्टियां बंधी हैं। (ठोलू की कृपा !) मैं अपनी छाती पर हाथ फेरता हूं। कोई हड्डी टूटी हुई नहीं लग रही। याने, कुण्डली में वह मुझे अन्त तक न कस पाया। मैं पैर हिलाता हूं। कमर उछालता हूं। दोनों बांहें ऊपर-नीचे करता हूं। मैं उठ बैठता हूं। पलंग से उतरता हूं। चलता हूं। बठ सकता हूं, उतर सकता हूं, चल सकता हूं। मैं सही-सलामत हूं।

अब मैं गौर करता हूं कि क्या सचमुच मेरे सिरहाने बैठी लड़की स्मिता है ? वही है। कोई धोखा नहीं। "अरे, कब आइ ?" मैं किलकता हूं।

"अभी-अभी।" वह सिरहाने बैठी-बैठी ही बोलती है, हालांकि मेरे उठ जाने के बाद सिरहाना खाली हो चुका है। उस के 'अभी-अभी' का अर्थ समझने के लिए मैं कलाई-घड़ी में देखता हूं। कलाई में घड़ी है ही नहीं। जरूर ठोलू के साथ उठापटक में कहीं निकल गई। मेरे कमरे में एक दीवार-घड़ी भी तो लगी रहती है। मैं निगाह उठाता हूं—दीवार-घड़ी लगी हुई है। दस बजे हैं। खिड़की का

परदा हटा हुआ है। बाहर धूप है। याने ये दम सुबह के हैं। मैं स्मिता से मुखातिब होता हूं, "क्या मैं रात भर बेहोश था ?"

"मैं क्या जानूं ? बताया न, मैं तो अभी-अभी आई हूं।"

"कल की दुर्घटना तुम्हें ज्ञात हो गई होगी ?"

"हां, अखबारों में सब छप चुका है ?"

"हे भगवान ! अखबारों में !"

"सिर बाद में धुनना।" स्मिता उठती हुई कहती है, "पहले पहचानो तो सही, मैं कौन हूं।" और स्मिता ने मन्दिर के सब परदे हटा दिए हैं। ओहोहोहो ! इतना परिवर्तन ? अंग-अंग में इतनी आग ? इतनी कशिश ? फुनगियों का रंग बदल गया है। थैले इतने दीर्घ कि मिल्क-बार की याद दिलाएं। स्मिता जिधर-जिधर दौड़ी, उधर-उधर मैं। खिलखिलाहटें। उठापटक। तोड़फोड़। आह, आऽह, मेरा तन जाग रहा है। कितने-कितने हफ्तों बाद मेरे तन में स्फुरण हुआ है। मुझे आ जाने दे, स्मिता ! मैं हांफ रहा हूं। पसीना-पसीना। वह शिकायत करती है, "पसीने से तुम बहुत बस्साते हो।" और वह मुझे नहलाने ले जाती है। पूछ रही है वह, "अब मेरे बॉस कब बनोगे तुम ?" स्नान-ध्यान के बाद मैं उसका बॉस बन जाता हूं। धन्यवाद, स्मिता द ग्रेट। जनता भी यही कहेगी, जब तुम कैबरे-मंच पर आओगी—धन्यवाद, स्मिता द ग्रेट। प्लास्टिक-सर्जरी क्या करवाई है तुम ने, मेनकाओं और उर्वशियों को जिन्दा जला दिया है। अब आ, मुझे भी जिन्दा जला ! लेकिन याद रख, जाने-मन, 'अलीबाबा' की कैबरे-डान्सर बनते ही मैं तेरा 'तुम' न रह कर 'आप' बन जाऊंगा। ही-ही !

"मैं भी एक बन्धन लगाऊंगी तुम पर।"

"क्या ?"

"मुझे अपने सांचे की रक्षा करनी होगी···बल्कि आज भी मुझे तुम्हारे संग सोना नहीं चाहिए था···" मैं देखता हूं कि उस की आंखें स्वप्निल होने लगी हैं, "लेकिन अभी मैं कैबरे-डान्सर

बनी नहीं हूं···बन जाने के बाद···किसी को छूने भी नहीं दूंगी···"

"तुम से रहा नहीं जाएगा, स्मिता।"

"मिस गोगो कैसे रह लेती हैं? मैंने उन के बारे में कभी कुछ ऐसा-वैसा नहीं सुना।"

"हां, वह तो रह लेती हैं।" और मेरा स्वर बुझ जाता है।

"मैं सोचती हूं, कैबरे दिखा-दिखा कर ही, पुरुषों की आंखें अन्धी कर-कर के ही, मेरी भड़ास बुझ जाया करेगी। मिस गोगो के साथ, शायद सभी कैबरे-डान्सरों के साथ, यही होता हो···मैं मर जाऊंगी, लेकिन छूने भी नहीं दूंगी।"

मैं चुप रह जाता हूं। उदास हूं। सहसा पूछता हूं, "दिल्ली तुम एकाएक कैसे आईं? न चिट्ठी, न पत्री।"

आना अचानक ही हुआ। कार्यक्रम तो यही था कि आगरे से वापस बम्बई लौट जाएंगे, लेकिन आज सुबह दिल्ली का हवाई-जहाज पकड़ लिया। आगरे से पहले हम लोग जयपुर में थे और उस से भी पहले जोधपुर में।"

"हवाई-जहाज से सैर-सपाटे? तुम हो किन के साथ, भई?" मैं मुस्करा कर पूछता हूं। कुछ क्षण पहले स्मिता का रेशा-रेशा मुझे अपना महसूस हुआ था। अब सहसा वह कोई और ही कुमारिका (ह-ह, कुमारिका!) लग रही थी। अनजाने में सही, किन्तु ऐसा अहसास वह दे जरूर रही थी कि अब उसका उठना-बैठना ऐसे लोगों के साथ है, जो इतने बड़े हैं कि हवाई-जहाजों में··· (हुंह, जैसे कि मैं हवाई-जहाजों में सैर कर ही नहीं सकता!)

"बम्बई में पिछले मास एक चमत्कार हुआ। राह चलते एक फ्रेंच युवक ने मुझे रोक कर पूछा, 'क्या आप मेरी माडल बनना पसन्द करेंगी? मुझे भारत के विभिन्न शहरों में किसी भारतीय माडल के साथ फोटोग्राफी करनी है···' पहले तो मुझे यही लगा कि वह मजाक कर रहा है, लेकिन असलियत कुछ और थी। उस ने मुझे प्रति दिन पचास रुपयों के हिसाब से एक महीने के लिए बुक कर

लिया है। पेमेंण्ट हफ्तेवार होता है। दो हफ्तों का पैसा मैं ले भी चुकी हूं।"

"ओह···बधाई, स्मिता! बधाई मुझे देनी ही चाहिए।"

"लन्दन की एक महिला-फैशन-पत्रिका के लिए वह भारतीय पोशाकों की फोटोग्राफी कर रहा है। भाग्य इसी को कहते हैं न? अपनी माडल का चुनाव करने के लिए उस ने न जाने कितनी लड़कियों के इण्टरव्यू लिए थे, किन्तु पसन्द एक नहीं आई थी। राह चलते उस की निगाह मुझ पर पड़ती है और न जाने कौन-सा आकर्षण वह मुझ में पाता है कि उसी क्षण मुझे रोक कर वह प्रस्ताव रख देता है।"

"वाकई यह बधाई की बात है।" मैं पुनः कहता हूं। स्मिता अब मेरे हाथ में नहीं है। पहले भी कहां वह केवल मेरे ही हाथ में थी! न जाने कितनों-कितनों के पलंगों में वह···लेकिन जितनी भी वह मेरे हाथ में पहले थी, अब उतनी भी नहीं रह पाएगी। अभी स्मिता मेरे संग सोई अवश्य, लेकिन···शायद समर्पित होने के लिए नहीं। अपनी नई गठन से उस ने मुझे परिचित शायद केवल इसी लिए करवाया कि, वास्तव में, और अनजाने में, वह मुझे एक आतंक से भर देना चाहती थी। नहीं, नहीं, स्मिता ऐसी नहीं। मैं ही गलत-सलत अर्थ निकाल रहा हूं। असल में, कल रात को ठोलू मुझ पर हावी क्या हुआ है, लगता है; अब दुनिया का हर अदना व्यक्ति भी मुझ पर हावी हो जाया करेगा। हिश्ट! क्या एक मूर्ख अजगर मेरे व्यक्तित्व का इतना हनन कर सकता है?

"क्या प्लास्टिक-सर्जरी का तुम्हारा कोर्स पूरा हो चुका?" मैं पूछता हूं।

"तुम्हें क्या लगता है?"

"मुझे तो लगता है, मैं ठोलू के पेट में जाने वाला हूं।"

"क्या कहा?"

"ओह, सॉरी, मेरे दिमाग पर ठोलू-ही-ठोलू सवार है—मिस

गोगो का अजगर। क्या कह रहा था? हां, तो मैं कह रहा था कि मुझे लगता है—उंह, छोड़ो, यार स्मिता, फिर कभी बताऊंगा कि मैं क्या कह रहा था।" मैं बोलता हूं। समझ गया हूं कि अभी मेरे दिमाग की धुंध पूरी तरह छंटी नहीं है। ठोलू जिन्दा है या मर गया? मर क्यों जाएगा भला? केंचुल उतरने से कभी कोई सांप मरा है आज तक? मिस गोगो कहां हैं? हंगामे में कल नजर ही न आईं···फोन कर के मैं मिस गोगो के हाल पूछना चाहता हूं, लेकिन स्मिता कहीं ऐसा न सोचे कि मैं उसकी उपेक्षा कर रहा हूं। इतने दिनों बाद यह बम्बई से आई है—नई-नवेली हो कर। अभी, जब तक यह यहां बैठी है, इसी के साथ बातें कर के मुझे अपना जन्म सार्थक करना चाहिए। किन्तु कितनी कुलबुलाहट है मेरे भीतर—बाबा रे—कि मिस गोगो का क्या हुआ?

"माफ करना, स्मिता, मैं जरा मिस गोगो के हाल पूछ लूं।" मैं फोन की तरफ बढ़ता हुआ कहता हूं। फोन अभी दूर ही है कि स्मिता उठ खड़ी होती है। कपड़े अपने व्यवस्थित करती हुई बोलती है, "मैं चलूं। मेरा फोटोग्राफर अपनी एक गर्ल-फ्रेण्ड के घर, डिफेंस कालोनी में ठहरा हुआ है और मैं उस के साथ हूं। कह कर आई हूं कि ग्यारह बजते-बजते लौट आऊंगी—जबकि ग्यारह तो हो चुके!" स्मिता अपनी कलाई-घड़ी में देख रही है। नई है कलाई-घड़ी। चमचमा रही है।

"माडलिंग का तुम्हारा काण्ट्रैक्ट अब पन्द्रह दिन और है।" मैं पूछे बिना रह नहीं पाता, "उस के बाद?"

"उस के बाद क्या?" वह सहसा मेरे मस्तक पर चूम लेती है, "मैं वापस 'अलीबाबा' में!"

"सचमुच?" मैं अपने कानों पर विश्वास नहीं कर पाता। स्मिता और अपने बीच अभी जो अलगाव अनुभव हुआ था, क्षण मात्र में वह रीत गया है।

"प्लास्टिक-सर्जरी का कोर्स मेरा पूरा हो चुका है। यही नहीं,

मैं एक जबर्दस्त कैबरे-डान्सर भी बन चुकी हूं। बम्बई में मुझे एक बढ़िया ट्रेनर मिल गया था।"

"अरे, तुम ने चिट्ठी में मुझे कभी लिखा ही नहीं।"

"सोचा था, खुद जा कर अचानक बताऊंगी, चकित करूंगी अपने प्यारेलाल को।"

"रिंग-मास्टर से मिलने की सलाह मैं ने दी थी। तुम ने उस चिट्ठी का जवाब गोल कर दिया। पत्र-व्यवहार ही रुक गया उसके बाद।"

"हुंह, रिंग-मास्टर! तुम तो सोचते हो, दुनिया में केवल एक ही व्यक्ति है, जो ऊटपटांग बातें सोच सकता है—और वह है मुछर्रा रिंग-मास्टर।"

"लगता है, तुम्हें वहां कोई और ट्रेनर…"

"बम्बई में ऐसे लोगों की भला कोई कमी है? तुम भी तो बम्बई के कीड़े हो; सब जानते होंगे, पोज़ कर रहे हो!" स्मिता ने मेरे गले में बांहें डाल दी हैं।

"नहीं, नहीं, पोज़ कैसा!"

"वहां जिस ट्रेनर ने मुझे कैबरे सिखाया है, उसी ने मेरी गोह को चिपकना सिखा दिया है। मिस गोगो अजगर-नृत्य पेश करती हैं न? उसी तरह मैं गोह-नृत्य पेश करूंगी।"

"गोह चिपकती है? तुम पर?"

"हां।"

"लेकिन गोह तो इतनी छोटी होती है कि…"

"दस फीट लम्बी गोह क्या छोटी होती है?"

"लेकिन गोह दस फीट लम्बी होती ही नहीं।" मैं सिर खुजलाता हूं। स्मिता मेरे गाल को चपतिया कर कहती है, "फिर बताऊंगी। सब बताऊंगी। अभी जल्दी में हूं। टाटा!"

स्मिता जा चुकी है। मैं रिसीवर उठा कर मिस गोगो का नम्बर डायल कर चुका हूं। मिस गोगो की 'हैलो' सुनते ही मैं

पूछता हूं, "कैसी हैं आप ?" इस के उत्तर में मिस गोगो धीमा-धीमा रोने लगती हैं। मुझे उन पर बड़ा रहम आया है। कहता हूं, "नो, नो, मिस गोगो, इस तरह मन कच्चा न करिए। मैं अभी आता हूं आप के कमरे में।"

मिस गोगो के कमरे की ओर बढ़ते समय अकस्मात् मेरे ध्यान में यह बात आती है कि स्मिता ने खेद व्यक्त किया ही नहीं। अखबारों में वह पढ़ चुकी है—अवश्य पढ़ चुकी होगी—कि ठोलू के मुंह में किस का हाथ चला गया था। अभी, औपचारिकता के नाते ही सही, क्या उसे एक बार भी ऐसा नहीं कहना चाहिए था कि प्यारेलाल, तुम्हारे साथ कल रात जो गुजरी, पढ़ कर बहुत दुख हुआ मुझे ? खेद व्यक्त स्मिता ने क्या जान-बूझ कर नहीं किया ? या, अपनी मस्ती में भूल गई ?

मैं मिस गोगो के कमरे में पहुंच गया हूं। वह मेरे गले से लग कर रो रही हैं। मैं उन की पीठ सहलाते समय नोट करता हूं कि ठोलू अपने पिंजड़े में पड़ा-पड़ा सो रहा है। सो न रहा होता, तो उस की जीभ लपलपाती दिखाई पड़ती। पीठ सहलाते समय मैं यह भी नोट करता हूं कि थैलों को बांध कर रखने वाली वस्तु की पट्टी पीठ पर नहीं है। इस से मुझे स्मिता के नए-नवेले थैले याद आ जाते हैं। कितना परिवर्तन—होयहोयहोय ! चाहता तो हूं मैं मुस्कराना, किन्तु अत्यन्त दुखित-दुखित स्वर में कहता हूं, "कल की रात वाकई भयंकर थी ! शो हो ही न सका। पहला शो ही न हुआ, दूसरा कैसे होता ?"

मिस गोगो ने मेरे गले लग कर रोना स्थगित कर दिया है। मुझ से अलग हो कर उन्होंने भीगी आंखें पोंछी हैं, फिर कांपते स्वर में कहा है, "मैं हक्की-बक्की रह गई थी। मेरी चीखें निकल गई थीं।"

"स्वाभाविक है, स्वाभाविक है।"

"लेकिन ठोलू को अन्त में दबोचा किस ने ? मैं ने ही तो !"

"आप ने ?" मेरा मुंह खुला रह जाता है।

"वरना न जाने क्या हो जाता। वह आप पर कुण्डली लगा सकता था···लेकिन एक गलती आप की भी है। अगर उस ने आप का हाथ मुंह में ले ही लिया था, तो उतना घबराने की क्या जरूरत थी? भीतर की ओर मुड़े होने के कारण अजगरों के दांत, झटके मारने पर तो और गहराई में घुस जाते हैं। आप को चाहिए था कि चुपचाप खड़े रहते। ठोलू खुद ही आप का हाथ छोड़ देता। वह काफी समझदार है।"

मैं कुछ न बोल सका। मिस गोगो मुझे डांटना चाहती थीं या केवल समझा रही थीं, भांपना मुश्किल था मेरे लिए। कल रात जो मुझे झेलना पड़ा, उस का सौवां हिस्सा भी मिस गोगो ने नहीं झेला। इस के बावजूद मैं ने मिस गोगो से अभी सहानुभूति के स्वर में बात की। मिस गोगो हैं कि मुझे घुड़क रही हैं! स्मिता ने भी सहानुभूति या खेद के दो शब्दों के लिए मुझे तरसा दिया। ये औरतें कितनी आत्म-केन्द्रित होती हैं! दूसरों की ये कितनी कम परवाह करती हैं!

मिस गोगो की आंखें सोए हुए ठोलू पर थीं। "कितनी तसल्ली से नींद ले रहा है!" वह हंसीं, "आज इस के साप्ताहिक भोजन का दिन था। मैं ने अपने हाथ से आठ जिन्दा चूहे इसे खिलाए हैं। रिंग-मास्टर ने कहा था कि अगर चूहे मरे हुए खिलाए गए तो यह खा तो लेगा, लेकिन इसकी चेतना मरने लगेगी।"

"जो कि नहीं होना चाहिए।" मैं बोला, "चूहे लाने का ठेका जिसे दिया हुआ है, उस के प्रति कोई असन्तोष तो नहीं न आप को?"

"नहीं, वह बहुत नियमित और नम्र है। हमेशा अच्छे चूहे लाता है।" मिस गोगो ने घूम कर मेरी ओर देखा, "आप तो कल रात बेहोश ही हो गए!"

मैं जरा शरमा कर बोला, "इन बातों पर किसी का बस थोड़े

होता है···आश्चर्य इस का है कि बेहोशी इतनी लम्बी खिंच गई। अभी दस बजे मेरी आंखें खुलीं।"

"होश में आप जल्दी ही आ जाते, लेकिन···डाक्टर की राय रही कि आप को नींद का इन्जेक्शन दे दिया जाए। आप के नाड़ी-तन्त्र की स्थिति को देखते हुए···आप तो इतने ज्यादा डर गए थे कि···"

"हुआ यह, मिस गोगो, कि कल रात मैं ने अपने जीवन में पहली बार किसी सांप को स्पर्श किया···आज के अखबार क्या आप देख चुकी हैं ?"

"हां, ये रहीं कतरनें···" मिस गोगो ने तीन-चार कतरनें मुझे थमा दी हैं। मैं बैठ कर पढ़ गया हूं। गनीमत कि ठोलू के मुंह में मेरे हाथ वाले सीन का फोटो किसी भी अखबार में नहीं छपा है। अजगर-नृत्य कवर करने के लिए वी. टी. कैमरा ले कर आया था। भगदड़ और हंगामे के अनेक फोटो उस ने खींचे होंगे—हालांकि खुद वह भी भगदड़ मचा रहा होगा! फोटो वी. टी. ने पत्रकारों को न दिए। धन्यवाद, वी. टी.! मिस गोगो ने किस प्रकार बिफरे हुए अजगर की गर्दन पुनः दबोची और किस प्रकार उसे घसीट कर वह बाहर ले गईं, इस का विशद वर्णन हर कतरन में है। सब में मेरी बेहोशी का भी जिक्र है। दुर्घटना के बाद मिस गोगो ने उसी वक्त मेहमानों से क्षमा-याचना की थी। साथ में यह वचन भी दिया था कि सभी मेहमानों को एक विशेष जबर्दस्त शो मुफ्त में दिखाया जाएगा, जिस की तिथि की घोषणा बाद में होगी।

कतरनें मिस गोगो को वापस करते समय मुझे पुनः उन की पीठ पर पट्टी का अभाव याद आया है और उस याद के साथ स्मिता जुड़ी हुई है। "स्मिता से मुलाकात हुई आप की ?" मैं ने पूछ लिया है, "वह दिल्ली आई हुई है।"

"मुलाकात ? नहीं तो। अब आई है दिल्ली ?"

"आज ही सुबह। मुझ से तो मिल चुकी। सहानुभूति दर्शाने

के लिए आप से भी अवश्य मिलेगी। अभी जरा···जल्दी में थी। प्लास्टिक-सर्जरी उस पर इतनी कामयाब रही है कि मैं यकीन ही न कर सका। उस के ये तो इतने बड़े हो गए हैं कि···"

"सिलिकोन! जरूर उस कुतिया ने लिक्विड सिलिकोन के इन्जेक्शन लिए हैं।" मिस गोगो की आंखों में घृणा की ऐसी चमक पैदा हुई है कि मैं उसी क्षण समझ गया हूं, स्मिता और मिस गोगो 'अलीबाबा' में साथ-साथ कैबरे दे नहीं सकेंगी। अजगर-नृत्य की अवधि में, दूसरे मंच पर, अपना तन स्मिता बिलोए, मेरी यह इच्छा पूर्ण नहीं हो सकेगी। या तो मिस गोगो की छुट्टी करनी होगी या फिर स्मिता को ही समझाना होगा कि वह किसी अन्य होटल के कैबरे-फ्लोर पर···लेकिन ओह, यह कैसी बुरी स्थिति है! स्मिता ने गोह-नृत्य का विकास किया है। अजगर-नृत्य जैसा ही गोह-नृत्य, मिस गोगो के लिए एक तनावपूर्ण होड़ पैदा करेगा। केवल एक ही सूरत में होड़ पैदा नहीं होगी—कि गोह-नृत्य 'अलीबाबा' के अलावा किसी अन्य होटल के कैबरे-फ्लोर तक न पहुंचे। क्या मिस गोगो स्मिता को सहन कर सकेंगी? अभी उन्होंने उस के लिए 'कुतिया' शब्द का इस्तेमाल किया। यदि स्मिता ने अपने ये विकसित करवा लिए हैं तो वह कुतिया कैसे हो गई? मैं ने शुरू से ही नोट किया है कि स्मिता बेचारी को मिस गोगो नीच समझती हैं। सम्भावित होड़ को कैसे रोकूं? यदि स्मिता को अपने यहां रखने की जिद पर आमादा होता हूं तो मिस गोगो किसी अन्य होटल में, ठोलू के साथ, चली जाएंगी। कल की दुर्घटना ने, सच पूछें तो, 'अलीबाबा' या मिस गोगो को नुकसान नहीं, बल्कि लाभ पहुंचाया है। हर अखबार में अजगर-नृत्य की ही चर्चा है। मुफ्त के विज्ञापन! एडवांस बुकिंग पर दोगुने लोग टूट पड़ेंगे। केंचुल रोज थोड़े उतरती है! अजगर-नृत्य तो रोज होता है। रोज-रोज-रोज बुकिंग! ठोलू और मिस गोगो का यह अनोखा आइटम रातों-रात इतना प्रसिद्ध हो चुका है कि 'अलीबाबा' में स्मिता का गोह-नृत्य, अजगर-नृत्य से टक्कर ले

नहीं पाएगा। दोनों नृत्यों को 'अलीबाबा' कैसे समेटे? एक म्यान में दो तलवारें रखी किस तरह जाएं? स्मिता भी शायद नहीं चाहेगी कि उस का गोह-नृत्य, अजगर-नृत्य से कम महत्व दे कर विज्ञापित किया जाए। 'अलीबाबा' में स्मिता, मिस गोगो के साथ उसी तरह निभा नहीं पाएगी; जिस तरह मिस गोगो, स्मिता के साथ। मुझे स्मिता प्रिय है तो अब मिस गोगो भी कम प्रिय नहीं हैं। क्या करूं? कैसे करूं? क्या-कैसे? क्या-कैसे? क्या-कैसे?

"लिक्विड सिलिकोन, मिस गोगो?"

"यस, बॉस, उस के इन्जेक्शन लेने पर ये इतने बड़े हो सकते हैं कि उठाए न उठें, लेकिन नकली माल नकली ही होता है। वे इन्जेक्शन हर महीने लेने पड़ते हैं। यदि एक महीना भी चूक गए तो ढीले। कहां असली ये और कहां नकली! कुतिया कभी शेरनी का मुकाबला नहीं कर सकती।"

"इस में क्या शक है··" मुझे हामी भरनी पड़ती है। बात पलटने के लिए मैं पूछता हूं, "केंचुल कहां है, मिस गोगो?"

"हंगामे में पता नहीं, कहां गिरी और कौन ले गया। जब मैं ठोलू को दबोच रही थी, मुझ पर केंचुल भी नहीं थी। हा, हा, हा!" मिस गोगो हंसने लगीं, "आखिर वहां चालीस-चालीस चोर जमा थे। पता नहीं, किस ने हाथ साफ कर दिया!"

सुन कर मैं ने भी हंसना शुरू कर दिया। हंसना शुरू करना, मेरी एक आवश्यकता थी और मजबूरी भी। उठते हुए मैं बोला "अब, आज के शो में, केंचुल उतरने के बाद, नया ठोलू ऐसा चमकेगा कि···ह, ह, ह···"

"यस, बॉस! ह, ह, ह···"

मैं बाहर निकल आया। अपने कमर में पहुंचने पर मुझे दसेक मिनट में ही, दनादन, तीन व्यक्तियों से, फोन पर, बात करनी पड़ी। जब मैं कमरे में घुसा, फोन बज ही रहा था और रिसीवर मुझे लपक कर उठाना पड़ा। "हैलो?" मैं ने कहा।

वह फोन 'नकरा एण्ड स्वामी, सालिसिटर्स' के कार्यालय से आया था। सालिसिटर्स के प्रतिनिधि के रूप में चन्दन बाली ने मुझ से बात करनी चाही। "कहिए।" मैं बोला। उस ने कहा, "अब मैं आप को बता ही दूं कि अजगर-नृत्य देखने का मेरा खास मकसद क्या था। मैं मिस गोगो का शुक्रगुजार हूं कि उन्होंने चालीस चोरों में मेरा चुनाव किया।"

"मैं आप का आभार उन तक पहुंचा दूंगा।" मैं गम्भीरता से बोला।

"क्या आप ने 'अश्लीलता अंकुश समिति' का नाम सुना है ?" मुझ से पूछा गया।

"जी हां।"

"अजगर-नृत्य के विज्ञापनों से प्रभावित हो कर उस समिति ने "नकरा एण्ड स्वामी सालिसिटर्स" से सम्पर्क स्थापित किया था। उसी समिति की ओर से मैं ने अजगर-नृत्य देखना चाहा था—और देखा। अब मैं मिस गोगो को, और उन के संरक्षक के रूप में आप को भी, अदालत में खींच ले जाना चाहता हूं।"

"क्यों ?" मैं ने कड़क कर कहा, "क्या अजगर-नृत्य अश्लील था ?"

"अश्लील नहीं, महा-अश्लील।"

"असलियत यह है, मिस्टर बाली कि अजगर-नृत्य कल आप ने देखा ही नहीं। अभी तक वह ठीक से शुरू भी नहीं हुआ था कि ठोलू ने केंचुल उतार दी। जब नृत्य आप ने देखा ही नहीं, फिर कैसे आप अश्लीलता का आरोप..."

"जितना भी देखा है मैं ने, आप दोनों को अदालत में घसीट ले जाने के लिए उतना काफी है।"

"क्या आप अपनी एक दिलेर, खूबसूरत और कलाकार दोस्त को अदालत में खड़ी करना चाहेंगे, मिस्टर बाली ?"

"दोस्ती अपनी जगह है, व्यापार अपनी जगह।"

"आप को लेने के देने पड़ जाएंगे। आप कतई साबित नहीं कर सकेंगे कि नृत्य अश्लील था।"

"शायद मुझे यह बता ही देना चाहिए कि ठोलू की···आधी केंचुल मेरे पास है।"

"आधी केंचुल ?" मैं चौंका।

"जी हां। कोशिश तो मेरी यही थी कि पूरी केंचुल हथिया लेता। मिस गोगो पर से खींच कर केंचुल मैं ने पूरी ले भी ली थी, किन्तु···एक पुरुष ने मुझे देख लिया। उस ने मुझ से छीना-झपटी की, जिस से आधी केंचुल टूट कर उस के पास चली गई। आधी वह ले गया। आधी मेरे पास है।"

"वह पुरुष कौन था ?"

"मैं उसे नहीं जानता।"

"क्या वह इन्द्र खोसला नहीं था ?" मैं ने अंधेरे में तीर मारा।

"कौन इन्द्र खोसला ? मैं किसी इन्द्र खोसला को नहीं जानता।"

"छोड़िए, मिस्टर बाली ! थोड़े-बहुत अंदाज़े तो मैं भी लगा सकता हूं। क्या आप बताने का कष्ट करेंगे कि केंचुल का जिक्र आप ने यहां क्यों छेड़ा ?"

"केंचुल अदालत में पेश की जाएगी। भले ही वह आधी है, लेकिन विशेषज्ञों द्वारा सिद्ध करवाया जा सकता है कि पूरी केंचुल की लम्बाई-चौड़ाई क्या रही होगी। 'अश्लीलता अंकुश समिति' की ओर से कहा जाएगा कि मिस गोगो ने इतना छोटा अजगर पहन कर नाचना चाहा कि जो उन की लज्जा-रक्षा के लिए भी मुश्किल से पर्याप्त था।"

"मिस्टर बाली, आप बचकानी बातें कर रहे हैं।" मैं चालू हो गया, "बम्बई जा कर जुहूतट पर देखिए। बिकिनि स्वीमिंग-सूट में लड़कियां सरेआम नहाती हैं या नहीं ? वैसे स्वीमिंग-सूट के क्षेत्र-फल से मिस गोगो के अजगर का क्षेत्रफल ज्यादा है। अश्लीलता का

आरोप जब उन लड़कियों पर नहीं लगता, फिर मिस गोगो पर कैसे लग सकता है ?

"स्विम-सूट एक वस्त्र है। अजगर कोई वस्त्र नहीं। हम आरोप लगाएंगे कि मिस गोगो वस्त्र-हीन हो कर नृत्य करती हैं। कैबरे-डान्स में वस्त्र-हीनता की केवल एक झलक दिखाई जा सकती है। पूरा नृत्य वस्त्र-हीन होकर नहीं किया जा सकता।"

"मैं आप की मान्यता को चुनौती देता हूं, मिस्टर बाली ! वह हर चीज वस्त्र ही है, जो शरीर पर धारण की जाए। केवल कपास के बने वस्त्र ही वस्त्र नहीं हैं। फिर तो आप नायलोन, टेरीन वगैरह को भी वस्त्र मानने के लिए तैयार न होंगे। नायलोन वगैरह चीजें पारदर्शी होती हैं। पहनने के बाद भी उन में सब झलकता रहता है। उन्हें तो आप वस्त्र मानेंगे और अजगर को नहीं मानेंगे—जबकि अजगर पारदर्शी नहीं होता !"

"लगता है, आप बुरा मान गए।"

"बुरा न मानूं तो क्या खुशियां मनाऊं और खिलखिलाऊं ?" मैं ने कड़क कर कहा, "बल्कि मैं आप पर आरोप लगा सकता हूं कि आप ने केंचुल की चोरी की है।"

"..."

"चुप न रहिए, मिस्टर बाली···केंचुल चुराने की जरूरत ही क्या थी आप को ? यदि मुझे और मिस गोगो को अदालत में पेश होना ही है, तो हम अपने साथ ठोलू को भी पेश कर सकते हैं। ठोलू को अदालत में सब के सामने नापा जा सकता है। न्यायाधीशों के सामने, भरी अदालत में, मिस गोगो सिर्फ ठोलू पहन कर, और नाच कर भी, दिखा सकती हैं; ताकि जांच की जा सके कि अश्लीलता का आरोप सही है या गलत। हम इतने कायर नहीं हैं कि ठोलू को छिपा दें। केंचुल क्यों चुराई आप ने ?"

"ठोलू के नाम पर अदालत में आप कोई बड़ी साइज़ का अजगर भी पेश कर सकते हैं। केंचुल की चोरी का आरोप मैं सहर्ष

संह लूंगा, लेकिन बड़ी साइज़ का अजगर पेश नहीं होने दूंगा।"

"आप का जोश काबिल-ए-तारीफ है ! एक बात पूछूं, मिस्टर बाली ?"

"शौक से।"

"इस 'अश्लीलता अंकुश समिति' की आर्थिक स्थिति कैसी है ?"

"मुझे मानना पड़ेगा कि आप काफी समझदार हैं !" फोन पर चन्दन बाली धीमे से हंसा, फिर बोला, "मुझे यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं कि 'अश्लीलता अंकुश समिति' की आर्थिक स्थिति विशेष अच्छी नहीं है।"

"आप समिति के सचिव से कहिए कि मुझ से व्यक्तिगत रूप से मुलाकात करे। कोई बीच का मार्ग भी निकाला जा सकता है। मैं आरामपसन्द इन्सान हूं, इस की जानकारी आपको है। इसी जानकारी के कारण आप ने अभी फोन किया। आप खूब समझते हैं कि जीत सुनिश्चित होने के बावजूद मैं अदालतों के चक्कर लगा कर पस्त हो जाऊंगा..."

"नहीं, नहीं, ऐसी कोई बात नहीं।"

"यही बात है—और यह ब्लैक-मेलिंग है !" मैं चीखा। मैं ने फोन पटक दिया। फिर मैं मुस्कराने लगा। दाम कराए काम !

दूसरा फोन इन्द्र खोसला का।

" 'जीव-रक्षा-परिषद' को ठोलू जी से गहरी सहानुभूति है।" इन्द्र खोसला ने शुरू किया "इस मूक प्राणी की ओर से हम आप पर, और मिस गोगो पर भी, एक मुकदमा दायर करने की सोच रहे हैं। ठोलू जी की आधी केंचुल हमारे कब्जे में है। इससे हमें आरोप लगाने में बहुत आसानी रहेगी। हम आरोप लगाएंगे कि ठोलू जी के साथ भयंकर बेरहमी बरती जाती है। उन को चौबीसों घण्टे इतना व्यस्त रखा जाता है कि उन्हें केंचुल उतारने के लिए भी वक्त नहीं मिलता। यह तो कुछ ऐसी ही बात है कि एक मकान-

मालिक जा कर अपने किरायदार के सण्डास में ताला लगा दे ! ठोलू जी पर ऐसा अत्याचार हम नहीं सहेंगे, नहीं सहेंगे। ऐसा अमानवीय और अ-अजगरीय अत्याचार…"

"भाषण बन्द ! प्लीज़ !" मैं उकता कर बोला, "आप मुद्दे की बात पर क्यों नहीं आते ?"

"मुद्दे की बात यही तो है कि ठोलू जी को अपनी केंचुल बेशर्मी से, सरेआम उतारनी पड़ी ! आप ने उन का यह अजगरीय अधिकार छीन लिया है कि केंचुल उतारने के लिए उन्हें किसी एकान्त स्थल में अवसर मिले। यह तो कुछ ऐसी ही बात है कि…"

"याने आप अपनी बहन जी को अदालत में ले जाने के लिए बिल्कुल आमादा हैं !"

"देखिए जी, रिश्ते-नाते अपनी जगह और फर्ज़ अपनी जगह। ड्यूटी इज़ ड्यूटी !"

"मुद्दे की बात पर आप आएंगे नहीं, और मेरे पास वक्त की कमी है। मैं ही आ जाता हूं मुद्दे पर। क्या मैं यह पूछने की जुर्रत कर सकता हूं, मिस्टर खोसला कि…आप की यह जो 'जीव-रक्षा-परिषद' है, उस की आर्थिक स्थिति…"

आगे की बातचीत जल्द ही समाप्त हो गई। रिसीवर रख कर मैं मुस्कराने लगा। मिस गोगो के नारे 'दाम कराए काम' ने तो आज नेहरू के नारे 'आराम हराम है' को भी उखाड़ दिया ! ह-ह। घणणणण ! घणणणण ! फिर किस कम्बख्त का फोन ? मेरा रिसीवर उठाना। 'हैलो' कहना। मेरा खुश हो जाना। फोन स्मिता द ग्रेट ने किया है।

"हैलो, डार्लिंग ! डिफेन्स कालोनी सही-सलामत पहुंच गई ?"

"पहुंचती कैसे नहीं ! टैक्सी कर ली थी !" स्मिता द ग्रेट का चहकना, "बताओ, फोन मैं ने क्यों किया है अभी।"

"मैं क्या जानूं ?"

"तुम ने कहा था न कि गोह दस फीट लम्बी नहीं होती ?"

"अगर मैं कह दूं कि गोह दस फीट लम्बी हुआ करती है, तब भी, हो थोड़े ही सकती है!" मेरा कहना और हंसना।

"तो सुनो—गोह एक प्रकार की छिपकली है। संसार की सब से लम्बी छिपकली का नाम है 'कोमोडो ड्रैगन'। वह सिर्फ तीन छोटे-छोटे द्वीपों में पाई जाती है—कोमोडो, रिण्टजा और फ्लोर्स। इन द्वीपों के नाम उस वक्त मेरी जबान पर नहीं थे, इस लिए 'फिर बताऊंगी। सब बताऊंगी।' कह कर मैं भाग आई थी। कुछ जल्दी में भी थी। अब फोन तसल्ली से कर रही हूं। अभी मेरा फोटोग्राफर नहाने गया हुआ है। बम्बई में जो कोमोडो मेरे पास है, वह रिण्टजा द्वीप से, खास मेरे लिए, नकद तीन हजार रुपयों में आई है। सारा खर्च मैं ने किया है—अकेली ने!"

"तुम्हारे पास दस फीट लम्बी गोह है? हे भगवान!"

"दस फीट एक इंच! और वह बड़ी शातिर है! मुझ पर ऐसी तो चिपकती है कि जैसे मेरा ही एक हिस्सा हो। मेरे सभी 'पाइण्ट' ऐसी नफासत से छिपा लेती है कि देखने वालों की छाती फट जाए।"

"मेरी छाती तो सुन कर ही फट रही है।"

"छी! मजाक करते हो? रो दूं?"

"नहीं-नहीं! यह बताओ, मुद्दे की बात क्या है?"

"मुद्दे की बात?"

"आखिर यह फोन तुम ने किसी खास मकसद से ही तो…"

"फोन पर ही बता दूं?" और स्मिता का किलकना। मेरा सावधान हो जाना। फिर कहना, "क्यों नहीं!"

"बात यह है…मेरा जो गोह-नृत्य है न, वह…अजगर-नृत्य से किसी तरह कम नहीं। बम्बई के न जाने कितने होटलों ने अपने कैबरे-फ्लोर मुझे 'ऑफर' किए हैं, लेकिन मेरा फर्ज़ है कि सब से पहले मैं 'अलीबाबा' में आऊं—ठीक है न?"

"बिल्कुल ठीक।"

"लेकिन जरा···मुझे अपनी पोजीशन का भी ख्याल रखना पड़ेगा। मेरा बदन तुम देख चुके। चाहो तो गोह-नृत्य भी कर के दिखा दूं। उस के लिए या तो तुम बम्बई चलो या फिर, गोह ले कर मैं ही यहां आ जाती हूं—क्योंकि रेहाना बम्बई में है।"

"रेहाना ? रेहाना कौन ?"

"वही—मेरी गोह ! उस का नाम रेहाना है।"

"एक सलाह दूं, स्मिता ? गोह का नाम लड़कियों वाला न रखो। लड़की तुम स्वयं हो। तुम से चिपकने वाला जीव—चाहे वह गोह ही क्यों न हो—लड़की के बजाए यदि लड़का हुआ, तभी सेक्स-सनसनी पैदा होगी। बात आई समझ में ? गोह का नाम या तो अब्दुल्ला रख दो या वीरूमल।"

"ओह, ओह, नाजुक सुझाव ! हाय, मार डाला !"

"लेकिन अभी तक तुम ने मुद्दे की बात कही नहीं।" मेरा याद दिलाना और स्मिता का कहना, "मैं···अपनी पोजीशन शुरू से ही बढ़िया रखना चाहती हूं। बुरा न मानना, यार, लेकिन··· 'अलीबाबा' में मैं अजगर-नृत्य के साथ अपना गोह-नृत्य पेश नहीं करूंगी। असलियत यह है कि मैं···उस होटल में कैबरे दे नहीं सकती, जहां मिस गोगो भी कैबरे देती हों। ऐसा नहीं कि मुझे उन से डाह है। मैं तो अपनी पोजीशन बढ़िया रखना चाहती हूं।"

"ओह !" मेरा बुदबुदाना। सिगरेट सुलगाना। फिर कहना, "सोचूंगा। सोचना पड़ेगा। स्मिता ? सुनो। बम्बई जाने से पहले एक बार मिल जरूर लेना। सोच कर रखूंगा।"

"ओके···बाय !" स्मिता का कनेक्शन काट देना।

मेरा भी फोन रखना। गहरी सांस लेना। सिर खुजाना। चार-मीनारी कश लेना। फिर सोचने लगना कि सोचूं क्या ? कम्बख्त यह धन्धा ! कम्बख्त यह ऐश्वर्य ! और सहसा याद आ जाना कि अभी तक मैंने अपना कोई वारिस तय नहीं किया।

॥ इति शुभम् ॥

"अगर मैं कह दूं कि गोह दस फीट लम्बी हुआ करती है, तब भी, हो थोड़े ही सकती है !" मेरा कहना और हंसना।

"तो सुनो—गोह एक प्रकार की छिपकली है। संसार की सब से लम्बी छिपकली का नाम है 'कोमोडो ड्रैगन'। वह सिर्फ तीन छोटे-छोटे द्वीपों में पाई जाती है—कोमोडो, रिण्टजा और फ्लोर्स। इन द्वीपों के नाम उस वक्त मेरी जबान पर नहीं थे, इस लिए 'फिर बताऊंगी। सब बताऊंगी।' कह कर मैं भाग आई थी। कुछ जल्दी में भी थी। अब फोन तसल्ली से कर रही हूं। अभी मेरा फोटोग्राफर नहाने गया हुआ है। बम्बई में जो कोमोडो मेरे पास है, वह रिण्टजा द्वीप से, खास मेरे लिए, नकद तीन हजार रुपयों में आई है। सारा खर्च मैं ने किया है—अकेली ने !"

"तुम्हारे पास दस फीट लम्बी गोह है ? हे भगवान !"

"दस फीट एक इंच ! और वह बड़ी शातिर है ! मुझ पर ऐसी तो चिपकती है कि जैसे मेरा ही एक हिस्सा हो। मेरे सभी 'पाइण्ट' ऐसी नफासत से छिपा लेती है कि देखने वालों की छाती फट जाए।"

"मेरी छाती तो सुन कर ही फट रही है।"

"छी ! मजाक करते हो ? रो दूं ?"

"नहीं-नहीं ! यह बताओ, मुद्दे की बात क्या है ?"

"मुद्दे की बात ?"

"आखिर यह फोन तुम ने किसी खास मकसद से ही तो···"

"फोन पर ही बता दूं ?" और स्मिता का किलकना। मेरा सावधान हो जाना। फिर कहना, "क्यों नहीं !"

"बात यह है···मेरा जो गोह-नृत्य है न, वह···अजगर-नृत्य से किसी तरह कम नहीं। बम्बई के न जाने कितने होटलों ने अपने कैबरे-फ्लोर मुझे 'ऑफर' किए हैं, लेकिन मेरा फर्ज़ है कि सब से पहले मैं 'अलीबाबा' में आऊं—ठीक है न ?"

"बिल्कुल ठीक।"

"लेकिन जरा···मुझे अपनी पोजीशन का भी ख्याल रखना पड़ेगा। मेरा बदन तुम देख चुके। चाहो तो गोह-नृत्य भी कर के दिखा दूं। उस के लिए या तो तुम बम्बई चलो या फिर, गोह ले कर मैं ही यहां आ जाती हूं—क्योंकि रेहाना बम्बई में है।"

"रेहाना ? रेहाना कौन ?"

"वही—मेरी गोह ! उस का नाम रेहाना है।"

"एक सलाह दूं, स्मिता ? गोह का नाम लड़कियों वाला न रखो। लड़की तुम स्वयं हो। तुम से चिपकने वाला जीव—चाहे वह गोह ही क्यों न हो—लड़की के बजाए यदि लड़का हुआ, तभी सेक्स-सनसनी पैदा होगी। बात आई समझ में ? गोह का नाम या तो अब्दुल्ला रख दो या वीरूमल।"

"ओह, ओह, नाजुक सुझाव ! हाय, मार डाला !"

"लेकिन अभी तक तुम ने मुद्दे की बात कही नहीं।" मेरा याद दिलाना और स्मिता का कहना, "मैं···अपनी पोजीशन शुरू से ही बढ़िया रखना चाहती हूं। बुरा न मानना, यार, लेकिन··· 'अलीबाबा' में मैं अजगर-नृत्य के साथ अपना गोह-नृत्य पेश नहीं करूंगी। असलियत यह है कि मैं···उस होटल में कैबरे दे नहीं सकती, जहां मिस गोगो भी कैबरे देती हों। ऐसा नहीं कि मुझे उन से डाह है। मैं तो अपनी पोजीशन बढ़िया रखना चाहती हूं।"

"ओह !" मेरा बुदबुदाना। सिगरेट सुलगाना। फिर कहना, "सोचूंगा। सोचना पड़ेगा। स्मिता ? सुनो। बम्बई जाने से पहले एक बार मिल जरूर लेना। सोच कर रखूंगा।"

"ओके···बाय !" स्मिता का कनेक्शन काट देना।

मेरा भी फोन रखना। गहरी सांस लेना। सिर खुजाना। चार-मीनारी कश लेना। फिर सोचने लगना कि सोचूं क्या ? कम्बख्त यह धन्धा ! कम्बख्त यह ऐश्वर्य ! और सहसा याद आ जाना कि अभी तक मैंने अपना कोई वारिस तय नहीं किया।

॥ इति शुभम् ॥